नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरुभ्यो नमः

भाग

४

सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि



आगम - ४०

"आवश्यक" निर्युक्ति एवं चूर्णि: [२]

मूल संशोधक :- पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

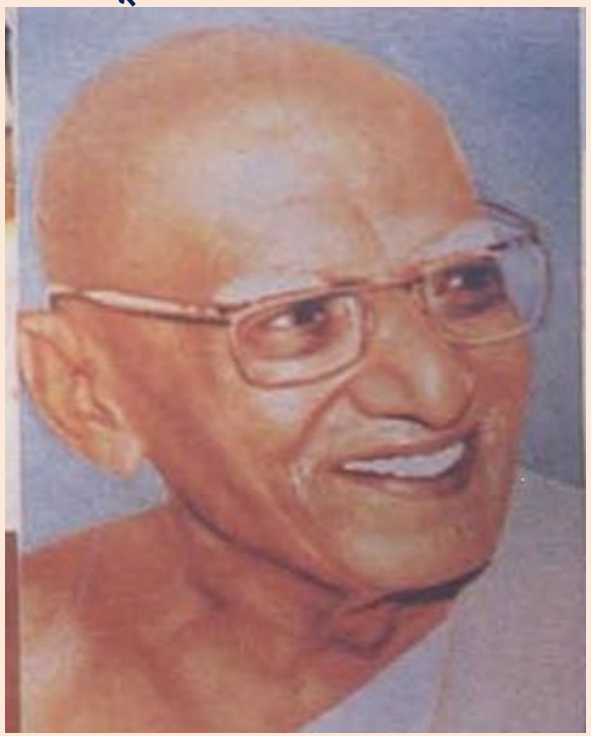
अभिनव-संकलनकर्ता :- आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से

श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ, पालडी, अमदावाद

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

सच्चारित्र चूडामणि स्वर्गस्थ पूज्यपाद
गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागर
सूरीश्वरजी महाराज साहेब



श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ

वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठक्कर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

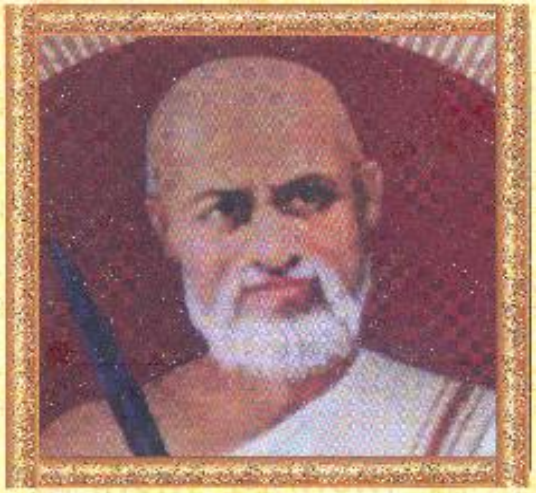
करीब पचास साल पहेले परम पूज्य स्वर्गस्थ गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म० ही है |

इस संघमें पूज्य साधू-भगवंत एवं साध्वी-महाराज के लिए उपाश्रय भी है, जहां हर-साल चातुर्मास करवा के श्रावक-श्राविकाओ को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है | इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है | ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है |

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

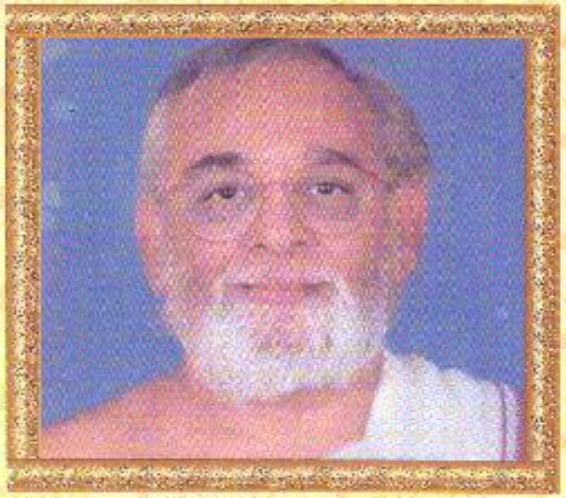
सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि

मूल संशोधक



पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता



आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदाबाद Mo 9825598855 / 9825306275



आगम

वाचना शताब्दी वर्ष

भाग-4 [४०] श्री आवश्यक सूत्रम् (2)

"आवश्यक" निर्युक्ति एवं चूर्णि: [२]

[मूल + भद्रबाहुस्वामी कृत् निर्युक्ति: + भाष्यं + जिनदासगणि रचिता चूर्णि:]

[आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

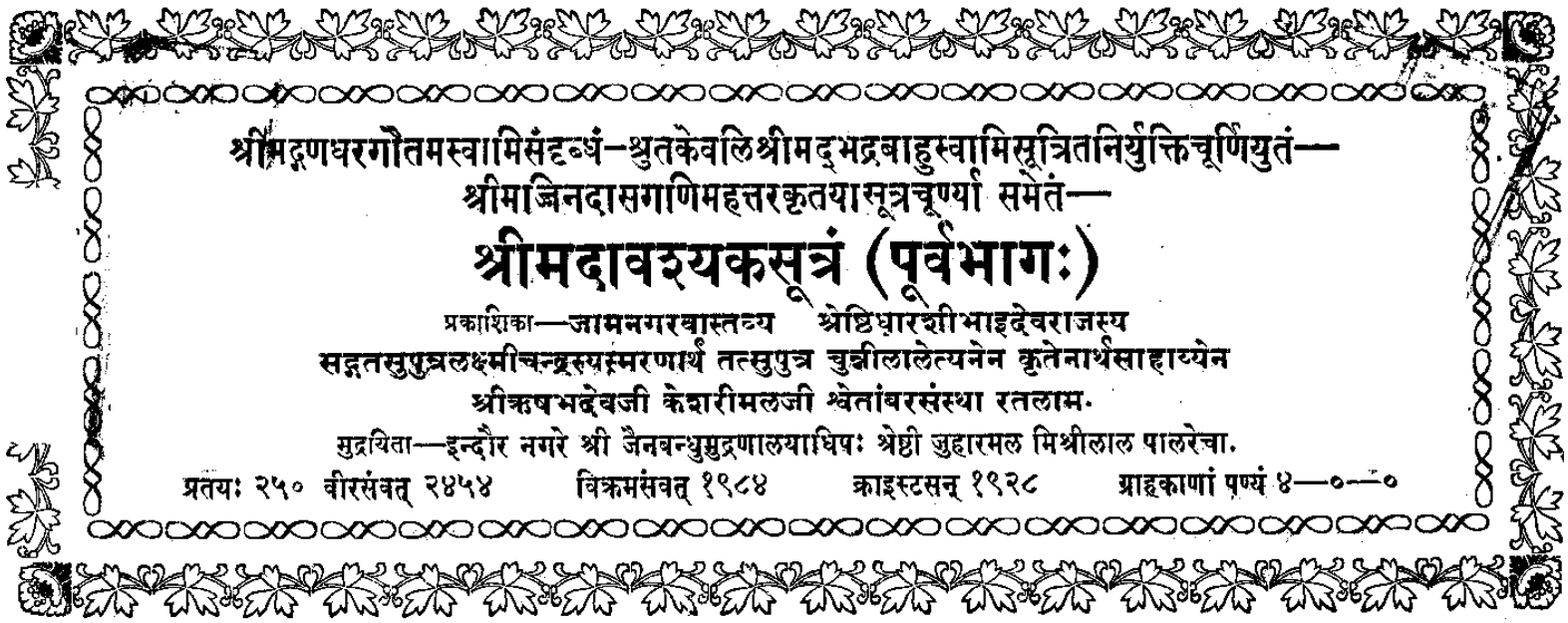
पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2



श्रीमद्गणधरगौतमस्वामिसंदृब्धं–श्रुतकेवलिश्रीमद्भद्रबाहुस्वामिसूत्रितनिर्युक्तिचूर्णियुतं—
श्रीमज्जिनदासगणिमहत्तरकृतयासूत्रचूर्ण्या समेतं—

श्रीमदावश्यकसूत्रं (पूर्वभागः)

प्रकाशिका—जामनगरवास्तव्य श्रेष्ठिधारशीभाइदेवराजस्य
सद्गतसुपुत्रलक्ष्मीचन्द्रस्यस्मरणार्थं तत्सुपुत्र चुन्नीलालेत्यनेन कृतेनार्थसाहाय्येन
श्रीऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबरसंस्था रतलाम.

मुद्रयिता—इन्दौर नगरे श्री जैनबन्धुमुद्रणालयाधिपः श्रेष्ठी जुहारमल मिश्रीलाल पालरेचा.

प्रतयः २५० वीरसंवत् २४५४ विक्रमसंवत् १९८४ क्राइस्टसन् १९२८ ग्राहकाणां पण्यं ४—०—०

***आवश्यक-चूर्णे: मूल "टाइटल पेज"

सामाचारी-संरक्षक, ज्ञानधनी, आगम-संशोधक, तीव्र-मेधावी, समाधिमृत्यु-प्राप्त, बहुमुखीप्रतिभाधारक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

◆ जिन्होने शुद्ध-श्रद्धा, सम्यक्-श्रुत आराधना, यथाख्यातचारित्र के प्रति गति और अंत समय देह-ममत्व के त्याग के द्वारा कायोत्सर्ग नामक अभ्यंतर-तप कि मिशाल कायम कि है ऐसे बहुश्रुत आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराज का परिचय कराना मेरे लिए नामुमकिन है, फ़िर भी गुरुभक्ति बुद्धि से श्रद्धांजली स्वरुप एक मामुली सी झलक पैस करने का यह प्रयास मात्र है |

◆ चारित्र-ग्रहण के बाद अल्प कालमे जो अपने गुरुदेव की छत्रछाया से दूर हो गये, तो भी गुरुदेव के स्वर्ग-गमन को सिर्फ़ कर्मो का प्रभाव मानकर अपने संयम के लक्ष्य प्रति स्थिर रहते हुए अकेले ज्ञान-मार्ग कि साधना के पथ पर चले | पढाई के लिए ही कितने महिनो तक रोज एकासणा तप के साथ बारह किल्लोमिटर पैदल विहार भी किया | लेकिन अपने मंझिल पे डटे रहे, और परिणाम स्वरुप संस्कृत एवं प्राकृत भाषा का, प्राचीन लिपिओ का, व्याकरण-न्याय-साहित्य आदि का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया | जैन आगमशास्त्रो के समुद्र को भी पार कर गए|

◆ एक अकेला आदमी भी क्या नहीं कर शकता? इस प्रश्न का उत्तर हमें इस महापुरुष के जीवन और कवन से मिल गया, जब वे चल पड़े देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण के स्थापित पथ पर. बिना किसी सहाय लिए हुए सिर्फ अकेले ही "जैन-आगम-शास्त्रो" को दीर्घजीवी बनाने के लिए अनेक हस्तप्रतो से शुद्ध-पाठ तैयार किये | दो वैकल्पिक आगम, कल्पसूत्र और निर्युक्तिओ को जोड़कर ४५ आगम-शास्त्रो को संशोधित कर के संपादित किया | फिर पालीताणामें आगम मंदिर बनवाकर आरस-पत्थर के ऊपर ये सभी आगम-साहित्य को कंडारा, सूरतमें ताम्रपत्र पर भी अंकित करवाए और "आगम मंजूषा" नाम से मुद्रण भी करवा के बड़ी बड़ी पेटीमें रखवा के गाँव गाँव भेज दिए | वर्तमानकालमे सर्व प्रथमबार ऐसा कार्य हुआ |

◆ सिर्फ मूल आगम के कार्य से ही उन के कदम रुके नही थे, उन्होंने आगमो की वृत्ति, चूर्णि, निर्युक्ति, अव चूरी, संस्कृत-छाया आदि का भी संशोधन-सम्पादन किया | उपयोगी विषयो के लिए उन्होंने एक लाख श्लोक प्रमाण संस्कृत-प्राकृत नए ग्रंथो की रचना भी की | कितने ही ग्रंथो की प्रस्तावना भी लिखी | ये सम्यक्-श्रुत मुद्रित करवाने के लिए आगमोदय समिति, देवचंद लालभाई इत्यादि विभिन्न संस्था की स्थापना भी की |

◆ ज्ञानमार्ग के अलावा सम्मेतशिखर, अंतरीक्षजी, केशरियाजी आदि तीर्थरक्षा कर के सम्यक-दर्शन-आराधना का परिचय भी दिया | राजाओं को प्रतिबोध कर के और वाचनाओ द्वारा अपनी प्रवचन-प्रभावकता भी उजागर करवाई | बालदिक्षा, देवद्रव्य-संरक्षण, तिथि-प्रश्न इत्यादि विषयोमे सत्य-पक्षमें अंत तक दृढ़ रहे | जैनशासन के लिए जब जरुरत पड़ी तब अदालती कारवाईंओ का सामना भी बड़ी निडरता से किया था |

◆ सागरानंदजी के नाम से मशहूर हो चुके पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजीने अपने परिवार स्वरुप ७०० साधू-साध्वीजी भी शासन को भेट किये |

...ये थे हमारे गुरुदेव "सागरजी"... ***.....मुनि दीपरत्नसागर...***

संयमैकलक्षी, उपधान-तप-प्रेरक, चारित्र-मार्ग-रागी, प्रवचन-पटु, सुपरिवार-युक्त

पूज्य गच्छाधिपतिआचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

***** परमपूज्य आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी के पाट-परंपरामे हुए तिसरे गच्छाधिपति थे पूज्य आचार्य श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी, जो एक पून्यवान् आत्मा थे, दीक्षा ग्रहण के बाद अल्पकालमे ही एक शिष्य के गुरु बन गये | फ़िर क्या ! शिष्यो कि संख्या बढती चली, बढ़ते हुए पुन्य के साथ-साथ वे आखिर 'गच्छाधिपति' पद पे आरूढ़ हो गए | इस महात्मा का पुन्य सिर्फ शिष्यों तक सिमित नही था, वे जहा कहीं भी 'उपधान-तप' की प्रेरणा करते थे, तुरंत ही वहां 'उपधान' हो जाते थे | प्रवचनपटुता एवं पर्षदापुन्य के कारण उन के उपदेश-प्राप्त बहोत आत्माओने संयम-मार्ग का स्वीकार किया | खुद भी संयमैकलक्षी होने के कारण चारित्रमार्ग के रागी तो थे ही, साथसाथ ज्ञानमार्ग का स्पर्श भी उन का निरंतर रहेता था | आप कभी भी दुपहर को चले जाइए, वे खुद अकेले या शिष्य-परिवार के साथ कोई भी ग्रन्थ के अध्ययन-अध्यापनमें रत दिखाई देंगे |**

***** ये तो हमने उनके जीवन के दो-तीन पहेलु दिखाए | एक और भी अनुसरणीय बात उन के जीवनमें देखने को मिली थी- 'आराधना-प्रेम'. कैसी भी शारीरिक स्थिति हो, मगर उन्होंने दोनों शाश्वती ओलीजी, [पोष}दशमी, शुक्ल पंचमी, त्रिकाल देववंदन, पर्व या पर्वतिथि के देववंदन आदि आराधना कभी नहीं छोड़ी | आखरी सालोमें जब उन को एहसास हो गया की अब 'अंतिम-आराधना' का अवसर नजदीक है, तब उन के मुहमें एक ही रटण बारबार चालु हो गया- "*अरिहंतनुं शरण, सिद्धनुं शरण, साधुनुं शरण, केवली भगवंते भाखेला धर्मनुं शरण* " इसी चार शरणो के रटण के साथ ही वे समाधि-मृत्यु-रूप सम्यक् निद्रा को प्राप्त हुए थे | ऐसे महान् सूरिवर को भावबरी वंदना |**

***** मुनि दीपरत्नसागर...**

~~~
~~~

'सागर-समुदाय-एकता-संरक्षक, तीर्थ-उद्धार-कार्य-प्रवृत्त, गुणानुरागी'

इस "सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि' श्रेणि भाग १ से ८ के संपूर्ण अनुदान के प्रेरणादाता

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी महाराज साहेब

पूज्यपाद स्व॰ गच्छाधिपति देवेन्द्रसागर-सूरीश्वरजी के विनयी शिष्य एवं दो गच्छाधिपतिओ के मुख्य सहायक के रुपमे 'सागर समुदाय' के सुचारु संचालक पूज्य हर्षसागरसूरिजी, जिन की प्रेरणा से ये "स चूर्णिक-आगम-सुत्ताणि" के मुद्रण के लिए संपूर्ण द्रव्यराशि प्राप्त हुई , उनका अत्यल्प परिचय यहां करेंगे | समुदाय-एकता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हुए ये महात्मा *समुदाय के साधु-साध्वीजी* की आवश्यकताओकी पूर्ती के लिए भी प्रवृत्त रहेते है, प्राचीन-अर्वाचीन तीर्थो के जीर्णोद्धार एवं विकाश के लिए भी उत्साहित रहेते है, ज्ञान-क्षेत्र अछूता न रहे इसीलिए अनुमोदना, अनुदान एवं समय मिलने पर शास्त्र-वांचनमें भी रूचि रखते है | समुदाय के जरूरतमंद साध्वीजी भगवंतो के आवास का विषय हो या साध्वीजी के विहारमें मजदूर का वेतन चुकाना हो, ऐसे छोटे-छोटे कार्यो के प्रति भी उन का लक्ष्य रहेता है | दर्शन-शुद्धि के लिए जब उन्होंने समग्र भारतवर्ष के १०० साल तक के पुराने जिनालयो में १८ अभिषेक की प्रेरणा की, उस वक्त लगभग सभी अभिषेक-सामग्री की द्रव्य-शुद्धि का ख़याल रखते हुए अपनी मेधावी बुद्धि का परिचय दिया था, साथमे अनुकंपा भाव से पुजारी या विधि करानेवाले को यत्किंचित् बहुमान प्रगट करते हुए कुछ धन-राशि प्रदान करवाई |

ऐसे बहुगुण-संपन्न महात्मा पूज्य आचार्यश्री हर्षसागर-सूरिजी को हम भावभरी वंदना करते हुए इस श्रुतकार्य का प्रारंभ करने जा रहे है |

**** मुनि दीपरत्नसागर*

[कात्रेज]पूना, शंखेश्वर, कपडवंज, प्रभासपाटण आदि स्थानोमे आगममंदिर के प्रेरक, कर्मग्रंथ अभ्यासु, निस्पृह महात्मा

पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य श्री दौलतसागर-सूरीश्वरजी महाराज साहेब

(एवं) अजातशत्रु, स्वाध्याय-रसिक, प्रशांतमूर्ती और अपने गुरु के प्रीतिपात्र

परम पूज्य आचार्य श्री नंदीवर्धनसागर-सूरिजी महाराज साहेब

इस पवित्र श्रुत-कार्यमे दोनो सूरिवरो का स्मरण करते हुए कोटि कोटि वंदना के साथ

मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक	मूलांक:	अध्ययनं		मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:
			०१-०२	१-सामायिकं	2/३००			

आवश्यक सटीकं (संक्षिप्त) विषयानुक्रम

निर्युक्ति / भाष्य	पीठिका ➔➔➔	००७	नि./भा.	--उपोद्घात-निर्युक्ति:	पृष्ठांक	नि./भा.	अध्ययनं-१- सामायिकं	पृष्ठांक:
	----		०८१	--वीरआदिजिनवक्तव्यता		८९०	नमस्कार-व्याख्या	२११
	[भाग-1]		३४३	--भरतचक्री-कथानकं		९१९	अर्हत्, सिद्धादे: निर्युक्ति:	२१८
---	--मंगलं		भा.०३९	--बलदेव-वासुदेव कथानकं		९६०	सिद्धशिला वर्णनं	२९२
			-----	[भाग-2]	-----	९९३	आचार्य-आदीनाम निक्षेपा:	२९४
००१	--ज्ञानस्य पञ्चप्रकारा:		५४३	--समवसरण वक्तव्यता	०३४			
			५८८	--गणधर वक्तव्यता	०४३	१०१३	सामायिक- व्याख्या,	३०१
०१३	--उपक्रम-आदि:		६६६	--दशधा सामाचारी	०५०	-----	उद्देश-वाचना-अनुज्ञा आदि:	---
			७५४	--निक्षेप, नय, प्रमाणादि	०८७	-----	सूत्र स्पर्शे भङ्गा:	---
			७७८	--निह्नव वक्तव्यता	१२३	-----	सामायिक-उपसंहार:	---
			७८९	--सामायिकस्वरुपम्	१३९			
			८१२	--गति आदि द्वाराणि	१४९			

मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक	मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक	मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:
---	----------	---	०३-०९	२-चतुर्विंशतिस्तव:	3/	१०- --	३-वंदनकं	3/
११-३६	४-प्रतिक्रमणं	3/	३७-६२	५-कायोत्सर्गं	3/	६३-९२	६-प्रत्याख्यानं	3/

आवश्यक सटीकं (संक्षिप्त) विषयानुक्रम

निर्युक्ति / भाष्य	अध्ययनं	पृष्ठांक:	नि./भा.	अध्ययनं	पृष्ठांक:	नि./भा.	अध्ययनं	पृष्ठांक:
	भाग-3							
				अध्ययनं-४- प्रतिक्रमणं				
	अध्ययनं-२-			नमस्कार व सामायिक-सूत्रं			अध्ययनं-५- कायोत्सर्ग:	
	सूत्रपाठ:, कीर्तनं, प्रतिज्ञा,			चत्वार: लोकोतम-मङ्गल			सूत्रपाठ:, कायोत्सर्गस्थापना	
	--अर्हत: विशेषणं,			एवं ----------शरणभूत			श्रुतस्तव, सिद्धस्तवादि	
	--ऋषभादि नामानि,			संक्षिप्त व ईर्यापथ				
				शयन संबंधी प्रतिक्रमणं				
	अध्ययनं-३- वन्दनं			भिक्षाचर्याया: प्रतिक्रमणं			अध्ययनं-६- प्रत्याख्यानं	
	--गुरुवन्दन सूत्रपाठ:			स्वाध्याय,			सम्यक्त्व एवं श्रावकव्रत-	
	--मितावग्रह प्रवेशयाचना			असंयम आदि ३३-			प्रतिज्ञा	
	--क्षमापना, प्रतिक्रमण-			सूत्रोच्चारणे मिथ्यादुष्कृतम्			विविध प्रत्याख्यानादि:	
				प्रवचनस्तुति, वंदना,				

***** आवश्यक-चूर्णि के इस विषयानुक्रम के पृष्ठांक हमने दुसरे भाग मे दिये है**

[आवश्यक-चूर्णि] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

यह प्रत सबसे पहले "आवश्यकसूत्र (पूर्वभाग)" के नामसे सन १९२८ (विक्रम संवत १९८४) में ऋषभदेवजी केशरमलजी श्वेताम्बर संस्था द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब |

वृत्ति की तरह चूर्णी के भी दुसरे प्रकाशनों की बात सुनी है, जिसमे ऑफसेट-प्रिंट और स्वतंत्र प्रकाशन दोनों की बात सामने आयी है, मगर मैंने अभी तक कोई प्रत देखी नहीं है |

✣ - हमारा ये प्रयास क्यों? -✣ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने उन सभी प्रतो को स्केन करवाई , उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया , जिसके बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी , ऊपर शीर्षस्थानमे आगम का नाम , फिर श्रुतस्कंध-अध्ययन-उद्देशक-मूलसूत्र-निर्युक्ति आदि के नंबर लिख दिए , ताकिँ पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन, उद्देशक आदि चल रहे है उसका सरलतासे ज्ञान हो शके , बायीं तरफ आगम का क्रम और इसी प्रत का सूत्रक्रम दिया है , उसके साथ वहाँ 'दीप अनुक्रम' भी दिया है , जिससे हमारे प्राकृत , संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके | हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है , इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है , मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ कौंस [-] दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी दो लाइन खींची है|

इस आगमचूर्णि के प्रकाशनोमें भी हमने उपरोक्त प्रकाशनवाली पद्धत्ति ही स्वीकार करने का विचार किया था , परंतु चूर्णि और वृत्ति की संकलन पद्धत्ति एक-समान नही है , चूर्णिमे मुख्यतया सूत्रों या गाथाओ के अपूर्ण अंश दे कर ही सूत्रो या गाथाओ को सूचित कर के पूरी चूर्णि तैयार हुई है , कईं निर्युक्तियां और भाष्य दिखाई नही देते , कोइ-कोइ निर्युक्ति या भाष्य के शब्दो के उल्लेख है , उनकी चूर्णि भी है पर उस निर्युक्ति या भाष्य स्पष्टरूप से अलग दिखाई नहि देते | इसीलिए हमें यहाँ सम्पादन पद्धत्ति बदलनी पड़ी है | हमने यहाँ उद्देशक आदि के सूत्रो या गाथाओ का क्रम, [१-१४, १५-२४] इस तरह साथमे दिया है, निर्युक्ति तथा भाष्यो के क्रम भी इसी तरह साथमे दिये है और बायीं तरफ़ उपर आगम-क्रम और नीचे इस चूर्णि के सूत्रक्रम और दीप-अनुक्रम दिए है, जिससे आप हमारे आगम प्रकाशनोंमे प्रवेश कर शकते है|

शासनप्रभावक पूज्य आचार्यश्री हर्षसागरसूरिजी म०सा० की प्रेरणासे और श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैनसंघ, पालडी, अमदावाद की संपूर्ण द्रव्य सहाय से ये 'सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि' भाग-४ का मुद्रण हुआ है, हम उन के प्रति हमारा आभार व्यक्त करते है |

.....मुनि दीपरत्नसागर

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री जिनदासगणिमहत्तरकृता श्रीआवश्यकचूर्णि: भाग-२

धूली १ पिवीलियाओ २ उद्देसा ३ चेव तहय उण्होला ४ ।
विच्चुय ५ नउला ६ सप्पा ७ य मूसगा ८ चेव अट्ठमगा ॥४-४५॥५०२ ॥
हत्थी ९ हत्थिणियाओ १० पिसायए ११ घोररूवचग्घे य १२ ।
थेरी १३ थेरी १४ सूतो १५ आगच्छइ पक्कणो य तथा १६ ॥४-४६॥५०३ ॥
खरवात १७ कलंकलिया १८ कालचक्कं तहेव य १९ ।
पाभाइयउवसग्गे २० वीसइमे तहय अणुलोमे ॥ ४-४७ ॥ ५०४ ॥

ताहे सामिस्स उवरिं वज्जधूलीवरिसं च वरिसेंति जाव अच्छीणि कन्ना य सव्वसोत्ताणि पूरियाणि, निरुस्सासो जातो, तेण सामी तिलतुसतिभागमेत्तंपि झाणाओ ण चलितो । ताहे संतो तं साहरित्ता ताहे कीडियाओ विउव्वति, वज्जतुंडाओ समंततो विलग्गातो खायंति, अन्नाओ सोत्तेहिं अंतोसरीरगं अणुपविसित्ता अण्णेण सोत्तेण अतिंति अन्नेण णिंति, चालणी जारिसो कओ, तहवि भगवं न चलिओ । ताहे उद्देसे विउव्वति वज्जतुंडे, जे लोहितं एगेण पहारेण णीणिंति । जाहे तहवि ण सक्का ताहे उण्हेलाओ विउव्वति । उण्होला-तेल्लपातियाओ । तातो तिक्खेहिं तुंडेहिं अतीव दसंति, जहा जहा उवसग्गं करेंति तहा तहा सामी अतीव झाणेण अप्पाणं भावेति, जहा-'तुमए चेव कतामिणं, ण सुद्धचारिस्स दिस्सए दंडो' । जाहे ण सक्का ताहे विच्चुए विउव्वति, ते खायंति । तहवि ण सक्का, ताहे णउले विउव्वति, ते तिक्खाहिं दाढाहिं दसंति, खंडखंडाइं च अवणेंति, पच्छा सप्पे विसरोससंपुन्ने

आवश्यक-चूर्णे: प्रथम भागे उल्लिखित: संगमदेवकृता उपसर्गा: इत: आरभ्यते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ ॥३०५॥

उग्गविसे डाहजरकारए जहा कामदेवस्स, तेहिवि ण सक्का । पच्छा मूसए विउव्वइ, ते तिक्खाहिं दाढाहिं दसंति, खंडाणि य अवणेत्ता तत्थेव वोसिरंति मुत्तपुरिसं, तो अतुला वेयणा । जाहे ण सक्का ताहे हत्थिरूवं विउव्वति, जहा कामदेवे, तेण हत्थिरूवेण सोंडाए गहाय सत्तट्ठतले आगासे उव्विहित्ता पच्छा दंतमुसलेहिं पडिच्छति, पुणोऽवि भूमीए ओविंधति, चलणतलेहिं मंदरगरुएहिं मलेति । जाहे ण सक्का ताहे हत्थिणियारूवं विउव्वति, ताहे हत्थिणिया सुंडएहिं दंतेहिं विंधति फालेति य, पच्छा कातितेण सिंचति, तंमि य मुत्तचिक्खल्ले खारे पाडेत्ता चलणेहिं मलेति । जाहे ण सक्का ताहे पिसायरूवं विउव्वति, जहा कामदेवस्स, तेण उवसग्गं करेति । जाहे ण सक्का ताहे वग्घरूवं विउव्वति, सो दाढाहि य नक्खेहि य फालेति, खारकाइएण य सिंचति । जाहे ण सक्का ताहे सिद्धत्थरायरूवं विउव्वति, सो कडुाणि कलुणाणि विलवति--एहि पुत्तगा !, विभासा, मा उज्झाहि । ताहे तिसलाविभासा । जाहे ण सक्का ताहे सूतं, किह ?, सो ततो खंधावारे विउव्वति, सो परिपेरंतेसु आवासितो, तत्थ सूतो पत्थरे अलभंतो दोण्हवि पादाण मज्झे वज्जग्गिं जालेत्ता पाषाण उवरि उक्खलियं काउं पयइओ । जाहे एएणऽवि ण सक्का तओ पक्कणं विउव्वति, सो तापि पंजरगाणि बाहासु गलए य कन्नेसु य ओलएति, ते सउणा गातं तुंडेहिं खायंति विंधंति य, सव्वं काइयं च वोसिरंति । पच्छा खरवायं विउव्वति, जेण सक्को मंदरोवि चालेउं, न पुण सामी चलइ, तेणुव्विहित्ता २ पाडेति । पच्छा कलंकलिताबायं विउव्वति, तेण जहा चक्काइद्धओ तहा भमाडिज्जइ, णत्तिआवेत्तं वा । एवंपि ण सक्का ताहे कालचक्कं विउव्वति, तं विउव्विऊण उड्ढं गगणग-तलं गतो एत्ताहेणं मारेमित्ति मुयति वज्जासणिसंनिभं, जं मंदरंपि चुरेज्जा, तेण पहारेण भगवं ताव निब्बुड्डो जाव अग्गणहा हत्थाणं । जाहे तेणावि ण सक्को ताहे चिंतेति--न सक्को एस मारेउंति अणुलोमे करेमि । ताहे सामाणियदेविड्ढिं देवो दाएति, सो

संगमक कृता उपसर्गाः

॥३०५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ

॥३०६॥

विमाणगतो भणति य-वरेह महरिसि ! निप्फत्ती सग्गमोक्खाणं। ताहे पभायं विउव्वति, लोगो सव्वो चेकमितुं पयत्तो, भणति- देवज्जगा ! अज्जवि अच्छसि?, भगवंपि कालमाणेण जाणति जहा ण ताव पभायंति जाव सभावपहायंति, एस वीसतिमो। अन्ने भणंति- जहा किर दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुत्तिं दिव्वं देवपभावं उवदंसेति, मणोहरे य सद्दरूवगंधरसफरिसे सुसंभिते छप्पिय उड्ड मणुन्ने मणाणुकूलं च दप्पणं विंहणं सुहारिं विचित्तवरपुप्फवद्दलं सुगंधिं रम्मं, तह मेहवद्दलं विचित्तं, दंसेति य इत्थिया सुरूवा, पेसेइ य अच्छरा सुरम्मा सोम्मा सव्वंगसुंदरीओ पहाणमहिलागुणेहिं जुत्ता अकंतविसप्पिमयुयसुमालकुंमसंठितविसिट्ठचलणा उज्जुमयुयपीवरसुसाहतंगुलीओ अब्भुन्नतरयिततलिणतंबसुनिभरुयिरणिद्धणक्खा रोमरहितवट्टलट्ठसंठियअजहन्नपसत्थलक्खणअकोप्पजंघजुयला सुणिमियसुणिगूढजाणुमंडलपसत्थसुबद्धसंधी कदलीखंभातिरेगसंठिताणिच्चणसुकुमालमउयमंसलअविरलसमसहितसुजातवट्टपीवरनिरंतरोरू अट्ठावयवीतिपट्टसंठितपसत्थविच्छिन्नपिहुलसोणी वयणायामप्पमाणदुगुणितविसालमंसलसुबद्धजहणवरधारिणीओ वज्जविराइयपसत्थलक्खणनिरोदरी तिवलिवलिततणुणमितमज्झिताओ उज्जुयसमसहितजच्चतणुकसिणनिद्धआएज्जलडहसुजातमउयसुविभत्तकंतसोभंतभरुइररमणिज्जरोमराती गंगावत्तपयाहिणावत्ततरंगभंगरविकिरणतरुणबोहितआयोसायंतपउमगंभीरविय डणाभा अणुब्भडपसत्थसुजातपीणकुच्छी संनतपासा संगतपासा सुजातपासा मितमाइयपीणरइयपासा अकरंडुयकणगभयगनिम्मलसुजातनिरुवहतगातलट्ठीओ कंचणकलसप्पमाणसमसहितलट्ठचुच्चुयआमेलगजमगजुयलवट्टियअक्खुत्तयपीणरयितसंठितपीवरपओहराओ भुजगअणुपुव्वतणुगगोपुच्छवट्टसमसहितणमितआदेज्जललितबाहा तंबणहा मंसलग्गहत्था पीवरकोमलवरंगुली निद्धपाणिलेहा रविससिसंखवरचक्कसोत्थियविभत्तसुविरतियपाणिलेहा पीणुन्नयकक्खवक्खत्थीपएसा पडिपुन्नगलकवोला चतुरंगुलसुपमाण-

देवीकृता उपसर्गाः

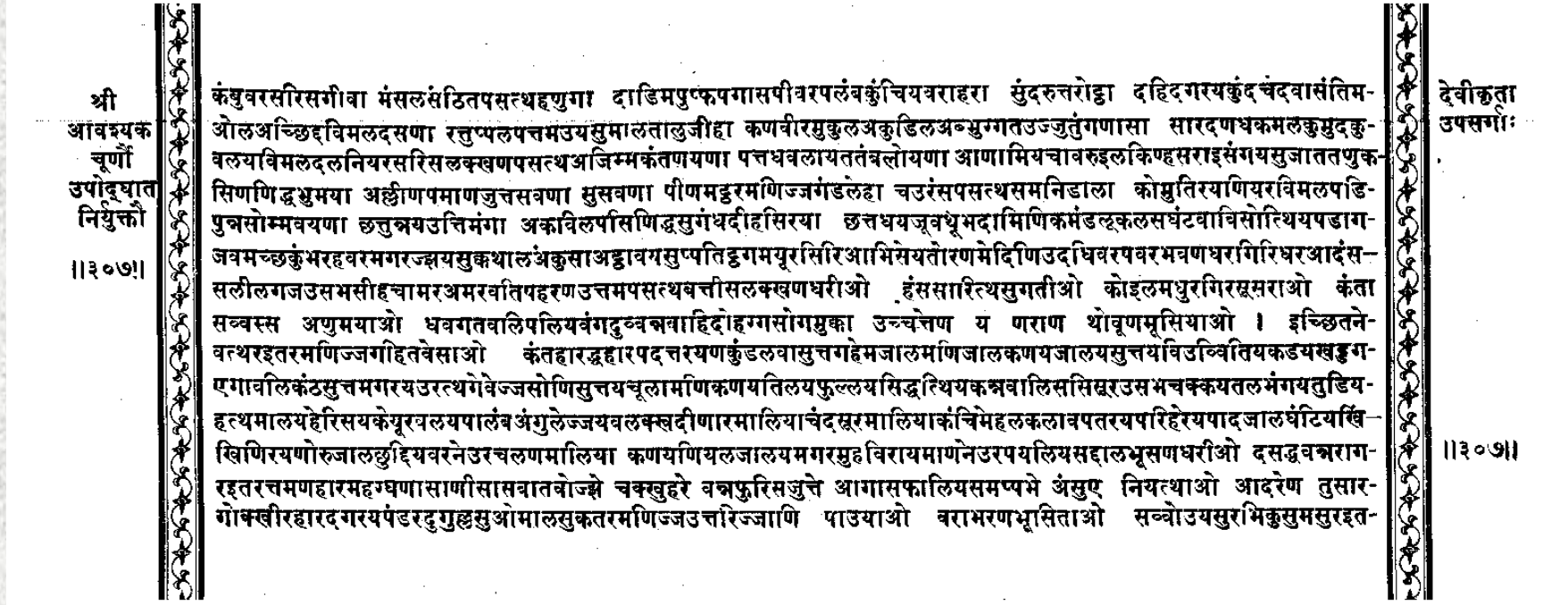
॥३०६॥

अथ देवीकृत् उपसर्गस्य वर्णनं क्रियते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३०७॥

कंबुवरसरिसगीवा मंसलसंठितपसत्थहणुगा दाडिमपुप्फपगासपीवरपलंबकुंचियवराहरा सुंदरुत्तरोट्ठा दहिदगरयकुंदचंदवासंतिम-
ओलअच्छिद्दविमलदसणा रत्तुप्पलपत्तमउयसुमालतालुजीहा कणवीरमुकुलअकुडिलअब्भुग्गतउज्जुतुंगणासा सारदणधकमलकुमुदकु-
वलयविमलदलनियरसरिसलक्खणपसत्थअजिम्मकंतणयणा पत्तधवलायततंबलोयणा आणामियचावरुइलकिण्हसराइसंगयसुजाततणुक-
सिणणिद्धभुमया अल्लीणपमाणजुत्तसवणा सुसवणा पीणमट्ठरमणिज्जगंडलेहा चउरंसपसत्थसमनिडाला कोमुतिरयणियरविमलपडि-
पुन्नसोम्मवयणा छत्तुन्नयउत्तिमंगा अकविलपसिणिद्धसुगंधदीहसिरया छत्तधयजूवथूभदामिणिकमंडलुकलसघंटवाविसोत्थियपडाग-
जवमच्छकुंभरहवरमगरज्झयसुकथालअंकुसाअट्ठावगसुप्पतिट्ठगमयूरसिरिआभिसेयतोरणमेदिणिउदधिवरपवरभवणधरगिरिधरआदंस-
सलीलगजउसभसीहचामरअमरवतिपहरणउत्तमपसत्थबत्तीसलक्खणधरीओ हंससारित्थसुगतीओ कोइलमधुरगिरसूसराओ कंता
सव्वस्स अणुमयाओ धवगतवलिपलियवंगदुव्वन्नवाहिदोहग्गसोगमुक्का उच्चत्तेण य णराण थोवूणमूसियाओ । इच्छितने-
वत्थरइतरमणिज्जगीहतवेसाओ कंतहारद्धहारपदत्तरयणकुंडलवासुत्तगहेमजालमणिजालकणयजालयसुत्तयविउव्वितियकडयखड्डग-
एगावलिकंठसुत्तमगरयउरत्थगेवेज्जसोणिसुत्तयचूलामणिकणयतिलयफुल्लयसिद्धत्थियकन्नवालिससिसूरउसभचक्कयतलभंगयतुडिय-
हत्थमालयहेरिसयकेयूरवलयपालंबअंगुलेज्जयवलक्खदीणारमालियाचंदसूरमालियाकंचिमेहलकलावपतरयपरिहेरयपादजालघंटियखिं-
खिणिरयणोरुजालछुद्दियवरनेउरचलणमालिया कणयणियलजालयमगरमुहविरायमाणेनेउरपयलियसद्दालभूसणधरीओ दसद्धवन्नराग-
रइतरत्तमणहारमहग्घणासाणीसासवातवोज्झे चक्खुहरे वन्नफुरिसजुत्ते आगासफालियसमप्पभे अंसुए नियत्थाओ आदरेण तुसार-
गोक्खीरहारदगरयपंडरदुगुल्लसुओमालसुकतरमणिज्जउत्तरिज्जाणि पाउयाओ वराभरणभूसिताओ सव्वोउयसुरभिकुसुमसुरइत-

देवीकृता उपसर्गाः

॥३०७॥

विचित्तमल्लधारिणीओ सुगंधचुण्णंगरागवरवासपुप्फुत्तरपवराइआओ वरचंदणचच्चिताओ उत्तमवरधूववूधिताओ अधिअसस्सिरीआओ दव्वकुसुममल्लदामगब्भंजलिपुडाओ चंदाणणाओ चंदविलासिणीओ चंडद्धसमणिडालाओ उक्का इव उज्जोवेमाणीओ विज्जुघणमिरीयिसूरदिप्पंततेयअधिकतरसंनिकासाओ सिंगारागारचारुवेसाओ संगतगतहसितभणितचिट्ठितविलाससललियसंलावनिपुणजुत्तोवयारकुसलाओ सुंदरथणजहणवयणकरचरणणयणलायन्नवन्नरूवजोव्वणविलासकलियाओ सुरवरवधूओ सिरीसणवणीतमउलसुकुमालतुल्लफासाओ ववगतकलिकलुसवातनिद्धंतरयमउलाओ सोमाओ कंताओ पियदंसणाओ सुसीलाओ सिंगाररसुत्तुहयाओवि पेच्छिऊणंपि बहूणं मयणुम्मायजणणीओ, एगंतरतिपसन्ननिच्चं पमत्तविसयसुहमुच्छिताओ समतिकंता य बालभावं मज्झिमजरढवयविरहिताओ अतिवरसोमचारुरूवनिरुवहतसरसजोव्वणकक्कसतरुणवयभावमुवगताओ सभावसव्वंगसुंदरंगीओ ।

तए णं ताओ सामिं अप्पडिरूवरूवलायन्नजोव्वणसोहग्गअपरिमितगुणसयसहस्सकलितं बहूहिं मउएहिं अणुलोमेहिं सिंगारएहिं कोलुणिएहिं उवसग्गेहिं उवसग्गेंति । तप्पढमताए बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वंति, तत्थ णं अणेगखंभसयसंनिवद्धं जाव सिरीए अतीव उवसोभेमाणं पेच्छाहरमंडवं, तत्थ णं दिव्वणट्टगीतवादितविहिं उवदंसेंति, जाव जुत्तोवचारकलिताओ होऊण सामिस्स पुरतो समामेव समोसरणं करेंति, समामेव पंतीओ बंधंति, समामेव ओणमंति, समामेव उन्नमंति, एवं सहिता २ संगता २ थिमिता २ समामेव पसरंति २ समामेव आउज्जविहाणाइं गेण्हंति, गेण्हेत्ता समामेव पवाइंसु पगाइंसु पणच्चिंसु पमुदितपक्कीलितगीतगंधव्वहरिसितमणा सिरेणं एगतारं उरेणं मंदं कंठेण तारं तिविहं तिसमयेरेयकरं तिगुंजावंकं कुहरोवगूढं सुरतीअणअतिवरचारुरूवं गज्जं पज्जं कत्थं गेयं पदबद्धं पायबद्धं उक्खित्तपयत्तमंदरोइंदयावसाणं सत्तसरसमण्णागयं अट्ठरससंपउत्तं एक्कार-

देवीकृता उपसर्गाः

॥३०८॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

सालंकारं छद्दोसविप्पमुक्कं अट्ठगुणोववेतं रत्तं तित्थाणकरणसुद्धं सक्कतिदीहरकुंजंतवंसतंतीतलतालललहगहसुसंपउत्तं मधुरं समं सललितं मणोहरं मउयरिभितपदसंचारं दिव्वं णट्टं सज्जं गेयं पगीता यावि होत्था।

किं तं उद्धमताणं संखाणं सेंगाणं संखियाणं खरमुहीणं पेयाणं पिरिपिरियाणं, आहम्मंताणं पणवाणं पडहाणं, अप्फालिज्जंताणं भंभाणं होरंभाणं, तालिज्जंताणं भेरीणं झल्लरीणं दुंदुभीणं, आलिप्पंताणं मुरवाणं मुतिंगाणं, उत्तालिज्जंताणं णंदीमुतिंगाणं, आलिंगगाणं पुत्तयाणं गोमुहीणं महलाणं, मुच्छिज्जंतीणं वीणाणं विवच्चीणं वलुक्कीणं, फंदिज्जंतीणं भामरीणं छब्भामरीणं, परिवायणीणं सारिज्जंतीणं पव्वीसगाणं सुघोसाणं णंदिघोसाणं, कुट्टिज्जंताणं महतीणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं, आमेडिज्जंताणं आमोडगाणं झंकाणं णउलाणं, छिप्पंताणं तुन्नकाणं तुंबवीणाणं, अच्छिज्जंताणं मुकुंदाणं हुडुक्कीणं विंखाणं, वाइज्जंताणं करडाणं डिंडिमकाणं किणिकाणं कडंबाणं, उत्तालिज्जंताणं दद्दरिकाणं कुदुव्वराणं कलासिकाणं, आतालिज्जंताणं तालाणं तोलाणं कंसतालाणं, घट्टिज्जंतीणं रिकिसिकाणं लत्तिकाणं मकरिकाणं सुसुमारिताणं, फूमिज्जंताणं वंसाणं वालाणं वेलूणं परिलीणं पच्चगाणं, एवमादियाणं एगूणपन्नाणं आउज्जविहाणाणं पवाइज्जंताणं। तएणं से दिव्वे गीते दिव्वे वादिते दिव्वे णट्टे एवं अब्भुते सिंगारे ओराले मणुन्ने मणहरे ओम्मिज्जालामालाभूते कहक्कहभूते दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था।

तए णं ताओ देवीओ सामिस्स तप्पढमयाए सोत्थियसिरिवच्छणंदियावत्तवद्धमाणगभद्दासणकलसमच्छदप्पणमंगलपविभत्तिणाम दिव्वं णट्टविधिं उवदंसेंति, एवं दिव्वं देविड्ढिं जाव बत्तीसतिविहं णट्टविहं उवदंसेंति, सामीवि समदीरसी। जाहे ण सक्का

ताहे अवितित्ता कामाणं मेथुणसंपगिद्धा य मोहभरिया पइरिक्कं काऊण पत्तेयं २ मधुरेहि य सिंगारएहि य कलुणेहि य उवसग्गेहिं उवसग्गेउं पवत्ता यावि होत्था।

उवरिं सामिस्स सललितं णाणाविहचुण्णवासमयं दिव्वं घाणमणणिव्वुतिकरिं सव्वोउयकुसुमवुट्ठिं पमुंचमाणीओ णाणामणि-कणगरयणघंटियणिधुरमेहलारवेण य दिसाओ पूरयंतीओ वयणमिणं बेंति सासकलुसा-सामि होल वसुल गोल णाह दतित पिय कंत रमण निग्घिण नित्थक्क च्छिन्न निक्किव अकतण्णुय सिढिलभाव लुक्ख देव सव्वजीवरक्खग ण जुज्जसि अम्हे अणाहा अवयक्खितुं, तुज्झ चलणओवायकारिया गुणसंकर ! अम्हे तुम्हे विहूणा ण समत्था जीवितुं खणंपि, किं वा तुज्झ इमेण गुणसमुदएण?, एवंविहस्स इमं च विगतघणविमलससिमंडलोवमं सारयणवकमलकुमुदविमकुलदलनिकरसरिसणयणवयणपिवासागता ण सद्धामो पेच्छिउं जे, अवलोए ता इतो अम्हे णाह! जा ते पेच्छामो वयणकमलं णयणुस्सवसच्छहं जगस्स, एवं सप्पणयमधुराइं पुणो कलुणगाणि वयणाणि जंपमाणीओ सरभसउवगूहिताइं बिब्बोयविलसिताणि य विहसितसकडक्खदिट्ठणिस्ससितभणितउवललित-ललितविधयगमणपणयखिज्जियपसादित्ताणि य पकरेमाणीओवि जाहे न सक्का ताहे जामेव दिसं पाउब्भूया जाव पडिगता। एवं अणेगाइं अणुलोमाइं दंसेति। पच्छा भणति-तुट्ठोमि तुज्झ महरिसि! वरेहि, किं देमि?, सग्गं वा ससरीरं णेमि मोक्खं वा पावेमि?, तिण्हंवि लोए तुज्झ पाएसु पाडेमि? तिण्ह वा लोगाण तुमं सामिं करेमि?, एवं

उवहतमतिविज्ञाणो ताहे वीरं चइतुं पसाहेउं। ओहीए निज्झायति झायति छज्जीवहितमेव ॥४--४९।५०६॥

जाहे ण तरति ताहे सुट्ठुतरं पडिनिवेसं गतो कल्ले काहंति । पुणोवि अणुकड्ढति ।

वालुयपंथे तेणा माउल पारणग तत्थ काणच्छी । तत्तो सुभोम अंजलि सुच्छेत्ताए य विडरूवं ॥४-५०।५०७॥

ताहे पभाते सामी वालुयानामग्गामो तं पहाविओ , तत्थ अंतरा पंच चोरसता विगुव्वंति, वालुगं च जत्थ खुप्पति, पच्छा तेहिं माउलोत्ति वाहितो पव्वयगुरुतरगेहिं, सागतं च वज्जसरीरा देंति, जेहिं पव्वतावि फुट्टिज्जा । ताहे वालुगं गतो, सामी भिक्खं हिंडति, तत्थाऽऽवरेतुं भगवतो रूवं काणच्छिं अविरतियाण देंति, जाओ तत्थ तरुणीओ तत्थ हम्मति, ताहे निग्गतो भगवं सुभोमं वच्चति, तत्थवि अतिगतो भिक्खायरियाए, तत्थवि आवरेत्ता महिलाणं अंजलिकम्मं करेति, पच्छा तेहिवि पिट्टिज्जति, ताहे भगवं णीति, पच्छा सुच्छेत्ता णामं गामो, तहिं वच्चति, जाहे अतिगतो सामी भिक्खाए ताहे इमो आवरेत्ता विडरूवं विउव्वति, तत्थ हसति य अट्टट्टहासे य मुंचति गायति य काणच्छिया य जहा विडो तहा करेति असिट्ठाणि य भणति, तत्थवि हम्मति, ताहे ततोवि णीति ।

मलए पिसायरूवं सिवरूवं हत्थिसीसए चेव । ओहसणं पडिमाए समाण सक्को जवणपुच्छा ॥४-५१।५०८॥

ततो मलयं गामं गतो, तत्थ पिसायरूवं विउव्वति, उम्मत्तयं भगवतो रूवं करेत्ता तत्थ अविरतियाओ अवतासेति गेण्हति य, तत्थ चेडरूवेहिं छारक्कयारस्स भरिज्जति, लेट्ठुएहि य हम्मति, ताणि य बीहावेंति, ताणि छोडियपाडियाणि णासंति, तत्थवि कहिते हम्मति । ततो विनिग्गतो हत्थिसीसं णाम गामो तहिं गतो, तत्थवि भगवं भिक्खायरियाए अइगतो, तत्थवि भगवतो सिव-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

रूवं विउव्वति, सागारियं च से कसाइयं करेति, जाहे अविरइयं पेच्छति ताहे उट्ठेति, पच्छा हम्मति, ताहे भगवं चिंतेति-एस निरायं उड्डाहं करेति अणेसणं च, तम्हा गामं चेव ण पविसामि, बाहिं अच्छामि, अन्ने भणंति-जहा पंचालदेवो तहा विगुव्वति, तदा किर पंचालो उप्पन्नो, ततो गामस्स बाहिं निग्गतो, जतो महिलाजूहं ततो सागारिएणं कसाइतेणं अच्छति, ताहे किर ढोंढसिवा पवत्ता, जम्हा सक्केण पूतितो भगवं तहा ठिओ, ताहे सामी चिंतेति-एस निरायं उड्डाहं करेति, तम्हा गामं चेव न अतिमि, एगंते अच्छामि, ताहे संगमओ ओहसति-ण सक्कासि तुमं ठाणाओ चालेउंति, पेच्छामि ता गामं अतिहि, ताहे सक्को आगतो, पुच्छति-भगवं ! जत्ता मे ? जवणिज्जं च मे ? अव्वाबाहं फासुविहारं ?, वंदित्ता पडिगतो ।

ओसलि खड्डगरूवं संधिच्छेदो इमोत्ति वज्झो य। मोएइ इंदजालिय तत्थ महाभूतिलो नामं ॥ ४-५२।५०९ ॥

ताहे सामी तोसलिं गतो, बाहिं पडिमं ठितो, ताहे सो देवो चिंतेति-एस ण पविसति, तो एत्थवि से ठियस्स करेमि, ताहे खुड्डगरूवं विउव्वित्ता संधिं छिंदति, उवगरणेहिं गहिएहिं, वत्तीए तत्थ गहितो, सो भणति-मा मं हणह, अहं किं जाणामि?, आयरितेण अहं पेसितो, कहिं सो?, एस बाहिं असुगउज्जाणे, तत्थ हम्मति वज्झति य, मारिज्जतुत्ति वज्झो णीणिओ, तत्थ भूतिलो नाम इंदजालितो, तेण सामी कुंडग्गामे दिट्ठतो, ताहे सो मोएति, साहति य जहा-एस रायसिद्धत्थपुत्तो, मुको खामितो य, खुड्डओ मग्गिओ, ण दिट्ठो, णायं जहा देवो से उवसग्गं करेति ।

मोसलि संधिसमागममागहओ रट्ठितो पितुवयंसो। तोसलि य सत्त रज्जू वावत्ति. तोसली मोक्खो॥४-५२।५१०॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

ततो भगवं मोसलिं गतो, बाहिं पडिमं ठितो, इमो खुड्डगरूवं विउव्वित्ता खत्तं खणति, तत्थवि तहेव घेप्पति, बंधिऊणं मारिज्जइत्ति, तत्थ सुमागधो णाम रट्ठिओ सामिस्स पितुवयंसो, सो मोएति, कहितं च, खुड्डओ गहितो, तहेव भट्ठो। ततो भगवं तोसलिं गतो, तत्थवि बाहिं पडिमं ठितो, तत्थवि देवो खुड्डरूवं विउव्विता संधिमग्गं सोहेति, पडिलेहेति य, सामिस्स पासे सव्वाणि खत्तोवकरणाणि विगुव्वति, ताहे सो खुड्डओ गहितो, तुमं कीस एत्थ सोहेसि ?, सो साहति-मम धम्मायरियो रत्तिं मा कंटए भज्जावेहिति, सो रत्तिं खणओ णीहिति, सो कहिं ?, कहितो, गता, दिट्ठो सामी, ताणि य परिपेरंतेण पासति, गहितो, आणीतो, ताहे उक्कलंबितो, एक्कसिं रज्जू छिन्नो, एवं सत्त वारा छिन्नो, ताहे सिट्ठं तस्स तोसलियस्स खत्तियस्स, सो भणति-मुयह एस अचोरो, निद्दोसो, तं खुड्डयं मग्गह, जाव ण दीसति, ताहे णायं तं जहा देवोत्ति।

संगमक-कृता उपसर्गाः

सिद्धत्थपुरे तेणोत्ति कोसिओ आसवाणिओ मोक्खो। वयगामहिंडणेसण वितियदिणे येति उवसंतो॥ ४-५४।५११॥

ततो सिद्धत्थपुरं नाम गामो, तत्थ भगवं गतो, तत्थवि तेण देवेण तहा कयं जहा तेणोत्ति गहितो, तत्थ कोसिओ नाम आसवाणियओ, तेण सामी कुंडगामे दिट्ठेल्लओ, तेण मोयावितो, केती भणंति-तत्थ कोसितो नाम आसवाणिओ सामिं दट्ठुं निग्गमए अमंगलंति असिं कड्ढिऊण आगतो, सक्केण तस्सेव उवरिं दिन्नो, स मतो य, ततो सामी वयग्गामं गोउलं पत्तो, तत्थ य तद्दिवसं छणो, सव्वत्थ परमन्नं उक्खडियं, चिरं कालं तस्स देवस्स ठितगस्स उवसग्गं काउं, सामी चिंतेति-गता छम्मासा, मा गतो होज्जत्ति अतिगतो जाव अणेसणातो करेति, जाव सामी उवउत्तो पासति, ताहे अद्धहिंडितो चेव नियत्तो, बाहिं पडिमं ठितो,

॥३१३॥

सो य सामीं ओहिणा आभोएइ-किं भग्गपरिणामो नवत्ति?, ताहे सामी तहेव विसुद्धपरिणामो छज्जीवहितं झायति, ताहे दट्ठुं आउट्टो, ण तीरेति चालेउंति, जो एच्चिरेणवि कालेणं छम्मासेहिं ण चलिओ एस दीहेणावि कालेणं ण सक्को चालेउं, ताहे पादेसु पडितो भणति-सच्चं सच्चं जं सक्को भणति, सव्वं खामेमि । भगवं अहं भग्गपइन्नो तुज्झे समत्तपइन्ना । भणति य—

वच्चह हिंडह ण करेमि किंचि इच्छा ण किंचि वत्तव्वो । तत्थेव वत्थवाली थेरी परमन्न वसुहारा ॥ ४-५५।५१२ ॥

जहा एत्ताहे अतीह पारेह, ण करेमि उवसग्गं भगवं ?, सामी भणति-भो संगमया ! णाहं कस्सति य वत्तव्वो, इच्छाए अतीमि वा ण वा, ता बीयदिवसे तत्थेव गामे भगवं हिंडमाणो वत्थवालथेरीए दोसीणेण पायसेण पडिलाभितो, पंच दिव्वाणि, एगे भणंति-तद्दिवसं ताए खीरं ण लद्धं, बितियदिवसे ओहारेऊण उक्खडितं, तेण पडिलाभितो, पंच दिव्वा ।

छम्मासे अणुबद्धं देवो कासी य सो तु उवसग्गं । दट्ठूण वयग्गामे वंदिय वीरं पडिनियत्तो ॥ ४-५६।५१३ ॥

देवो चु(ठि)तो महिड्ढी सो मंदरचूलियाए सिहरंमि । परियरिओ सुरवहूहिं तस्स य अयरोवमं सेसं ॥४-५७।५१४॥

इतो य सोहम्मे सव्वे देवा तद्दिवसं उव्विग्गमणा अच्छंति, संगमतो सोहम्मं गतो, तत्थ सक्को तं दट्ठूण परमुहो भणति देवे-भो सुणह ! एस दुरप्पो, ण एतेण अम्हं चित्तरक्खा कता अन्नेसिं च देवाणं, पुणो य तित्थगरपडिणीओ, ण एतेण अम्हं कज्जं, असंभासो निव्विसओ य कीरतु, ताहे पाएण निच्छूढो, सो मंदरचूलियाए उवरिं जाणतेणं विमाणेणं आगम्म ठितो, देवीहि विन्नवितो, ताओ विसज्जिताओ, सेसा देवा इंदेण वारिया, तस्स सागरोवमं एक्क सेसा ठिती ।

संगमक कृता उपसर्गाः

॥३१४॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३१५॥

आलभिय हरि पियपुच्छ जितउवसग्गात्ति थोवमवसेसं। हरिसह सेयवि सावत्थि खंदपडिमा य सक्को उ ॥ (आलभियाए हरि विज्जु जिणस्स भत्तीए वन्दओ एइ। भगवं पिअपुच्छा जियउवसग्गत्ति थेवमवसेसं ॥५१५॥ हरिसह सेयवियाए सावत्थी खंधपडिम सक्को य। ओयरिउं पडिमाए लोगो आउट्टिओ वंदे ॥ ५१६ ॥ (इत्येवं गाथाद्वयं हारिभद्रीयवृत्तिगतं)

ततो आलभियं गतो, तत्थ हरिविज्जुकुमारिंदो एति, ताहे सो वंदित्ता भगवतो महिमं काऊण भणति-भगवं ! पियं पुच्छामि, णिच्छिन्ना उवसग्गा, बहुं गतं थोवयं अवसेसं, अचिरेण ते कालेण केवलणाणं उप्पज्जिहिति। ततो सेयावियं गतो, तत्थ हरिस्सहो पियं पुच्छओ एति, ततो सावत्थिं गतो, बाहिं पडिमं ठितो, तत्थ य लोगो खंदपडिमाए महिमं करेति, सक्को ओहिं पउंजति, जाव पेच्छइ खंदपडिमाए पूयं, सामिं णाढायंतित्ति, ओतिन्नो, सा य अलंकिता रहं विलग्गिाहीतित्ति, सक्को य आगतो, तं पडिमं अणुपविट्ठो, ताहे पच्चक्कमिता, लोगो तुट्ठो देवो सयमेव रहं विलग्गतित्ति, जाव सामीं गंतूणं वंदति, ताहे लोगो आउट्टो, एस देवेदेवोत्ति महिमं करेंति जाव अच्छितो।

कोसंबी चंदसूरोतरणं वाणारसीय सक्को उ। रायगिहे ईसाणो महिला जणओ य धरणो य ॥ ४-६०।५१७॥

ताहे सामी कोसंबिं गतो, तत्थ चंदसूरा सविमाणा महिमं करेंति, पियं च पुच्छंति, वाणारसीय सक्को पियं च पुच्छति, रायगिहे ईसाणो पियं पुच्छति, महिलाए वासारत्तो एक्कारसमो, चाउम्मासखमणं करेति, तत्थ धरणो आगतो पियं पुच्छओ,

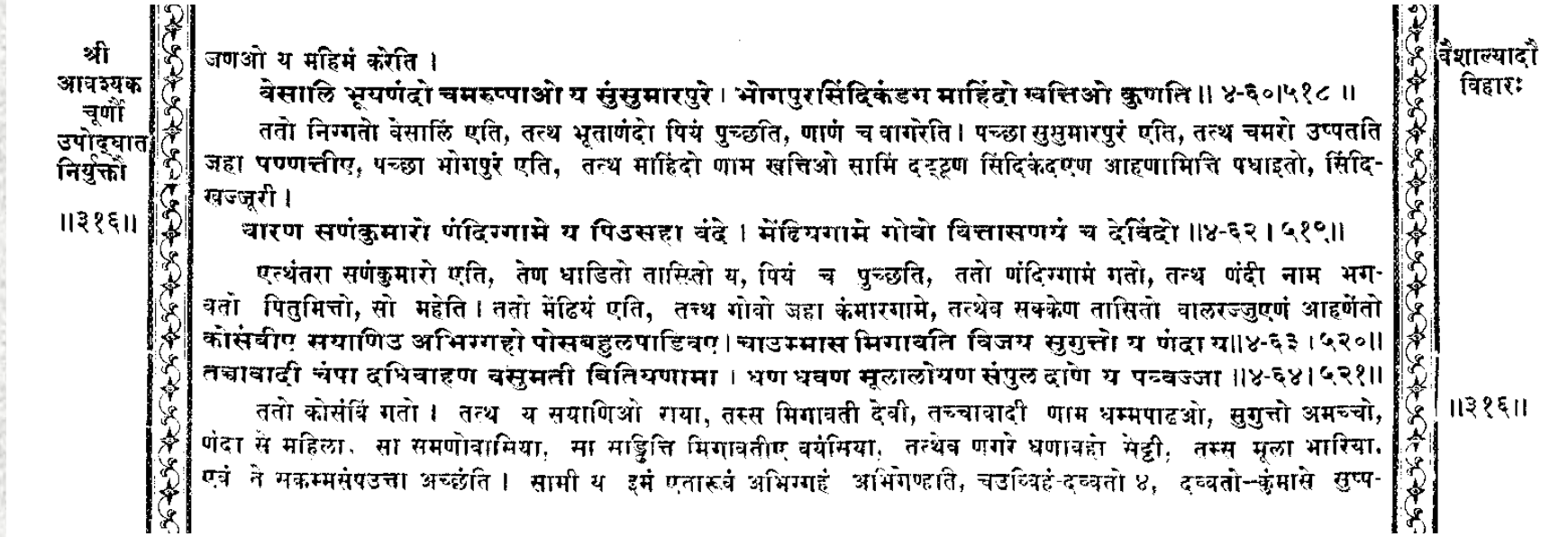
आलभिकादौ विहारः

॥३१५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ ॥३१६॥

जणओ य महिमं करेंति ।

वेसालि भूयणंदो चमरुप्पाओ य सुंसुमारपुरे । भोगपुरसिंदिकंडग माहिंदो खत्तिओ कुणति ॥ ४-६०।५१८ ॥

ततो निग्गतो वेसालिं एति, तत्थ भूतांणंदो पियं पुच्छति, णाणं च वागरेति। पच्छा सुसुमारपुरं एति, तत्थ चमरो उप्पतति जहा पण्णत्तीए, पच्छा भोगपुरं एति, तत्थ माहिंदो णाम खत्तिओ सामिं दट्ठूण सिंदिकंदएण आहणामित्ति पधाइतो, सिंदि-खज्जूरी ।

चारण सणंकुमारो णंदिग्गामे य पिउसहा वंदे । मेंढियगामे गोवो वित्तासणयं च देविंदो ॥४-६२ । ५१९॥

एत्थंतरा सणंकुमारो एति, तेण धाडितो तासितो य, पियं च पुच्छति, ततो णंदिग्गामं गतो, तत्थ णंदी नाम भग-वतो पितुमित्तो, सो महेति । ततो मेंढियं एति, तत्थ गोवो जहा कुंभारगामे, तत्थेव सक्केण तासितो वालरज्जुएणं आहणेंतो

कोसंबीए सयाणिउ अभिग्गहो पोसबहुलपाडिवए । चाउम्मास मिगावति विजय सुगुत्तो य णंदा य॥४-६३ । ५२०॥

तच्चावादी चंपा दधिवाहण वसुमती बितियणामा । धण धयण सूलालोयण संपुल दाणे य पव्वज्जा ॥४-६४। ५२१॥

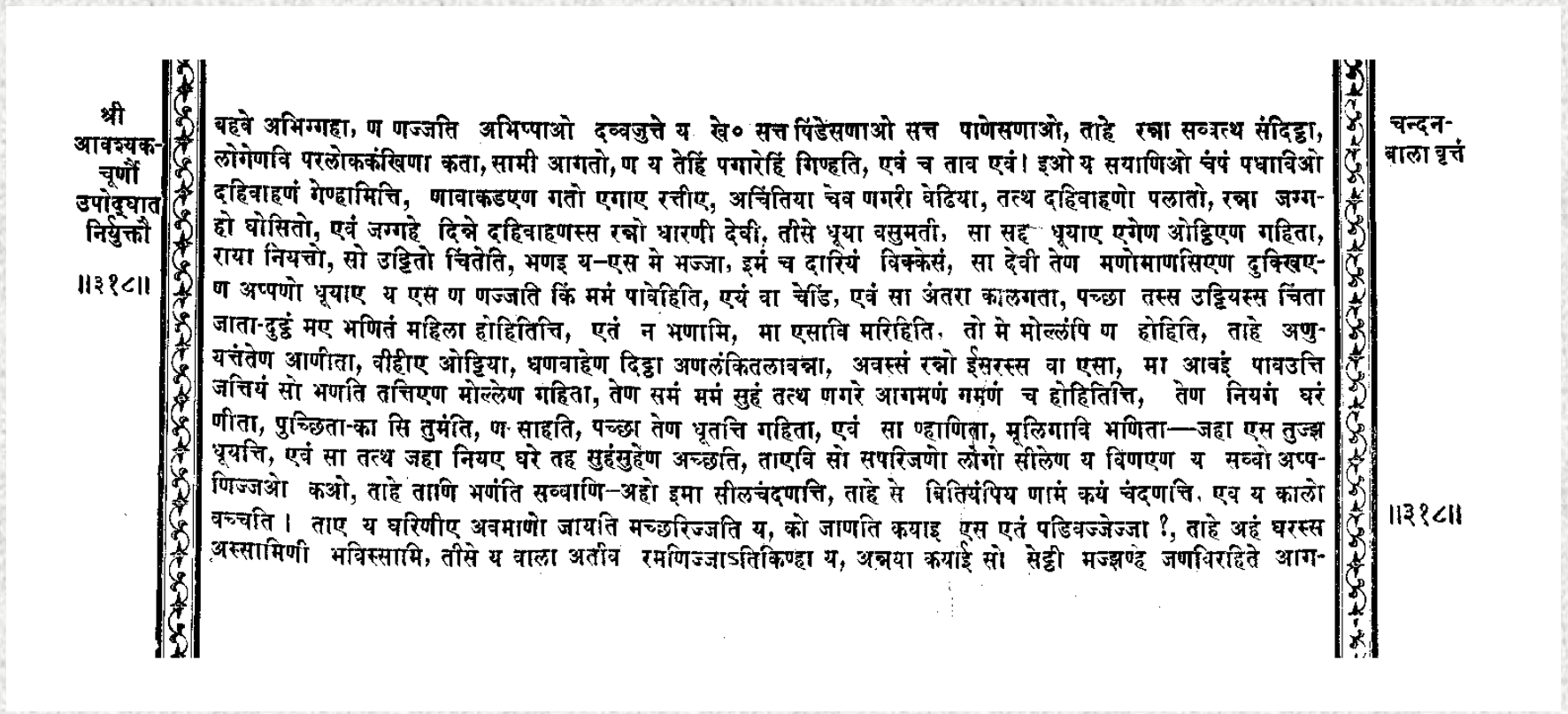
ततो कोसंबिं गतो । तत्थ य सयाणिओ राया, तस्स मिगावती देवी, तच्चावादी णाम धम्मपाढओ, सुगुत्तो अमच्चो, णंदा से महिला, सा समणोवासिया, सा माउत्ति मिगावतीए वयंसिया, तत्थेव णगरे धणावहो सेट्ठी, तस्स मूला भारिया, एवं ते सकम्मसंपउत्ता अच्छंति । सामी य इमं एतारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हति, चउव्विहं-दव्वतो ४, दव्वतो--कुंमासे सुप्प-

वैशाल्यादौ विहारः

॥३१६॥

भगवंत महावीरस्य विशिष्ट अभिग्रह एवं चंदनबालाया: वृतान्त कथयते

कोणेणं, खित्तओ एलुगं विक्खंभइत्ता, कालओ नियत्तेसु भिक्खायरेसु, भावतो जदि रायधूया दासत्तणं पत्ता णियलबद्धा मुंडियसिरा रोयमाणी अब्भत्तट्ठिया, एवं कप्पति, सेसं ण कप्पति, कालो य पोसबहुलपाडिवओ । एवं अभिग्गहं घेत्तूणं कोसंबीए अच्छति, दिवसे दिवसे य भिक्खायरियं फासेति, किं निमित्तं ?, बावीसं परिसहा भिक्खायरियाए उदिज्जंति, एवं चत्तारि मासे कोसंबीए हिंडति, ताहे णंदाए घरमणुपविट्ठो, ताते सामी णातो, ताए परेण आदरेण भिक्खा णीणिता, सामी विनिग्गतो, सा अधितिं पकता, ताहे दासीओ भणंति--एस देवज्जओ दिवे दिवे एत्थ एति, ताहे ताए णातं-नूणं भगवतो कोति अभिग्गहो, ताहे निरायं चेव अद्धिती जाया। सुगुत्तो अमच्चो आगतो, ताहे सो पुच्छति, भणति—किं अद्धितिं करेसि?, ताए से कहितं, भणति—किं अम्हं अमच्चत्तणेण ?, एच्चिरं कालं सामी भिक्खं ण लभति, किं च ते विन्नाणेणं ? जदि एतं अभिग्गहं ण जाणासि, तेण सा आसासिता, कल्ले समाणे दिवसे जहा लभति तहा करेमि। एताए कहाए वद्धमाणीए विजया णामं पडिहारी मिगावतीए सतिया, सा केणवि कारणेण आगता, सा तं उल्लावं सोऊणं मिगावतीए साहति, मिगावतीवि तं सोउणं महता दुक्खेण अभिभूता, सा चेडगभूता, अतीव अद्धितिं पकया, राया य आगतो पुच्छति, भणति किं तुज्झ रज्जेण मए वा ?, एवं सामिस्स एवतियं कालं हिंडंतस्स अभिग्गहो ण णज्जति, ण वा जाणासि एत्थ विहरंतं, तेण आसासिता, तहा करेमि जहा कल्ले लभति, ताहे सुगुत्तं अमच्चं सद्दावेति अंबाडेति य, जहा तुमं सामिं आगतं ण जाणसि ?, अज्ज किर चउत्थो मासो हिंडंतस्स, ताहे तच्चावादी सद्दावितो, ताहे सो पुच्छति सयाणिएणं-तुज्झं धम्मसत्थे सव्वपासंडाणं आयारा आगता, ते तुमं साहह, इमोऽवि भणितो-तुमं बुद्धिबलिओ साह, ते भणंति—



श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३१८॥

चन्दन-बाला वृत्तं

बहवे अभिग्गहा, ण णज्जति अभिप्पाओ दव्वजुत्ते य खे० सत्त पिंडेसणाओ सत्त पाणेसणाओ, ताहे रन्ना सव्वत्थ संदिट्ठा, लोगेणवि परलोककंखिणा कता, सामी आगतो, ण य तेहिं पगारेहिं गिण्हति, एवं च ताव एवं। इओ य सयाणिओ चंपं पधाविओ दहिवाहणं गेण्हामित्ति, णावाकडएण गतो एगाए रत्तीए, अचिंतिया चेव णगरी वेढिया, तत्थ दहिवाहणो पलातो, रन्ना जग्गहो घोसितो, एवं जग्गहे दिन्ने दहिवाहणस्स रन्नो धारणी देवी, तीसे धूया वसुमती, सा सद्द धूयाए एगेण ओट्ठिएण गहिता, राया नियत्तो, सो उट्ठितो चिंतेति, भणइ य–एस मे भज्जा, इमं च दारियं विक्केसं, सा देवी तेण मणोमाणसिएण दुक्खिएण अप्पणो धूयाए य एस ण णज्जति किं ममं पावेहिति, एयं वा चेडिं, एवं सा अंतरा कालगता, पच्छा तस्स उट्ठियस्स चिंता जाता-दुट्ठं मए भणितं महिला होहितित्ति, एतं न भणामि, मा एसावि मरिहिति, तो मे मोल्लंपि ण होहिति, ताहे अणुयत्तेण आणीता, वीहीए ओट्ठिया, धणवाहेण दिट्ठा अणलंकितलावन्ना, अवस्सं रन्नो ईसरस्स वा एसा, मा आवइं पावउत्ति जत्तियं सो भणति तत्तिएण मोल्लेण गहिता, तेण समं ममं सुहं तत्थ णगरे आगमणं गमणं च होहितित्ति, तेण नियगं घरं णीता, पुच्छिता-का सि तुमंति, ण साहति, पच्छा तेण धूतत्ति गहिता, एवं सा ण्हाणिता, मूलिगावि भणिता—जहा एस तुज्झ धूयत्ति, एवं सा तत्थ जहा नियए घरे तह सुहंसुहेण अच्छति, ताएवि सो सपरिजणो लोगो सीलेण य विणएण य सव्वो अप्पणिज्जओ कओ, ताहे ताणि भणंति सव्वाणि–अहो इमा सीलचंदणत्ति, ताहे से बितियंपिय णामं कयं चंदणत्ति, एव य कालो वच्चति। ताए य घरिणीए अवमाणो जायति मच्छरिज्जति य, को जाणति कयाइ एस एतं पडिवज्जेज्जा ?, ताहे अहं घरस्स अस्सामिणी भविस्सामि, तीसे य वाला अतीव रमणिज्जाऽतिकिण्हा य, अन्नया कयाई सो सेट्ठी मज्झण्हे जणविरहिते आग-

॥३१८॥

तो जाव णत्थि कोयि जो पादे सोचेति, ताहे सा पाणितं गहात निग्गता, तेण वारिया, सा मइ(ड्ढा)ए पधोता, ताए धोयंतीए ते वाला वड्ढेल्लगा फिट्टा, मा चिक्खल्ले पडिहिंतित्ति तस्स य हत्थे लीलाकट्ठतं तेण ते धरिता बद्धा य, मूला य ओलोयणवरगता पेच्छाति, ताए णायं-विणासितं कज्जं, जदि किहइ परिणेति तो अहं का?, सा सामिणी, वासो नगरेवि मे णत्थि, जाव तरुणओ वाधी ताव णं तिगिच्छामित्ति सेट्ठिमि निग्गए ताहे य ण्हावितं वाहरावेत्ता बोडाविता णियलेहि य बद्धा पिट्टिया य, परियणो य अणाए वारितो-जो वाणियगस्स साहति सो मम णत्थि, ताए सो पिल्लितेल्लओ, घरे छोढूण बाहिरि कुडंडिता, सो कमेण आगतो पुच्छति-कहिं चंदणा ?, न कोतिवि साहति भएण, सो जाणति-नूणं सा रमति उवरिं वा, एवं रत्तिंपि पुच्छिता, जाणति सा सुत्ता णूणं, बितियदिवसेवि ण दिट्ठा, ततिए दिवसे घणं पुच्छति, साहह, मा मे मारेह, ताहे थेरदासी एगा चिंतेति—किं मम जीवितेणं ?, स जीवतु वराई, ताए कहितं-असुगघरे, तेण उग्घाडिया, छुहाहतं पेच्छिता, कूरं पमग्गितो जाम(समा)वत्तीए णत्थि, ताहे कुंमासा दिट्ठा, ते दाउं लोहारघरं गतो जा णियलाणि छिंदावेमि, ताहे सा हत्थी जथा कूलं संभरितुमारद्धा एलुगं विक्खंभत्तित्ता, तेहिं पुरतो कएहिं हिदयब्भंतरतो रोवति, सामी य अतिगतो, ताए चिंतियं-एतं साभिस्स देमि मम एतं अधम्मफलं, भणति—भगवं ! कप्पति?, सामिणा पाणी पसारितो, चउव्विहोवि पुण्णो, पंच दिव्वाणि, ते से वाला तदवत्था, ताहे चेव ताणि नियलाणि फुट्टाणि, सोवचिताणि कडगाणि णीउराणि य जाताणि, देवेहि य सव्वालंकारा कता, सक्को य देवराया आगतो, पंच दिव्वाणि, अद्धतेरस हिरण्णकोडीओ पडियाओ। इतो य कोसंबीए सव्वतो उक्कुट्ठं—केणइ पुण्णमंतेण अज्ज सामी पडिलाभितो, ताहे राया संतेपुरपरियणो आगतो। तत्थ संपुलो णाम दहिवाहणस्स कंचुइज्जो, सो बंधित्ता आणियओ, तेण सा नाया, सो पादेसु

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पडिच्चा परुन्नो--अहो इमा वसुमती, राया पुच्छति, ताहे तेण कहियं-देव! रायाओ इमा, ताहे सव्वेण लोगेण नायं जहा दहिवाहणस्स धूयात्ति, मिगावती भणति-मम भगिणिधूयत्ति, अमच्चो य सपत्तीओ आगतो, सामिं वंदति । पच्छा सामी निग्गओ । ताहे राया तं वसुहारं पगहिओ, सक्केण वारियं, जस्स एसा देइ तस्स आभव्वंति, सा पुच्छिया, भणति–मम पिउणो, ताहे सेट्ठिणा गहियं । ताहे सक्केण भणितं-चरमसरीरा एसा, एयं संगोवाहि जाव सामिस्स नाणं उप्पज्जति, एसा पढमा सिस्सिणी सामिस्स, ताहे कण्णंतेपुरं छुढा संवड्ढति, छम्मासा तदा पंचहिं दिवसेहिं ऊणगा जद्दिवसं सामिणा भिक्खा लद्धा, सावि मूला लोगेणं अंबाडिता हीलिया य ।

तत्तो सुमंगल सणंकुमार सुच्छित्तएहिं माहिंदो। पालय वाइल वणिए अमंगलं अ घणो असिणा ॥४-६५।५२२॥

ततो सामी निग्गतो सुमंगला णाम गामो तहिं गतो, तत्थ सणंकुमारो एति वंदति पियं च पुच्छति, तत्थ पढमं सिंदीकंडगनिमित्तं आगतो, ततो सामी पालयं नाम गामं गतो, तत्थ वाइलो नाम वाणिययो जत्ताए पहावितो सामीं पेच्छति, सो अमंगलंति काऊण असिं गहाय पधातिओ, एतस्सेव फलउत्ति तस्स सिद्धत्थेण सहत्थेण सीसं छिन्नं ।

चंपा वासावासं जक्खिंदो सातिदत्त पुच्छा य। वागरण दुह पएसण पच्चक्खाणे य दुविहे तु ॥४-६६।५२३॥

ततो सामी चंपं नगरिं गतो, तत्थ सातिदत्तमाहणस्स अग्गिहोत्तवसहिं उवगतो, तत्थ चाउम्मासं खमति, तत्थ पुण्णभद्दमाणिभद्दा दुवे जक्खा रत्तिं पज्जुवासंति, चत्तारिवि मासे रत्तिं रत्तिं पूयं करेंति, ताहे सो माहणो चिंतेति-किं एस जाणति तो णं देवा महेंति?, ताहे विन्नासणनिमित्तं पुच्छति-को ह्यात्मा ?, भगवानाह-योऽहमित्यभिमन्यते, स कीदृक ?, सूक्ष्मोऽसौ, किं तत्सूक्ष्मं ?, यन्न

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

गृह्णीमः, ननु शब्दगंधानिलाः किम्?, न, ते इंद्रियग्राह्याः, तेन ग्रहणमात्मा, ननु ग्राहयिता हि सः। कतिविहे णं भंते! पएसणए?, कइविहे णं पच्चक्खाणे?, भगवानाह-सातिदत्ता! दुविहे पदेसणये धम्मियं अधाम्मियं च, पएसणयं नाम उवदेसो। पच्चक्खाणे दुविहे- मूलगुणपच्चक्खाणे य उत्तरगुणपच्चक्खाणे य। एतेहिं पदेहिं सव्वं तस्स उवागतं

जंभियगामे णाणस्स उप्पदा वागरेति देविंदो। मेंढियगामे चमरो वंदण पियपुच्छणं कुणति ॥४-६७।५२४॥

ततो भगवं निग्गतो, जंभियगामं गतो, तत्थ सक्को आगतो, वंदित्ता पूयं करेत्ता णट्टविहिं उवदंसेत्ता णं वागरेति जहा एत्तिएहिं दिवसेहिं केवलणाणं उप्पज्जिहिति। ततो मेंढियग्गामं वच्चति, तत्थ चमरो वंदयो पियपुच्छओ य आगच्छति, वंदितुं पुच्छति, वंदितुं पुच्छितुं च पडिगतो।

छम्माणि गोव कडसलपवेसणं मज्झिमाए पावाए। खरतो वेज्जो सिद्धत्थवाणिओ णहिरावेति ॥ ४-६८।५२५॥

ततो सामी छंमाणिं णाम गामो तहिं गतो, तस्स बाहिं पडिमं ठितो, तत्थ सामिसमीवे गोवो गोणे छड्डेऊणं गामं पविट्ठो, दोहणादीणि काउं निग्गतो, ते य गोणा अडविं अणुपविट्ठा चरियव्वयस्स कज्जे, ताहे सो आगतो पुच्छति- देवज्जगा! कहिं बइल्ला?, भगवं मोणेण अच्छति, ताहे सो परिकुवितो भगवतो कन्नेसु कासमलागाओ छुभति, एगा इमेण कन्नेण एगा इमेण, ताहे पत्थरेण आहणति जाव दोवि मिलिताओ, ताहे मूलभग्गाओ करेति मा कोति उक्खाणिहित्ति, केति भणंति- एगा चेव जाव इतरेणं कन्नेणं निग्गया, ताहे अ भग्गा,-कन्नेसु तउं तत्तं गोवस्स कतं तिविट्ठुणा रन्ना। कन्नेसु वद्धमाणस्स तेण छूढा कड-

सलागा ॥ १ ॥ भगवतो य तद्दारवेयणिज्जं कम्मं उदिन्नं । ततो मज्झिमं पावं गतो, तत्थ सिद्धत्थो नाम वाणियतो, तस्स घरं भगवं अतिगतो, तस्स मित्तो खरओ णाम वेज्जो, ते दोवि सिद्धत्थघरे अच्छंति, सामी य भिक्खस्स पविट्ठो, वाणियतो वंदति थुणति य, वेज्जो य तित्थगरं पासिऊण भणति- अहो भगवं सव्वलक्खणसंपुन्नो, किं पुण ससल्लो ?, ताहे सो वाणिओ संभंतो भणति- पलोएहि कहिं सल्लो ?, तेण पलोएंतेण दिट्ठो कन्नेसु, तत्थ तेण वाणिएण भन्नति- नीणेहि एतं महातवसिस्स, सव्वस्संपि चयेमो, पुन्नं होहिति तवेवि मज्झवि, भणति- निप्पडिकंमो भगवं नेच्छिहिति, ताहे पडियरावितो जाव दिट्ठो उज्जाणे पडिमं ठितो, ते ओसहाणि गहाय गता, तत्थ भगवं तेल्लद्दोणीए निवज्जावितो मद्दितो य, पच्छा बहवेहिं पुरिसेहिं जंतितओ अक्कंतो य, पच्छा संडासएण गहाय कड्ढितो, तत्थ सरुहिराओ सलागाओ अंछिताओ, तासु य अछिज्जंतीसु भगवता आरसितं, ते य मणूसे उप्पाडेत्ता उट्ठितो, तत्थ महाभेरवं उज्जाणं जातं देवउलं च, पच्छा संरोहणं ओसहं दिन्नं जेण ताहे चेव पउणो, ताहे वंदित्ता खामेत्ता य गता ॥ सव्वेसु किर उवसग्गेसु दुव्विसहा कतरे ?, कडपूयणासीयं कालचक्कं एतं चेव सल्लं कड्ढिज्जंतं, अहवा जहन्नगाण उवरि कडपूयणासीतं, मज्झिमाण कालचक्कं, उक्कोसगाण उवरिं सल्लुद्धरणं ॥ एवं गोवेण आरद्धाउवसग्गा गोवेण चेव निट्ठिता । गोवो सत्तमिं गतो, खरतो सिद्धत्थो य दियलोगं तिव्वमवि उदीरतंतावि सुद्धभावा ।

जंभियबहि उज्जुयालियतीरबितावत्तसामसालअहे । छट्ठेण उक्कुडुयस्स उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ४-६९ । ५२६ ॥

ताहे सामी जंभियगामं णाम णगरं गतो, तस्स बाहिया वियावत्तस्स चेतियस्स अदूरसामंते, वियावत्तं णाम अव्यक्तमित्यर्थः, अप्पागडं संनिपडितं, उज्जुयालियाए णदीए तीरंमि उत्तारिल्ले कूले सामागस्स गाहावतिस्स कट्ठकरणंसि, कट्ठकरणं नाम छेत्तं,

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

सालपादवस्स अहो उक्कुडुयणिसेज्जाए गोदोहियाए आतावणाए आतावेमाणस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं अणुत्तरेणं णाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेण, एवं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए मोत्तीए गुत्तीए तुट्ठीए अणुत्तरेणं सच्चसंजमतवसुचरितसोवचइयफलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स दुवालसहिं संवच्छरेहिं वितिक्कंतेहिं तेरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स वइसाहसुद्धदसमीए पादीणगामिणीए छायाए अभिनिव्वट्टाए पोरुसीए पमाणपत्ताए सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागतेणं झाणंतरियाए वट्टमाणस्स एक्कत्तवितक्कं वोलीणस्स सुहुमकिरियं अणियट्टिमपत्तस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ॥ तए णं से भगवं अरहा जिणे जाते केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी अरहस्सभागी सनेरतियतिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणति पासति, तंजहा— आगतिं गतिं ठितिं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणासितं भुत्तं कडं पडिसेवितं आवीकम्मं रहोकम्मं तं तं कालं मणवयणकायिते जोए, एवमादी जीवाणवि सव्वभावे मोक्खमग्गस्स य विसुद्धतरागे भावे जाणमाणे पासमाणे, एस खलु मोक्खमग्गे मम य अन्नेसिं च जीवाणं हितसुहनिस्सेसकरे सव्वदुक्खविमुक्खणे परमसुहसमाणणे भविस्सइत्ति । एवं च केवलणाणं तवेण उप्पन्नंतिकाऊणं जो छउमत्थकालियाए भगवता तवो कतो सो सव्वो वत्तेयव्वो—

जो य तवो० ॥५-१।५२७॥ णव किर चाउम्मासे० ॥ ५-२ ॥५२८॥ एगं किर छम्मासं० ॥५-३॥ ५२९ ॥ भद्दं च महाभद्दं०॥ ५-४ ॥ ५३० ॥ गोयर० ॥ ५-५ ॥ ५३१ ॥ दिवसे दिवसे भगवं भिक्खं हिंडेति एव छम्मासे । हिंडति पंचदिवसूण वत्थाणगरीए अव्वहिओ भगव ॥ १ ॥ दस दो य० ॥ ५-६ ॥ ५३२ ॥ दो चेव य छट्ठ ॥ ५-७ ॥५३३-५३४॥

भगवंत वीर कृत् (बाह्य) तपस: वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

एस ताव खमणकालो । इमो पारणगकालो—

तिन्नि सते दिवसाणं ॥ ५-८ ॥ ५३५ ॥ पव्वज्जाते० ॥ ५-९ ॥ ५३६ ॥ बारस चेव य ॥ ५-१० ॥ ५३७ ॥

एवं तवोगुणरओ अणुपुव्वेणं मुणी विहरमाणो। घोरं परीसहचमुं अहियासेत्ता महावीरो ॥५-११॥५३८॥

उप्पन्नंमि अणंते नट्ठंमि य छाउमत्थिए णाणे । रातीए संपत्तो महसेणवणं तु उज्जाणं ॥५-१२॥५३९।५४२॥११५भा॰

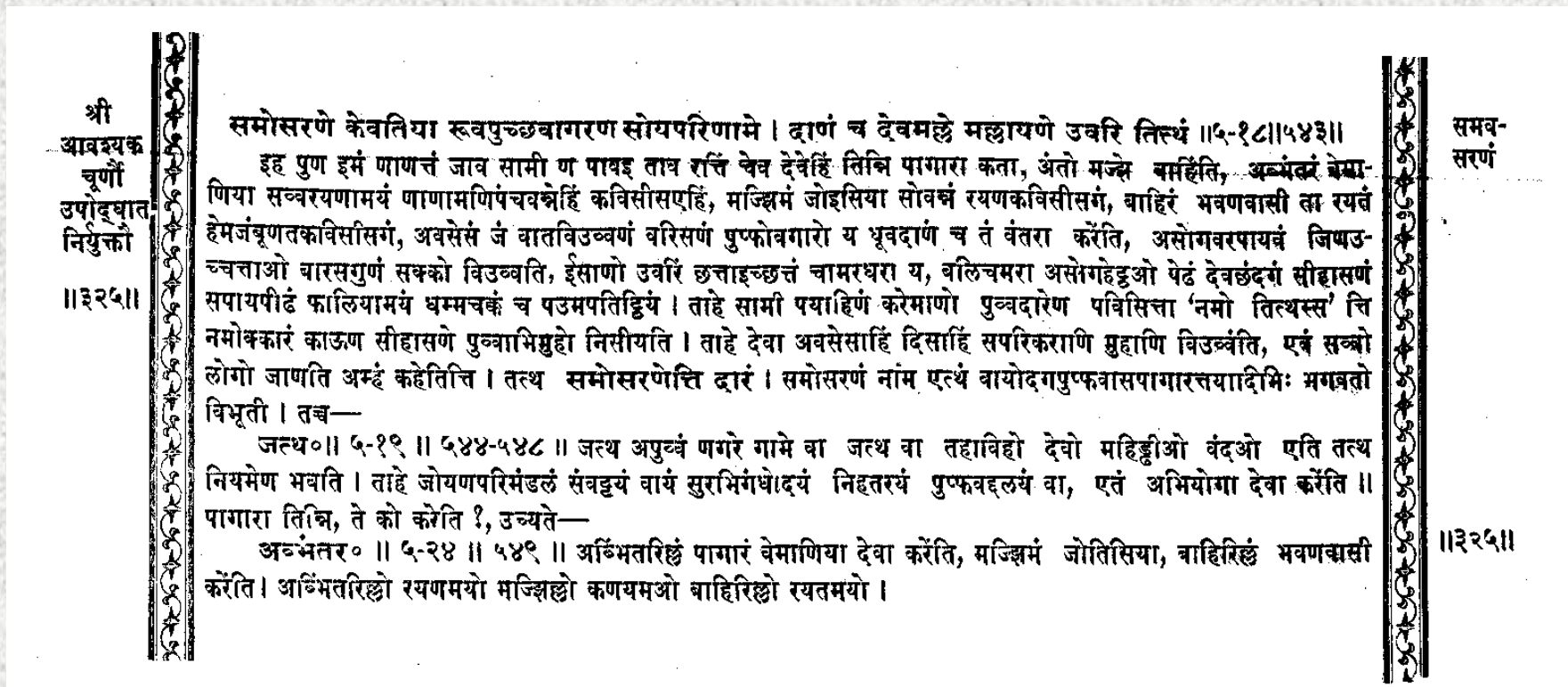
किमिति ? । जाहे सामिस्स केवलनाणं उप्पन्नं ताहे इंदादीया देवा सव्विड्ढीए हट्ठतुट्ठा णाणुप्पदामहिमं करेंति । तत्थ भगवं जाणति- णत्थि एत्थ पव्वयंततो, जत्थ नत्थि पव्वयंततो तत्थ ण पवत्तिज्जति, ततो य बारसेहिं जोयणेहिं मज्झिमा नाम नगरी, तत्थ सोमालिज्जो नाम माहणो, सो जन्नं जयइ, तत्थ य एक्कारस अज्झावगा आगता भवियरासी य, ताहे सामी तत्थ मुहुत्तं अच्छति जाव देवा पूयं करेंति, एस केवलकप्पो किर जं उप्पन्ने नाणे मुहुत्तमेत्तं अच्छियव्वं, ताहे सामी रत्तीय तं वच्चति, तत्थ वच्चंतो असंखेज्जाहिं देवकोडीहिं परिवुडो देवुज्जोएण सव्वो पंथो उज्जोवितो जथा दिवसो, जत्थ भगवतो पादा तत्थ देवा सत्त पउमाणि सहस्सपत्ताणि णवणीतफासाणि विउव्वंति, मग्गतो तिन्नि पुरओ तिन्नि एगं पायाणिक्कमे, एगे भणंति- मग्गतो सत्त पउमाणि दीसंति, जत्थ पाओ कीरति ताहे अन्नं दीसति, मग्गओ सत्त दीसंति, मग्गओ सत्त दो पादेसु एवं णव । एवं जाव मज्झिमाए णगरीए महसेणवणं उज्जाणं संपत्तो । तत्थ देवा बितियं समोसरणं करेंति, महिमं च सूरुग्गमणे, एगं जत्थ नाणं बितियं इमं चेव । अहवा एगं छउमत्थकालियाए एगं इमं चेव । एत्थं सामन्नेण समोसरणादिवत्तव्वया णेया गाहाहिं—

॥३२४॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३२५॥

समोसरणे केवतिया रूवपुच्छवागरण सोयपरिणामे । दाणं च देवमल्ले मल्लायणे उवरि तित्थं ॥५-१८॥५४३॥

इह पुण इमं णाणत्तं जाव सामी ण पावइ ताव रत्तिं चेव देवेहिं तिन्नि पागारा कता, अंतो मज्झे बाहिंति, अब्भंतरं वेमाणिया सव्वरयणामयं णाणामणिपंचवन्नेहिं कविसीसएहिं, मज्झिमं जोइसिया सोवन्नं रयणकविसीसगं, बाहिरं भवणवासी तु रयतं हेमजंबूणतकविसीसगं, अवसेसं जं वातविउव्वणं वरिसणं पुप्फोवगारो य भूवदाणं च तं वंतरा करेंति, असोगवरपायवं जिणउच्चत्ताओ बारसगुणं सक्को विउव्वति, ईसाणो उवरिं छत्ताइच्छत्तं चामरधरा य, बलिचमरा असोगहेट्ठओ पेढं देवछंदगं सीहासणं सपायपीढं फालियामयं धम्मचक्कं च पउमपतिट्ठियं । ताहे सामी पयाहिणं करेमाणो पुव्वदारेण पविसित्ता 'नमो तित्थस्स' त्ति नमोक्कारं काऊण सीहासणे पुव्वाभिमुहो निसीयति । ताहे देवा अवसेसाहिं दिसाहिं सपरिकराणि मुहाणि विउव्वंति, एवं सव्वो लोगो जाणति अम्हं कहेतित्ति । तत्थ **समोसरणेत्ति दारं** । समोसरणं नाम एत्थं वायोदगपुप्फवासपागारत्तयादीभिः भगवतो विभूती । तच्च—

जत्थ०॥ ५-१९ ॥ ५४४-५४८ ॥ जत्थ अपुव्वं णगरे गामे वा जत्थ वा तहाविहो देवो महिड्ढीओ वंदओ एति तत्थ नियमेण भवति । ताहे जोयणपरिमंडलं संवट्टयं वायं सुरभिगंधोदयं निहतरयं पुप्फवद्दलयं वा, एतं अभियोगा देवा करेंति ॥ पागारा तिन्नि, ते को करेति ?, उच्यते—

अब्भंतर० ॥ ५-२४ ॥ ५४९ ॥ अब्भितरिल्लं पागारं वेमाणिया देवा करेंति, मज्झिमं जोतिसिया, बाहिरिल्लं भवणवासी करेंति। अब्भितरिल्लो रयणमयो मज्झिल्लो कणयमओ बाहिरिल्लो रयतमयो ।

समव-सरणं

॥३२५॥

अथ समवसरण वक्तव्यता प्रकाश्यते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मणिरयण० ॥ ५-२५ ॥ ५५०-५५२ ॥ अब्भितरस्स मणिमया कविसीसया, मज्झिमस्स रयणमया, बाहिरिल्लस्स हेममया, हेमं-सुवन्नं । सव्वरयणमया दारा । तेसिं पागाराणं तिण्हवि सव्वरयणमया चेव तोरणा, पडागाहिं सएहि य विभूसिया । अब्भितरपागारस्स य बहुमज्झे चेतियरुक्खो, तस्स हेट्ठा रयणमयं पेढं, तस्स पेढस्स उवरिं चेतियरुक्खस्स हेट्ठा देवच्छंदओ भवति, तस्सब्भंतरे सीहासणं भवति, तस्सोवरिं छत्तातिछत्तं, उभयो पासे य दो जक्खा चामरहत्था, चसद्दा पुरओ धम्मचक्कं च पउमपइट्ठितं । एताणि को करेति ?, उच्यते—

चेतियदुम० ॥ ५-२८ ॥ ५५३ ॥ सिद्धा । जं चन्नंति वाउदयादि ॥ आह- किं सव्वत्थ एवं ?, उच्यते—

साधारणओसरणे० ॥ ५-२९ ॥ ५५४ ॥ जत्थ बहवे तहाविहा देवा एंति इंदा वा तत्थ एवं करेंति, जत्थ पुण कोति तारिसओ महिड्ढीओ देवो एति तत्थ सो चेव एगो एयाणि सव्वाणि करेति, 'भयणा उ सेसेसु इयरेसि' न्ति जइ इंदा ण एंति तो भवणवासिमाइणो करेंति वा ण वा ।

सूरुदय० ॥५-३० ॥ ५५५-५५७ ॥ तत्थ भगवं पढमपोरुसीए ओगाहंतीए आगंतूणं पुव्वउत्ति-पुरत्थिमेणं दारेणं पविसित्ता चेतियरुक्खं आदाहिणं करेत्ता सीहासणे पुरत्थाभिमुहो निसीयति । जत्थ य भगवं एंतो पादे ठवेति तत्थ सहस्सपत्ताणि दो पउमाणि भवंति, पिट्ठओ य सत्त पउमाणि दीसंति, जतो य भगवओ मुहं न भवति तहिं तीहिं दिसाहिं देवा पडिरूवताइं विउव्वंति, सीहासणाइं समत्तसरीराइं सचामराइं सछत्ताइं सधम्मचक्काइं जहा सव्वो जणो जाणति मम सपडिहुत्तोत्ति । भगवतो य पादमूलं जहन्नेणं एगेणं गणहरेणं अविरहियं अवस्सं भवति, सो पुण जेट्ठो वा अन्नो वा, पाएण जेट्ठो भवति ।

॥३२६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

तित्थादिसेस०।५-३३।५५८॥ केवलिणो०।५-३४।५५९। जो तित्थं सो पुव्वदारेण पविसित्ता तित्थगरं तिक्खुत्तो वंदित्ता दाहिणपुरत्थिमे दिसिभाए निसीयति, सेसा गणहरा एवं चेव काउं तित्थस्स मग्गतो पासेसु निसीयंति। जे केवलिणो ते पुरत्थिमेणं दारेण पविसित्ता भगवं तिक्खुत्तो पयाहिणं काउं 'नमो तित्थस्स'त्ति भणित्ता तित्थस्स गणहराण य पिट्ठतो निसीदंति। जे च सेसा अतिसेसिता-मणपज्जवनाणी ओहिनाणी चोद्दसदसणवपुव्विणो खेलोसहिपत्तादी य ते पुरत्थिमेण दारेण पाविसित्ता भगवंतं पयाहिणीकरेत्ता वंदित्ता य 'नमो तित्थस्स नमो केवलीणं'ति भणित्ता केवलीणं पिट्ठतो निसीदंति। अवसेसा संजया निरतिसेसिया पुरत्थिमेणं चेव दारेण पविसित्ता भगवंतं पयाहिणं काउं वंदित्ता 'णमो तित्थस्स (नमो केवलीणं) नमो अतिसेसियाणं'ति भणित्ता अतिसेसियाणं पिट्ठतो निसीदंति। वेमाणियाणं देवीओ पुरत्थिमेण चेव दारेण पविसित्ता भगवंतं पयाहिणीकरेत्ता वंदित्ता 'णमो तित्थस्स नमो साधूण य' भणित्ता निरतिसेसियाणं पिट्ठतो ठायंति, ण णिसीदंति। समणीओ पुरत्थिमेण चेव दारेणं पविसित्ता तित्थगरं पयाहिणं करेत्ता वंदित्ता य 'नमो तित्थस्स नमो अतिसेसियाणं'ति भणित्ता वेमाणियदेवीणं पिट्ठतो ठायंति, न निसीदंति। भवणवासिणीओ वंतरीओ जोतिसिणीओ एताओ दाहिणेणं दारेणं पविसित्ता तित्थगरं पयाहिणीकरेत्ता वंदित्ता य दाहिणपच्चत्थिमेण ठायंति, भवणवासिणीणं पिट्ठतो जोतिसिणीओ, तासिं पिट्ठतो वंतरीओ ॥

भवण०॥५-३५॥५६०॥११६-११९ भा०। भवणवासी देवा जोतिसिया देवा वाणमंतरा देवा, एते अवरदारेणं पविसित्ता तं चेव विधिं काउं उत्तरपच्चत्थिमेण ठायंति यथासंख्यं पिट्ठओ, वेमाणिया देवा मणुस्सा माणुस्सीओ उत्तरेणं दारेणं पविसित्ता

समवसरणे पर्षन्निवेशः

॥३२७॥

उत्तरपुरत्थिमे ठायंति, जहासंखं पिट्ठतो। 'जं च निस्साए' त्ति जो परिवारो जन्निस्साए आगतो सो तस्सेव पासे निविसति, ण अन्नत्थ।

एगे०।५-४०॥५६१॥ तित्थं असेससंजया एगं वेमाणिया देवीओ समणीओ, एतं तिगं भगवतो दाहिणपुरच्छिमेणं संनिविट्ठं, भवणवासिणीओ वंतरीओ जोइसिणीओ एतं तिगं भगवतो दाहिणपच्चच्छिमेणं सन्निविट्ठं, भवणवतिवाणमंतरजोतिसियपुरिसा एतं तिगं भगवतो उत्तरपच्चत्थिमेणं संनिविट्ठं, वेमाणियदेवा मणुस्सा मणुस्सीओ एतं तिगं भगवतो उत्तरपुरत्थिमेणं संनिविट्ठं, आदिल्ले य तिगे चरिमे य तिगे पुरिसा इत्थीओ य, मज्झिल्लेहिं दोहिं तिएहिं इत्थीओ पुरिसा य अमिस्सा॥ तत्थ सव्वेसिं देवणराणं इमा मज्जाया—

एन्तं महिड्ढियं०।५-४१॥५६२॥ जे अप्पिड्ढिया भगवतो समोसरणे निसन्ना ते एंतं महिड्ढीयं पणिवयंति, अह महिड्ढीया पढमं निसन्ना पच्छा जे अप्पिड्ढिया एंति ते पुव्वट्ठिते महिड्ढीए पणिवयंता वयंति सट्ठाणं, सेस कंठं॥ आह—पागाराणं अंतरेसु को ठायति?, उच्यते—

थितियंमि०।५-४२।५६३॥ कंठा। सव्वबाहिं पागाराणं तिरिया वा मणुया वा देवा वा होज्जा, एक्कया मीसया वा, एवं संनिविट्ठे समोसरणे भगवं धंमं कहेति। जदि—

सव्वं०।५-४३।५६४॥ कंठा। कहं पुण ण भविस्सति एस भावो जं न पडिवज्जिहिति चउण्हं सामाइयाणं अन्नतरं?, उच्यते-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मणुए०।५-४४।५६५॥ मणुयाणं जो पडिवज्जति सो चउण्हं अन्नतरं पडिवज्जेज्जा, तिरियाणि तिन्नि-सम्मत्तसुत्तचरित्ताचरित्ताइं, दोन्नि, एगं वा, एतेसिं जदि णत्थि कोति पडिवज्जंतओ तो देवेसु अवस्सं केणति सम्मत्तं पडिवज्जियव्वं॥ ताहे भगवं--

तित्थपणामं०।५-४५।५६६॥ 'नमो तित्थस्स' त्ति भणित्ता पणामं च करेत्ता साहारणेणं सद्देणं अद्धमागहाए भासाए, सावि य णं अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी सव्वेसिं तेसिं आयरियमणायरियाणं अप्पप्पणो भासापरिणामेणं परिणमति। आह-किं भगवं कतकिच्चे तित्थपणामं करेति?, उच्यते---

तप्पुव्विया०।५-४६।५६७॥ तत्थ सुयणाणेणं भगवतो तित्थकरत्तं जातं, तित्थगरो य सुतवतिरित्तो होंततो सुयणाणेणं वायजोगीहोऊणं धम्मं कहेति, लोगो य पूतियपूयओ, तो जदि अहं एयं पूएमि तो लोगो जाणिहिति-जदि तित्थगरस्स एस गुरू कओ को जाणति किंपि एत्थ परिवसति?, किं च-विणयमूलो धम्मो पन्नवेयव्वो, तो अहं चेव पढमं विणयं पउंजामि, पच्छा लोगो सुट्ठुतरं सद्दहिस्सति, किं च-जहा कयकिच्चोवि होन्तओ तित्थगरो धम्मं कहेति तहा तित्थमवि नमति। **समोसरणत्ति दारं गतं।** इयाणिं केवतिएत्ति दारं। केदूरातो आगंतव्वं समोसरणं? केण वा आगंतव्वं? कंमि वा कज्जे आगंतव्वं अवस्सं?, उच्यते-- जत्थ अपच्चो०।५-४७।५६८॥ कंठा। केवतियात्ति गतं, इयाणिं रूवपुच्छात्ति दारं, केरिसयं भगवतो रूवं?, एस पुच्छा, उच्यते-

सव्वसुरा०।५-४८।५६९॥ गणहरआहार०।५-४९॥५७०॥ जं तित्थगरस्स रूवं ततो अणंतगुणपरिहीणं गणहराणं, जं गणहराण रूवं ततो अणंतगुणपरिहीणं आहारगसरीरस्स, ततो अणंतगुणपरिहीणं अणुत्तरोववादियाण देवाणं, ततो अणंतगुणपरिहीणं

तीर्थ-स्थापना एवं गणधराणां वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

उवरिमगेवेज्जाणं, एवं जाव सोहम्मगाणं, ततो अणंतगुणपरिहीणं भवणवासीणं, ततो जोतिसियाणं, 'वण' त्ति ततो वाणमंतराणं, वाणमंतराहिंतो अणंतगुणपरिहीणं चक्कवट्टीणं, ततो वासुदेवाणं, ततो बलदेवाणं, ततो मंडलियाणं, सेसरायाणो पिहुजणो य छट्ठाणगतो ।

संघयणं० ।५-५०॥५७१॥ भगवतो अणुत्तरं संघयणं अणुत्तरं रूवं अणुत्तरं संठाणं, एवं वन्नो गती सत्तं, सारो दुविहो बाह्योऽभ्यन्तरश्च, बाह्यो गुरुत्तं, अब्भंतरो णाणादी, अणुत्तरो उस्सासनिस्सासगंधो । आदिग्गहणेण गोखीरपंडुरं मंससोणितं ॥ आह—एवमादीयाणि अणुत्तराइं कस्स कम्मस्स उदएण ?, उच्यते, एवमादीणि अणुत्तराइं भवंति नामोदया तस्स ॥ आह—अन्नेसिं पगडीणं णामस्स जे पसत्था उदया जहा इंदियाणि सरीरं अंगाणि इत्यादि अन्नेसिं च खतिए भावे वट्टमाणस्स, खतोवसमिए वा, छउमत्थकालोत्ति भणितं होति, किन्न होंति अणुत्तरा उदया ?, उच्यते—

पगडीणं० ।५-५१॥५७२॥ जे एताए पुरिल्लगाहाए णामस्स पकारा ण गहिता तस्सेव नामस्स जे अन्ने प्रकारा तेसिं अन्नेसिंपि अणुत्तरा उदया सुभाणं, जओ जारिसो तित्थगरस्स सद्दो तारिसा ण अन्नस्स छउमत्थकालेऽवि, एवं गंधो रसो फासो इत्यादि खयोवसमियं गुणसमुदयं, खाइके भावे वट्टंतस्स अविकप्पं आहंसु, खओवसमियं प्रतीत्य अणंतगुणाभ्यधिकमित्यर्थः, अथवा क्षायिकगुणसमुदायं अविकल्पं-एगलक्षणं सव्वुत्तमं 'आहंसु' तीर्थकरा उक्तवंतः ॥ आह—जओ खतिए भावे वट्टंतस्स जहा अस्साता वेदणिज्जंति, आदिग्गहणेणं जातो य णामस्स अप्पसत्थाओ ताओ तस्स ण किह वाहाकरीओ भवंति ?, उच्चते—

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

अस्साय० । ५-५२॥५७३॥ कंठा ॥ आह—जदि तित्थकरो रूपवं तो सुंदरं?, अह जदि विरूवो?, उच्यते, जदि रूपवं तो सुंदरं, कहं?, उच्चते-

धम्मो० । ५—५३॥५७४॥ कंठा । **इयाणिं वागरणोत्ति** दारं, तत्थ भगवं सव्वेसिं देवणरतिरियाणं एगवागरणेणं सव्वसंसए छिंदति । जदि पुण **एक्केक्कस्स** एक्केकं संसयं परिवाडीए छिंदेज्जा तो को दोसो होज्जा?, उच्चते—

कालेण० । ५-५४॥५७५॥ एगवागरणे पुण एते ण भवंति गुणा य, के ते?, उच्चते—

सव्वत्थ० । ५-५५॥५७६॥ कंठा ॥ आह-तेसिं तं एगवागरणं कहं सव्वे संसए छिंदति?, सभासाए य परिणमंति?, एतेणाभिसंबंधेण **सोयपरिणामेत्ति** दारं पत्तं उच्चते—

वासोदय । ५-५६॥५७७ ॥ जहा वरिसोदगस्स एगरसवन्नगंधफासस्सवि भायणविसेसे जत्थ पडति तत्थ पिहप्पिहा वन्नादिणो परिणमंति, एवं तेसिं सव्वेसिं सोयाराणं अप्पणिच्चए २ सोतिंदिएणप्पप्पणो सभासापरिणामेणं संसयवोच्छित्तिपरिणामियं परिणमति ॥ किं च-

साधारण० । ५-५७॥५७८॥ सा भगवतो वाणी जम्हा साधारणा णरगादिदुक्खेहिंतो रक्खणाओ, जम्हा य असपन्नत्ति-अणन्नसरिसा, अतस्तस्यामर्थोपयोगो भवति श्रोत्दणां, एतेहिं चेव गुणेहिं सा गिरा गाहगी भवति, जतो य एरिसगुणा सा अतो ण णिव्विज्जति सोता, दिट्ठंतो एगस्स वाणियगस्स एगा किढीदासी, किढी थेरी, सा गोसे कट्ठाणं गता, तण्हाछु-

व्याकरणादीनि

॥३३१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

हाकिलंता मज्झण्हे आगता, अतिथोवा कट्ठा आणियत्ति पिट्ठित्ता अजिमितपीता पुणो पट्ठविता, सा य वड्ढं कट्ठभारं गहाय ओगाहंतीए पोरुसीए आगच्छति, को य कालो ?, जेट्ठामूलमासो, अह ताए थेरीए कट्ठभाराओ एगं कट्ठं पडितं, ताहे ताए थेरीए ओणमित्ता तं कट्ठं गहितं, तं समयं च भगवं तित्थगरो धम्मं पकहितो जोयणणीहारिणा सरेणं, सा थेरी तं सुद्धं सुणेंति तहेव ओणता सोउमाढत्ता, उण्हं तण्हं छुहं परिस्समं च ण विंदति जाव सूरत्थमणे तित्थगरो धम्मं कहेतुं उट्ठितो, एस दिट्ठंतो । एवं-

सव्वाउयंपि सोता० ॥५-५८॥५७९॥ कंठा। **सोयपरिणामोत्ति गतं, इयाणिं दाणं वत्ति** तित्थगरो जत्थ समोसरति गामादिसु तत्थ जो निवेदेति रायादीणं किं तस्स वित्तिदाणं ? किं च पीतिदाणं ?, उच्यते—

वत्तीओ० ॥ गाथाद्वयं ॥ ५-५९ ॥ ५-६० ॥ चक्कवट्टी वित्तिं देंति निउत्तस्स अड्ढतेरस सुवण्णकोडीओ, केसवा एतप्पमाणमेव रुप्पं देंति, मंडलिया अड्ढतेरसरुप्पसहस्साणि वित्तिं दिंति, पीतिदाणं पुण अड्ढतेरसरुप्पसहस्साइं देंति ॥

भत्तिविभवाणु० ॥ ५-६१ ॥ ५८२ ॥ कंठा। के पुण एवं दाणे गुणा ?, उच्यते–

देवाणु० ॥ ५-६२ ॥ ५८३ ॥ एवं तीथंकरभत्तच्चां क्रियमाणायां देवा अनुवर्तिता भवंति, कथं ?, जो तित्थगराण भत्तिं करेति स देवाणं प्रियो भवति, भक्तिश्चैवं कृता भवति, तित्थगरपूया चेवं थिरीकया भवति, सत्ते अणुकंप्पत्ति निवेदंतस्स अणुकंपा कता भवति, सातोदयं च वेयणिज्जं कम्मं उवचितं भवति, एते दाणगुणा भवंति । तित्थं च एवं पभावितं भवति। **दाणं वत्ति** दारं गतं । इयाणिं '**देवमल्ले मल्लाणय**'ति दारं, तित्थगरो पढमपोरुसीए धम्मं ताव कहेति जाव पढमपोरुसीउग्घाडवेला, एस देवमल्लो भन्नति । ताहे बली एति, मल्लंति बलीए णामं, तं को करेति ? केरिसी वा सा ?, उच्यते--

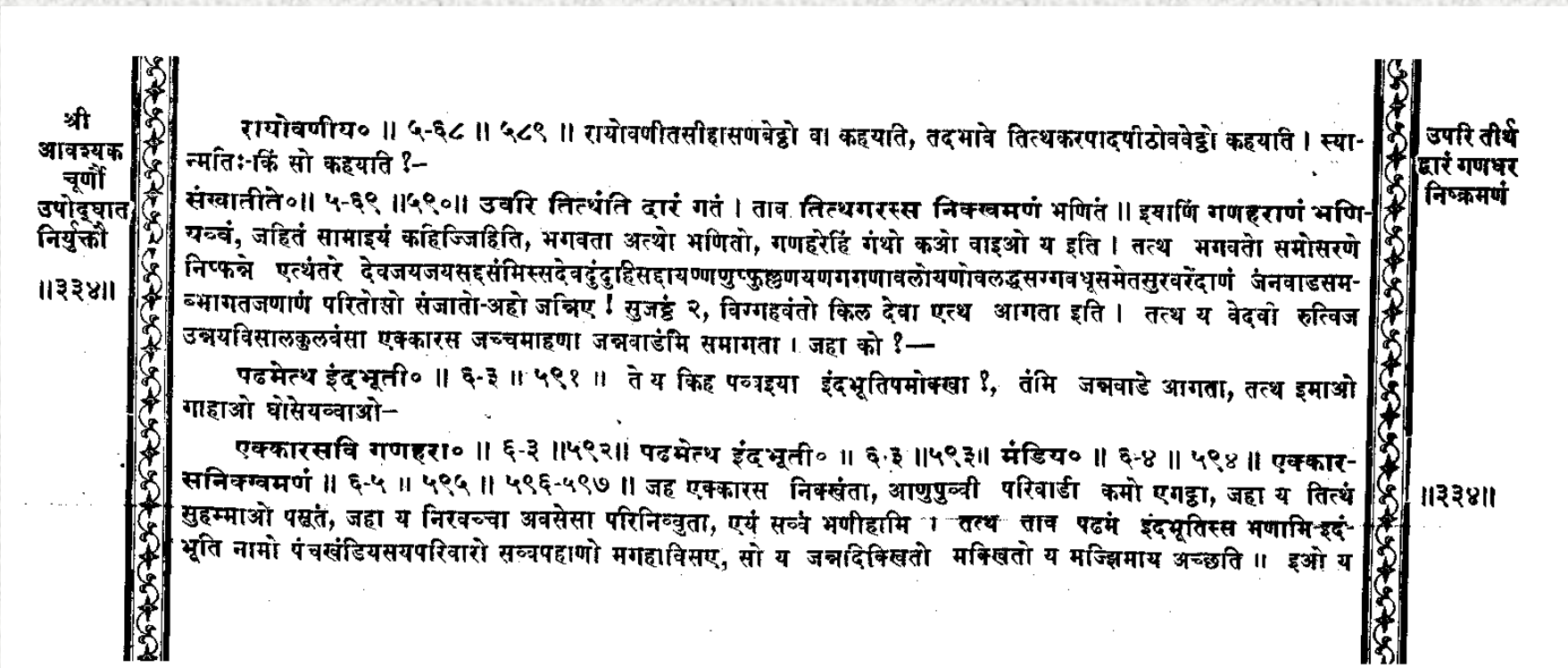
राया व० ॥ ५-६३ ॥ ५८४-५८५ ॥ ५८६-५८७ ॥ गाथाद्वयं कंठं । तं आढकं तंदुलाणं सिद्धं, देवमल्ले राया व रायमच्चो वा पउरं वा गामो वा जाणवतो गहाय महता तुरियसद्देणं देवपरिवुडो पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पविसति, एयं आणयणं, जाहे सा पविट्ठा अब्भंतरपागारंतरं भवति ताहे तित्थयरो धम्मं कहेंतो तुण्हिक्को भवति, ताहे सो रायादी बलिहत्थगतो देवपरिवुडो तित्थकरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं काउं तित्थगरस्स पादमूले तं बलिं निसिरति, तस्सऽद्धं अपडितं देवा गेण्हंति, सेसस्स अद्धं अहिवती गेण्हति, सेसं पागतजणो गेण्हति, ततो सित्थं जस्स मत्थए छुब्भति तस्स पुव्वुप्पन्नो वाही उवसमति, अणुप्पन्ना य रोगातंका छम्मासा ण उप्पज्जंति, ततो बलिए दिन्नाए तित्थगरो उट्ठित्ता पढमपागारस्स उत्तरेणं बारेण निग्गंतुं पुव्वाए दिसाए देवच्छंदओ तत्थ जहा समाधीते अच्छति । देवमल्ले मल्लोणयणति दारं गतं । इयाणिं 'उवरि तित्थं'ति दारं, उवरिं पोरुसीए उट्ठिते तित्थकरे गोयमसामी अन्नो वा गणहरो बितियपोरुसीए धम्मं कहेति, स्यान्मतिः- किं कारणं तित्थकर एव द्वितीयायां पोरुष्यां धर्मं न कथयति ?, उच्यते--

खेदविणोदो० ॥ ५-६७ ॥ ५८८ ॥ तित्थगरस्स खेदविणोदो भवति, परिश्रमविश्राम इत्यर्थः, शिष्यगुणाश्च दीपिताः-प्रभाविता भविष्यंति । 'पच्चतो उभयतोवि'त्ति गिहत्थाण य पव्वइयाण य, जारिसं तित्थकरो कहेति तारिसं सिस्सोऽवि कहेति, अहवा 'पच्चओ उभयतोवि'त्ति न शिष्याचार्ययोः परस्परविरुद्धं वचनं, 'सीसायरियकमो'त्ति आचार्यादुपाश्रुत्य योग्यशिष्येण तदर्थान्याख्यानं कर्तव्यमिति ॥ स्यान्मतिः-कहिं उ वेट्ठो कहेति ?, उच्यते--

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३३४॥

रायोवणीय० ॥ ५-६८ ॥ ५८९ ॥ रायोवणीतसीहासणवेट्ठो वा कहयति, तदभावे तित्थकरपादपीठोववेट्ठो कहयति । स्यान्मतिः-किं सो कहयति ?-

संखातीते०॥ ५-६९ ॥५९०॥ उवरि तित्थंति दारं गतं । ताव तित्थगरस्स निक्खमणं भणितं ॥ इयाणिं गणहराणं भणियव्वं, जहितं सामाइयं कहिज्जिहिति, भगवता अत्थो भणितो, गणहरेहिं गंथो कओ वाइओ य इति । तत्थ भगवतो समोसरणे निप्फन्ने एत्थंतरे देवजयजयसद्दसंभिस्सदेवदुंदुहिसद्दायण्णणुप्फुल्लणयणगगणावलोयणोवलद्धसग्गवधूसमेतसुरवरेंदाणं जंनवाडसमब्भागतजणाणं परितोसो संजातो-अहो जन्निए ! सुजट्ठं २, विग्गहवंतो किल देवा एत्थ आगता इति । तत्थ य वेदवो रुत्विज उन्नयविसालकुलवंसा एक्कारस जच्चमाहणा जन्नवाडंमि समागता । जहा को ?—

पढमेत्थ इंदभूती० ॥ ६-३ ॥ ५९१ ॥ ते य किह पव्वइया इंदभूतिपमोक्खा ?, तंमि जन्नवाडे आगता, तत्थ इमाओ गाहाओ घोसेयव्वाओ—

एक्कारसवि गणहरा० ॥ ६-३ ॥५९२॥ पढमेत्थ इंदभूती० ॥ ६-३ ॥५९३॥ मंडिय० ॥ ६-४ ॥ ५९४ ॥ एक्कारसनिक्खमणं ॥ ६-५ ॥ ५९५ ॥ ५९६-५९७ ॥ जह एक्कारस निक्खंता, आणुपुव्वी परिवाडी कमो एगट्ठा, जहा य तित्थं सुहम्माओ पसूतं, जहा य निरवच्चा अवसेसा परिनिव्वुता, एयं सव्वं भणीहामि । तत्थ ताव पढमं इंदभूतिस्स भणामि-इंदभूति नामो पंचखंडियसयपरिवारो सव्वपहाणो मगहाविसए, सो य जन्नदिक्खितो मक्खितो य मज्झिमाय अच्छति ॥ इओ य

उपरि तीर्थ द्वारं गणधर निष्क्रमणं

॥३३४॥

अत्र गणधर-वक्तव्यता आरभ्यते

उज्जाणे देवुज्जोयं पासित्ता हरिसियमणो चिंतिऊणं भासति तेसिं पुरओ- अहो मया मंतेहिं सुरा आहूया जे जन्ने समुवट्ठिता, एवं वोत्तूणं खंडिगेहिं सह निग्गतो, उज्जाणे अपासमाणो उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए देवसंनिवायं पासति, भासति य- किमेतंति ?, अन्नेहिं से कहितं, जहा-एस सिद्धत्थरायपुत्तो महावीरवद्धमाणो तवं कातुं केवली जाओ किल सव्वन्नू सव्वभावदरिसी, तं वयणं सोऊणं भासति अमरिसिओ-को अन्नो ममाहिंतो अब्भहितो जत्थ देवा एंति ?, ता एह वच्चामो जा णं पराजिणामि, किं सो जाणति ?, एतेण पणिहाणेण पहावितो पंचखंडितसयपरिवारो । तत्थ इमा

दट्ठूण० । ६-४ । ५९८॥ दट्ठूण कीरमाणीं । पच्छा छत्तादीए य अतिसए भगवतो पासितुं चिंतेति-अहो सुप्पउत्तो डंभो, नाणति दूरे गंतुं चिट्ठितो, ताहे णायएण जगसव्वबंधुणा

आभट्ठो० य । ६-४ ॥५९९॥ ताहे अच्छरं से जातं, णाममवि मम जाणति, ताहे पुणोवि अप्पाणं आसासेति-को वा मम सव्वसत्थविसारदस्स णामं वा गोत्तं वा ण सुणति?, एवं तेण अप्पा समासासितो, तस्स य संसतो-किं मन्ने जीवो अत्थि णत्थि ?, ण पुण अहंमाणेण कंचि पुच्छति, काणि य ते वेदपदाणि जेसिं सो सम्मं अत्थं न जाणति?, एतेहि य कारणेहिं संसयः-उभयोपचारात् १ अनुपलब्धेः २ विप्रतिपत्तिभ्यश्च ३, तत्थ उभयोपचारो यथा शरीरे च आत्मोपचारः, यथा कंचित्पिपीलिकादिसत्त्वं दृष्ट्वा ब्रवीति लोकः-यथेदं जीवं न हिंसि, शरीरव्यतिरिक्ते च यथा कंचित् मृतं दृष्ट्वा लोको ब्रवीति-गतःसजीवः यस्येदं शरीरामिति १, तथाऽनुपलब्धिर्द्विधा सतामसतां च, तत्र सतां मूलोदकपिसाचादीनां, असतां शशविषाणादीनां २, विप्रतिपत्तिश्चाचार्याणां, एके

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

आहुः-'एतावानेव पुरुषो, यावानिंद्रियगोचरः । भद्रे! वृकपदं पस्य, यद्वदंत्यबहुश्रुताः ॥ १॥ पिब खाद च साधु सोभने!, यदतीतं वरगात्रि! तन्न ते । नहि भीरु! गतं निवर्तते, समुदयमात्रमिदं कडेवरम् ॥ २ ॥ अन्ये त्वाहुः-'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि । तथा शरीरान्यपरापराणि, जहाति गृह्णाति च पार्थ! जीवः ॥ १ ॥' एतानि संशयनिमित्तानि तस्स, ततो सो चिंतेति-जदि मज्झ एतं संशयं जाणेज्ज छिंदेज्ज वा तो मे विम्हओ होज्जा, एवं चिंतेंतो पुणो सामिणा भणितो-गोयमा! किं जीवो अत्थि उदाहु णत्थित्ति एस तुह संसयो, संसयकारणाणि य भणिताणि, केसिंचिय वेदपदाणं सम्मं अत्थो न णज्जातित्ति अत्थो समट्ठो?, हंता अत्थि, एवं गोयमा ! अत्थि जीवो, जो अहमिति पडिवज्जीत, उवओगलक्खणो, कत्ता य करणसहितो-काया अन्नो, मुत्तो, निच्चो, कत्ता तहेव भोत्ता य । तणुमेत्तो गुणवन्तो, उद्धगती वन्निंतो जीवो ॥ १ ॥ सुद्धपद-वाच्यत्वात्, भोक्तृयोगोपयोगसंसारमोक्खसद्भावात्, एते हेतवो वाच्याः, वेदपदाण य अत्थो भगवता से कहितो । एत्थ संभंतो, संबुद्धो य भणइ पंचखंडितसते-एस सव्वन्नू, अहं पव्वयामि तुब्भे जहिच्छियं करेह, ते भणंति-जदि तुब्भे एरिसगा होंतगा पव्वयह तो अम्हं का अन्ना गतित्ति, एवं सो पंचसयपरिवारो पव्वतितो । एवं-

६००-६०१॥ तं पव्वइतं सोउं० ।६-१९॥६०२॥ उव्विग्गो, तहेव समाभट्ठो, संसयो वागरितो ।
किं मन्ने अत्थि कम्मं० । ६-२५॥६०४॥ वेयपयाण य अत्थो कहितो जाव
छिन्नंमि संसयंमि ।६-२६ । ६०५॥पंचसयपरिवारो पव्वतितो । ततिओवि तहेव आगतो, णवरि चिंतेति-वंदामि णं, जदि तेऽवि पत्तियाविया, एवं जाव पंचसतपरिवारो पव्वतितो, णवरं संसओ तज्जीवतस्सरीरिउत्ति । एवं वियत्तोऽवि, संसतो पंच

भूता अत्थि णत्थि?, एवं सेसावि, इमाओ चिंताओ, इमो य परिवारो-जीवे १ कम्मे २ तज्जीव ३ भूत ४ जारिसतो इहलोए तारिसतो परलोगेऽवि ५ बंधमोक्खे संसयो ६ देवा अत्थि णत्थि ७ एवं नेरतिया ८ पुन्नपावं अत्थि णत्थि ९ परलोगो अत्थि णत्थि? १० णेव्वाणं अत्थि नत्थि? ११। आइल्लाणं पंच पंच सता, मंडिय मोरियपुत्ताणं अड्ढुड्ढसता, सेसाणं चउण्हं तिन्नि तिन्नि सया। अकंपियअयलभातीणं एगो गणो, मेयज्जपभासाणं एगो गणो, एवं णव गणा होंति।

जदा य गणहरा सव्वे पव्वाजिता ताहे किर एगनिसेज्जाए एगारस अंगाणि चोद्दसहिं चोद्दस पुव्वाणि, एवं ता भगवता अत्थो कहितो, ताहे भगवंतो एगपासे सुत्तं करेति, तं अक्खरेहि पदेहिं वंजणेहिं समं, पच्छा सामी जस्स जत्तिओ गणो तस्स तत्तियं अणुजाणति, आतीए सुहम्मं करेति, तस्स महल्लं आउयं, एत्तो तित्थं होहितित्ति। तत्थ सक्कादओ देवा सव्वदेवसमोसरणं, सव्वट्ठगावि देवा पणामं तत्थगया कुव्वंति, सयं सामी चुन्नाणि छुहति, जाहे य ते थालं करेंति ताहे अज्जसुहम्मस्स निसिरंति गणं। एवं ता पव्वइता। इयाणिं तेसिं गणहराणं उट्ठाणपरियाणितं इमाए गाथाए अणुगंतव्वं सव्वं—

खेत्ते काले जम्मे०। ६-६५॥६४२॥ तत्थ पढमं खेत्तं, मगहा जणवए गोयमणामो (गोबरनामो) णाम गामो, तत्थ तिन्नि गोयमा जाता, कोल्लाए संनिवेसे वियत्तो सुहम्मो य, तंमि चेव मगहाजणवते मोरियसंनिवेसे मंडिया मोरिया दो भायरो, अयलो य कोसलाए, कोसला नाम अयोज्झा, मिहिलाए अकंपितो जातो, तुंगियसंनिवेसे मेयज्जो वच्छभूमित जातो, पभासो रायगिहे जातो। खेत्तदारं गतं॥ कालोत्ति दारं, गोयिमसामिस्स जेट्ठाणक्खत्तं।

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

जेट्ठा कत्तिय साती० ।६-६९॥६४६॥ कालेत्ति दारं गतं । जम्मम्मि दारे को कातो पितामाताए जातो?--तिण्हं वसुभूती पिता, धणमित्तो वियत्तस्स, धंमिल्लो सुधम्मस्स, धणदेवो मंडियपिया, मोरियस्स मोरितो चेव, अकंपियस्स देवो, अयलभायस्स वसू, मेयज्जस्स दत्तो, पभासस्स बलो ॥ इमातो मातरो--तिण्हं पुहवि माता, वियत्तस्स वारुणी, भद्दिला सुहम्मस्स, वीरदेवी मंडियमोरियपुत्ताणं, जयंती अकंपितस्स, नंदा अयलभायस्स, वरुणदेवा मेयज्जस्स, अतिभद्दा पभायस्स । जंभंति दारं गतं । इयाणिं गोत्तत्ति दारं—

तिन्नि य गोयमगोत्ता भारद्दा अग्गिवेस वासिट्ठा । कासव गोयम हारिय कोडिन्नदुगं च गोत्ताइं ॥६-७२॥६४९॥

गोत्तन्ति गतं । अगारपरियायो—

पन्ना छत्तालीसा बायाला होंति पन्नपन्ना य । तेवन्न पंचसट्ठी अडयालीसा य छायत्ता ॥६-७३॥६५०॥

छत्तीसा सोलसगं अगारवासो भवे गणहराणं । छउमत्थयपरियागं अहक्कमं कित्तइस्सामि ॥६-७४॥६५१

इयाणिं छउमत्थपरियायो—

तीसा बारस दसगं बारसया चत्त चोद्दस दुगं च । णवगं बारस दस अट्ठगं च छउमत्थपरियायो ।६-७५। यथासंख्यं छउमत्थप्परियागं अगारवासं च वोसिरित्ताणं । सव्वाउयस्स सेसं जिणपरियागं वियाणाहि ॥६॥७६॥६५३॥

बारस सोलस अट्ठारसेव अट्ठारसेव अट्ठेव । सोलस सोलस एगवीस चोद्द सोल सोले य ॥६-७७॥६५४

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

इयाणिं सव्वाउयं—

बाणउती चउसत्तरि सत्तरि तत्तो भवे असीती य । एगं च सयं तत्तो तेसीती पंचणउती य ॥६-७८॥६५५॥
अट्ठत्तरिं च वासा तत्तो बावत्तरिं च वासाइं । बावट्ठी चत्ता खलु सव्वगणहराउयं एयं ॥६-७९॥६५६॥

इयाणिं आगमेत्ति दारं, सो आगमो दुविहो--लोइतो लोउत्तरिओ य, लोइतो चोद्दस विज्जाठाणाणि,-अंगानि चतुरो वेदा, मीमांसा न्यायविस्तरः । धर्मशास्त्रं पुराणं च, विद्या ह्येताश्चतुर्दश ॥ १ ॥ तत्रांगानि षट् तद्यथा--सिक्षा कल्पो व्याकरणं छंदो निरुक्तं ज्योतिषं चेति, लोउत्तरो दुवालस अंगा चोद्दस पुव्वाणि । ते य--

सव्वे य माहणा जच्चा० ।६-८०॥६५७॥ एस दुविहोऽवि आगमो तेसिं । इयाणिं परिनेव्वाणं-सामिस्स जीवंते णव कालगता, जो य कालं करेति सो सुधम्मसामिस्स गणं देति, इंदभूती सुधम्मो य सामिंमि परिनिव्वुए परिनिव्वुता । को केण तवेण परिनिव्वुतो ?--

मासं पालोवगता ।६-८२॥६५९॥ सव्वातो आमोसहिमादियाओ लद्धीओ, संघयणं संठाणं च सव्वेसिं च पढमं चसद्दसूइतमिति । एवं सामिस्स भासगस्स गाहगाण गणहराणं निग्गमो भणितो । निग्गमेत्ति दारं गतं । इयाणिं तं कतरंमि खेत्ते निग्गयंति खेत्तदारं पत्तं, तं ताव अच्छतु, कालदारं भणामि बहुवत्तव्वंतिकाउं, पच्छा खेत्तादीणि संबद्धाणि । अन्ने भणंति--जेण काले बद्धं सव्वं, अथवा अन्नोन्नाणुगता दोऽवि भावा, अहवा कालो चेव पुव्वं, जेण कालाणुयोगो पुव्वं पच्छा दव्वाणुयोगो ।

॥३३९॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

अन्ने भणंति--आगासत्थिकातो दव्वं, कालो गुणः, योगश्च पूर्वं, तेण काल एव भवे य पूर्वं, अहवा-कत्थइ देसग्गहणं कत्थति भन्नंति निरवसेसाइं । उक्कमकमजुत्ताइं कारणवसतो निरुत्ताइं ॥ १ ॥ अन्ने भणंति—खेत्ता कालो अंतरंग इति दरिसणत्थं काल-द्वारं ताव वन्निज्जति, कालंतरंगदरिसणहेतुं विवज्जओत्ति ओवाणाओ अंतरंगत्तं, पुण कालो दव्वस्स चेव पज्जाओ, खेत्तं पुण आहारमेत्तमिति । सो य कालो एक्कारसविहो, णामकालो ठवणकालो दोऽवि गता, सेसो--

दव्वे अद्ध०।६-८३॥६६०॥ दव्वकालो अद्धाकालो आहाउयकालो उवक्कमकालो देसकालकालो कालकालो पमाणकालो वन्नकालो भावकालो, तत्थ दव्वकालो नाम जो जस्स जीवदव्वस्स अजीवदव्वस्स वा संचिट्ठणाकालो सो दव्वकालो, जहा-'नेरतिए णं भंते ! नेरइए'त्ति, संचिट्ठणा, अजीवाणं धम्मत्थिकायादीणं सव्वद्धा, परमाणुमादीणं च जा जस्स संचिट्ठणा. एस दव्वकालो, जंमि वा काले दव्वं वर्ण्यते, अह नेरइए य ४, गतिरागतिं पडुच्च सादिया सपज्जवसिया, सिद्धा संसारविगमं (पडुच्च) सादिया अपज्जवसिता, भविया संसारं पडुच्च अणादीया सपज्जवसिया, अभवसिद्धिया संसारं पडुच्च अणादीया अपज्जवसिया, अचेयणस्स अत्थस्स चउव्विहा ठिती इमा-पोग्गलपरमाणुत्तमादिं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया १ अणागतद्धा सादीया अपज्ज-वसिया २ अणागतद्धा णाम वट्टमाणसमयं पडुच्च जे एस्सा समया, तीतद्धा अणाइया सपज्जवसिआ ३, अतीतद्धा नाम वट्टमाण-समयं पडुच्च जे अतीता समया, तिन्नि काया दव्वट्ठपदेसट्ठयं पडुच्च अणादीया अपज्जवसिया ४. तिन्नि काया नाम धम्मत्थिकायो अधम्मत्थिकायो आगासत्थिकायो. अहवा दवितं तु तं चेव, उक्तंच- 'समयाति वा आवलियाति वा जीवाति या अजीवाति य

'काल'स्य एक्कारस-भेदानां वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

पवुच्चंति' अथवा 'कालश्चेत्येके' (तत्त्वा०५-३८) एस दव्वकालो । अद्धाकाले अणेगविहे, से णं समयद्धयाए, आवलियद्धयाए जाव ओसप्पिणिअद्धयाए, जुगं पंचसंवच्छरं जाव परियट्टा भाणियव्वा ॥ अहाउकालो नाम—

नेरइय०॥ ६-८७ ॥ ६६४ ॥ नेरतिय जाव देवाणं आहाउयं जं जेण निव्वत्तियमन्नभवे सेत्तं पालेमाणे सो भवति अहाउकाले । उवक्कमकालो दुविहो- सामायारीउवक्कमकालो आउउवक्कमकालो य, उवक्कमकालो नाम अपत्तावत्थापावणपत्थावो, तत्थ जो सो सामायारीउवक्कमकालो सो तिविहो, तंजहा- ओहसामायारी पदविभागसामायारी दसविहसामायारी । तत्थ ओहसामायारी ओहनिज्जुत्ती पदविभागसामायारी कप्पववहारा, ओहसामायारी णवमस्स पुव्वस्स ततियाओ आयारवत्थूतो वीसतिमं पाहुडं, तत्थ ओहपयपाहुडं, ताओ निज्जूढा उवक्कामिता । कप्पव्ववहारा णवमाओ पुव्वाओ ततियाओ आयारवत्थुओ वीसइमं पाहुडं तओ, दसविहसामायारी उत्तरज्झयणेहिंतो नीणिता, तत्थ कप्पववहारा सट्ठाणे भन्निहिंति । ओहसामायारी पुण भन्नति, तं वक्खेउकामो णिज्जूहगो णिज्जूहिउं पवत्तो मंगलत्थं अरहंतादीणं णमोक्कारं करेति—

अरहंते वंदित्ता०॥ओघनिर्युक्तिः १॥ एत्थंतरे ओहनिज्जुत्तिचुन्नी भाणियव्वा जाव सम्मत्ता । एतं ओहनिज्जुत्तीए ठाणं, एत्थंतरे वक्खाणिज्जतित्ति, एवं ओहसामायारी गता । इयाणिं दसविहसामायारी, सा इमाए गाहाए अणुगंतव्वा, तंजहा—

इच्छा मिच्छा तहक्कारो आवसिया य निसीहिया । आपुच्छणा य पडिपुच्छा छंदणा य निमंतणा ॥७॥१॥६६६॥
उवसंपया य काले सामायारी भवे दसविहाओ । एतेसिं तु पयाणं पत्तेय परूवणं वोच्छं ॥ ७ ॥ २ ॥ ६६७ ॥

अत्र ईच्छाकार-आदि सामाचारी वर्णयते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

एत्थ कारसद्दो पयोगाभिधाती दट्ठव्वो, सो य सव्वदारेसु संबज्झति, इच्छग्गहणे य इच्छकारगहणं, सट्ठाणे इच्छकारपयोगो, दसविधसामायारीए पढमभेदोत्ति वुत्तं भवति, एवं मिच्छादुक्कडपयोगो, तहत्ति पयोगो जाव उवसंपदाकारपतोगो विभासियव्वो। तत्थ इच्छाकारपतोगो णाम जं इच्छया करणं, न पुण बलाभियोगादिणा, इच्चेयस्स अत्थस्स संपच्चयत्थं इच्छाकारसद्दं पउंजंति। एसो य कंमि विसए केण कायव्वोत्ति ?, भन्नइ-जति अब्भत्थेज्ज परं कारणजाते, ता अब्भत्थंतएण इच्छक्कारपयोगो कायव्वो, अहवा अणब्भत्थिओऽवि कोई कारणजाते करेज्ज तत्थवि तेण करेंतेण इच्छक्कारपओगो कायव्वो, तस्स अणब्भत्थितकरेंतगा पविरलत्ति कोइग्गहणं, आह- किमिति इच्छाकारपयोगो कीरति ?, उच्यते, बलाभियोगकरणं मा भूदिति, जतो ण कप्पति बलाभितोगो तु, तुसद्दा कत्थति कप्पतिवि, एतीए गाहाए अवयवत्थो भन्नति-जदित्ति अब्भुवगमे, जं अब्भत्थणाए अब्भुवगमं करेति आयरितो तं दरिसेति, जथा साधूणं अब्भत्थेउं ण वट्टति परो उ, किमिति ?, अणिगूहितबलविरिएण ताव होयव्वंति, बलं सामत्थं विरियं तु उच्छाहो। आह- जदि साधूणं परो अब्भत्थेउं ण वट्टति तो किं अब्भुवगमं करेति ?, भन्नति- जति अब्भत्थेज्ज परं कारणजाते, ण अन्नहा, कारणजातं दंसेति-जदि तस्स सो अणलो--असमत्थो ण याणती वा, अन्नं वा करेति, गिलाणादीहि वा वावडो होज्जा, ताहे तत्थ रातिणियं वज्जेत्ता इच्छकारं करेति सेसाणं, ते य किह भणंति ?, एतं ता मम कज्जं इच्छाकारेण करेहि, तुमं कारेतुंपि न वट्टति साधू, इच्छा मे जदि अत्थित्ति भाणितं होति, 'करेज्ज वा से कोति'त्ति तत्थ अहवा विधिणा से तं तं सतं करेंतं अन्नं वा अब्भत्थेंतं पासित्ता अन्नो निज्जरट्ठी भणेज्ज- अहं तुब्भं एतं इच्छकारेण करेमि, तत्थवि जस्स किज्जिहिति सो भणति- करेहि इच्छाकारेण, णणु किमिति सोवि इच्छक्कारं करेति ?, भन्नति- मज्जादामूलियं, साधूणं

इच्छाकारादि सामाचार्यः

॥३४२॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

एस मज्जादामूलं, अहवा एतेहिं कारणेहिं परं अब्भत्थेज्ज- सयं करेति कोति किंचि लेवणादि, अन्नस्स वा करेंतं दट्ठूण तत्थवि भणेज्ज-इच्छकारेण ममवि एतं पकियओ करेहि लेवादि संसट्ठकप्पणं, तत्थवि तेण भाणियव्वं- करेमि इच्छाकारेण, अहं संणाडो गिलाणादीण व कज्जे वावडो तो तं कारणं दीवेति, एतेण ण करेमि, इतरहा नियमा कायव्वं साधूण अण्णन्नेण, अणुग्गहोत्ति, एवं ता अन्नं आणवेति । जति अब्भत्थेज्ज परो तं साधुं तहेव नेयव्वं । अप्पणा परेण वा। अहवा एतेण जदि अब्भत्थेज्ज परं किंचि करेमि वेयावच्चं कज्जहेतुं वा णाणादीणं निज्जराहेउं वा, तत्थवि से कोइ अणुग्गहं करेज्जा, कोति णवि समत्थो जाए स विन्नवणा, तत्थवि तेसिं दोण्हवि भवे इच्छकारपयोगे, जत्थवि राइणियं वा ओमं वा सुत्तत्थाणि पुच्छति तत्थवि इच्छा कायव्वा, उवहिमादीण वा निमंतणे इति । सीसो आह- भगवं ! किमिति सव्वत्थ इच्छक्कारपयोगो रातिणियादीणंपि ?, आयरितो भणति-वच्छ ! जेण आणाबलाभियोगो निग्गंथाणं सेहेऽवि ण वट्टति, किमंग पुण राइणिए ?, तम्हा-इच्छा पउंजियव्वा सेहे राइणिए तहा । किं सव्वत्थ आणाबलाभियोगे ण वट्टति ?, उच्यते—जो पुण खग्गूडो तंमि आणावि बलाभिओगोवि कीरति, तंमिवि पढमं इच्छा पउञ्जति जदि करेति सुंदरं, अह ण करेति ताहे बलामोडीए कारिज्जति, तारिसा ण संवासेयव्वा, अह ते भाया भागणेज्जादी वा ण तरंति परिच्चतितुं ताहे आणाबलिभितोगोवि कीरति ॥

जह जच्चवाहलाणं० । ७-१३॥६१८॥ जहा जदा किर जच्चवाहलो आसकिसोरो दमिज्जातित्ति ताहे वेयालियं अभिवासिऊण पहाए अग्घेत्तुण वाहियालिं नीतो, खलिणं से ढोइतं, सयमेव तेण गहितं, विणियत्ति राया सयमेवारूढो, सो हितइच्छितं वूढो, रन्ना आहारलयणादीहिं सम्मं पडियरितो, पतिदिहं च विणीयत्तणओ एवं वहति, ण तस्स बलाभियोगो पवत्तति । अवरो

पुण मगहादिजणवदजातो आसो, सोऽवि तेहवाभिवासितो किर मातं पुच्छति-किं एतं कज्जति ?, सा भणति-तुज्झ पुत्त ! अमंगलपडिघातो कीरति, कल्लं वाहिज्जिहिसि, तो तुज्झ कल्लं जवा य खलिणं य पणामिज्जिहिति, ता खलिणं लएज्जाहि, विलग्गे य तस्स मणीसितं वहेज्जासि, पदे पदे पदसतं करेज्जासि, एवं होउत्ति पडिस्सुतं, बितियदिवसे कयकोउओ सतमेव खलिणं गेण्हति, राया सहरिसो सयमेव विलग्गो, जहा भणितं तहा वूढं, पच्छा राया सयमेव वीसामेतुमारद्धो, तो अणेगा पुरिसा णिवतिता, तेहिं उव्वलितो ण्हवितो य, सव्वप्पहाणो य से आहारो दिन्नो, पच्छा णाणालंकारविभूसितो मायाए मूलं गतो, तुट्ठो पुणरवि बितियदिवसे णिसिं मातं पुच्छति, सा भणति-अज्ज वामं वामेण वहसुत्ति, एवं करेमि, कल्लं तहेव कतो, ता सो णेच्छति खलिणं वा किंचि कातुं, ताहे णिसट्ठापहते बला कधितं दाऊण वाहितो, पुणो जवसं णिरुद्धं, ताहे सो छुहातितो मातं भणति-अज्ज ते मारावितो, सा भणति---दोऽवि ते मग्गा दिट्ठा, जेण रुव्वति तेण वच्चसु, ततियदिवसे मणीसितं वूढो, पुणो सक्कारितो । एवमिहावि--

पुरिसज्जाए० ॥ ७-१४।६१९ ॥ विपत्ती अविणीयस्स, संपत्ती विणयस्स उ । किं च-एगस्स साधुस्स लद्धी अत्थि, ण करेति बालवुड्ढाणं, आयरिएहिं पडिचोदितो-कीस अज्जो ! ण करेसि ?, भणति---ण कोति ममं अब्भत्थेति, ताहे आयरितो भणति-तुमं अब्भत्थणं मग्गंतो चुक्किहिसि लाभगं, जहा सो मरुतो णाणमएण मत्तो, कत्तियपुण्णिमाए लोगो दाणं देति, राया य, अन्ने घेज्जाइया गंतुं गंतुं आणेति, एगो नेच्छति, भज्जाते भणितो- जाहि, सो भणति-एगं ताव शूद्राणां प्रतिग्रहं गृह्णामि, द्वितीयं तेषां गृहं गच्छामि ?, यस्यासन्नमस्य कुलस्य कार्यं सो मम आनयित्वा प्रयच्छतु, एवं सो जावज्जीवाए दरिद्दो जातो, एवं

तुमंपि अब्भत्थणं मग्गंतो चुक्किहिसि, एतेसिं पुण बालगिलाणाणं अन्ने अत्थि करेंतगा, तुज्झवि एसा लद्धी एवं चेव विराहिति जहा तस्स मरुयस्स । एवं भणितो पडिभणति-एवं सुंदरं जाणंता अप्पणा कीस ण करेह ?, आयरिया भणंति-अज्जो ! सरिसो तुमं तस्स वाणरगस्स, जहा एगो वाणरगो रुक्खे अच्छति सीतवातेण झडिज्जंतो, ताहे सुहरीए सउणियाए भणितो-वाणरगा ! वाणरगा! णिरत्थयं वहसि बाहुदंडाइं । जो पायवस्स सिहरे ण करेसि कुडिं पडालिं वा ॥१॥ केती अन्नंपि भणंति-वासेण झडिज्जंतं रुक्खग्गे वाणरं थरथरंतं । सुघराणाम सउणिया, भणति तयाणिं वएसंती ॥ १ ॥ छेत्तूण मे तणाइं आणेऊणं च रुक्खसिहरम्मि । वसही कया निवाता तत्थ वसामिं निरुव्विग्गा ॥ २ ॥ एत्थ हसामि रमामि य वासारत्ते य णविय ओल्लामि । अंदोलमाणि वाणर! वसंतमासं विलंबेमि ॥ ३ ॥ हत्था तव माणुसगस्स जारिसा हिदयए य विन्नाणं । हत्था विन्नाणं जीवितं च मोहप्फलं तुज्झं ॥४॥ विसहसि धारप्पहरे ण य इच्छसि वसहिमप्पणो काउं । वाणर ! तुमे असुहिते अम्हेवि धिर्तिं ण विंदामो ॥ ५ ॥ सो तीए एवं वुत्ते तुण्हिको अच्छति, ताहे दोच्चंपि भणति, सो रुट्ठो रुक्खं दुरुहितुमाढत्तो, सा णट्ठा, तेण तीसे य तं घरं सुंबं २ विक्खिन्नं । अन्ने भणंति-जह पढमं तह बितियं तह ततियं तह चउत्थयं भणितं । पंचमियं रोसवितो संदट्ठो वाणरो पावो ॥ १ ॥ कुद्धो संदट्ठोट्ठो लंकाडाहे व जहय हणुमंतो । रोसेण धमधमेंतो उप्फिडितो तं गतो सालं ॥ २ ॥ आकंपितंमि तो पादवंमि फिरिडित्ति णिग्गता सुघरा । अन्नंमि दुमंमि ठिता झडिज्जते सीतवातेणं ॥ ३ ॥ इतरोवि य तं नेडुं घेत्तूणं पादवस्स सिहराओ । कूलं एक्केक्कं अंछिऊण तो उज्झती कुवितो ॥ ४ ॥ भूमिगतंमि तो निड्डयंमि अह भणति वाणरो पावो । सुघरे अणुहितहिदए ! सुण ताव जहा अविरियासि ॥ ५ ॥ णिवसि मम मयिहरिया, णेवसि मम सेट्ठिया व णिद्धा वा । सुघरे ! अच्छसु विघरा, जा वदासि

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

लोगतत्तीसु ॥ ६ ॥ भणति य इदाणिं सुहं अच्छ, एवं तुमंपि मम चेव उवरिएण जातो। किंच-मम अन्नंपि णिज्जरादारं अत्थि, तेण मम बहुतरिया णिज्जरा, तं लाभं चुक्कीहामि, जधा सो वाणियतो, दो वाणियगा ववहरंति, एगो पढमपाउसे मा मोल्लं दायव्वं होहितित्ति सयमेव आसाढपुण्णिमाए घरं पत्थतितो, वीएण अन्नेसिं अड्ढं वा पादं वा छावितं, सतं ववहरति, तेण तद्दिवसं विगुणो तिगुणो लाभो लद्धो, इतरो फिट्टो, एवं चेव अज्जो ! जदि अप्पणा एतं वेयावच्चं करेमि तो सुत्तत्थादीणि गच्छे अदेंतो चुक्कीहामि, तेहिं णट्ठेहिं मम गच्छसारक्खणाए बहुतरिया निज्जरा णत्थि, एत्थ 'सुत्तत्थेसु अचिंतण०'गाहा वत्तेयव्वा (आवश्यकहारिभद्रीयवृत्तिः पत्र २६३) इच्छत्ति पदं गतं । इयाणिं मिच्छा, मिच्छत्ति मिच्छादुक्कडपयोगो, मिच्छादुक्कडपतोगो नाम जं कहमवि पावकम्मे आसेविते अकरणीतमेयंति अभिप्पाएण अपुणकरणताए अब्भुट्ठियं मिच्छादुक्कडंति पउंजंति, मिच्छत्ति वा वितहंति वा असच्चंति वा असट्ठियंति वा अकरणीयंति वा एगट्ठा. दुक्कडंति वा सावज्जमणुट्ठितंति वा पावकम्ममासेवितंति वा वितहमाइन्नंति वा एगट्ठा, एसो य जत्थ जेण जहा कायव्वो तं भन्नति--

संजमजोए अब्भुट्ठिएण०।७-२०॥६८२॥ संजमजोगे जंकिंचि वितहमायरियंति, एत्थ संजमजोगो नाम सावज्जजोगपरिन्नावावारो, संजमोत्ति वा सामाइयंति वा एगट्ठा, वितहमायरियं नाम पडिसिद्धकरणादि आसेवितं, तत्थ अब्भुट्ठितेणंति-अपुणकरणादि अब्भुववट्ठितो अब्भुट्ठितो, तेण 'मिच्छा एतंति नियाऊणं'ति मिच्छा अकरणिज्जं एयं जं किंचि संजमजोगे वितहमायरितं इति, एवं वियाणिऊण- वितहं जाणिऊण, परिन्नाय इत्यर्थः, एवं मिच्छत्ति कायव्वं, मिच्छत्ति मिच्छादुक्कडपतोगो, अहवा सामन्नेण जहा मिच्छादुक्कडप्पयोगो कायव्वो तं भन्नति एताए गाहाए, तं०-संजमजोगे पुव्वभणिते अब्भुवेच्च ठितेणं जं वितहमाय-

रियं मिच्छा एतं वियाणिऊण इति-एवं मिच्छत्ति कायव्वा इति । एत्थ सीसो आह–भगवं ! जदि संजमजोगे जं वितहमातिण्णं तत्थ मिच्छत्ति सामायारीं पउंजति तो अम्हे पुणो पुणो वितहमायरिऊण मिच्छत्ति करेमो तो पडिक्कंतं भविस्सति, मिच्छकारो परिजितो, एवं च सोग्गती अदुलभा इति, आयरितो भणति--वच्छ !

यदि य० । ७–२१ ॥ ६८३ ॥ जदि णाम पावकम्ममासेविऊण अवस्सं मिच्छादुक्कडपयोगेण पडिकम्मियव्वं तो वरं तं चेव ण कायव्वं । स्यान्मतिः-एवं पुण मिच्छादुक्कडवत्तिया गुणा ण भवंतित्ति, भन्नति-जदि तं चेव ण करेति तो होति पए पडिक्कंतो, पएत्ति पढमं सुतरामित्यर्थः । यस्तु मिच्छाकारो परिजितो सो पत्तकालो इच्छिज्जइत्ति, जो य ते अभिप्पातो जहा किर वितहं आयरिऊण मिच्छत्ति सामायारिं करेमो तो मुच्चिहामो, एत्थ भन्नति—

जं दुक्कडंति० । ७-२२ ॥ ६८४ ॥ जं कारणं पडुच्च दुक्कडंति मिच्छत्ति मिच्छदुक्कडं पउंजइ तं कारणं भुज्जो अपूरेंतो--असेवंतो तिविहेण पडिक्कंतो, पुव्वासेवितं पडुच्च जो एवं मिच्छत्ति करेति तस्स खलु दुक्कडं मिच्छत्ति, सो मिच्छादुक्कडसामायारीए वट्टतित्ति भणितं होति । पुणो आह सीसा--सुट्ठु एतं जं तं चेव ण कायव्वं, ता होइ पए पडिक्कंतो इच्चादि, किं तु अम्हे एवं न चएमो तो दोऽवि करेमो को दोसो ?, भन्नति—

जं दुक्कडंति० । ७-२३ ॥ ६८५ ॥ जं पडुच्च मिच्छदुक्कडं उप्पन्नं तं चेव निसेवती पुणो पावं तत्थ पच्चक्खमुसावादो मायानियडीपसंगो य पुणो पुणो करंतस्स । इयाणिं तहत्तिपओगो–तहत्ति पओगो नाम जं एवमेतं अवितहमेतं जहेतं तुब्भे व-

दह इच्चेतस्स अत्थस्स संपच्चयत्थं सविसए तहत्ति सद्दं पउंजति, सो य सविसयो इमो—

कप्पाकप्पे०। ७-२६ ॥ ६८८ ॥ कप्पो-विहि अकप्पो-अविहि पडिसेहो वितहमायरणा इति, अहवा कप्पो जिणथेरादीयाणं अकप्पो विवरीतं, तंमि जाणियव्वयं पडुच्च निट्ठं गतो परिनिट्ठितो, पंच ठाणा महव्वयाणि पंच, संजमेण तवेण य अप्पाओ संजम-तवप्पएत्ति वा आउत्तेत्ति वा अविधिपरिहारित्ति वा एगट्ठा, तुसद्दा एसोऽवि जदि उवउत्तो अप्पणा य अवधारितं तो तस्स अविकप्पेण तहकारो कायव्वो, अन्नस्स पुण विभासाए॥ अह तस्स कत्थ कायव्वो ?, भन्नति--

वायणपडिसुणणाए०। ७-२७।६८९ ॥ वायणा सुत्तप्पयाणं तीए पडिसुणणाए, जहा आयरितो सुत्तं देंतो भणति एवं तं पढिज्जति, तो तंमि पडिसुते तहत्ति काऊण तहा पडिच्छति, एवं उवदेसे पडिसुणणाएवि, उवदेसो जहा 'जयं चरे जयं चिट्ठे'चादि, तहा ' सुत्तअत्थकहणाए ' सुत्तकहणा जहा अन्नहा सुत्तं कुव्वंतो भन्नति-एवं एतं, ण एवं, इच्चादि, अत्थकहणाए अत्थि कहिज्जंते-अत्थाहिगारस्समत्तीए पडिसुणिऊण तहकारो कायव्वो, किमिति?, अवितहमेतं जहेवं तुब्भे वदहत्तिकट्टु तहक्कारो, तहा 'पडिसु-णणाए'त्ति पडिसुणणाए जहा जं सो कारवेति, जहा असुयं करेहि, तं पडिसुणिऊण तहत्तिकाऊण तहेव कीरइत्ति । अन्ने पुण किल एस इच्छात्ति सामायारीए विसओ इति, वायणपडिसुणणाएत्ति अभिन्नं पदं, उवरिल्लं पडिसुणणाए पदं उवदेसे सुत्तअत्थक-हणाए एतेहिं समं संबंधेति, तहासद्दं तु एतंसद्देण सह, तेण तहमेतंति भवति, ततः कोऽर्थः ?-वायणपडिसुणणाए उवदेसे पडि-सुणणाए सुत्तकहणे पडिसुणणाए एवं अत्थे, एतेसु अवितहमेतं सव्वं तहमेतं तुब्भे वदहत्तिकट्टु तहकारो कायव्वोत्ति। अन्ने भणंति-

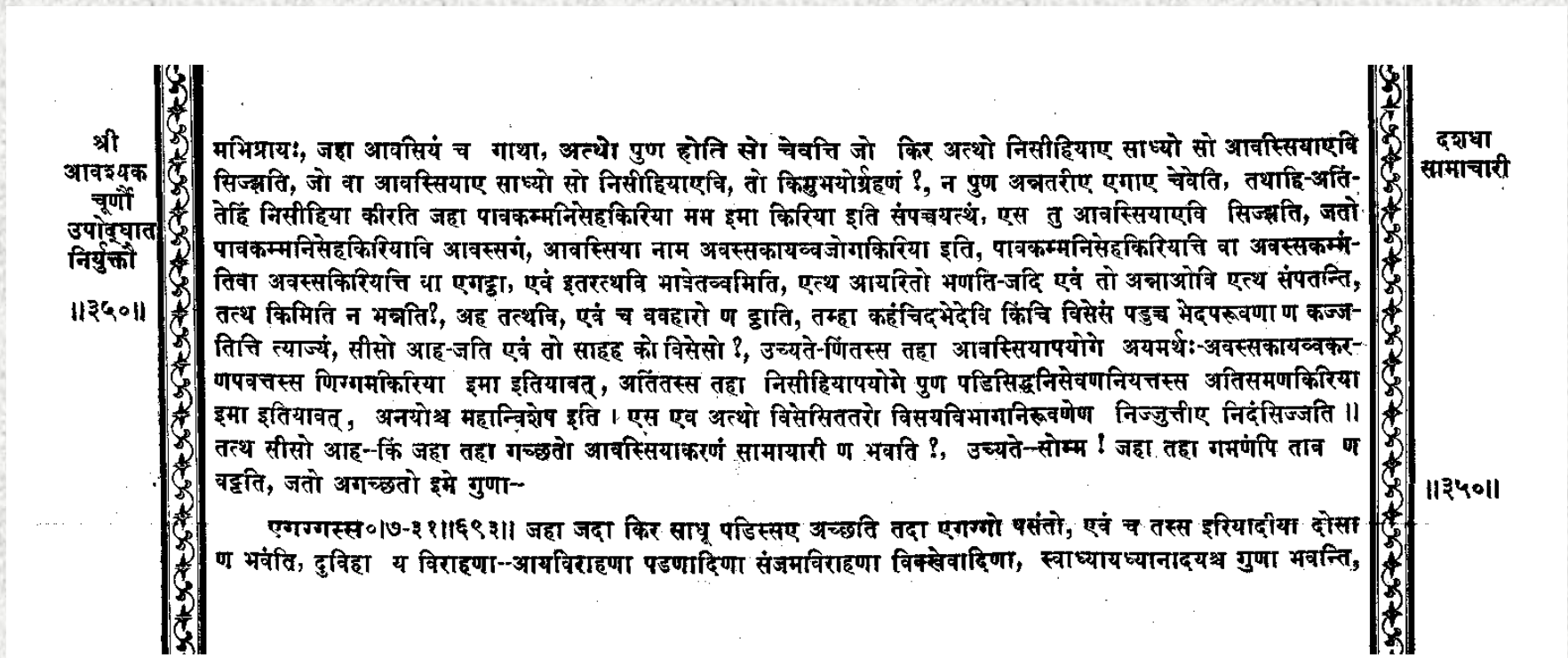
प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पडिसुणणाएत्ति प्रतिपृच्छोत्तरकालं आयरिए कथयति सति पडिसुणणाए, केती पुण विभासंति–तहक्कारो णाम वायणादिसु जं जहा तस्स भणणं तस्स तहा करणंति तहक्कारसामायारीति ॥ एसा य दसविहचक्कवालसामायारी सट्ठाणप्पओगतो सुत्तसिज्जिता कातव्वा । जे य गुणा एते काकूए दरिसेति—

जस्स य इच्छाकारो० ।७-२८॥६९०॥ चसद्दा सेससामायारीगहणं, एत्थ सोग्गती णाणदंसणचरणाणं भन्नति, अहवा सोग्गती सुदेवत्तादिका, एत्थ सीसो आह–णणु उवरि भंनिही 'साधू खवेंति कम्मं अणेगभवसंचित' मिती, तो किं तेण सोग्गती ण भवति ?, उच्यते, जाव सव्वकम्मक्खयो ण भवति ताव सुदेवत्तादिगं सुगतिं गंमतित्ति दरिसिज्जति, स्याद् बुद्धिः-किं पुण एवं सुगती कम्मक्खयो वा इति ?, उच्यते–जेण इच्छत्तिसामायारीए अज्झावणापरिहरणादि मिच्छत्ति दुक्कडगरहणादि तहत्ति सुकतानुमोदणादि इति विभासियव्वं । पुणो आह–एतं वरं उवरि भणितं होन्तं, सव्वं दसविहसामायारिं वञ्जिऊण इति, उच्यते, एवं वा भन्नति, 'एवं वा' इति अणियतो एस ववहारोत्ति ज्ञापितं, अहवा सिद्धंतसेलीए कहिंचि अन्नत्थवि भन्नति, तेण इहवि भणितं तत्थ दट्ठव्वंति । अन्ने पुण इमं गाथासुत्तं उवरिं 'एयं सामायारिं जुंजंता' एतीए गाथाए पुव्वं भणंति, केती पुण चसद्देण सेससामायारीगहणं ण भणंति, तिण्हं चेव पुव्विल्लीणं, महत्थतरियातोत्तिकाउं इति ॥ इयाणिं आवसिया निसीहिया च भन्नति, एत्थ ताव सीसो आह—

आवसियं च० ।७-२९॥६९१॥ एवं च भणिए आयरियो एतस्स चेवाभिप्पायमुवलक्खितुं अनूज्ज देंसेति, तव किलाय-



मभिप्रायः, जहा आवसियं च गाथा, अत्थो पुण होति सो चेवत्ति जो किर अत्थो निसीहियाए साध्यो सो आवस्सियाएवि सिज्झति, जो वा आवस्सियाए साध्यो सो निसीहियाएवि, तो किमुभयोर्ग्रहणं ?, न पुण अन्नतरीए एगाए चेवेति, तथाहि-अतितेहिं निसीहिया कीरति जहा पावकम्मनिसेहकिरिया मम इमा किरिया इति संपच्चयत्थं, एस तु आवस्सियाएवि सिज्झति, जतो पावकम्मनिसेहकिरियावि आवस्सगं, आवस्सिया नाम अवस्सकायव्वजोगकिरिया इति, पावकम्मनिसेहकिरियत्ति वा अवस्सकम्मंतिवा अवस्सकिरियत्ति वा एगट्ठा, एवं इतरत्थवि भावेतव्वमिति, एत्थ आयरितो भणति-जदि एवं तो अन्नाओवि एत्थ संपतन्ति, तत्थ किमिति न भन्नति?, अह तत्थवि, एवं च ववहारो ण ट्ठाति, तम्हा कहंचिदभेदेवि किंचि विसेसं पडुच्च भेदपरूवणा ण कज्जतित्ति त्याज्यं, सीसो आह-जति एवं तो साहह को विसेसो ?, उच्यते-णिंतस्स तहा आवस्सियापयोगे अयमर्थः-अवस्सकायव्वकरणपवत्तस्स णिग्गमकिरिया इमा इतियावत्, अतिंतस्स तहा निसीहियापयोगे पुण पडिसिद्धनिसेवणनियत्तस्स अतिसमणकिरिया इमा इतियावत्, अनयोश्च महान्विशेष इति । एस एव अत्थो विसेसिततरो विसयविभागनिरूवणेण निज्जुत्तीए निदंसिज्जति ॥ तत्थ सीसो आह--किं जहा तहा गच्छतो आवस्सियाकरणं सामायारी ण भवति ?, उच्यते--सोम्म ! जहा तहा गमणंपि ताव ण वट्टति, जतो अगच्छतो इमे गुणा--

एगग्गस्स०।७-३१॥६९३॥ जहा जदा किर साधू पडिस्सए अच्छति तदा एगग्गो वसंतो, एवं च तस्स इरियादीया दोसा ण भवंति, दुविहा य विराहणा--आयविराहणा पडणादिणा संजमविराहणा विक्खेवादिणा, स्वाध्यायध्यानादयश्च गुणा भवन्ति,

॥३५०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

जदि एवं भा चेव गम्मउ, भंनति, गंतव्वमवस्सकारणंमि, कातियउच्चारभत्तपाणगुरुनियोगादिविहाणंमि, ताहे तत्थ आवस्सियाहिं विचिआ तं करेति, जदि पुण एतेसुवि पत्तेसु अवस्सगंतव्वएसु ण णीति तो ते गुणा न भवन्ति, होंता दोसा भवंति, अन्ने य बहुदोसा इति ॥ किं च--

आवस्सियाओ०।७-३२॥६९४॥ कारणेऽवि अवस्स गच्छंतो जदि आवस्सतेहिं सव्वेहिं जुत्तजोगी अच्छति, आवस्सगाणि इरियादिभणिताणि, तेहिं जुत्तजोगी, तहा मणवयणकायइंदियगुत्तो, तो तस्स आवस्सियाओ-आवस्सियाकरणं आवस्सिया होतित्ति, इमा सामायारी भवतीत्यर्थः । कत्थ पुण अतितो निसीहितं कुणति ?, 'सेज्जं ठाणं च जहिं चेएति' सेज्जा-सयणीयं ठाणं-अच्छियव्वं, चसद्दा अन्नंपि तहाविहं, जत्थ चेतेति-करेति, किमिति? तत्थ निसीहियं करेइ, जम्हा तत्थ निषेधवाभिषिद्धः नियत्तो तेणं तु निसीहिया होति, निसीहियं करेति । पाठंतरं वा—

सेज्जं ठाणं च जहा(या) चेएति तदा निसिहिया होति । जम्हा तदा निसेहो निसेहमतिया य सा जेणं ॥ ७ ॥ ३४ ॥ ६९५ ॥ इति

किंच- आवस्सियं च णेंतो जं च अतितो निसीहियं कुणति । इत्थं इमं पयोयणं- जन्नं सो णितो संनं निवेदेति, जहाऽहं सेज्जानिसीहियाए अभिमुहोत्ति मम वट्टमाणिं वट्टेज्जाह, गुरुनिवेदणं च विणयप्पयोगो य एवमादि, सेज्जानिसीहिया नाम वसहिनिसेहकिरिया, तीए अभिमुहोत्ति, अवस्सं गमणाभिमुहोऽहमिति जं भणितं, तहा अतितोऽवि सन्नं निवेदेति, जहाऽहं

॥३५१॥

अथ दशधा सामाचारी वर्णयते

निसीहियाए पावनियत्तीए तुब्भं अभिमुहो, तुब्भे मा सागारिकादिभया वित्तसेज्जा, हत्थपादे वा णाउंदावेज्जा इच्चादि । तहा तत्थवि---

जो होति निसिद्धप्पा० ७-३५ ॥ १२१ भाष्यं ॥ कंठा । एवं च परूविते मा सीसस्स अच्चंतभेदबुद्धीए परिणमिस्सति जहा किर आवस्सिगनिसीहियाणं सामिविसयसरूवअभिधाणपयोयणमादीणि भिन्नाणि तो एगाहिगरत्तमवि णत्थि, तहा जो आवस्सगजुत्तजोगी सो अन्नो चेवत्ति, ण णज्जति य को णिसिद्धप्पा को वा आवस्सगजुत्तजोगीति, उभयैकपदव्वभिचारा-शंकाप्यत्र स्यादित्याह--

आवस्सयंमि जुत्तो ॥ ७-३६ ॥ १२२ भाष्यं ॥ जो आवस्सयंमि जुत्तो सो नियमा निसिद्धो इति नायव्वो, जो वा निसिद्धप्पा सो नियमा आवस्सए जुत्तोत्ति । एवं च व्याख्या-जो आवस्सयंमि जुत्तो सो नियमा निसिद्धो, जो पुण निसिद्धप्पा सो आवस्सए जुत्तो वा ण वा, जतो समितो नियमा गुत्तो, गुत्तो समियत्तणंमि भयणिज्जोत्ति । अहवावित्ति पक्षांतरेण परूवणा-भेदेण नयमतेणेत्यर्थः । अपि संभावने । एतदपि संभाव्यते, जहा-जो निसिद्धप्पा सो नियमा आवस्सए जुत्तो इति, आवस्सगं नाम अवस्सकायव्वं करणं । जुत्तो पवत्तो । निसिद्धो नाम पडिसिद्धनिसेवणनियत्तो इति ॥ इयाणिं आपुच्छणाय योगो--

आपुच्छणा उ कज्जे ॥ ७-३७ ॥ ६९७ ॥ जया किंचि साधू काउमणो भवति तदा आपुच्छतित्ति । इयाणिं पडिपुच्छा-पयोगो । सो य पुव्वानिसिद्धंमि होइ पडिपुच्छत्ति, पढमं संदेसओ दिन्नो, तं कहमवि ण ताव कीरति,तो काउमणो पच्छा पडिपुच्छति-

किं करेमि नवत्ति?, जहा रातीणं दो तिन्नि वारा पुच्छिज्जतित्ति । इयाणिं छंदणाद्वारं । तं कहं छंदणा?, पुव्वगहितेणं भत्तेण वा पाणेण वा वत्थेण वा पत्तेण वा, छंदणा णाम इमं अत्थि गेण्हह । निमंतणा णवि ताव गेण्हति, भणति-अच्छ तुमं, अहं ते दाहामि, जावणेमित्ति । इयाणिं उवसंपदा । उवसंपदा तिविहा-णाणोवसंपदा (दंसणोपसंपदा चरित्तोवसंपदा य, तत्थ) णाणोवसंपदा तिविहा-सुत्तनिमित्तं अत्थनिमित्तं तदुभयनिमित्तं, सुत्ते तिविहा-वत्तगानिमित्तं संधणानिमित्तं, गहणनिमित्तं, वत्तणानाम पुव्वगहियस्स अथिरस्स परियट्टणं करेति, संधणा नाम उज्जुयारणा, गहणं नाम जं अभिनवगहणं करेति, एवं चऽत्थेवि, एवं उभयेऽवि । दरिसणेवि दरिसणप्पभावगाणि सत्थाणि जहा गोविंदजुत्तिमादीणि । एत्थ संदिट्ठो संदिट्ठस्स ० चत्तारि भंगा, एत्थ संदिट्ठो संदिट्ठस्स जदि तो सुद्धो, सेसेसु तिसु असामायारीए वट्टति । चरित्तनिमित्तं दुविहा उवसंपदा-वेयावच्चनिमित्तं वा खमणनिमित्तं वा, वेयावच्चं दुविहं-इत्तिरियं आवकहितं च, वेयावच्चकरो पुण आयरियाण होज्जा वा ण वा, जति णत्थि ताहे घेप्पति, अह अत्थि सो दुविहो-इत्तिरिओ आवकहितो य, आगंतुगो दुविहो-इत्तिरितो आवकहिओ य, जदि दोऽवि आवकहिता ताहे जो सलद्धितो, दोऽवि सल्लद्धिया जो चिराणओ सो करेति, पाहुणओ वुच्चति-उवज्झायाणं करेहि, थेरस्स पवत्तिस्स गिलाणस्स सेहस्स एवमादि, जदि नेच्छति तो चिराणओ एताणि कारिज्जति, इमो आयरियस्स, जति नेच्छति तो विसज्जिज्जति । जइ इत्तिरिया दोऽवि तो एको पडिक्खाविज्जदि, अन्नस्स वा कारिज्जति, नेच्छंते विवेगो । इयाणिं संजोगो-आवकहितो विस्सामिज्जति, आगंतुओ इत्तिरिओ कारिज्जति, एवं विभासा, तस्स अन्नस्स नेच्छइ विवेगो । एवं जहाविधीते विभासा । इयाणिं खमणे, सो य दुविहो--इत्तिरिओ आवकहितो य, आवकहितो भत्तपच्चक्खाणओ, इत्तिरिओ दुविहो-वियट्टखमओ अवियट्टो य,

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

ताहे सो पुच्छिज्जति-तुमं अज्जो ! विकिट्ठतवेण केरिसो होसि ?, सो भणति-गिलाणोवमो, सो पडिसिज्झति, भणति-ण तुज्झ एतं कम्मं, सुत्ते अत्थे य आदरं करेहि, विगिट्ठेवि तहेव पन्नविज्जति, अन्ने भणंति-विगिट्ठखमगो पारणगकाले गिलाणोवमोवि-इच्छिज्जति, जो तु मासादिखमतो सो इच्छज्जति चेव, जो मासादिखमणं करेति भत्तं वा पच्चक्खाति, तत्थ आयरितो जदि अणापुच्छाए पडिवज्जति तो असमायारीए वट्टति, ते णेच्छंतित्ति काउं, सो अप्पणा आढत्तो पडिलेहणादि काउं, तेसिं वा अन्नोऽवि खमओ अत्थि, ते तेण वाउला, ते भणंति-एतस्स समत्ते करेहामो, ताहे पडिच्छाविज्जति, अह पुण दोण्हवि समत्था पडिवज्जंति य ताहे करेंति । एवं पडिच्छिते जे न करेंति तत्थ आयरितेण ते सारेयव्वा, जं वामयं जाणति, एतेण खमतो सीदतित्ति, किं च तस्स कायव्वं उव्वत्तण परित्तण मत्तगतिएण वा । एस संजतोवसंपदा । इयाणिं गिहिणोवसंपदा, जत्थ साधू पंथे पहे देवकुलादिसु वा अच्छिउकामो तत्थ अणुन्नवेत्ता ठातियव्वं, मा आदिन्नादाणवेरमणादियारदोसा होज्जा, जदिवा साधू भिक्खायरियाए पविट्ठो केणति वाघातेण अच्छियव्वं भवति तत्थ अणुन्नवेयव्वं । इत्तिरियंपि ण कप्पति अवियाणं खलु परोग्गहादीसु चिट्ठितुं निसीतित्ता, ततियव्वयरक्खणट्ठाए ताहे कारणं दीवेत्ता अच्छति । ण य ताण कुच्चविच्चाणि निज्झातियव्वाणि, जत्थ रुक्खे वीसमति तत्थ जति अत्थि पंथिओ सो अणुन्नविज्जति, नत्थि ताहे अणुयाणतु देवता जस्सोग्गहो एसो, सेत्तं दसविहा सामायारी । इयाणिं पदविभागसामायारी कप्पववहारा पदविभागः, तदुपरिष्टाद्वक्ष्यति । सट्ठाणे तेसिं पुण इमो अधिकारो-कप्पंमि कप्पिया खलु मूलगुणा चेव उत्तरगुणा य । ववहारे ववहरिया पायच्छित्ता भवंते य ॥१॥ सेत्तं सामायारिउवक्कमकालो । (आउ)कालो सत्तविहो-अज्झवसाणनिमित्ते ॥८-१।७२४॥ अज्झवसाणमेव निमित्तं अज्झवसाणनिमित्तं, अहवा अन्नं अज्झवसाणं, अन्नं निमित्तं च,

अथ आयुष्य-काल वर्णयते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

अज्झवसाणं तिविहं-रागज्झवसाणं भय-स्नेहज्झवसाणं च, रागज्झवसाणं जहा एगस्स गावीओ हिताओ, ताहे कुविताओ पच्छतो लग्गा, तेहिं नियत्तियाओ, तत्थ एगो तरुणो कुप्पासं पविसिओ पट्टबद्धओ तिगंडकंडगसज्जो जहा विज्जाहरो परमरूवदरिसणिज्जो, सो तिसातितो एगं गामं पविट्ठो, ताहे मग्गिए एगाए तरुणीए पाणियं णीणितं, सो पवीतो, सा ओयत्तेति तस्स सरीरे, ता सो धातो, जाहे ण ट्ठाति ताहे उट्ठेत्ता पधावितो, सावि तहेव ओयत्तेति, जाहे सो अदेसो जातो ताहे सा तहेव ओयल्ली। णेहज्झवसाणं मायापुत्तादिवत्, जहा एगस्स वाणियगस्स तरुणि महिला, ताणि य परोप्परं अतीव अणुरत्ताणि, ताहे सो वाणिज्जेण गतो, पडिणियत्तो, वसहीए एगाहेण पावतित्ति, ताहे से वयंसगा भणंति-पेच्छामो किं सच्चो अणुरागो णवा?, ताहे एगेण आगंतूण भज्जा से भणिता-सो मतो, सा भणति-सच्चं मतो ?, तं वक्कं भणित्ता मता, ताहे इतरस्सवि अधाभावेण कहितं, सोवि मतो।

भयज्झवसाणेणं जहा गयसुमालमारगस्स सोमिलस्स, तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवती णामं णयरी होत्था, पातीयपडीणायता उदीणदाहिणविच्छिण्णा णवजोयणविच्छिन्ना दुवालसजोयणायामा धणवतीमतिनिम्माया चामीकरपवरपागारा णाणामणिपंचवन्नकविसीसगसोहिया अलयापुरिसंकासा पमुदितपक्कीलिता पच्चक्खं देवलोगभूता, तीसेणं बहिता उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे रेवतेणामं पव्वतो होत्था, तुंगे जाव निच्चच्छणए दसारवीरपुरिसरवरकन्नलवगाणं, तस्स णं पव्वयस्स अदूरसामंतेणं णंदणवणे णामे उज्जाणे होत्था, वन्नओ जहा दसन्ने, तस्सणं मज्झभागे सुरप्पिए णामं जक्खाययणे होत्था, वन्नओ, तत्थ णं णगरीए कण्हे णाम वासुदेवे राया होत्था, महताहिमवंत एवं जहा दसन्नभद्दे जाव रज्जं पसाहेमाणे विहरति, से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं राईसहस्साणं पज्जुन्नपामोक्खाणं

भव-अध्यवसाय निमित्त (गजसुकुमाल-मारक) सोमिलस्य द्रष्टांत

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं संवपामोक्खाणं सट्ठीय दुइंतसाहस्सीणं वीरसेणपामोक्खाणं एगवीसाए वीरसहस्साणं महसेणपामुक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं रुप्पिणिपामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासाहस्सीणं अणंगसेणपामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं अन्नासिं च बहूणं ईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभितीणं वेयड्ढगिरिसागरपेरंतस्स य दाहिणड्ढभरहस्स बारवतीए णगरीए आहेवच्चं जाव पालेमाणे विहरति। तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठणेमी, वन्नओ, बारवतीए जाव विहरति। तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहतो अरिट्ठणेमिस्स अंतेवासी छब्भातरो अणगारा जाव उग्गतवा ओराला चोद्दसपुव्वी चउन्नाणोवगता सरिसगा सरित्तया सरिव्वता णीलुप्पलगवलप्पगासा सिरिवच्छंकियवच्छा पसत्थबत्तीसलक्खणधरा कुसुकुलयभद्दलगा णलकुब्बरसामाणा ओयंसी तेयंसी वच्चंसी, जसंसी ते य पव्वज्जादिवसादो आरब्भ सामिणा अब्भणुन्नाता छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं विहरंति।

तए णं ते अन्नया पारणगंसि पढमाए सज्झायंति बितियाए झाणं ततियाए तिहिं सिंघाडएहिं बारवतिं अडंति। तत्थ णं एगे संघाडए उच्चणीयमज्झिमाइं कुलाइं अडंते वासुदेवस्स देवतीए देवीए गिहमणुपविट्ठे, सा य तं पासित्ता हट्ठ जाव भद्दासणातो अब्भुट्ठेत्ता पाउयाओ ओमुयति, ओमुयित्ता अंजलिमउलियहत्था सत्तट्ठ पदे गंता तिक्खुत्तो आयाहिण जाव णमंसित्ता सिंघकेसरगमच्छंडिकामोदकथालेणं सतं चेव पडिलाभेति, पडिलाभेत्ता वंदति, वंदित्ता पडिविसज्जेति, तया णं दोच्चे संघाडए, एवं तच्चेऽवि, णवरं तच्चं पडिलाभेत्ता एवं वयासी--किं णं भंते! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवतीए जाव देवलोगब्भूताए णिग्गंथा अडमाणा भत्तपाणं ण लभंति?, तो णं ताइं चेव कुलाइं भत्तपाणाए भुज्जो भुज्जो अणुपविसंति?, तत्थ णं देवइसे णामं अणगारे एवं व०-णो खलु देवाणुप्पिए! एवं एतं, किं तु अम्हे छब्भायरो सरिसगा जाव संघाडएणं अडमाणा तुज्झ गेहं अणुप्पविट्ठा, तं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

णो चेव णं ते अम्हे, अन्ने णं अम्हेत्तिकट्टु जाव पडिगता । तए णं तीसे अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था, एवं खलु अहं पोलासपुरे णगरे अतिमुत्तेण कुमारसमणेणं बालत्तणे वागरिता-तुमण्णं अट्ठ पुत्ते पयाइस्ससि सरिसए जाव णलकुब्बरसामाणे, णो चेव णं भरहे वासे केवतिकालाओ अन्नाओ अम्मयाओ तारिसएत्ति. तन्नं मिच्छा, इमन्नं पच्चक्खमेव दीसति, अन्नाओवि पयाताओ, तं गच्छामि णं सामिं पुच्छामित्तिकट्टु सामिअंतियं उवगता जाव पज्जुवासति । सामिणा तीसे अज्झत्थियं कहियं जाव अत्थे समट्ठे?, हंता अत्थि, एवं खलु देवाणु० ! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे णागस्स गाहावतिस्स सुलसा भारिया नेमित्तिएण निंद् वागरिता, तए णं सा बालप्पभितिं चेव हरिणेगमेसिं देवं भत्ता यावि होत्था, तं तीसे भत्तिबहुमाणेणं स देवे आराहिते यावि होत्था, तए णं तुमंपि सावि समाभेव दारए सवह, सा णं विणिघातमावन्ने पेयाति, से देवे तीए अणुकंपणट्ठा ते गेण्हेत्ता तव अंतियं साहरति, जेवियणं ते तव पुत्ता तेवि य तीए साहरति,तं तव चेव णं ते पुत्ता, णो सुलसाए, तए णं सा सामिं वंदति, वंदित्ता जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ते वंदति, वंदित्ता आगतपण्हागा पप्पुतलोयणा कंचुकपरिक्खित्तिया संवरितवलयबाहा ऊसवितरोमकूवा ते छप्पि अणगारे ताए इट्ठाए दीहाए सोम्माए सप्पिवासाए निब्भराए अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी २ सुचिरं निरिक्खइ २ वंदइ वंदित्ता पुणो सामिं वंदित्ता जामेव दिसिं तामेव पडिगता जाव सयणिज्जंसि निसन्ना चिंतेति-एवं खलु अहं सरिसगे जाव सत्त पुत्ते पयाता, णो चेव णं मए एगस्सावि बालत्तणए समणुभूते, एसवि य णं कण्हे वासुदेवे णिच्चप्पमत्ते सयं पलालिते कंदप्परती मोहणसीले छण्हं छण्हं मासाणं ममं अंतियं पादवंदए आगच्छति, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मगाओ जासिं माऊणं णियगकुच्छिसंभूतगाइं थणदुद्धलुद्धयाइं मधुरसमुल्लावगाइं मम्मणपजंपियाइं थणमूला कक्खदेसभागं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

अतिसरमाणाइं मुद्धगाइं पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगनिवेसिताइं देंति समुल्लावगे सुमधुरे, पुणो पुणो मंजुलप्पभणिते, अहं णं अहण्णा ४ एत्तो एगतरमावि ण पत्ता, ओहत जाव झियाइ, इमं च णं कण्हे जाव विभूसिते पादवंदए आगच्छति, तं पासति, पादग्गहणं करेति, करेत्ता एवं व०-अज्जया णं तुब्भे अम्माओ ! मम पासित्ता हट्ठ जाव भवह, किन्नं अज्ज जाव झियाह?, तए णं सा तं सव्वं परिकहति, सेवि एवं व०-मा णं जाव झियाह, अहं णं तहा घत्तिस्सामि जहा णं ममं सहोदरे जाव भविस्सतित्तिकट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं समासासति २ अट्ठमं पगेण्हति, पगेण्हेत्ता जहा भरहे तहा हरिणेगमेसिं आराहेति, सेऽवि एवं व०- होहिति तव देवलोगच्चुते सहोदरगे, तिण्हं वारं पडिसुणित्ता पडिगते, कण्हेऽवि तं सव्वं देवतीए पडिकहेत्ता पडिगते, तए णं सा अज्जया कयाती गयं सुमिणे पासित्ता पडिबुद्धा जाव परिवुडा वहति, तए णं सा णवण्हं मासाणं जाव जासुमणावत्तबंधुजीवसमप्पभं सव्वणयणकंतं सुकुमालं जाव सुरूवं गजतालुयसमाणं दारगं पयाता, जम्मणं जहा सामिस्स सिद्धत्थो करेति जाव जम्हाणं अम्हं इमे दारगे गततालुयसमाणे तं होऊ णं एतस्स णामधिज्जं गयसुकुमाले २, सेसं जहा मेहे जाव अलं भोगसमत्थे जाते यावि होत्था ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवतीए सोमिले णामं माहणे परिवसति, अड्ढे जाव सुपरिणिट्ठिते यावि होत्था । तस्स सोमस्सिरी णाम माहणी होत्था, तेहिं सोमा णामं दारिया होत्था सूमाला जाव सुरूवा, रूवेण य जोव्वणेण य लायन्नेण य जाव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था । तएणं सा अज्जया कयादी ण्हाता जाव विभूसिता बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता सयाओ गिहातो पडिनिक्खमति २ रायमग्गंसि कणगतिंदूसगेणं कीलमाणी २ चिट्ठति ।

॥३५८॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे, परिसा निग्गया, कण्हेवि य णं इमीसे कहाए लद्धट्ठे सभाए सुहम्माए कोमुदियं भेरिं तालावेत्ता जहा सक्के घंटं जाव ण्हाते विभूसिते गयसुकुमालेणं सद्धिं विजयखंधहत्थिखंधवरगते जहा दसन्नभद्दे जाव बारवतीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति। तं च सोम्मं दारितं पासइ २ त्ता तीसे रूवे य ३ जाव विम्हिए पुच्छति–कस्सेसा किं वा णामे ?, ते णं तएणं कोडुंबियपुरिसा साहंति सव्वं, तए णं कण्हे एवं व०-गच्छह णं भो तुम्हे सोमिलं जातित्ता सोमं कण्णंतेपुरंसि पक्खिवह, ते णं एसा गयसुकुमालस्स पढमपत्ती भविस्सइ, तेवि जाव पक्खिवंति, कण्हेविय णं जाव सहसंबवणे सामिं पज्जुवासति, धम्मकहा, धम्मे, कण्हे, परिसा पडिगता, तए णं से गयसुकुमाले सामिस्स धम्मं सोच्चा जा णवरं अम्मापितरो आपुच्छामि, अहासुहं०, तए णं से सामिं वंदित्ता जाव पडिगते अम्मापिऊण पादवडणं करेति करेत्ता एवं व०-एवं खलु अम्मतातो! मए सामिस्स अंतिए धम्मो णिसंतो. सेविय मे जाव अभिरुतिते, तएणं अम्मापियरो एवं वयासी-धन्नेऽसि णं तुमं जाता ! जाव कयकल्लाणे सि णं तुमं जाता! जन्नं तुमे जाव अभिरुतिते, तए णं सो दुच्चंपि तच्चंपि एवं भणति जहा जमाली जाव तं इच्छामि णं पव्वइत्तए, तए णं सा देवती तं अणिट्ठं जाव फरुसं गिरं सोच्चा माणसिएणं महया दुक्खेणं अभिभूता समाणी सेआगतरोमकूवा पगलंतचिलिणगाता सोयभरुपवेतितंगमंगी निच्चेया दीणविमणवयणा करतलमलितव्व कमलमाला तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरा लायन्नसुन्नच्छायगतासिरीया पसिढिलभूसणपडंतखुभितसंचुन्नितधवलवलयपब्भट्ठउत्तरिज्जा मुच्छावसणट्ठचेतगरुई सुकुमाल विकिन्नकेसहत्था परसुणिकित्तव्व चंपयलता णिव्वत्तमहव्व इंदलट्ठी विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि धसत्ति सव्वंगेहिं संनिवतिता, तए णं सा संभमोयत्तितंतरिता कंचणभिंगारमुहविणिग्गतसीतलजलविमलधारपरिसिच्चमाणनिव्वावितगायलट्ठी

उक्खेवगतालियंटवीयणगजणितवातेण सफुसितेणं अंतेपुरपरिजणेण आसासिता समाणी मुत्तावलिसंनिगासपवडंतअंसुधाराहिं सिंचमाणी पयोहरे कलुणविमणदीणा रोयमाणी कंदमाणी तप्प०सोत० विलव० गजसुमालं एवं व०-तुमंसि णं जाता ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुन्ने मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूते जीवितुस्सविए हिदय-णंदिजणणे उंबरपुप्फं व दुल्लहे सवणताए, किमंग पुण पासणताए ?, तं नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुज्झं खणमवि विप्पतोगं सहित्तए, तं अच्छाहि ताव जाता ! भुंजाहि ताव जाता ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जियामो, ततो पच्छा अम्हेहिं कालगतेहिं परिणतवए वड्ढितकुलवंसतंतुकज्जंमि णिरवयक्खे जाव पव्वइहिसि, तए णं से एवं व०-तहेव णं तं अम्मताता ! जहेव णं तुब्भे ममं एवं वयह--तुमं णं जाता ! अम्हे जाव पव्वइहिसि, किं पुण अम्मताता ! माणुस्सते भवे अणेगजाति एवं जहा पुंडरीए जाव पुव्वं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहणिज्जे, से केस णं जाणति अम्मतातो ! के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि जाव पव्वइत्तए । तए णं अम्मापियरो एवं व०-इमं च ते जाता ! सरीरगं पतिविसिट्ठरूवं लक्खणवंजणगुणोववेयं उत्तम-बलविरियसत्तजुत्तं विन्नाणवियक्खणं ससोहग्गगुणसमुइतं अभिजातमहक्कमं विविहवाहिरोगरहितं निरुवहउदत्तलट्ठपंचेंदियपहं पढमजोव्वणत्थं अणेगउत्तमगुणेहिं जुत्तं तं अणुहोहि ताव जाया ! नियता सरीररूवसोहग्गजोव्वणगुणेहिं ततो पच्छा जाव पव्वइहिसि, तए णं सो एवं वयासी--तहेव णं तं जाव किं पुण अम्मतातो ! माणुस्सयं सरीरं दुक्खायतणं जहा पुंडरीए जाव अवस्सविप्पजहियव्वंति, सेसं तं चेव । तए णं तं अम्मापितरो एवं व०- अम्हे णं तुज्झ जाता ! विउलकुलबालियाओ कलाकुस-लसव्वकाललालितसुहोइताओ महवगुणजुत्ताणिउणविणओवयारपंडितवियक्खणाओ मंजुलमितमधुरभणितविहसितविप्पेक्खितगति-

विलासचिट्ठितविसारदाओ अविकलकुलसीलसालिणीओ विसुद्धकुलवंससंताणतंतुवद्धणपगब्भउब्भवपभाविणीओ सरिसताओ सरिव्वयाओ सरित्तयाओ सरिसलावन्नरूवजोव्वणगुणोववेताओ जाव सिंगारागारचारुवेसातो मणोऽणुकूलहिदइच्छिताओ अट्ठ तुज्झ गुणवल्लभाओ उत्तमाओ निच्चं भावाणुरत्तसव्वंगसुंदरीओ वरेमो, तं भुंजाहि ताव जा ताहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे, ततो पच्छा भुत्तभोगी विसयविगतवोच्छिन्नकोतुहल्ले अम्हेहिं कालगतेहिं जाव पव्वइहिसि, तए णं से एवं व०-तहेव णं तं जाव किं पुण अम्मतातो ! माणुस्सगा कामभोगा तहेव जाव अवस्सं विप्पजहियव्वत्ति, सेसं तं चेव । तए णं तं अम्मापितरो एवं व०-इमे ते जाता ! अज्जगपज्जगपितुपज्जतागते सुबहू हिरन्ने य सुवन्ने य कंसे य दूसे य विउले धणकणग जाव सन्तसारसावतेज्जे अलाभि जाव आसत्तमतो कुलवंसाओ पगामं दातुं पगामं भोत्तुं परियाभाएतुं तं अणुहोहि ताव जाता ! विपुले माणुस्सते इड्ढिसक्कारसमुदए, ततो पच्छा अणुहूतकल्लाणे वड्ढितकुलवंस जाव पव्वतिहिसि, तए णं से एवं व०-तहेव ण तं जाव किं पुण अम्मतातो ! हिरण्णे य तहेव जाव विप्पजहितव्वेत्ति, सेसं तं चेव । तए णं तं अम्मापितरो जाहे णो संचाएंति बहूहिं विसयाणुलोमा आघवणाहि य पन्नवणाहि य जहा पुंडरीए जाव पव्वइहिसि, तए णं से एवं वयासी-तहेव णं तं जाव किं पुण अम्मतातो ! निग्गंथे पावयणे कीवाणं एवं तहेव जाव पव्वतित्तएत्ति ।

तए णं से कण्हे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव गयसुमाले तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गयसुकुमालं आलिंगति २ उच्छंगे निवेसेति, निवेसेत्ता एवं वयासी-तुमन्नं ममं जाता ! सहोदरे कणीयसे भाता, तं मा णं तुमं जाता ! इयाणिं जाव पव्वयाहि, अहं णं तुमे बारवतीए णगरीए महता २ रायाभिसेगेण अभिसिंचिस्सामि, तए णं से गयसुमाले कण्हेणं एवं वुत्ते समाणे णो

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

आढाति णो परिजाणति, तए णं से कण्हे दोच्चंपि तच्चंपि तहेव भणति, तए णं से गयसुमाले कण्हं अम्मापियरो य दोच्चंपि एवं व०- एवं खलु देवा०! माणुस्सगा कामभोगा खेलासवा जाव विप्पजहियव्वा, तं इच्छामि णं जाव पव्वतित्तएत्ति। तए णं तं गयसुमालं ताणि जाहे णो संचातंति बहूहिं आघवणाहिं ४ आघवित्तए वा ४ ताहे अकामगाइं चेव एवं व०- तं इच्छामो ते जाता! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तएत्ति, तए णं से गयसुमाले कण्हं अम्मापियरं च अणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठति, तए णं से कण्हे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं व०- खिप्पामेव भो गयसुमालस्स महत्थं महरिहं जाव रायाभिसेयं उवट्ठवेह, एवं रायाभिसेगो भरहाभिसेगाणुसारेण विभासियव्वो, निक्खमणं सामिऽणुसारेणं इंदादिवज्जं, जाव कण्हे गयसुमालं पुरतो कट्टु जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवा० जाव णमंसित्ता एवं व०- एवं खलु भंते! गयसुमाले खत्तियकुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे जाव किमंग पुण पासणयाए? से जहा णामए उप्पलेइ वा पउमेति वा जाव सहस्सपत्तेइ वा पंके जाते जलसंवड्ढे णोवलिप्पति पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव गयसुमालेऽवि कामेसु जाते भोगेसु संवड्ढे णोवलिप्पति कामरएणं णोवलिप्पति भोगरएणं णोवलिप्पति मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरियणेणं, एस णं भंते! संसारभउव्विग्गे भीते जम्मणमरणाणं इच्छति सामिणं अंतिए जाव पव्वइत्तए, तं अम्हे णं एतं सामीणं सीसभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं सामी सीसभिक्खं, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं, तएणं से गयसुमाले सामिस्स उत्तरपुरत्थिमं दिसिं गंता सयमेव आभरणादिता मुयति, देवती पडिच्छति, अणुसट्ठिं दलयति जहा सामिस्स कुलमहतरिता, जाव पडिगता, तए णं से पंचमुट्ठियं लोयं करेत्ता सामिं तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता एवं व०- आलित्ते णं भंते! लोए, पलित्ते णं भंते! लोए जराए मरणेण य, से जहाणामए केती गाहावती अयारंसि झियायमाणंसि जे से

॥३६२॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

तत्थ भेंडे भवति अप्पसारे मोल्लगुरुगे तं गहाय आताए एगंतमवक्कमति, एस मे नित्थारिते समाणे पच्छा तूराए हिताए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति, एवामेव ममवि आता एगे भंडे इट्ठे कंते मणुन्ने महग्घे जाव भंडकरंडगसमाणे मा णं सीतं मा णं उण्हं मा णं खुहा मा णं पिवासा मा णं चोरा मा णं वाला जाव मा णं परिस्सहोवसग्गा फुसंतुत्तिकट्टु एस मे णित्थारिते समाणे हिताए जाव संसारवोच्छेदणाए भविस्सति, तं इच्छामि णं भंतेहिं सयमेव पव्वावितं, एवं मुंडावितं सेहावितं सिक्खावितं सयमेव आयारगोयरविणयवेणइयचरणकरणजातामातावित्तियं धम्ममाइक्खितं, सामीवि तहेव करेति जाव धम्ममाइक्खति, एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं एवं चिट्ठियव्वं एवं निसीतियव्वं तुयट्टियव्वं भुंजियव्वं भासियव्वं, एवं उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजयेणं संजमियव्वं, अस्सिं च णं अट्ठे णो पमादेयव्वं, तए णं से तहारूवं धंमियं उवदेसं सम्मं संपडिच्छति २ जाव तमाणाए तहा संजमति, एसे जाते इरियासमिए जाव निग्गथं पावयणं पुरओ काउं विहरति ।

तए णं से जं चेव दिवसं पव्वइते तस्सेव दिवसस्स पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छति २ तिक्खुत्तो वंदति २ एवं व०- इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए महाकालंसि सुसाणंसि एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अहासुहं, तए णं से हट्ठे जाव सामिं वंदित्ता तंमि मसाणे थंडिलं पडिलेहेत्ता ईसिं पब्भारगतेणं कातेणं जाव दोवि पादे साहट्टु एगरातियं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति । इमं च णं सोमिले माहणे सामिधेयस्स अट्ठाए बारवतीओ बहिया पुव्वनिग्गए, तं गहेऊण पडिनियत्तमाणे संझाकालसमयंसि पविरलमणूसंसि गयसुमालं तहा पासति, पासित्ता तं वेरं सरति २ आसुरुत्ते जाव एवं मन्नित्था-एस णं भो गयसुमाले अपत्थिय जाव परिवज्जिते जे णं मम धूयं सोम्मं दारियं बालं अपडुप्पन्नं अकयवे-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मणस्सं विप्पजहित्ता मुंडे जाव पव्वतिते, तं सेयं खलु ममं एयस्स वेरनिज्जातणं करेत्तए, एवं संपेहेति २ दिसापडिलेहणं करेति२ सरसं मत्तियं गेण्हति २ तस्स मत्थए मत्तियापालिं बंधति बंधित्ता जलंतीओ चिगताओ पप्फुल्लकेसुयसामाणे खदिरंगाले कमल्लेणं गेण्हति २ तस्स मत्थए पक्खिवइ, भीते ६ ततो खिप्पामेव अवक्कमति अवक्कमित्ता जाव पडिगते। तए णं तस्स गयसुमालस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूता उज्जला जाव दुरहियासा, तं सो सोमिलस्स मणसाऽवि अप्पदुस्समाणे जाव सम्मं अधियासेति, तए णं तस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तदावरणिज्जाणं खएणं कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने, ततो पच्छा सिद्धे जाव पहीणे। तत्थ णं आहासंनिहितेहिं देवेहिं सम्मं आराहितेत्तिकट्टु दिव्वे सुरभिगंधोदयवासे वुट्ठे दसद्धवन्ने कुसुमे निवादिते चेलुक्खेवे कते दिव्वे य गीतगंधव्वणिणादे कते यावि होत्था। तए णं से कण्हे कल्लं पाउ जाव वंदपरिक्खित्ते बारवइं मज्झंमज्झेणं सामिंतेणं निग्गच्छति, तत्थ य एगं पुरिसं पासइ- जुन्नं जाव जराकिलंतं महइमहालयाओ इट्ठगरासीओ एगमेगं इट्ठगं गहाय बहिया रत्थापहातो अंतो गिहंसि अणुप्पवेसमाणं, तए णं कण्हे तस्स अणुकंपणट्ठयाए हत्थिखंधवरगते चेव एगं इट्ठगं गेण्हति गेण्हित्ता जाव गिहंसि अणुप्पवेसेति, तए णं अणेगेहिं पुरिससहस्सेहिं से इट्ठगरासी खिप्पामेव अणुप्पवेसिते, तते णं से कण्हे जाव सामिं वंदति वंदित्ता अवसेसे अणगारे वंदति वंदित्ता गयसुमालं अपासमाणे सामिंतेणं एवं वदासी- कहि णं भंते ! से मम सहोदरए ? जेणं वंदामि, तए णं सामी एवं वयासी- साहिते णं कण्हा ! गयसुमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठे, कहं णं भंते !०?, एवं खलु कण्हा ! गयसुमाले कल्लं सव्वं कहेति जाव विहरति। तए णं तं एगे पुरिसे पासति, पासित्ता आसुरुत्ते दिसालोयं करेत्ता सरसं मत्तियं गेण्हति सेसं तं चेव जाव

पहीणे । एवं खलु कण्हा ! जाव साहिते अप्पणो अट्ठे । तए णं कण्हे एवं वयासी-केस णं भंते ! से पुरिसे अपत्थिय जाव परिवज्जिते जे णं ममं सहोदरस्स अणगारस्स एवं करेति ?, सामी आह- मा णं कण्हा ! तुमं तस्स पयोसमावज्जाहि, एवं खलु कण्हा ! तेणं तस्स साहेज्जे दिन्ने, कहं णं भंते !०, से णूणं कण्हा तुमं ममं वंदए आगच्छमाणे एगं पुरिसं तं चेव जाव पवेसिते, जहा णं तुमे तस्स साहेज्जे दिन्ने एवामेव गयसुमालस्सवि अणेगभवसयसहस्ससंचितं कम्मं उदीरमाणेणं बहुकम्मनिज्जरत्थकारे दिन्ने, से णं भंते ! पुरिसे मए कहं जाणियव्वे ?. जे णं कण्हा तुमं णगरं अणुपविसमाणं पासित्ता ठितए चेव हिदयभेदेण कालं करिस्सइ तं नं जाणेज्जासि, एस मे, से णं अपतिट्ठाणे नरए णेरइत्ताए उववज्जिहि । तए णं से कण्हे सामिं वंदित्ता जाव जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, सोमिलेवि य णं पभाते चिंतेति- एवं खलु कण्हे अरहतो वंदति, निग्गते णं, णातमेतं अरहता, सिट्ठमेतं भविस्सइ कण्हस्स, तं ण णज्जति कण्हे ममं केणइ कुमारेण वा मारेस्सतित्तिकट्टु भीते ५ सगाओ गिहाओ पडिणिक्खमति २ बारवतीए इतो ततो आधावमाणे कण्हस्स पुरतो सपडिदिसिं हव्वमागते, तए णं से कण्हं सहसा पासति पासित्ता भीते ५ जाव कालं करेति २ धरणिं जाव संनिवतिते, कण्हेणं दिट्ठे, णातो, तए णं कण्हे आसुरुत्ते जाव एवं वयासी-एस णं भो जाव परिवज्जिते जेणं ममं सहोदरे अणगारे अकाले चेव जीवितातो ववरोविते, तं बारवतीए एतं घोसेत्ता पाणेहिं एतं अंछविएंछं कारेत्ता तं ठाणं पाणिएणं अब्भुक्खेत्ता जाव पच्चप्पिणह, तेऽवि तहेव करेंति । तए णं कण्हे तस्स सव्वस्सहरणं करेति, करेत्ता पुत्तदारे य से वस्से ठवेति, ठवेत्ता समुद्दविजयादीणंतेणं गंता सव्वं परिकहेति, तए णं तं दसारकुलं पवगवेगवित्तासितं पिव णागभवणं वाउलीभूतं गतसुमालस्स मणोरहचरिमनिबद्धं च, एवं कण्हसमासणं च गब्भं च जं बालभावं च जोव्वणं च पव्वज्जं च पडिमं च जाव

॥३६५॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

नेव्वाणचरिमनिबंधं च उक्कित्तमाणं २ महता २ सद्देणं कुहुकुहुकुहस्स परुन्नं जाव कालंतरेण अप्पसोगं जातं यावि होत्था । एवं अंतगडदसासु ॥ निमित्तं—

दंडकससत्थरज्जू० ॥८-२।७२५॥ मुत्तपुरिसनिरोहे०॥८-३।७२६॥ दंडेहिं ताव पिट्टितो जाव मतो, एतं निमित्तं, एवं सव्वत्थ विभासा । एतेहिं निमित्तेहिं वाघातो आउयस्स भवति, आहारे जो अतिबहुत्तेण मरति, तत्थ मरुएण दिट्ठंतो-सो अट्ठारस वारा भुत्तो पच्छा सूलेण मतो । अन्नो अणहारेण मतो । विसेण वा संजुत्तं जो आहारं भुंजति । वेयणा अच्छिवेयणादी सीतादी वा । परघातो विज्जुए वा तडीए वा पेल्लियस्स। फासे जहा तयाविसेणं सप्पेणं छित्तेणं विसं चडति, जहा वा बंभदत्तस्स इत्थिरयणं तंमि मते पुत्तेण भणितं-मए सद्धिं भोगे भुंजाहि, तीए भणितं--ण तरसि, ण पत्तियति, ताहे तीए घोडतो आणाविओ, पट्ठीए आलिद्धो, कसओ कडिं णीतो जाव सव्वो गलितो, ताहे सुक्कखएणं मतो, तहवि ण पत्तियत्ति, ताहे लोहपुरिसो आणीतो ताहे उवसन्तो जाव विलीणो। आणापाणुनिरोहेणं जहा छगलगादी । एस सत्तविहो आयुउवघातो । एवमादीहिं जे सोवक्कमा तेसिं आयुवाघातो भवति, सेसाणं ण उवक्कामिज्जति । के पुण सोवक्कमा निरुवक्कमा वा ?, नेरइया देवा असंखेज्जवासाउगा तिरिया मणुया य उत्तमपुरिसा चरिमसरीरत्ति, सेसा भतिया, देवा णारया असंखेज्जवासाउया य छम्माससेसाउया आउगाणि बंधंति, परभविआयुआणि, सेसा तिभागसेसाउया निरुवक्कमा, जे ते सोवक्कमा ते सिया तिभागसेसाउआ परभविआयुअं पकरेंति सिय तिभागतिभागवसेसाउआ सिअ तिभाग ३ सेसाउआ पकरेंति, कोऽनयोः प्रतिविशेषः ?, इमाणं संनिचयो तिव्वो इमाणं सो सिढिलो, सोवक्कमस्स उववन्नमेत्तस्स आरद्धं जत्थ रुव्वा (च्च) ति तत्थ ओयट्टिज्जति, निरुवक्कमेणं अवस्सं तं ठाणं पावियव्वं । तिभागो

निमित्तै-रायुर्भेदः

॥३६६॥

अथ आयु:भेदा: वर्णयते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

वीप्सार्थः, अणेगे तिभागा होंति जावतीएहिं आउयं विभागं देति । जो एगंसि भाए वट्टति तत्थ आलावतो, जे जीवे असंखेज्जद्धपविट्ठे सव्वनिरुद्धो सआउते सव्वमहतीए आउयबंधगद्धाए चरिमकालसमयंसि वट्टमाणे जहन्नियं सो अपज्जत्तगनिव्वत्तिं निव्वत्तेति, एयस्स भागस्स हेट्ठा ण तरति आउयं बंधिउं, तेण य सव्वजीवाणं आउबंधो अणाभोगभिनिव्वत्तिओ, तेण सो अंतोमुहुत्तिओ, आवलियाएवि अंतो । आह--जति आउयबंधो उवक्कामिज्जति तेण कयविप्पणासो अकयब्भागमो य होइ, कहं ?, जेण वाससयं आउयं बद्धं, सो तं सव्वं आउयं न भुंजति जहा तेण कयविप्पणासो, तस्स य तत्थ मारिव्वए जं आरओ मरति तेणं अकयब्भागमो भवति, एस यदि दोसो भवति तो णत्थि मोक्खो, मोक्खगयावि पडंतु, उच्यते--नायमस्माकमुपालंभः, एक्कोऽवि दोसो न भवति, कहं ?, जेण तं सव्वं वेदेति, कहं !, पलालवट्टिदिट्ठंतसाहणा, जहा पलालवट्टी हत्थसयदीहा अंते पलीविया चिरेण डज्झति, वेंटिया तक्खणा चेव डज्झति, एसो से उवणतो, अहवा अग्गिकव्याधिनिदर्शनात् फलपाचननिदर्शनाच्चेति । इयाणिं देशकालकालः । देशकालो नाम प्रस्तावः । सो दुविहो--पसत्थो अप्पसत्थो--

निम्मच्छियं महुं० ॥८--५।७२९॥ पसत्थो जहा भिक्खस्स कालो, सज्झायस्स तवस्स णाणादीणं वा । एवमादि ॥ तत्थ-

निद्धूमगं च गामं० ॥८--४।७२८॥ महिलातित्थं णाम निवाणतडं । एस पसत्थो देसकालो । इयाणिं कालकालो, कालकालो नाम मरणकालो, अन्ने भणंति--कालकस्य सत्त्वस्य कालधर्मणा संयोगो यः स कालकालो भवति । तत्थ कालकाले—

कालेण कतो कालो० ॥८--६।७२९॥ पमाणकालो दुविहो—दिवसप्पमाणकाले य रत्तिप्पमाणकाले य, चउपोरुसिये दिवसे चतुपोरुसिया राती भवति, उक्कोसिया अट्ठपंचमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति, जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा

अथ 'काल'द्वार वर्णनं आरभ्यते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

रातीए वा पोरुसी भवति, जदा णं भंते ! उक्कोसिया अड्ढपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति तदा णं कतिभाग-मुहुत्तभागेणं परिहायमाणी य २ जहन्निता तिमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति?, जया वा जहन्निया तिमुहुत्ता दिव-सस्स वा रातीए वा पोरुसी हवति तदा णं कतिभागमुहुत्तजोगेणं परिवड्ढमाणी य २ उक्कोसिया अड्ढपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति ?, सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसिया अड्ढपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति तदा णं बा-वीससयभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी २ जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति, जया वा जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति तया णं बावीससतभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी २ उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स राईए वा पोरुसी भवइ । कया णं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति ?, कया वा जहण्णा तिमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति ?, सुदंसणा ! जया णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे हवइ जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती हवइ तदा णं उक्कोसिया अड्ढपंचममुहुत्ता दिवसस्स [वा रातीए वा] पोरुसी भवति, जहन्निया तिमुहुत्ता रातीए पोरुसी भवति, जदा वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति जहण्णे दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं उक्कोसिता अड्ढपंचममुहुत्ता रातीए पोरुसी भवति, जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरुसी भवति ॥ कया णं भंते ! उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति ? जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती भवति ?, कदा वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति ? जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति ?, सुदंसणा ! आसाढपुन्निमाए उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता रादी भवति, पोस-पुन्निमाए णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति । अत्थि णं भंते ! दिवसा य रातीतो य

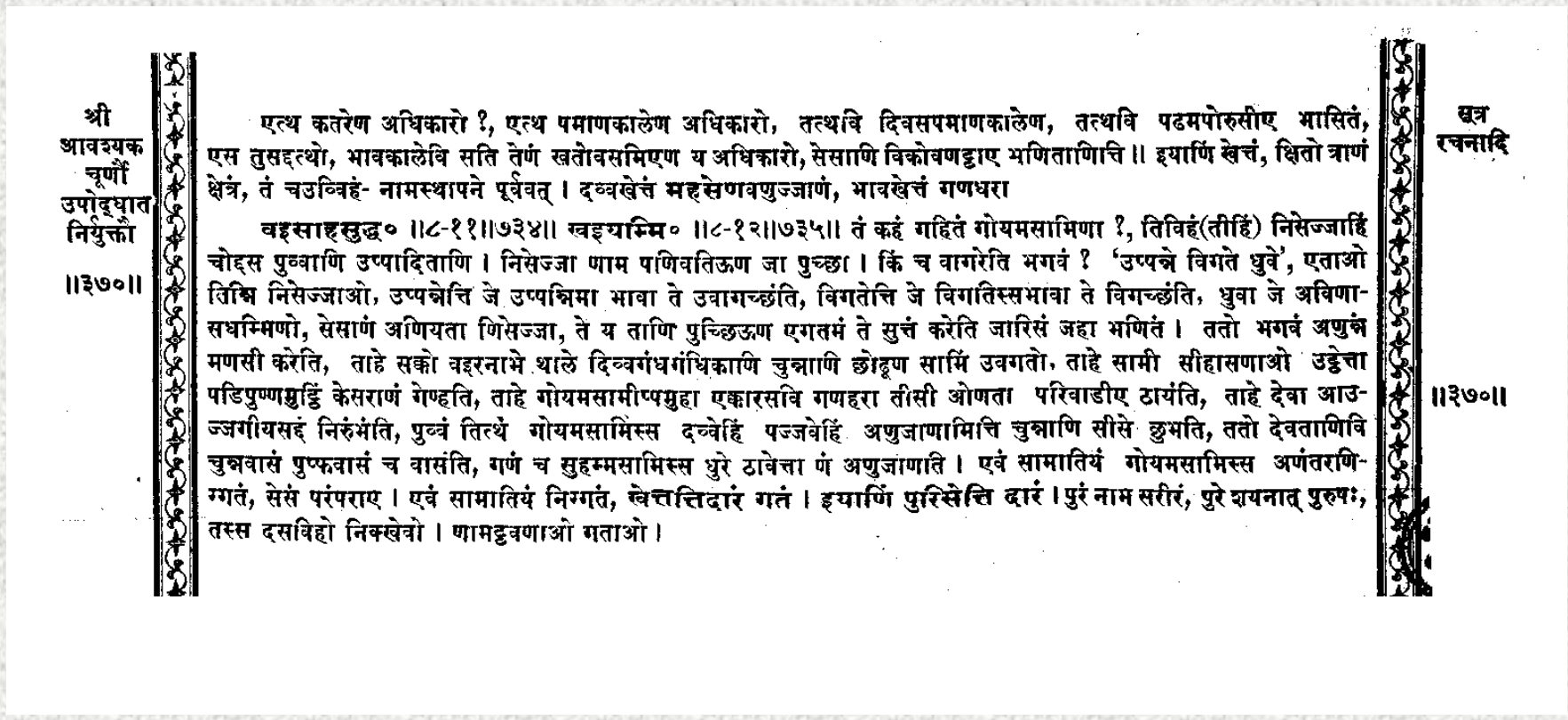
प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

समा चेव भवंति?, हंता अत्थि, कया णं भंते ! दिवसा य रातीतो य समा चेव भवंति?, सुदंसणा! चेत्तासोयपुन्निमासु णं, एत्थ णं दिवसा य रातीओ य समा चेव भवंति, पन्नरसमुहुत्ते दिवसे पन्नरसमुहुत्ता राती भवति, चतुभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति । सेत्तं पमाणकाले । एवं जहा **महाबले** सव्वं ॥ वन्नकालो जो कालतो वन्नो, भावकालो छण्हं भावाणं जस्स जस्स जो कालो ठितिविसेसो पज्जवा सा, एसो वा एगगुणकालगादी, तत्थ ओदतितो अत्थेगतितो अणादीओ अपज्जवसितो, अत्थेगतितो अणादीतो सपज्जवसितो, अत्थेगतितो सादीओ सपज्जवसितो य, खतितो सादीओ अपज्जवसितो, णवरं दाणादिलद्धिपणयं चरित्तं च सादीओ सपज्जवसिदो, खतोवसमिओ जहा उदयितो, पारिणामिओ दुविहो- सादीओ वा सपज्जवसिओ पुग्गलत्थिकातादी, अणादीयो वा अपज्जवसितो आगासादी, एत्थ जा जस्स भावस्स संचिट्ठणा ठिती अंतरं वा सो भावकालो, अहवा णाणदंसणचरित्ताणं जो कालो सो भावकालो, तत्थ उदयियो भावो अभवियाणं मिच्छादयो भावा अणादीया अपज्जवसिया, भवियाणं ते चेव मिच्छत्तादयो अणादीया सपज्जवसिया, णारगादी सादी सपज्जव०, उवसमिओ पुण उवसामगसेढिमादी पडुच्च सादी सपज्जवसितो, खइओ सम्मत्तणाणदंसणसिद्धत्ताइं पडुच्च सादी अपज्जवसितो,खओवसमिओ णाणाइं केवलवज्जा सादी सपज्जवसिता, मतिअन्नाण- सुयअन्नाणा भव्वाणं अणादी सपज्जवसिया, ताइं चेव अभव्वाणं अणादी अपज्ज०, पारिणामिओ पोग्गलधम्मो सादी सपज्जव०, धम्माधम्मागासत्थिकाया पारिणामिएण भावेण अणादी अज्जव०, एस भावकालो ।

॥३६९॥



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३७०॥

एत्थ कतरेण अधिकारो ?, एत्थ पमाणकालेण अधिकारो, तत्थवि दिवसपमाणकालेण, तत्थवि पढमपोरुसीए भासितं, एस तुसद्दत्थो, भावकालेवि सति तेणं खतोवसमिएण य अधिकारो, सेसाणि विकोवणट्ठाए भणिताणीत्ति ॥ इयाणिं खेत्तं, क्षितो त्राणं क्षेत्रं, तं चउव्विहं- नामस्थापने पूर्ववत् । दव्वखेत्तं महसेणवणुज्जाणं, भावखेत्तं गणधरा

वइसाहसुद्ध० ॥८-११॥७३४॥ खइयम्मि० ॥८-१२॥७३५॥ तं कहं गहितं गोयमसामिणा ?, तिविहं(तीहिं) निसेज्जाहिं चोद्दस पुव्वाणि उप्पादिताणि । निसेज्जा णाम पणिवतिऊण जा पुच्छा । किं च वागरेति भगवं ? 'उप्पन्ने विगते धुवे', एताओ तिन्नि निसेज्जाओ, उप्पन्नेत्ति जे उप्पन्निमा भावा ते उवागच्छंति, विगतेत्ति जे विगतिस्सभावा ते विगच्छंति, धुवा जे अविणासधम्मिणो, सेसाणं अणियता णिसेज्जा, ते य ताणि पुच्छिऊण एगतमं ते सुत्तं करेति जारिसं जहा भणितं । ततो भगवं अणुन्नं मणसी करेति, ताहे सक्को वइरनाभे थाले दिव्वगंधगंधिकाणि चुन्नाणि छोढूण सामिं उवगतो, ताहे सामी सीहासणाओ उट्ठेत्ता पडिपुण्णमुट्ठिं केसराणं गेण्हति, ताहे गोयमसामीप्पमुहा एक्कारसवि गणहरा तीसी ओणता परिवाडीए ठायंति, ताहे देवा आउज्जगीयसद्दं निरुंभंति, पुव्वं तित्थे गोयमसामिस्स दव्वेहिं पज्जवेहिं अणुजाणामित्ति चुन्नाणि सीसे छुभति, ततो देवताणिवि चुन्नवासं पुप्फवासं च वासंति, गणं च सुहम्मसामिस्स धुरे ठावेत्ता णं अणुजाणाति । एवं सामातियं गोयमसामिस्स अणंतरणिग्गतं, सेसं परंपराए । एवं सामातियं निग्गतं, खेत्तत्तिदारं गतं । इयाणिं पुरिसेत्ति दारं । पुरं नाम सरीरं, पुरे शयनात् पुरुषः, तस्स दसविहो निक्खेवो । णामट्ठवणाओ गताओ ।

सूत्र रचनादि

॥३७०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

दव्वाभिलाव०॥८-१३॥७३६॥ दव्वपुरिसो दुविहो- आगमतो नोआगमतो य, आगमतो तहेव, णोआगमतो तिविधो- जाणगसरीर ३, वतिरित्तो तिविहो- एगभविओ बद्धाउओ अभिमुहनामगोत्तो, अहवा दव्वपुरिसो दुविहो-मूलगुणनिव्वत्तपुरिसो य उत्तरगुणनिव्वत्तपुरिसो य, मूले सरीरं उत्तरे चित्रकं, अभिलावपुरिसो घडो पडो रथो, विंब(चिंध)पुरिसो महिला पुरिसनेवत्थेण नेवत्थिता, प्रजननसहितो वा नपुंसकः, वेदपुरिसो पुरिसवेदं जा वेदेति, धम्मपुरिसो साधू, अत्थपुरिसो मम्मणपण्णिओ, कोऽर्थः?- सारक्खणपिंडणसमत्थो ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे सेणिओ चेल्लणा देवी, मम्मणो पंनिओ, अणेगा तस्स पन्नवाडा, अन्नदा मट्ठासरिसं पडति, राया य ओलोयणे देवीय समं अच्छति, ण केति लोगो संचरति । ताहे रायाणि पेच्छति मणूसं णदीओ बुडित्ताणं किंपि गेण्हंतं, ताहे भणति--"मासैरष्टभिरह्ना च, पूर्वेण वयसाऽऽयुषा । तत् कर्तव्यं मनुष्येण, यस्यांते सुखमेधते ॥ १ ॥" सो य अल्लगं उक्कड्ढति, मा पणएण उच्छाइज्जिहितीत्ति । देवी रायाणं भणति--जहा णदीओ तहा रायाणोऽवि, कहं ?, जहा णदीतो समुद्दं पाणियभरितं पविसंति, एवं तुब्भेऽवि ईसराणं देह, ण दमगदुग्गयाणं, सो भणति--कस्स देमि ?, ताहे सा तं दरिसेति, ताहे मणुस्सेहिं आणावितो, रन्ना पुच्छितो, सो मणति--बइल्लो मि वितिज्जओ णत्थि, राया भणति--जाह गोमंडले, जो पहाणो बतिल्लो तं से देह, तेहिं दरिसिता, सो भणति--ण एत्थ तस्स सरिसतो अत्थि, तो केरिसओ तुज्झ ?, मणूसा गता, जाव रन्नो घराणुरूवं घरं अतिणीता, तेण जेमाविता, ताहे से तेण सिरिघरे सव्वरयणामओ बइल्लो दरिसितो वितिओ य अद्धकतओ य, तेहिं रन्नो निवेदितं,

॥३७१॥

अथ 'मम्मण'श्रेष्ठिन: कथानकं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

राया विम्हिओ भणति--अहंपि ता तं पेच्छामि, पच्चिओ भणति--सत्तमे दिवसे, ताहे जहा सालिभद्देण आयोतितं एवं तेणवि सक्कारेत्ता संतेपुरं रायाणं तोसिय घरं अतिगीओ मणिरयणपणासितंधकारं, एगं च निम्मायं, बीयस्स य सिंगाणि कुकुह पट्ठी य अणिम्मविता, ताहे विम्हितो भणति-सच्चं मम णत्थि एरिसो, धन्नोऽहं जस्स मे एरिसा मणूसा, ताहे उस्सुक्को कतो, राया तेण विपुलेहिं मणिरयणेहिं पूजिओ। एस अत्थपुरिसो ॥ भोगपुरिसो चक्कवट्टी। भावपुरिसो जो जीवो अवगतवेदो पगातित्थो। एत्थं भावपुरिसेण वेयपुरिसेण य अहिकारो, सेसा विकोवणट्ठाए। भावपुरिसो सामी वेदपुरिसो गोयमसामी। पुरिसेत्ति दारं गतं ॥

इयाणिं कारणं, तं चउव्विहं--णामट्ठवणाओ गताओ, दव्वकारणं दुविहं--तद्दव्वकारणं अन्नदव्वकारणं च, तद्द्रव्यकारणं घटस्य मृत्पिंडः, अन्यद्रव्यकारणं चक्रदंडसूत्रोदकपुरुषप्रयत्नादयः, अथवा द्रव्यकारणं द्विविधं--समवायिकारणं असमवायिकारणं च, समवातिकारणं पटस्य तंतवः, तंतुसु पडो समवेत इति, असमवायिकारणं वेमनलकाअंछनिकातुरिविलेखनादीनि, अहवा निमित्तकारणं च नैमित्तिककारणं च, कडस्स वीरणा निमित्तं, नैमित्तिकानि पुरुषप्रयत्नरज्जुकीलकादीनि, एवं घटपटादीनामपि। अथवा इदं षड्विधं--द्रव्यकारणं, कारणंति वा कारगंति वा साहणंति वा एगट्ठा, तंजहा--कर्ता करणं कर्म संप्रदानमपादानं संनिधानमिति, तत्र निदर्शनं घटभावे कर्ता कुलालः, क्रियानिवर्तक इति, करणं दंडाद्युपकरणं, क्रियानिवर्तनमिति, कर्मणि निर्वर्त्यो घट एव, क्रियमाणक्रियया व्याप्यमान इति, संप्रदानं यदर्थं करणं, यन्निमित्तमसौ क्रियते, क्रियया व्याप्यते यन्निमित्तमिति, यत्प्रयोजनमंगीकृत्येत्यर्थः, अपादानं मृत्, पिण्डेऽधिरिति, सन्निधानमधिकरणमाधार इति, स च देशदेशकालादि, यथा

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

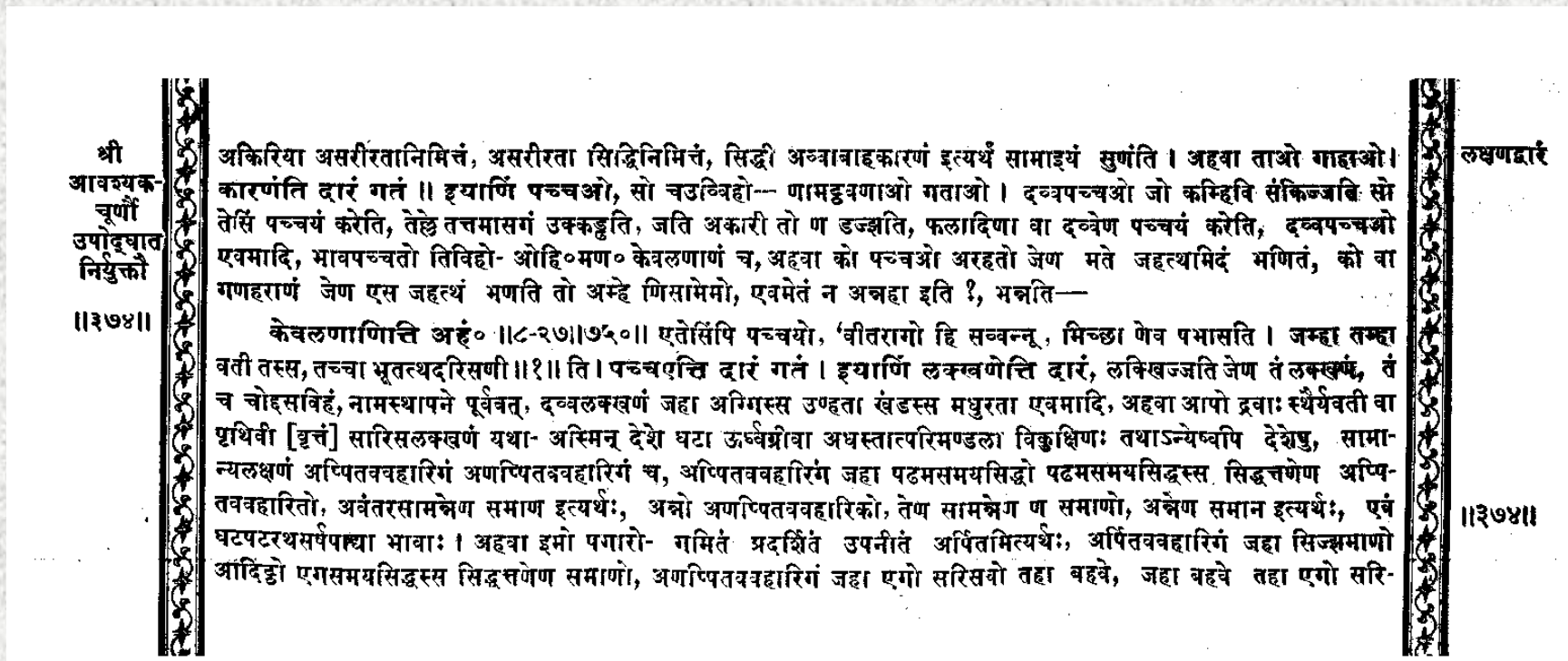
चक्रमस्तकादौ स्वप्रस्तावे च निष्पद्यते घट इति, एवं पटादावपि भाव्यं । भावकारणं दुविहं-पसत्थं अपसत्थं च ।

तत्थ जं अप्पसत्थं तं संसारस्स, तं एगविहं वा दुविहं वा तिविहं वा चउ०पंच० छव्विहं वा, एवमादि बहुप्पगारं वा, तत्थ असंजमो संसारस्स एगविहं कारणं, पयत्तवतो पावकम्मेहिंतो नियत्ती संजमो, तव्विवरीतो असंजमो, दुविहे-अन्नाणं अविरती य, तिविहं अन्नाणं मिच्छत्तं अविरती य, एवं विभासा । पसत्थं मोक्खकारणं, एगो संजमो, दोन्नि विज्जा चरणं च, त्रीणि ज्ञानदर्शनचारित्राणि, एवं विवरीतं विभासा । अहवा जत्तियाणि असंजमट्ठाणाणि ताणि संसारस्स, संजमट्ठाणाणि मोक्खस्सत्ति, एत्थ पसत्थभावकारणेण अहिगारो । कहं ? -

तित्थगरो किं कारण भा० ॥८--१९।७४२॥ तं किह वेदेयव्वं ?, अगिलाए धंमं कहेंतेणं पव्वावेंतेण सिक्खावेंतेण य, तं च कहिं बद्धं किह वा बद्धं ?, तित्थगरभवग्गहणाओ ततियं भवग्गहणं ओसक्कतित्ताणं, नियमा मणुयगतीए, नियमा सम्मद्दिट्ठी तिण्हं अन्नतरो संजतो वा असंजतो वा मीसो वा, इत्थी वा पुरिसो वा पुरिसणपुंसतो वा, सुक्कलेसो उत्तमसंघयणो अच्चंतं विसुज्झमाणपरिणामो, तत्थ बद्धं वेदेयव्वं, कहं बद्धं ?. वीसाए कारणेहिं बद्धं ।

नियमा० ॥८--२१।७४४॥ गोयमम.दा० सामादियं ॥८--२२।७४५॥ णाणनिमित्तं, णाणं किं निमित्तं ?, सुंदरमंगुलाणं भावाणं उवलद्धिनिमित्तं, सुंदरमंगुलभावा किं निमित्तं उवलब्भंते ?, तेहिं उवलद्धेहिं पवित्ती निवित्ती य भवति, सुभेसु पवित्ती असुभेसु निवित्ती, पवित्तिणिवित्तिओ य संजमतवनिमित्तं, संजमतवा अणासववोदाणनिमित्तं, अणासववोदाणा अकिरियानिमित्तं,

अथ लक्षण-द्वारं कथयते



श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३७४॥

अकिरिया असरीरतानिमित्तं, असरीरता सिद्धिनिमित्तं, सिद्धी अव्वाबाहकारणं इत्यर्थं सामाइयं सुणंति । अहवा ताओ गाहाओ। कारणंति दारं गतं ॥ इयाणिं पच्चओ, सो चउव्विहो--- णामट्ठवणाओ गताओ । दव्वपच्चओ जो कम्हिवि संकिज्जति सो तेसिं पच्चयं करेति, तेल्ले तत्तमासगं उक्कड्ढति, जति अकारी तो ण डज्झति, फलादिणा वा दव्वेण पच्चयं करेति, दव्वपच्चओ एवमादि, भावपच्चतो तिविहो- ओहि०मण० केवलणाणं च, अहवा को पच्चओ अरहतो जेण मते जहत्थमिदं भणितं, को वा गणहराणं जेण एस जहत्थं भणति तो अम्हे णिसामेमो, एवमेतं न अन्नहा इति ?, भन्नति—

केवलणाणित्ति अहं० ॥८-२७॥७५०॥ एतेसिंपि पच्चयो, 'वीतरागो हि सव्वन्नू, मिच्छा णेव पभासति । जम्हा तम्हा वती तस्स, तच्चा भूतत्थदरिसणी ॥१॥ ति । पच्चएत्ति दारं गतं । इयाणिं लक्खणेत्ति दारं, लक्खिज्जति जेण तं लक्खणं, तं च चोद्दसविहं, नामस्थापने पूर्ववत्, दव्वलक्खणं जहा अग्गिस्स उण्हता खंडस्स मधुरता एवमादि, अहवा आपो द्रवाः स्थैर्यवती वा पृथिवी [वृत्तं] सारिसलक्खणं यथा- अस्मिन् देशे घटा ऊर्ध्वग्रीवा अधस्तात्परिमण्डला विकुक्षिणः तथाऽन्येष्वपि देशेषु, सामान्यलक्षणं अप्पितवत्थवहारिगं अणप्पितवत्थवहारिगं च, अप्पितवत्थवहारिगं जहा पढमसमयसिद्धो पढमसमयसिद्धस्स सिद्धत्तणेण अप्पितवत्थवहारितो, अवंतरसामन्नेण समाण इत्यर्थः, अन्नो अणप्पितवत्थवहारिको, तेण सामन्नेण ण समाणो, अन्नेण समान इत्यर्थः, एवं घटपटरथसर्षपाद्या भावाः । अहवा इमो पगारो- गमितं प्रदर्शितं उपनीतं अर्पितमित्यर्थः, अर्पितवत्थवहारिगं जहा सिज्झमाणो आदिट्ठो एगसमयसिद्धस्स सिद्धत्तणेण समाणो, अणप्पितवत्थवहारिगं जहा एगो सरिसवो तहा बहवे, जहा बहवे तहा एगो सरि-

लक्षणद्वारं

॥३७४॥

सवो, एस वितिओ पगारो सामन्नलक्खणस्स । आगारलक्खणं अणेगविहं गंतुमागारं देति भोत्तुमागारं देति सोत्तुमागारं देति, एवं वत्तुं द्रष्टुमित्यादि, कहं गंतुं ?-अवलोयणा दिसाणं वियंभणं साडगस्स संठवणा । आसणासिढिलीकरणं पट्ठितलिंगाणि चत्तारि ॥ १ ॥ भोत्तुं-निज्झाति भोयणविधिं वदणं पस्संदते य से बहुसो । दिट्ठी य भमति तत्थेव पडति छायस्स (बुभुक्षितस्य) लिंगाणि ॥ १ ॥ रसणं वा विक्रियते ततोहुत्तं वा पुलोएति । सोत्तुं जहा 'ओहीरते य णिद्दाति तस्सविय सइयकामयंतस्स । दुहियस्स ओमिलाइ मज्झत्थं वीयरागस्स ॥ १ ॥ द्रष्टुं जहा- आगारेहिं सुणेमो णाणावन्नेहिं चक्खुरागेहिं । जणमणुरत्तविरत्तं पहट्ठचित्तं च दुट्ठं च ॥ १ ॥ आकारैरिंगितैर्भावैः, क्रियाभिर्भाषितेन च । नेत्रवक्त्रविकारैश्च, गृह्यतेऽन्तर्गतं मनः॥ २ ॥ अच्छीणि चेव जाणंति० ॥ ३ ॥ रुट्ठस्स खरा दिट्ठी उप्पलधवला पसन्नचित्तस्स । दुहियस्स ओमिलायति गंतुमणस्सुस्सुया होति ॥ ४ ॥ गंतुं पडिआगतलक्खणं चउव्विहं- पुरतो वाहतं पच्छतो वाहतं दुहतो वाहतं दुहतो अवाहतं, पुरतो वाहतं जहा- जीवे भंते ! नेरतिते ? नेरतिते जीवे?, गोयमा ! जीवे सिया नेरतिते सिय अनेरतिते, नेरतिते पुण नियमा जीवे' । पच्छतो वाहयं जहा 'जीवति भंते ! जीवे ? जीवे जीवति ?, गोयमा ! जीवति ता नियमा जीवे, जीवे पुण सिय जीवति सिय नो जीवति ?, दुहओ वाहयं जहा 'भवसिद्धिए णं भंते ! नेरतिते ? नेरइए भवसिद्धिए ?, गोयमा ! भवसिद्धिए सिय नेरतिते सिय अनेरतिते, नेरतितेऽवि सिय भवसिद्धिए सिय अभवसिद्धिते, दुहतो अव्वाहतं जहा-जीवे भंते ! जीवे ?, जीवे जीवे ?, गोयमा ! जीवे नियमा जीवे, किमुक्तं भवति ?-जीव उपयोगः, उपयोगोऽपि जीवः । णाणत्तीलक्खणं चउव्विहं, दव्वतो ४, दव्वणाणत्ती दुविहा- तद्दव्वणाणत्ती अन्नदव्वणाणत्ती य, तद्दव्वणाणत्ती जहा

परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वतो णाणा, अन्नदव्वणाणत्ती परमाणुपोग्गले दुपदेसियादीण दव्वतो नाणा, एवं दुपदेसियाणवि भावेयव्वं, एवं खेत्तओ एगपदेसोगाढादीणा, कालओ एगसमयट्ठितीगादीणा, भावओ एगगुणकालगादीणा तन्नाणत्ती अन्नदव्वजाणत्ती य भावेयव्वा।अन्ने भणंति-तद्दव्वणाणत्ती जहा परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स, (अण्ण) दव्वतो अ णाणत्ती परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलवतिरित्तस्स, दव्वतो णाणत्तीअणाणत्तिउभयादेसेणं अवत्तव्वं, एवं दुएएसियादि जाव दसपदेसितो तिधा भाणियव्वो, एवं तुल्लअसंखेज्जपदेसिओ, एवं तुल्लअणंतपदेसिओ उ, खेत्ततो एगपदेसोगाढं पोग्गले एगपदेसोगाढवतिरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ णाणत्ती एवं जाव तुल्लअसंखेज्जपएसोगाढेत्ति, एवं कालतोवि भाणियव्वं, भावतो एगगुणकालगादी, जं से णाणत्तं सा से णाणत्ती, जं से अणाणत्तं सा से अनाणत्तीति ।

निमित्तलक्खणं अट्ठंगमहानिमित्तं, तंजहा- भोमुप्पातं सुविणंतलिक्खं अंगं सरं लक्खणं वंजणं, उप्पादलक्खणं अप्पितवव-हारितं अणप्पियववहारियं, अप्पियववहारियंति वा विसेसादिट्ठंति वा एगट्ठा, तव्विवरीतमियरं, तत्थ अप्पितं जहा पढमसमय-सिद्धो सिद्धत्तणेण उप्पन्नो, अणप्पितो जो जेण भावेण उप्पन्नो । विगतिलक्खणं दुविहं- अप्पितवव० अणप्पि०, अप्पियं जहा चरिमसमयभवसिद्धिओ भवसिद्धियत्तणेणं विगतो, अणप्पितं जो जेण भावेण विगतो। वीरियलक्खणं, वीरियंति वा सामत्थंति वा सत्तीति वा एगट्ठा, जहा वायामलक्खणो जीवो, तेसु तेसु भावेसु यस्मादुत्पद्यते, विरियंति बलं जीवस्स लक्खणं, जं च जस्स सामत्थं दव्वस्स चित्तरूवं जहा विरियं महोसहादीणंति। भावलक्खणं छव्विहं-उदतितो उदयलक्खणो, उवसामितो उवसमलक्खणो,

॥३७६॥

खतियो अणुप्पत्तिलक्खणो, खतोवसमितो भीसलक्खणो, परिणामितो परिणामलक्खणो, संनिवातितो संजोगलक्खणो, सामातियं पडुच्च भावलक्खणं भनति, अहवावि भावलक्खणं चतुव्विहं सद्दहणमादीति, तंजहा-सद्दहणलक्खणं जाणणालक्खणं विरतिलक्खणं विरताविरतिलक्खणं, सद्दहानलक्खणं सम्मत्तसामाइयं जाणणालक्खणं सुतसामातियं विरतिलक्खणं चरित्तसा० विरताविरतिलक्खणं चरित्ताचरित्तसामाइयं, तित्थगरा एवं चउलक्खणसंजुत्तं सामाइयं परिकहेंति। तेऽवि गोयमसामिप्पभितयो जम्हा चतुलक्खणसंजुत्तमेव तित्थकरो भासति तेण तहेव निसामेंति। लक्खणं गतं ॥

इयाणिं नए समोतारणा, नयंतीति नया, वत्थुतत्तं जहा अवबोहगोयरं पावयंतित्ति, अन्ने भणंति-नयंतीति नयाः कारगाः व्यंजगाः प्रकाशका इत्यर्थः, ते य सत्त-णेगमो संगहो ववहारो उज्जुसुतो सद्दो समभिरूढो एवंभूतो य। एतेसिं लक्खणं विभासितव्वं, तत्थ णेगेहिं माणेहिं मिणतित्ति णेगमो, ण एगगमो णिरुत्तविहाणेण, माणंति वा परिच्छेदोत्ति वा गहणपगारोत्ति वा एगट्ठा, मिणतित्ति वा परच्छिंदतित्ति वा गिण्हतित्ति वा एगट्ठा, सामन्नमणेगप्पगारं विसेसं वा अणेगप्पगारं जेण गमेति एत्थ पत्थयवसहिपएसदिट्ठंतेहिं तेण णेगमो, घटदिट्ठंतेण वा, जहा-घटो णामट्ठवणादव्वभावभेदभिन्नो वत्थुपरिणामो पृथुबुध्नोदराद्याकारो सौवर्णः मार्तिकः पाटलिपुत्रीयः वासंतकः पीतः कृष्णश्चेत्येवमादि भाव्यं।

संगहितपिंडितत्थं० ॥ ८-३३ ॥ ७५६ ॥ समस्तो गृहीतः-उपात्तः संगृहीतः, कथं ?, पिंडितः संमीलितः क्रोडीकृतः अभेदीकृतः सामान्यीकृत इत्यर्थः, कोऽसौ ?-अर्थत इत्यर्थः, संगहितो पिंडितो अत्थो जमेतं संगहितपिंडितत्थं। किं तं ?-संग-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

इवयणं-संगहभणणं, एवं समासतो ब्रुवते तद्विदः, किमुक्तं भवति ?-सामान्यार्थावधारणं विशेषार्थावधारणं वा, यदुक्तं-तत्र सामान्यविशेषयोरपृथक्त्वात् सामान्यस्यैवावधारणे विशेषस्य तदंतर्भूतस्यावधारणमेवेति सामान्यमेव संगृह्णाति संग्रहवचनं, यथा पूर्वाभिहितः अनेकप्रकारोऽपि घटः मानादिभेदेऽवि घटसामान्यान्तर्भूत इत्यभिन्न इति ।

वच्चति विणिच्छियत्थं ववहारो सव्वदव्वेसु । सामान्येन-घटत्वमात्रेण संव्यवहर्तुं न शक्यत इति विनिश्चयार्थं व्रजति व्यवहारः, अधिकश्चयो निश्चयः-सामान्यं विगतो निश्चयः विनिश्चयः-निःसामान्यभावः तन्निमित्तं व्रजति-गच्छति सर्वद्रव्यविषये, विशेषमात्रावलंबी व्यवहार इत्यर्थः, यथा घटमानयेत्युक्ते न ज्ञायते कतमो घट इति निश्चयः क्रियते, सौवर्णो राजतो वा इत्यादि भाव्यं । एवं व्यवहारेणोक्ते सत्याह ऋजुसूत्रः-यथा सामान्येन न शक्यते संव्यवहर्तुं तथाऽतीतेन भग्नेन अनागतेन वा अनुत्पन्नेन इति । **पच्चुप्पन्नग्गाही उज्जुसुतोत्ति** वर्तमानमेव गृह्णातीत्यर्थः । एवं ऋजुसूत्रेण स्वमते व्यापिते आह शब्दः-यथाऽतीतानागताभ्यां न शक्यते संव्यवहर्तुं तथा नामस्थापनाद्रव्यलिंगवचनभिन्नैर्घटैर्न संव्यवहारः शक्यते कर्तुमिति, तत्र लिंगभिन्नो यथा तटस्तटी तटमिति, वचनभिन्नो यथा आपो जलमिति, अतः **इच्छति विसेसितत्तरं पच्चुप्पण्णं णयो सद्दोत्ति**, किमुक्तं भवति ?-वर्तमानेनापि भावघटेनैव लिंगवचनाभिन्नेन संव्यवहारः प्रवर्तत इत्येवंभूतो भावघटः प्रमाणं, स तु घटः कुंभो विति । एवं तेनाप्यभिहिते आह समभिरूढः यथा नामादिघटैर्न शक्यते संव्यवहर्तुं तथा घट इत्युक्ते न कुटे संप्रत्ययः, भिन्नप्रवृत्तिनिमित्तत्वात्, ततश्च यदा घटार्थे कुटादिशब्दः प्रयुज्यते तदा वस्तुनः कुटादेस्तत्र संक्रांतिः कृता भवति, एवं च वत्थूओ संकमणं होति **अवत्थू णये समभिरूढेत्ति**, सर्वधर्माणां नियतस्वभावत्वादन्यत्र संक्रांत्योभयस्वभावापगमतो

॥३७८॥

अत्र 'नय'अधिकार: कथयते

अवस्तुतेत्यर्थः । एवमभिरूढेनाभिहिते आहैवंभूतः-यथा घट इत्युक्ते कुट इत्यवस्तु, एवं घट इत्युक्ते यदा न चेष्टते तदा न घटो, यदैवासौ चेष्टते तदैव घटः, 'घट चेष्टायां' मितिकृत्वा, एवं यदैव पुरं दारयति तदैव पुरंदरः, नान्यदा, मा भूत्सर्वपुरंदरप्रसंग इति । वंजणमत्थ तदुभयं एवंभूतो विसेसेतित्ति, इदमुक्तं भवति--व्यंजनं विशेषयति, एवं अर्थं, तदुभयं च । तत्र व्यंजनं यथा-घटशब्दः तदैव व्यंजनं यदैव विशिष्टचेष्टावन्तमर्थं व्यनक्ति, अन्यदा त्वव्यंजनम्-अवस्त्विति, अतिप्रसंगात्, तथा अर्थं विशेषयति, यथा-यदैव विशिष्टचेष्टावानर्थस्तदैव घटः, अन्यदा त्वघटो, अवस्त्वित्यातिप्रसंगादेव, तथा तदुभयं शब्दमर्थेन विशेषयत्यर्थं च शब्देन, यथा यदैव योषिन्मस्तकव्यवस्थितो जलाहरणादिचेष्टावानर्थो घटशब्देन व्यज्यते तदैवासौ घटः, तद्व्यंजकश्च शब्दः, अन्यदा तु वस्त्वंतरस्येव चेष्टाऽयोगादघटत्वं, तद्ध्वनेश्चाव्यंजकत्वमवस्तुत्वमिति नयसमासार्थः । एवमेते सप्त नयाः, किमर्थं मूलग्रहणं इति चेत् ? उच्यते-भेदोपप्रदर्शनार्थं ?, को भेदः ?, भण्यति—

एक्केक्को य सयविहो० ॥ ८-३६ ॥ ७५९ ॥ एक्केक्को शतभेद इति सप्त शतानीति, बितिओऽवि य आदेसो पंच सया, णणु किमिति?, तिन्निऽवि सद्दनया एगो चेव, तेण पंच सया, णेगमसंगहववहारउज्जुसुयसद्दा । एत्थ उदाहरणं-एत्थ एक्केक्को उ सयभेद इति पंच सया । अपिचसद्दादन्नोऽवि आदेसो, जहा छ मूलनया, णेगमो दुविहो-संगहितो य असंगहितो य, संगहितो अ संगहं पविट्ठो, असंगहितो ववहारं पविट्ठो, एक्केक्को य सयविहो, एवं छस्सया । अहवा चत्तारि मूलनया, नेगमो संगहितो संगहे पविट्ठो, असंगहितो असंगहं, तेण संगह ववहार उज्जुसुय सद्दा चत्तारि णया । तेवि भज्जमाणा एक्केक्को सयविहो, एवं चत्तारि नयसया । अहवा दो मूलनया-दव्वट्ठिओ य पज्जवट्ठितो य, एक्केक्को सयविहो, एवं दो णयसया । अहवा दो नया ववहारिओ णेच्छतितो

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

य, तो उदाहरणं-ववहारियणयस्स कालतो भमरो, णेच्छतियणयस्स पंचवन्नो जाव अट्ठफासो । अहवा दो मूलणया-अप्पिय-ववहारितो य अणप्पियववहारितो य, उदाहरणं जीवो नारकत्वेनार्पितः जीवत्वेनानार्पितः, एवं तिर्यग्मनुष्यदेवत्वेनापि भाव्यं । अहवा दो नया तीयभावपन्नवतो य पडुप्पन्नभावपन्नवतो य, उदाहरणं-'नेरतियाणं भंते ! किं एगिंदियसरीराइं ?' आलावओ, एवं एते उल्लोयेण णया भणिता । एतेहिं किं पयोयणं ?, भन्नति—

एतेहिं दिट्ठिवादे० ॥ ८-३७ ॥ ७६० ॥ एतेहिं सत्तहिं णयसएहिं पंचहिं वा दिट्ठिवाते परूवणा-पन्नवणा उवप्पदरिसणा, किं दिट्ठिवादे सव्वत्थ एतेहिं परूवणा ?, उच्यते, कत्थइ सुत्तट्ठमत्तकहणा य । इहइं कालियसुत्ते अणब्भुवगमो सतेहिं, मूलणयेहिं तु सत्तहि अधिकारो प्रायशः, ते पुण समासतो तिन्नि--एको दव्वट्ठितो सुद्धो संगहो, पज्जवट्ठितो सुद्धो एवंभूतो, मज्झिमा दव्वट्ठितपज्जवट्ठिता, एतेहिं तिहिं किं कारणं अहिगारो ?, जेण भणितं—

णत्थि णतेहिं विहूणं० ॥ ८-३८ ॥ ७६१ ॥ को दृष्टान्तः ?-यथा वृक्ष इति प्रातिपादिके सर्वासां विभक्तीनां समवतारः, यथा वा सर्वं वाङ्मयं धातुविभक्तिलिंगैर्व्याप्तमिति, यदि एवं तो ओसन्नग्गहणं किं ?, सव्वत्थ किमिति ण भण्णति ?, भण्णति-आसज्ज तु सोतारं णए णयविसारदो बूया, पुरिसज्जातं पडुच्च व जाणयो सव्वे णये पन्नवेज्जा । जतो—

मूढणतियं सुतं कालियं० ॥८-३९॥७६२॥ मूढा-अविभागत्था सुत्ता नया जंमि अत्थि तं मूढणतियं, तेण ण णया सव्वत्थ समोतरंति । इह किं कदादी समवतरिज्जियाइया ?, भन्नति-अपुहुत्ते समोतारो णत्थि पुहुत्ते समोतारो । अन्ने भणंति-इहं कालियाणुओगे अणुब्भवगम्मंति सर्वे, किमर्थमिति चेत् व्यवहारविधिरिक्तत्वात् सूक्ष्म उपरिष्टत्वात् । जेण भन्नति-'तेसामेव विय-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्पा साहप्पसाहा सुहुमभेदा, उक्तं च-ववहारेणऽत्थपत्ती अणप्पितणये अ तुच्छभासाए । मूढणयअगमिएण य कालेण य कालियं नेयं ॥१॥ जत्थवि होज्ज तत्थवि तिहिं आदिल्लेहिं नतेहिं, किं कारणं तिहिं अहिगारो ?, किं नयविरहितं णो अत्थि ?, उच्यते-णत्थि णतेहि विहूणं०॥ ८-३९ ॥ ७६१ ॥ किन्न परूविज्जंति ?, उच्यते—

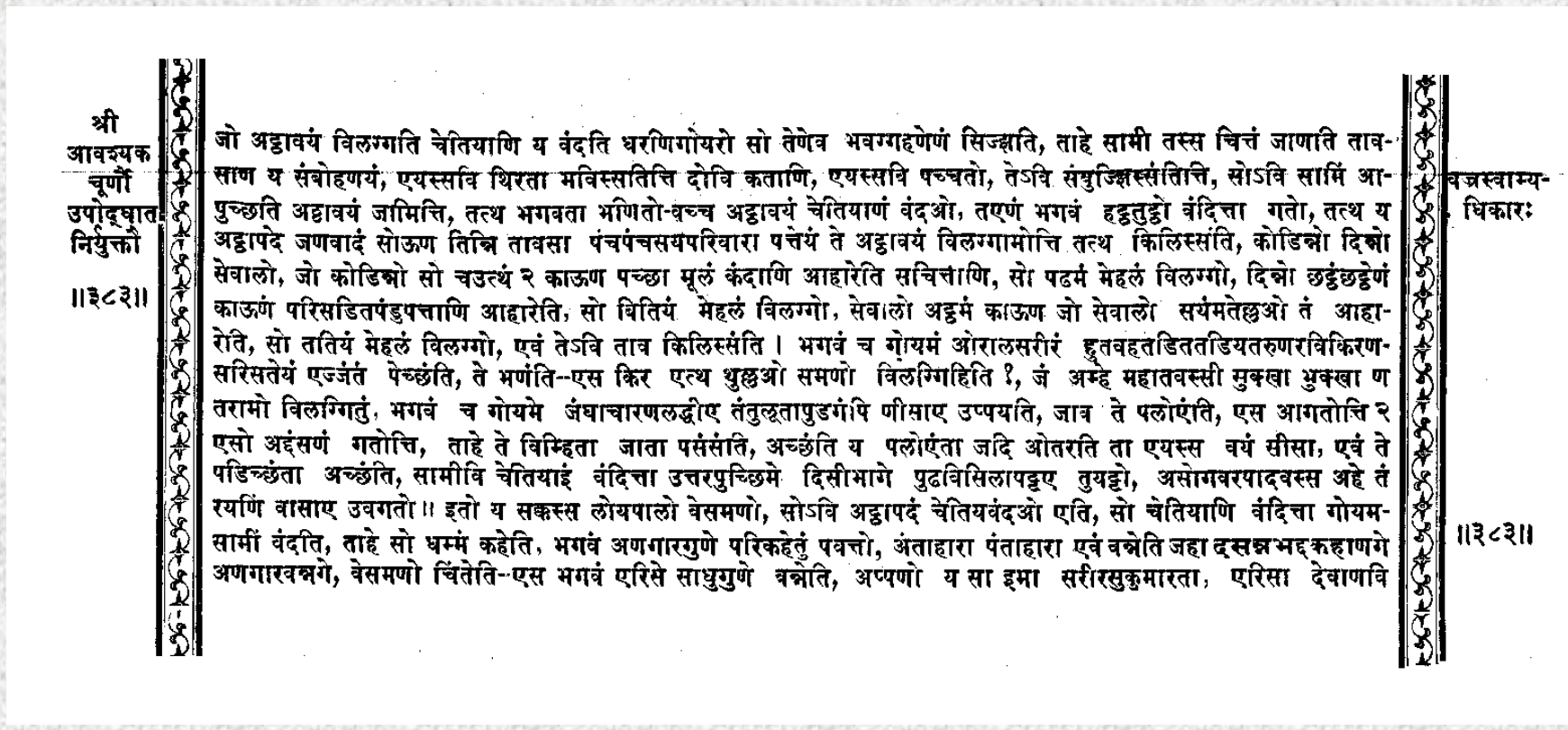
मूढणइयं सुतं० ॥ ८-३९ ॥ ७६२ ॥ जेण तंताइयं दव्वं ण भवति, कहं ?, जेण णिच्चवादे अनिर्युक्तत्वप्रसंगः, अणिच्चवादे वैफल्यं भवति, तेण ते भन्नंति य न भन्नंति य, तेण मूढणतियं जेण य मुज्झति पन्नवतो एतेहिं सव्वेहिं समोतारे, ता ण सक्कतित्ति भणितं होति, जदा पुहुत्तं आसि तदा एगंमि अणुतोगे चत्तारिवि परूविज्जाइंतया, पुहुत्ते कते समाणे पत्तेयं २ भासिज्जंति ते अत्था, ततो तु वोच्छिन्ना, चरणे सेसा तिन्निवि ण भासिज्जंति, एवं सेससुवि । कदा पुण पुहुत्तं जातं ? केच्चिरं वा कालं अपुहुत्तं आसि ? जाव अज्जवइरा ताव अपुहुत्तं आसि, तेसिं आरतो पुहुत्तं जातं, जद्दा-इमं कालियं, इमो धम्मो, इमं गणितं, इमं दवियं, को पुण अज्जवइरो जेमि अपुहुत्तमासि ? जेण य कारणेण पुहुत्तं कतमिति इच्छामि तेसिं अज्जवतिराणं उद्दाणपारियाणियं सोतुं, किह पुहुत्तं जातं ?।

तुंबवणसंनिवेसा० ॥ ८--४१।७६४ ॥ पुव्वभवे सक्कस्स देवरन्नो वेसमणस्स सामाणिओ आसि, इतो य वद्धमाणसामी तेणं कालेणं तेणं समएणं पिट्ठिचंपाणाम णगरी, तत्थ सालो राया, महासालो जुवराया, तेसिं सालमहासालाणं भगिणी जसवती, तीसे पीढरो भत्तारो, जसवतीए अत्तओ पिढरपुत्तो गागली णाम कुमारो, सामी समोसढो सुभूमिभागे, सालो निग्गतो, धम्मं सोच्चा जं नवरं महासालं रज्जे ठावेमि, सो अतिगतो, तेण आपुच्छितो महासालोऽवि भणति--अहंपि संसारभतुव्विग्गो जहा

॥३८१॥

अथ वज्रस्वामि कथानक आरभ्यते

तुब्भे इहं मेढी पमाणं तहा पव्वतियस्सवि, ताहे गागली कंपिल्लाओ सद्दावेऊण पट्टो बद्धो, अभिसित्तो, राया जातो, तस्स माया कंपिल्लपुरे णगरे दिन्निया पिढरस्स, तेण ततो सद्दावितो, सो पुण तेसिं दो सिवियाओ कारेइ, जाव ते पव्वतिया, सा भगिणी समणोवासिया जाता। तए णं ते समणा होंतगा एक्कारस अंगा अहिज्जिता, ततेणं समणे भगवं महावीरे बहिता जणवयविहारं विहरति। तेणं कालेणं २ रायगिहं णगरं, रायगिहे समोसढो, ताहे सामी पुणो निग्गओ चंपं पधावितो, ताहे सालमहासाला सामिं आपुच्छति-अम्हे पिट्ठीचंपं वच्चामो, जति णाम ताण कोऽपि बुज्झेज्जा, सम्मत्तं वा लभेज्जा ?, सामीवि जाणति जहा ताणि संबुज्झीहिंति, ताहे सामिणा गोयमसामी से बितिज्जओ दिन्नो, सामी चंपं गतो, तत्थ समोसरणं, गागली पिढरो जसवती य निग्गयाणि, भगवं धम्मं कहेति, ताणि धम्मं सोऊण संविग्गाणि, ताहे गागली भणति-जं णवरं अम्मापियरो आपुच्छामि जेट्ठपुत्तं च रज्जे ठवेमि, ताणि आपुच्छिताणि भणंति--जदि तुमं संसारभयुव्विग्गो अम्हेऽवि, ताहे से पुत्तं रज्जे ठावेत्ता अम्मापितीहिं सह पव्वतितो, गोयमसामी ताणि घेत्तूणं चंपं वच्चति, तेसिं सालमहासालाणं पंथे वच्चंताणं हरिसो जातो--जाहे (जहा) संसारं उत्तारियाणि, एवं तेसिं सुभेणं अज्झवसाणेणं केवलणाणं उप्पन्नं, इतरेसिंपि चिन्ता जाता जहा अम्हे एतेहिं रज्जे ठवितानि संसारा मोइताणि, एवं चिंतेंताणं सुभेण अज्झवसाणेणं तिण्हवि केवलणाणं उप्पन्नं, एवं ताणि उप्पन्ननाणाणि चंपं गयाणि, सामी पयाहिणं करेमाणाणि तित्थं णमिऊण केवलपरिसं पधावितानि, गोयमसामीवि भगवं वंदिऊण तिक्खुत्तो पादेसु पडितो उट्ठितो भणति--कहिं वच्चह ? एह तित्थकरं वंदह, ताहे सामी भणति--मा गोयमा ! केवली आसाएहि, ताहे आउट्टो खामेति, संवेगं च गतो, तत्थ गोयमसामिस्स संका जाता-माऽहं ण सिज्झिज्जामित्ति, एवं च गोयमसामी चिंतेति। इतो य देवाण संलावो वट्टति-



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३८३॥

जो अट्ठावयं विलग्गति चेतियाणि य वंदति धरणिगोयरो सो तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति, ताहे सामी तस्स चित्तं जाणति तावसाण य संबोहणयं, एयस्सवि थिरता भविस्सतित्ति दोवि कताणि, एयस्सवि पच्चतो, तेऽवि संबुज्झिस्संतित्ति, सोऽवि सामिं आपुच्छति अट्ठावयं जामित्ति, तत्थ भगवता भणितो-वच्च अट्ठावयं चेतियाणं वंदओ, तएणं भगवं हट्ठतुट्ठो वंदित्ता गतो, तत्थ य अट्ठापदे जणवादं सोऊण तिन्नि तावसा पंचपंचसयपरिवारा पत्तेयं ते अट्ठावयं विलग्गामोत्ति तत्थ किलिस्संति, कोडिन्नो दिन्नो सेवालो, जो कोडिन्नो सो चउत्थं २ काऊण पच्छा मूलं कंदाणि आहारेति सचित्ताणि, सो पढमं मेहलं विलग्गो, दिन्नो छट्ठंछट्ठेणं काऊणं परिसडितपंडुपत्ताणि आहारेति, सो बितियं मेहलं विलग्गो, सेवालो अट्ठमं काऊण जो सेवालो सयंमतेल्लओ तं आहारेति, सो ततियं मेहलं विलग्गो, एवं तेऽवि ताव किलिस्संति। भगवं च गोयमं ओरालसरीरं हुतवहतडिततडियतरुणरविकिरणसरिसतेयं एज्जंतं पेच्छंति, ते भणंति--एस किर एत्थ थुल्लओ समणो विलग्गिहिति ?, जं अम्हे महातवस्सी सुक्खा भुक्खा ण तरामो विलग्गितुं, भगवं च गोयमे जंघाचारणलद्धीए तंतुलूतापुडगंपि णीसाए उप्पयति, जाव ते पलोएंति, एस आगतोत्ति २ एसो अहंसणं गतोत्ति, ताहे ते विम्हिता जाता पसंसंति, अच्छंति य पलोएंता जदि ओतरति ता एयस्स वयं सीसा, एवं ते पडिच्छंता अच्छंति, सामीवि चेतियाइं वंदित्ता उत्तरपुच्छिमे दिसीभागे पुढविसिलापट्टए तुयट्टो, असोगवरपादवस्स अहे तं रयणिं वासाए उवगतो॥ इतो य सक्कस्स लोयपालो वेसमणो, सोऽवि अट्ठापदं चेतियवंदओ एति, सो चेतियाणि वंदित्ता गोयमसामीं वंदति, ताहे सो धम्मं कहेति, भगवं अणगारगुणे परिकहेतुं पवत्तो, अंताहारा पंताहारा एवं वन्नेति जहा दसन्नभद्दकहाणगे अणगारवन्नगे, वेसमणो चिंतेति--एस भगवं एरिसे साधुगुणे वन्नेति, अप्पणो य सा इमा सरीरसुकुमारता, एरिसा देवाणवि

वज्रस्वाम्यधिकारः

॥३८३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

णत्थि, तत्थ भगवं तस्स आकूतं णाउं पोंडरीयं णामं अज्झयणं पन्नवेति, जहा

पोक्खलावतीविजए पोंडरीगिणी णगरी णलिणिगुम्मं उज्जाणं, तत्थ णं महापउमे णाम राया होत्था, पउमावती देवी, ताणं दो पुत्ताणं पुंडरीए कंडरीए य सुकुमाला जाव पडिरूवा, पुंडरीए जुवराया यावि होत्था। तेणं कालेणं तेणं समतेणं थेरा भगवंतो जाव नलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, महापउमे णिग्गते, धम्मं सोच्चा जं णवरं देवाणु० पोंडरीयं कुमारं रज्जे ठवेमि, अहासु०, एवं जाव पोंडरीए राया जाते जाव विहरति। तएणं से कंडरीए कुमारे जुवराया जाते, तएणं से महापउमे राया पुंडरीयं रायं आपुच्छति, तए णं से पुंडरीए एवं जहा ओदायणो, णवरं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जति, बहूहिं चतुत्थछट्ठ बहूइं वासाइं सामन्नं मासियाए सट्ठिं भत्ता जाव सिद्धे। अन्नया ते थेरा पुव्वाणुपुव्विं जाव पुंडरिगिणीए समोसढा, परिसा निग्गया, तए णं से पुंडरीए राया कंडरिएणं जुग-रन्ना सद्धिं इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ जाव गते, धम्मकहा, जाव से पुंडरीए सावगधम्मं पडिवण्णे जाव पडिगते, सावए जाते। तए णं से कंडरीए जुवराया थेराणं धम्मं सोच्चा हट्ठ जाव जहेदं तुब्भे वदह जं णवरं देवाणु०! पुंडरीयं रायं आपुच्छामि, तएणं जाव पव्वयामि, अहासुहं०, तएणं से कंडरीए जाव थेरं णमंसति णमंसित्ता अंतियाओ पडिनिक्खमति २ तामेव चाउघंटं आसरहं दुरूहति २ जहा जमाली तहेव जाव पच्चोरुहति, जेणेव पुंडरीए राया तेणेव उवागच्छति, करतल जाव पुंडरीयं एवं वयासी-एवं खलु मए देवाणु० थेराणं जाव धम्मे णिसंते, सेऽवि य मे इच्छिते पडिच्छिते अभिरुतिते, तए णं अहं देवाणु०! संसारभउ-व्विग्गे भीते जम्मणमरणाणं, इच्छामि णं तुज्झेहिं अब्भणुण्णाते समाणे थेराणं जाव पव्वतित्तएत्ति, तएणं से पुंडरीए कंडरीयं एवं वयासी- मा णं तुमं देवाणु० इयाणिं थेराणं जाव पव्वयाहि, अहं णं तुमं महता महता रायाभिसेगेणं अभिसिंचिस्सामि, तएणं से

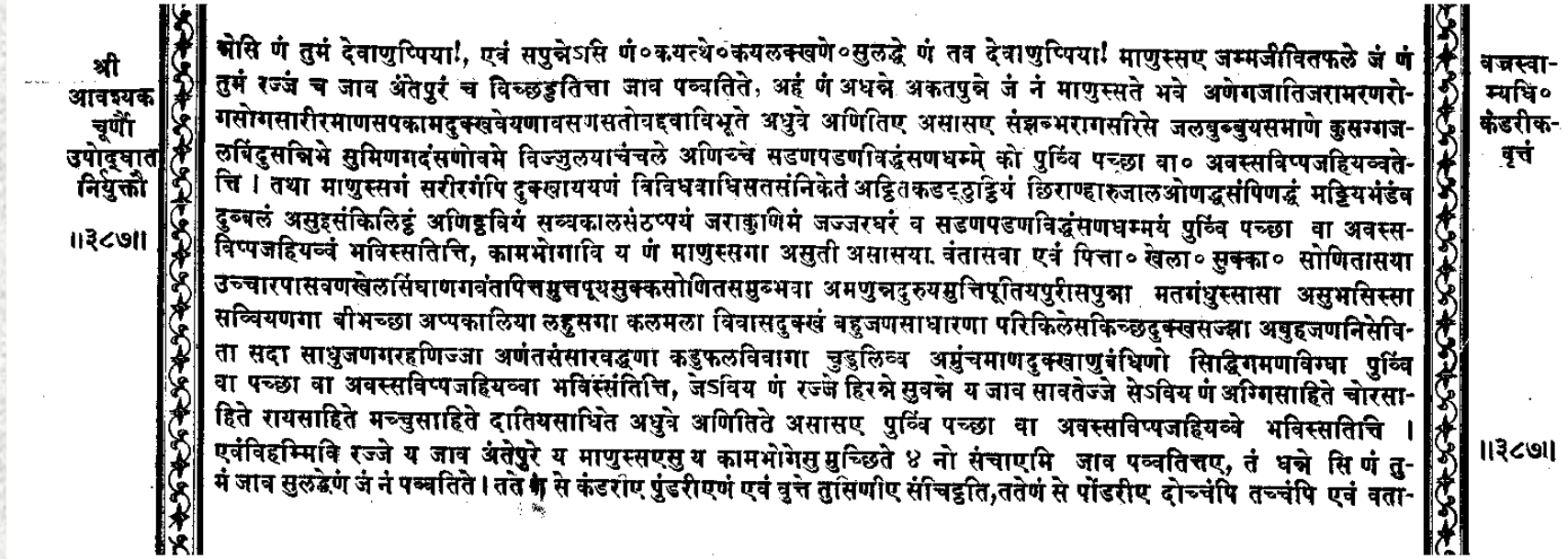
॥३८४॥

वज्रस्वामी-कथानक मध्ये पुंडरिक-कंडरिक कथानक वर्णयते

कंडरीए कुमारे पुंडरीयस्स रन्नो एयमट्ठं णो आढाति णो परिजाणाति तुसिणीते संचिट्ठति, तए णं से कंडरीए पोंडरीयं रायं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-इच्छामि णं देवाणुप्पिया! जाव पव्वइत्तएत्ति, तएणं से पुंडरीए राया कंडरीयं कुमारं जाहे णो संचाएति विसयाणुलोमाहिं बहूहिं आघवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवेत्तए वा० ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभउव्वेगकारीहिं पन्नवणाहिं पन्नवेमाणे २ एवं वयासी- एवं खलु जाता ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए एवं जहा पडिक्कमणे जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेन्ति, किं तु अही वा एगंतदिट्ठीए खुरो इव एगंतधाराए लोहमया व जवा चव्वेयव्वा वालुयाकवले इव निरस्साए गंगा वा महाणदी पडिस्सोतं गमणताए महासमुद्दे इव भुयाहिं दुत्तरे तिक्खं कमियव्वं गरुयं लंबेयव्वं असिधारं वतं चरितव्वं, णो य खलु कप्पति जाता! समणाणं णिग्गंथाणं पाणातिवाए वा जाव मिच्छादंसणसल्ले वा नो० जाता! से अहाकम्मिएइ वा उद्देसिए वा मिस्सजाते इ वा उदरए पूतिते कीए पामिच्चे अच्छेज्जे अणिसट्ठे अभिहडेति वा ठतिएइ वा रतितएति वा कंतारभत्तेइ वा दुभिक्खभत्तेइ वा गिलाणभत्तेइ वा वद्दलियाभत्तेइ वा पाहुणगभत्ते इवा सेज्जातरपिंडेति वा रायपिंडेति वा मूलभोयणेति वा कंदभो० फलभो० बीयभो० हरियभोयणेति वा भोत्तए वा पातए वा, तुमं च णं जाता ! सुहसमुचिते, णो चेव णं दुहसमुचिते, णालं सीतं णालं उण्हं णालं खुहा णालं पिवासा णालं चोरा णालं वाला णालं दंसा णालं मसगा णालं वातियपेत्तियसेंभियसन्निवाते विविहे रोगातंके उच्चावए वा गामकंटगे वा बावीसं परीसहोवसग्गे उदिन्ने समं अहियासेत्तएत्ति, तं णो खलु जाता ! अम्हे इच्छामो तुज्झं खणमवि विप्पओगं, तं अच्छाहि ता जाता! अणुभवाहि रज्जासिरिं, पच्छा पव्वइहिसि, तए णं से कंडरीए एवं वयासी- तहेव णं तं देवाणु० जहेतं तुब्भे वयह, किं पुण देवाणु०! निग्गंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोग-

पडिबद्धाणं परलोगपरंमुहाणं विसयतिसियाणं दुरणुचरे पागतजणस्स, वीरस्स निच्छियस्स ववसियस्स णो खलु एत्थं किंचि दुक्करं करणताए, तं इच्छामि णं देवाणु०! जाव पव्वतित्तएत्ति, तए णं तं कंडरीयं पुंडरीए राया जाहे नो संचातेति बहूहिं आघवणाहि य ४ आघवेत्तए वा ४, ताहे अकामए चेव निक्खमणं अणुमन्नित्था। तएणं से पुंडरीते कोडुंबिए सद्दावेति, एवं जहा जमालिस्स निक्खमणं तहेव पुंडरीओ करेति, पव्वइतो जाव सामाइयमादीयाइं एक्कारस अंगाइं अधिज्जेति २ बहूहिं चउत्थ-च्छट्ठट्ठमजाव विहरति। अन्नया तस्स कंडरीयस्स अन्तेहि य पंतेहि य जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतीए यावि विहरति॥

ततेणं ते थेरा भगवंतो अन्नया कयादी पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा जाव पुंडरिगिणिए नलिणिवणे समोसढा, तए णं से पुंडरीए राया इमीसे जाव पज्जुवासति, धम्मकहा. तएणं से पोंडरीए राया धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छति २ कंडरीयं वंदति णमंसति २ कंडरीयस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरुयं पासति २ जेणेव थेरा तेणेव उवागच्छति, थेरे वंदति वंदित्ता एवं वयासी-अहं णं भंते! कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं तेगिच्छिएहिं फासुएसणिज्जेहिं अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जभत्तपाणेहिं तिगिच्छं आउंटामि, तुब्भे णं भंते! मम जाणसालासु समोसरह. तएणं थेरा पुंडरीयस्स रन्नो एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जाव जाणसालासु विहरंति। तते णं से पुंडरीए कंडरीयस्स तेगिच्छं आउट्टेति, ततेणं तं मणुन्नं असणं४ आहारितस्स समाणस्स से रोगातंके खिप्पामेव उवसंते हट्ठे जाते अरोगे बलियसरीरे जहा सेलओ तहा मुक्केवि समाणे तंसि मणुन्नंसि असणे ४ समुच्छिते जाव अज्झोववन्नो, मज्जपाणगंसि य, णो संचाएति बहिता अब्भुज्जतेणं जाव विहरित्तएत्ति। तए णं से पुंडरीते इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव कंडरीए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता कंडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति २ वंदति वंदित्ता एवं वयासी-ध-



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ ॥३८७॥

जोसि णं तुमं देवाणुप्पिया!, एवं सपुन्नेऽसि णं०कयत्थे०कयलक्खणे०सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्मजीवितफले जं णं तुमं रज्जं च जाव अंतेपुरं च विच्छड्डितित्ता जाव पव्वतिते, अहं णं अधन्ने अकतपुन्ने जं नं माणुस्सते भवे अणेगजातिजरामरणरोगसोगसारीरमाणसपकामदुक्खवेयणावसगसतोवद्दवाविभूते अधुवे अणितिए असासए संझब्भरागसरिसे जलबुब्बुयसमाणे कुसग्गजलबिंदुसन्निभे सुमिणगदंसणोवमे विज्जुलयाचंचले अणिच्चे सडणपडणविद्धंसणधम्मे को पुव्विं पच्छा वा० अवस्सविप्पजहियव्वतेत्ति । तथा माणुस्सगं सरीरगंपि दुक्खाययणं विविधवाधिसतसंनिकेतं अट्ठितकडट्ठट्ठियं छिराण्हारुजालओणद्धसंपिणद्धं मट्टियभंडंव दुब्बलं असुइसंकिलिट्ठं अणिट्ठवियं सव्वकालसंठप्पयं जराकुणिमं जज्जरघरं व सडणपडणविद्धंसणधम्मयं पुव्विं पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वं भविस्सतित्ति, कामभोगावि य णं माणुस्सगा असुती असासया वंतासवा एवं पित्ता० खेला० सुक्का० सोणितासया उच्चारपासवणखेलसिंघाणगवंतपित्तसुक्कसोणितसमुब्भवा अमणुन्नदुरुयमुत्तिपूतियपुरीसपुन्ना मतगंधुस्सासा असुभसिस्सा सव्वियणगा बीभच्छा अप्पकालिया लहुसगा कलमला विवासदुक्खं बहुजणसाधारणा परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्झा अबुहजणनिसेविता सदा साधुजणगरहणिज्जा अणंतसंसारवद्धणा कडुफलविवागा चुडुलिव्व अमुंचमाणदुक्खाणुबंधिणो सिद्धिगमणविग्घा पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वा भविस्संतित्ति, जेऽविय णं रज्जे हिरन्ने सुवन्ने य जाव सावतेज्जे सेऽविय णं अग्गिसाहिते चोरसाहिते रायसाहिते मच्चुसाहिते दातियसाधिते अधुवे अणितिते असासए पुव्विं पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सतित्ति । एवंविहम्मिवि रज्जे य जाव अंतेपुरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिते ४ नो संचाएमि जाव पव्वतित्तए, तं धन्ने सि णं तुमं जाव सुलद्धेणं जं नं पव्वतिते। ततेणं से कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते तुसिणीए संचिट्ठति,ततेणं से पोंडरीए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वता-

वज्रस्वाम्यधि० कैंडरीकवृत्तं

॥३८७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

सी–धन्नेसिणं तुमं जाव अहं अधन्ने, ततेणं से दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवसंवसे लज्जाति य गारवेण य पुंडरीयं राय आपुच्छाति २ थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरति ।

ततेणं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं कंचि कालं उग्गंउग्गेणं विहरेत्ता ततो पच्छा समणत्तणपरितंते समणत्तणनिव्विन्ने समणनिब्भच्छिते समणगुणमुक्कजोगी थेराणं अंतियाउ सणितं २ पच्चोसक्कति २ जेणेव पुंडरिगिणी जेणेव पुंडरीयस्स रन्नो भवणे जेणेव असोगवणिया जेणेव असोगवरपायवे जेणेव पुढविसिलापट्टगे तेणेव उवागच्छति उवागच्छेत्ता जाव सिलापट्टयं ओहयमण जाव झियाति । ततेणं पुंडरियस्स अम्मधाती तत्थ आगच्छति जाव तं तहा पासति पासित्ता पुंडरियस्स साहति, सेवि त णं अंतेपुरपरयालसंपरिवुडे तत्थ गच्छति, गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं जाव धन्ने णं सव्वं जाव तुसिणीए ।

ततेणं पुंडरिए एवं वयासी—अट्ठो भंते ! भोगेहिं ?, हन्ता अट्ठो, तते णं कोडुंबियपुरिसे सद्दावेत्ता कलिकलुसेणवाभिसित्तो रायाभिसेगेणं जाव रज्जं पसासेमाणे विहरति। तते णं से पुंडरिए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, करेत्ता चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जति पडिवज्जित्ता कंडरियस्स आयारभंडगं सव्वसुभसमुदयंपिव गेण्हति २ इमं अभिग्गहं गेण्हति २ कप्पति मम थेराणं अंतिए धम्मं पडिवज्जेत्ता पच्छा आहारित्तएत्तिकट्टु थेराभिमुहे निग्गतो ।

कंडरियस्स तु तं पणीतं पाणभोयणमाहारितस्स नो समं परिणतं, वेतणा पाउब्भूया उज्जला विउला जाव दुरहितासा, ततेणं से रज्जे य जाव अंतेपुरे य मुच्छिते जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टो अकामगे कालं किच्चा सत्तमपुढविए तेत्तीससागरट्ठितीए जातो ।

॥३८८॥

पुंडरिएऽविय णं थेरे पप्प तेसिमंते दोच्चंपि चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जति पडिवज्जेत्ता छट्ठक्खमणपारणगंसि अडित्ता जाव आहारिते, तेण य कालातिक्कंतसीतललुक्ख अरसविरसेण अपरिणतेण वेयणा दुरहियासा जाता, तते णं से अधारणिज्जमितिकट्टु करतलपरिग्गहितं जाव अंजलिं कट्टु नमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं णमोत्थु णं थेराणं भगवंताणं मम धम्मातरिताणं धम्मोवतेसगाणं, पुव्विंपि त णं मते थेराणं अंतिए सव्वे पाणातिवाए पच्चक्खाते जावज्जीवाते जाव सव्वे य मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाते, इयाणिंपि य णं तेसिं चेव भगवंताणमंतिगे सव्वं पाणाइवातं जाव सव्वमकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि, जंपि य मे इमं सरीरगं जाव एतंपि चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं वोसिरामित्ति, एवमालोतितपडिक्कंते समाहिप्पत्ते कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे तेत्तीससागरोवमाऊ देवे जाते । ततो चतित्ता महाविदेहे सिज्झिहिति ॥ तं मा तुमं दुब्बलत्तं बलियत्तं वा गेण्हेहि । जहा सो कंडरीतो तेणं दुब्बलेणं अट्टदुहट्टवसट्टो सत्तमाए उववन्नो, पुंडरिओ पडिपुन्नगलकवोलो सव्वट्ठसिद्धे उववन्नो । एवं देवाणुप्पिता ! बलिओ दुब्बलो वा अकारणं, एत्थ झाणनिग्गहो कातव्वो, झाणनिग्गहो परमं पमाणं । तत्थ वेसमणो अहो भगवता आकूतं णातंति एत्थ अतीव संवेगमावन्नो वंदित्ता पडिगतो । तत्थ वेसमणस्स एगो सामाणितो देवो तेण तं पोंडरीयज्झयणं ओगाहितं पंच सतोण, संमत्तं च पडिवन्नो, केति भणंति अ-जंभगो सो, ताहे भगवं कल्लं चेतिताणि वंदित्ता पच्चोरुहति, ते तावसा भणंति–तुब्भे अम्हं आयरिया अम्हे तुब्भं सीसा, सामी भणति–तुज्झ य अम्ह य तिलोगगुरू आयरिया, ते भणंति–तुब्भवि अन्नो आयरियो?, ताहे सामी भगवतो गुणसंथवं करेंति, ते पव्वाविता, देवताए लिंगाणि उवणीताणि, ताहे ते भगवया सद्धिं वच्चंति, भिक्खा वेला य जाता, भगवं भणति–किं आणिज्जतु ?, ते भणंति–पायसो, भगवं च सव्वलद्धिसंपन्नो पडिग्गहं घयमधुसंजुत्तस्स भरेत्ता आगतो, ताहे भणिता–परिवाडीए ठाह,

ते ठिता, भगवं च अक्खीणमहाणसिओ, ते धाता, ताहे सुट्ठुतरं आउट्टा, ताहे सयं आहारेति। ताहे पुणरवि पट्ठितो, तेसिं च सेवालभक्खाणं जेमिन्ताणं चेव नाणं उप्पन्नं, दिन्नस्स वग्गे छत्तादिच्छत्तं पेच्छंताणं, कोडिन्नस्स वग्गे सामीं दट्ठूणं उप्पन्नं, गोयमसामी पुरतो कट्ठेमाणो सामीं पयाहिणीकरेति, तेऽवि केवलिपरिसं पहाविता, गोयमसामी भणति- एह सामीं वंदह, सामी भणति- गोयम! मा केवली आसाएहि, गोयमसामी आउट्टो मिच्छादुक्कडं करेति। ततो गोयमसामिस्स सुट्ठुतरमधिती जाता, ताहे सामी गोतमं भणति- किं देवाणं वयणं गेज्झं आउ जिणाणं ?, गोयमो भणति- जिणवराणं, तो कीस अद्धितिं करेसि ?, ताहे सामी चत्तारि कडे पन्नवेति, तंजहा- सुंबकडे विदल० चम्म० कंबलकडे, एवं सीसावि, गोयमसामी य कंबलकडसामाणो, किंचिरसंसट्ठेसि गोयमा! जाव अविसेसमणाणत्ता भविस्सामो, ताहे सामी दुमपत्तयं नाम अज्झयणं पन्नवेति।

देवोऽवि वेसमणसामाणिओ तओ चइत्ताणं तुंबवणसण्णिवेसे धणगिरि णाम गाहावती, सो य सड्ढो, सो य पव्वइतुकामो, तस्स य मातापितरो धरेंति, पच्छा सो जत्थ जत्थ वरेति तत्थ तत्थ विप्परिणामेति, जथा- अहं पव्वइउकामो, तस्स य तदाणुरूवस्स गाधावतिस्स धूया सुणंदा णाम, सा भणति- ममं देह, ताहे सा दिण्णा, तीसे य भाया अज्जसामिओ नामं पुव्वं पव्वइयओ, तीसे य सुणंदाए कुच्छिंसि सो देवो उववण्णो, ताहे भणति धणगिरि- एस ते गब्भो वितिज्जओ होहिति, सो सीहगिरिस्स पासे पव्वइतो। इमोऽवि णवण्हं मासाणं दारओ जातो, तत्थ य महिलाहिं आगताहिं भण्णति- जइ से ण पिता पव्वइतो होन्तो तो लट्ठं होंतं, सो सण्णी जाणति-जहा मम पिता पव्वइओ, तओ तस्सेवं अणुचिन्तेमाणस्स जातिस्सरणं उप्पण्णं, ताहे रत्तिं दिवा य रोएति, वरं सा णिव्विज्जंती तो सुहं पव्वइस्सन्ति। एवं छम्मासा वच्चंति। अन्नया आयरिया समोसढा, ताहे समिओ

॥३९०॥

धणगिरी य आपुच्छंति जहा सण्णायगाणि पेच्छामोत्ति संदिसावेति, सउणेण वाहरितं, आयरिएहिं भणितं- महंतो लाभो अज्ज, सचित्तं वा अचित्तं वा लभह तं सव्वं लएह, ते गता, उवसग्गिज्जितुमारद्धा, अण्णाहिं महिलाहिं भण्णंति- एतेसिं दारगं उवडुवेहि, तो कहिं नेहिंति ?, पच्छा ताए भणितं- मए एत्तियं कालं संगोवितो एत्ताहे तुमं संगोवेहि, ताहे तेण भणितं-मा पच्छाणुतप्पिहिसि, ताहे सक्खी काऊण गहितो छम्मासिओ, ताहे तेण चोलपट्टएण पत्ताबंधितो, न रोवति, जाणति सण्णी, ताहे तेसु अतितेसु आयरिएहिं भाणं भरियंति हत्थो पसारितो, दिण्णो, हत्थो भूमिं पत्तो, भणति- अज्जो ! णज्जति वइरंति, जाव मुक्कं पेच्छति देवकुमारोवमं दारगं, भणति- सारक्खेह दारगं एतं, पवयणस्स आहारो एसत्ति, तत्थ से वइरोच्चेव णामं कतं । ताहे संजतीणं दिण्णो, तासिं सेज्जातरकुले सेज्जातराणि जाहे अप्पणगाणं चेडरूवाणं पीहगं वा ण्हाणं वा मद्दणं वा करेन्ति ताहे पुव्वं तस्स देंति, जाहे उच्चारातो आयरति ताहे आगारं करेंति, रुयति वा, एवं संवड्ढति, फासुयपडोयारो तेसिं इट्ठो, साधूवि बाहिं विहरंति ।

ताहे सा णंदा पमग्गिता, ताओ निक्खेवोत्ति ण देन्ति, सा आगता २ थणं देति, एवं तिवरिसो जातो, अण्णदा साधू विहरेन्ता आगता, तत्थ राउले ववहारो जातो, सो भणति-ममेताए दिण्णओ, णगरं नंदाए पक्खितं, ताहे बहूणि खेलणगाणि कताणि, एवं रण्णो पासे ववहारच्छेदो, तत्थ पुव्वाहुत्तो राया, दक्खिणओ संघो, सयणपरिजणो वामगपासे णरवतिस्स, तत्थ राया भणति- मम कतत्थे तुब्भे, जत्तो चेडो वयति तस्स भवतु, तेहिं पडिस्सुतं, को पढमं वाहिरउ ?, पुरिसातीयो धम्मत्ति पुरिसो वाहरतु, णगरजणो आह- एतेसिं संचितओ, माता सद्दावेउ, अविय माता दुक्करकारिया, पुणो य पेलवसत्ता, तम्हा एसा चेव

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पढमं वाहरतु, ताहे सा आसहत्थिरहउसभएहिं मणिकणगरतणचित्तेहिं बाललोभणएहि य भणइ-अवलोएह ता वइरसामी !, ताहे पलोएन्तो अच्छति, जाणति- जइ संघं अवमण्णामि तो दीहो संसारो, अवि य-एसावि पव्वइस्सति, एवं तिण्णि वारे वाहरितो ण एति ताहे पिता भणति- जइ सि कतव्ववसाओ धम्मज्झयभूसियं इमं वइर !। गेण्ह लहुं रयहरणं कम्मरयपमज्जणं धीर ! ॥१॥ ताहे तुरितं गंतूणं गहितं, लोगो भणति- जयति धम्मो, उक्कुट्ठिसीहणातो य कतो, ताहे माता चिंतेति- मम भत्ता पव्वइतो, भाता पुत्तो य, अहं किं अच्छामि ?, एवं सावि पव्वइता ।

ताहे साधूणीण चेव पासे अच्छति, तेण तासिं पासिं एक्कारस अंगाणि कण्हाहाडेण गहिताणि, पदाणुसारी सो भगवं, ताहे अट्ठवासओ संजतिपडिस्सताओ निक्कालिओ, ताहे उज्जेणिं गतो । तत्थ आयरियाणं पासे अच्छति, ताहे तत्थ य अहोधारं वासं पडति, ते य से जंभगा तेण अंतेण वोलेन्ता पेच्छंति, ताहे परिक्खानिमित्तं ओतिण्णा, वाणियगरूवेणं अल्लद्देत्ता उवक्खडंति, सिद्धे निमंतेन्ति, ताहे पडितो जाव कणगफुसितमत्थि ताहे पडिनियत्तेति, ताहे ठाति, पुणो सद्दावेंति, एवं(तिन्नि वारे) करंति, ताहे भगवं उवउत्तो--दव्वओ ४, दव्वतो फूसफलादी खेत्ततो उज्जेणी कालतो पाउसो भावतो ओसक्कणातिसक्कणा हट्ठतुट्ठा य, ताहे णेच्छति, देवा तुट्ठा भणेंति--तुमं दट्ठुमागता, पच्छा वेउव्वियं वेज्जं देंति । पुणरवि अण्णदा जेट्ठमासे घतपुण्णेहिं सण्णाणिग्गतं तत्थवि निमंतेंति, तत्थवि उवओगो--दव्वतो, तेहिं णभगामिणी विज्जा दिण्णा, एवं सो विहरति । ताणि य पदाणुसारिणा गहियाणि अंगाणि इह संजताण मूले थिरतराणि जाताणि, तत्थवि जो अज्झाति उवरिल्लं पुव्वगतं तंपि सव्वं पुव्वगतं गेण्हति,

एवं तेण बहुयं गहितं, जाहे वुच्चति पढाहि ताहे एंतगंपि तं घोसएहिं कोट्टेंतो अच्छति अण्णं सुणंतो, अण्णदा आयरिया साहुसु भिक्खं गतेसु मज्झण्हे सण्णाभूमिं गता, वइरसामीवि पडिस्सयवालो अच्छति, सो तेसिं साधूणं वेंटियाओ मंडलीए रएत्ता मज्झे अप्पणा ठाउं वायणा पदिण्णो, ताहे परिवाडीए एक्कारसवि अंगाइं वाएति पुव्वगतं च, जाव य आयरिया आगता, ते चिंतेंति- लहुं साहू आगता, सद्दं सुणंति मेघोघरसितगंभीरं, बहिता सुणंता अच्छंति, णातं जहा वइरोत्ति, ताहे ओसरित्ता पुणो सद्दवडियं कातूण अल्लीणा, महल्लं च निसीहिं करेंति, मा से संका भवेज्जा, ताहे तेण तुरियं वेंटियाओ सट्ठाणे ठवियाओ, ठवेत्ता निग्गंतूण दंडगं गेण्हति पादे य पमज्जति, ताहे आयरिया चिंतेंति-मा एतं साधू परिभविस्संति तो जाणावेमि, ताहे रत्तिं आयरिया साधू आपुच्छंति, जथा-अमुगगामं वच्चामि, तत्थ दो व तिण्णि व दिवसे अच्छिस्सामि, तत्थ जोगपडिवण्णगा भणंति- अम्हं को वायणायरिओ?, आयरिएहिं भाणितं- वइरोत्ति, तेहिं विणीतेहिं तहत्ति पडिस्सुतं, णूणं आयरिया जाणगा, तेऽवि साहुणो पडिलेहित्ता कालनिवेदणादि वइरसामिस्स अप्पेंति, ताहे सव्वम्मि कते पच्छा णिसेज्जा रइता, सोऽवि भगवं निविट्ठो, एवं ते आगता, जहा आयरियस्स तहा सव्वं विणयं पयुंजंति, जेवि पुव्वतीता आलावगा तंपि ते विण्णासणनिमित्तं पुच्छंति, जेऽवियं मंदमहावी तेवि ठवेतुमारद्धा, तत्थ भगवं बालो अबालभावो, ताहे करकरस्स कड्ढति, एवं ते तुट्ठा भणंति—जदि आयरिया अच्छेज्ज कइवय दिवसे तो अम्हं एस सुतखंधो समप्पेज्जा, एवं तेसिं आयरियाणं पासे जं चिरस्स परिवाडीए गेण्हंति तं इमेण एक्काए पोरिसीए सारितं, एवं सो तेसिं बहुमओ जातो, आयरितावि णातूणं जाणाविता साधुत्ति ताहे तस्स अणुकंपणट्ठा आगता, अवसेसं अज्झाविज्जउत्ति, पुच्छंति-किध सरति सज्झाओ ?, ताहे तुट्ठा साहंति जथा सरितं, ताहे ते भणंति- एसो चेव

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

अम्हं वायणायरिओ भवतु, आयरिया भणंति- होहिति, मा तुब्भे एयं परिभविहिहत्ति तो तुब्भं जाणणणिमित्तं अहं गतो, णवि य एस कप्पो, एतेण कण्णाहाडियगं, एतस्सवि उस्सारकप्पो कीरति, एवं सो उस्सारिज्जति, बीयाए से पोरिसीए अत्थो कहिज्जति, एस तदुभयकप्पजोग्गो, तत्थ जे अत्था आयरियस्स संकिता तेवि तेण उग्घाडिया, जावतियं दिट्ठिवायं ते जाणंति तत्तिओ गहिओ, ते विहरंता दसपुरं गता, उज्जेणीए भद्दयगुत्ता णाम आयरिया थेरकप्पट्ठिता, तेसिं दिट्ठिवाओ अत्थि, संघाडओ से दिण्णो, ताहे गओ भद्दगुत्ताणं पासे, भद्दगुत्ता य थेरा सुविणयं पासंति पाभातियं, ताहे पभाते साहूणं साहंति, जहा मम पडिग्गहो खीरभरितो सो आगंतूण सीहपोतएणं पीतो लेहितो य, तस्स किं फलं होज्जत्ति?, ते अण्णमण्णाणि वागरेंति अजाणंता, गुरू भणंति- ण जाणह तुब्भे, अज्ज मम पाडिच्छओ एहिति, सो सव्वं सुत्तं अत्थं च घेच्छिहिति, भगवंपि बाहिरियाए वुत्थो, ताहे अतिगतो पगेते, दिट्ठो, सुतपुव्वो एस सो वइरो, तुट्ठो उववूहिओ य, ताहे सो सव्वो पढिओ, ताहे अणुण्णाणिमित्तं जहिं उद्दिट्ठो तहिं चेव वच्चति, दिट्ठिवाओ जेण चेव उद्दिट्ठो ते चेव अणुजाणंति, ताहे दसपुरं एति, ताहे तेहिं अणुण्णा समारद्धा, ताव णवरं देवेहिं अणुण्णा उवट्ठविता, दिव्वाणि पुप्फाणि चुण्णा य—

जस्स अणुण्णा० ॥८-४४॥७६७॥ अण्णदा सीहगिरी भत्तं पच्चक्खाति तस्स गणं दातुं, ताहे पंचहिं अणगारसएहिं संपरिवुडो विहरति, जत्थ जत्थ वच्चति तत्थ तत्थ ओराला किंत्तिवण्णसद्दा परिभमंति अहो भगवं। किंच—

जेणुद्धरिया विज्जा० ॥ ८-४६ ॥ ७६९ ॥ महापरिण्णाए विज्जा पम्हुट्ठा आसी सा पदाणुसारिणा तेणुद्धरिता—

भणति य आहिंडेज्जा० ॥ ८-४७ ॥ ११० ॥ भणति य धारेतव्वा० । ८-४८ ॥ १११ ॥ अहं एव

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

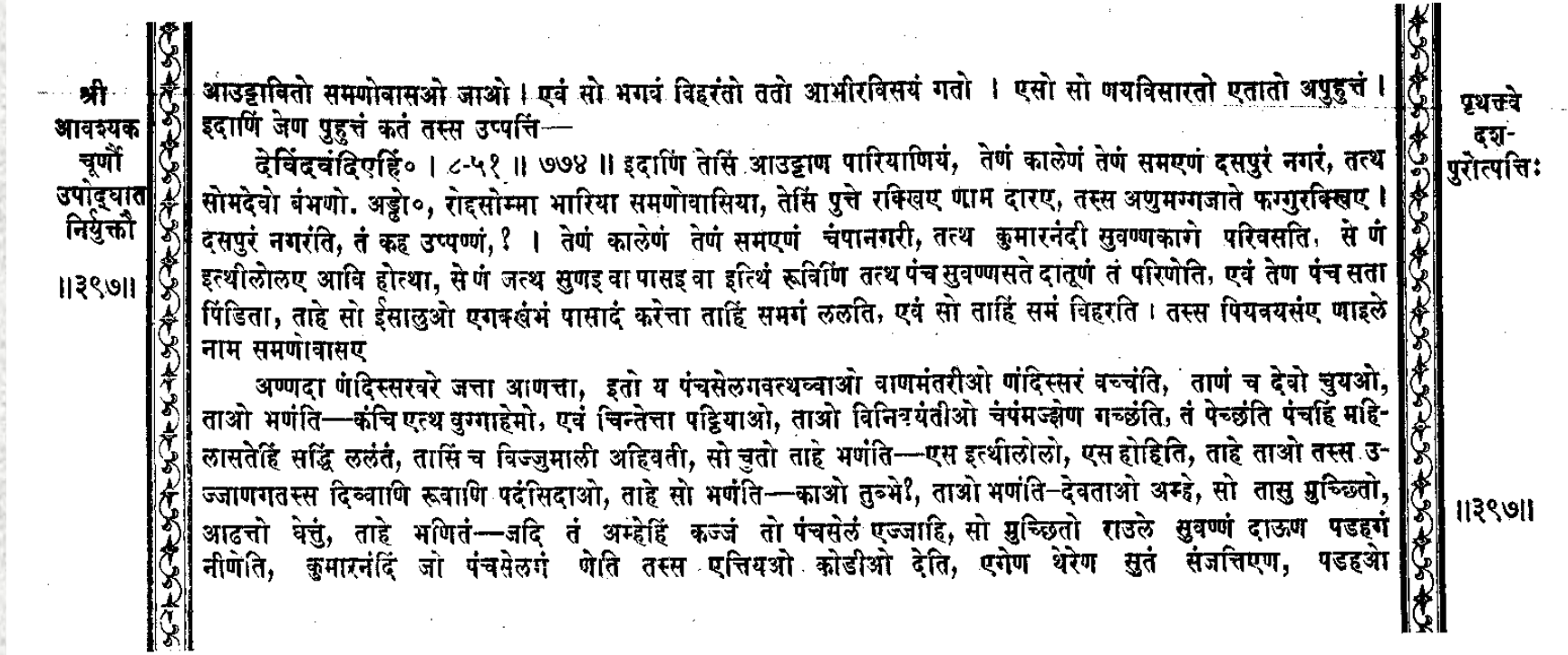
पव्वयणउवग्गहनिमित्तं धारेमि, एवं विहरंतो भगवं भवियजणविबोहणं करेति । तेणं कालेणं तेणं समएणं पाडलिपुत्ते नगरे धणो सेट्ठी, तस्स धूता अतीव दरिसणिज्जा, तस्स य सालासु साहूणीओ ठियाओ, सभावेण य एस लोगो कामितकामओ, ताओ य संजतीओ आराहाइओ वइरसामिस्स गुणकित्तणं करेंति, सेट्ठिधूता चिंतेति—जदि सो मम पती तो णवरि भोगा, इहरहा अलाहि, वरगा एंति, पडिसेहिज्जंति, ताहे साहंति, जहा सो पव्वइओ महात्मा नेच्छति, सा भणति-जदि णेच्छति तो पव्वइस्सामि । इतो य भगवं पाडलिपुत्ते आगतो, तत्थ राया सपुरजणजाणवतो णिग्गतो अम्मोगतियाए, ते य पव्वतिया फड्डगफड्डएहिं एन्ति, तत्थ अत्थि बहवे ओरालसरीरा, राया पुच्छति—इमो भगवं ?, ताहे सीसति-जहा ण भवति, जत्थ अपच्छिमं वंदं तत्थ पविरल-पव्वइय सद्धिं संपरिवुडो, एस आयरिओ, आयरिया ण तथा पडिरूवा, तत्थ पडिओ पादेसु, ताहे उज्जाणे ठिता, धम्मो कहितो, खीरासवलद्धी भगवं, राया हतहिदओ कतो, अंतेउरे साहति गंतुं, ताओ भणति—अम्हेऽवि वच्चामो, सव्वं अंतेपुरं निग्गतं, सा य सेट्ठिधूता लोगस्स सुणेत्ता किह पेच्छेज्जामित्ति अच्छति, बितियदिवसे ताए पिता विण्णवितो—तस्स मे देहि, ताहे सव्वालंकार-विभूसिदा अणेगाहिं धणकोडीहिं नीता, धम्मो कहितो, भगवं च खीरासवलद्धीओ, लोगो भणति-अहो सुस्सरो भगवं, सव्वगुण-संपण्णो, णवरि रूवविहूणो, जदि से रूवं होन्तं तो सव्वगुणसंपदा होंती, भगवं तेसिं मणोगतं णाऊणं तत्थ पउमं विउव्वति, तस्स उवरि निविट्ठो, रूवं विउव्वति अतीवसोम्मं जारिसं परं देवाणं, लोगो आउट्टो भणति-एवं एतस्स साभावितं रूवं, मा पत्थ-णिज्जो होहामित्ति तो विरूवेण अच्छति, सातिसउत्ति राया भणति—अहो भगवओ एतमवि अथि, ताहे अणगारगुणे वण्णेति, पहू असंखेज्जे दीवसमुद्दे विउव्विता आइण्णविप्पइण्णे करेत्तएत्ति, ताहे तेण रूवेणं धम्मं कहेति, ताहे सेट्ठिणा णिमंतिओ भगवं

विसए निंदेति, भणइ—जदि ममं इच्छति तो पव्वयतु, ताहे पव्वइया । एवं विहरंतो पुव्वादिसाउ उत्तरापहं गतो।

तत्थ दुब्भिक्खं जातं, पंथावि वोच्छिण्णा, ताहे संघो उवट्ठितो-भगवं ! नित्थारेहीत्ति, ताहे पडविज्जाए संघो ठविओ, तत्थ य सेज्जातरो चारीए गतो, एति य, उप्पत्तिए पासति, चिंतेति-कोइ विणासो तो संघो जाति, ताहे असियएण सिहलिं छिंदित्ता भणति-अहंपि भगवं ! तुब्भं साहम्मिओ, ताहे सोऽवि विलइओ इमं सुत्तं सरंतेणं—साहम्मियवच्छल्लंमि उज्जता उज्जता य सज्झाए । चरणकरणंमि य तहा तित्थस्स पभावणाए य ॥ १ ॥ एवं पच्छा उप्पतिओ भगवं, पत्तो पुरियं नगरिं, तत्थ सुभिक्खं, तत्थ सावगा बहुगा, एवं तत्थ उल्लाहा, तत्थ य राया तच्चन्नियसड्ढो, तत्थ य अम्हच्चयाणं सड्ढाणं तेसिं च वरुट्ठएण मल्लारुभणाणि वट्टंति, सव्वत्थ तच्चन्नियसड्ढा पराजीयंती, ताहे तेहिं राया पुप्फाणि वारावितो, पज्जोसवणाए सड्ढा अट्ठण्हा, जतो पज्जोसवणाए पुप्फाणि णत्थित्ति, ताहे सबालवुड्ढा वयरसामिं उवट्ठिता, तुब्भे जाणह जदि तुब्भेहिं जाणएहिं पवयणं ओहामिज्जति, एवं बहुप्पगारं भणिए ताहे उप्पतितो माहेसरिं गतो, तत्थ य हुतासणगिहं नाम वाणमंतरं, तत्थ कुंभो पुप्फाण उट्ठेति, तत्थ भगवतो पितुमित्तो तडितु, तत्थ गतो, सो संभन्तो भणति-किमागमणपयोयणं ?, भगवता भणितं- पुप्फेहिं पयोयणं, तेण अणुग्गहो, ता तुब्भे गहेह जाव एमि, पच्छा सिरिसगासं गतो, सिरीए चेतियअच्चणियानिमित्तं पउमं छिण्णगं, ताहे वंदित्ता सिरीए निमंतिओ, तं गहाय अग्गिहरं एति, तत्थ कुंभं पुप्फाण छोढूण अण्णाणि तु सारियाणि, एवं जंभगगणपीरवुडो दिव्वेण गीतगंधव्वणिणादेन आगतो आगासेणं, तस्स य पउमस्स बेंटे वइरसामी, तत्थ तच्चण्णिया भणंति-अम्हं एंतं पाडिहेरं, अग्घं गहाय निग्गता, तं विहारं वोलेत्ता अरहंतघरं गता, तत्थ देवेहिं महिमा कता, तत्थ लोगस्स अतीव बहुमाणो जातो, राया

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३९७॥

आउट्टावितो समणोवासओ जाओ। एवं सो भगवं विहरंतो ततो आभीरविसयं गतो । एसो सो णयविसारतो एतातो अपुहुत्तं। इदाणिं जेण पुहुत्तं कतं तस्स उप्पत्ति—

देविंदवंदिएहिं० । ८-५१ ॥ ७७४ ॥ इदाणिं तेसिं आउट्टाण पारियाणियं, तेणं कालेणं तेणं समएणं दसपुरं नगरं, तत्थ सोमदेवो बंभणो. अड्ढो०, रोद्दसोम्मा भारिया समणोवासिया, तेसिं पुत्ते रक्खिए णाम दारए, तस्स अणुमग्गजाते फग्गुरक्खिए। दसपुरं नगरंति, तं कह उप्पण्णं, ? । तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपानगरी, तत्थ कुमारनंदी सुवण्णकारो परिवसति. से णं इत्थीलोलए आवि होत्था, से णं जत्थ सुणइ वा पासइ वा इत्थिं रूविणिं तत्थ पंच सुवण्णसते दातूणं तं परिणेति, एवं तेण पंच सता पिंडिता, ताहे सो ईसालुओ एगक्खंभं पासादं करेत्ता ताहिं समगं ललति, एवं सो ताहिं समं विहरति। तस्स पियवयसंए णाइले नाम समणोवासए

अण्णदा णंदिस्सरवरे जत्ता आणत्ता, इतो य पंचसेलगवत्थव्वाओ वाणमंतरीओ णंदिस्सरं वच्चंति, ताणं च देवो चुयओ, ताओ भणंति—कंचि एत्थ वुग्गाहेमो, एवं चिन्तेत्ता पट्ठियाओ, ताओ विनिवयंतीओ चंपमज्झेण गच्छंति, तं पेच्छंति पंचहिं महिलासतेहिं सद्धिं ललंतं, तासिं च विज्जुमाली अहिवती, सो चुतो ताहे भणंति—एस इत्थीलोलो, एस होहिति, ताहे ताओ तस्स उज्जाणगतस्स दिव्वाणि रूवाणि पदंसिदाओ, ताहे सो भणंति—काओ तुब्भे?, ताओ भणंति—देवताओ अम्हे, सो तासु मुच्छितो, आढत्तो घेत्तुं, ताहे भणितं—जदि तं अम्हेहिं कज्जं तो पंचसेलं एज्जाहि, सो मुच्छितो राउले सुवण्णं दाऊण पडहगं नीणेति, कुमारनंदिं जो पंचसेलगं णेति तस्स एत्तियओ कोडीओ देति, एगेण थेरेण सुतं संजत्तिएण, पडहओ

पृथक्त्वे दश-पुरोत्पत्तिः

॥३९७॥

दशपुर-उत्पत्ति एवं आर्य रक्षितस्य कथानक कथयते

खोडितो, वहणं कारितं, पत्थयणस्स भरितं, मुक्कं, थेरेणं तं दव्वं पुत्ताण दवावियं, जाहे दूरं समुद्दमतिगतो ताहे थेरेण भणितं-किंचि पेच्छसि ?, सो भणति-किंचि कालगं, एस वडो समुद्दकूले पव्वतपादे जातो, एतस्स हेट्ठेण वहणं जाहिति, तो तुमं अमूढो वडे लग्गेज्जासि, ताहे पंचसेलयाओ पक्खी एहिंति, तेसिं पादेसु अप्पाणं बंधाहि, ते तहिं तं णेहिंति, जदि किहइ ण लग्गासि तो वलयामुहंमि बुड्डसि, एवं सो विलग्गो नीतो य पक्खीहिं, ताहे तांहिं वंतरीहिं भमंतीहिं दिट्ठो, तांहिं से रिद्धी दाइता, सो पगहितो, ताहे तांहिं भणितो-ण एतेण सरीरकेण अम्हे भुज्जामो, ता किह ?, तांहिं भणितं- किंचि जलणपवेसादिं करेहि जहा पंचसेलगे उववज्जामित्ति, किह एत्ताहे जामि ?, तांहिं करतलपुडसंपुडएण णीतो, ताहे आणीउं सए उज्जाणे ठवितो, ताहे लोगो पुच्छओ एति, भणति-'दिट्ठं सुतमणुभूतं जं वत्तं पंचसेलए दीवे' । ताहे इंगिणिणिचन्नो ज्ञाति, सड्ढो य से मित्तो, तेण वारिओ-न सुंदरतरगा भोगा, पव्वयाहि, बहूहिं पण्णवणाहिं न सक्किओ, सड्ढस्स विणिव्वेओ जातो, जहा एस अज्ञानी भोगाण कज्जे किलिस्सतित्ति अम्हे जाणंता कीस अच्छामोत्ति पव्वइतो, कालं किच्चा अच्चुते उववण्णो, इतरोऽवि मरित्ता पंचसेलए जक्खो जातो, सो तं ओहिणा पेच्छति, अण्णदा णंदिस्सरजत्ताए पलायंतस्स पडहो गलए लग्गति, ताहे वाएति, तत्थ सव्वे देवा मेलीणा, सड्ढो आगतो तं पेच्छति, सो तं दट्ठूणं तेयं असहंतो नस्सति, सो तेयं साहरित्ता भणति- भो ममं जाणसि ?, सो भणति- को सक्काइए इंदे ण जाणति ?, ताहे सो तं सावगरूवं दंसेति, ताहे जाणाविओ भणति- संदिसह एत्ताहे किं करेमित्ति, देवेण भणितं- वद्धमाणसामिस्स पडिमं करेहि, ततो ते समत्तबीयं होहिति, तदा य सामी जीवति, ताहे गोसीसमइं पडिमं महाहिमवंतातो करेत्ता कट्ठसंपुडए छुभित्ता आगतो भरहवासं, समुद्दे पवहणं पासति उप्पातिएण छम्मासे भमंतं,

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

ताहे थंभितं, सा य खोडी दिण्णा, भणितो य-देवाहिदेवस्स पडिमं करेज्जह, वीतिभयए उत्तारियाउ, उद्दायणो राया तावसभत्तो, तस्स पभावती देवी समणोवासिया, उद्दायणस्स वाणियएहिं कहितं-देवाहिदेवस्स पडिमत्ति, ताहे इंदादीणं कीरति, परमू ण वहति, पभावतीए सुतं, सा भणति-वद्धमाणसामी देवाधिदेवो तस्स कीरतु, जं चेव आहतं जाव पुव्वणिम्माया पडिमा, अंतेपुरे चेतियघरं कारितं, पभावती ण्हाता तिसञ्झं अच्चेति, अण्णदा देवी नच्चति रायावाएति, सो सीसं न पेच्छति देवीए, अद्धीती से जाता, देवी लक्खेत्ता भणति- किं दुट्ठु नच्चितं ?, निबंधे सिट्ठं, सा भणति- मया सुचिरं सावगत्तणं परिपालियं, अण्णदा ण्हाता चेडिं भणति-पोत्ताइं आणेहि, ताए से रत्तगाणि आणियाणि, रुट्ठा अद्दाएण आहता चेतियघरं पविसंतीए रत्तगाणि देसित्ति, आहता चेडी मता, ताहे चिंतेति-मए खंडितं सीलं, तो किं मे जीविएणंति रायाणं आपुच्छति, भत्तं पच्चक्खामित्ति, निब्बन्धे राया भणति- जदि परं संबोहेसि, पडिस्सुतं, भत्तपच्चक्खाणेण मता देवलोकं गता, जियपडिमं देवदत्ता दासचेडी खुज्जा सुस्सूसति ।

देवो संबोहेति, न संबुज्झति, सो य तावसभत्तो, देवो तावसरूवं करेति, अमतफलाणि गहाय आगतो, रण्णा आसादियाणि, मुच्छिओ भणति-कहिं?, तेण भणितं-नगरस्स अदूरे आसमो तहिं, तेण समं गतो, तेहिं पारद्धो, णासंतो वणसंडे साहवो पेच्छति, तेहिं धम्मो कहितो, संबुद्धो, देवो अत्ताणं दरिसेति, आपुच्छित्ता गतो, जाव अत्थाणीए चेव अत्ताणं पेच्छति, एवं सड्ढो जातो । इओ य गंधारओ सावओ, सो सव्वाओ जम्मभूमीओ वंदित्ता वेयड्ढे कणगपडिमाओ सुणेत्ता उववासेण ठितो, जदि वा मओ दिट्ठाओ वा, देवताए दंसिताओ, तेण वंदियाओ, देवयाए से तुट्ठाए सव्वकामियाओ गुलियाओ दिण्णाओ, ताण सतं परिमाणतो, ततो णिन्तो सुणेति वीतिभए जिणपडिमा गोसीसचंदणमती, वंदओ एति, आगतो वंदति, तत्थ पडिभग्गो, देवदत्ताए पडियरिओ

सम्मं, तुट्ठेण गुलिताण सतं दिण्णं, सो पव्वइतो ।

अण्णदा ताए चिंतियं- ममं कणगसरिसो वण्णो भवतुत्ति जाव रूवं जातं जथा देवकण्णगा, एत्ताहे चिंता जाता-भोगे भुंजामि, इमो राया मम पिता, अण्णे य गोहा, ताहे पज्जोयं रोएति, तं मणसीकाऊण गुलिया खइया, तस्सवि देवताए कहितं- एरिसी रूववतित्ति, तेण सुवण्णगुलियाए दूतो पट्ठवितो, ताए भण्णति- पेच्छामि तुमे, आगतो नलगिरिणा, सा भणति- जदि पडिमं णेहि तो जामि, ताहे पडिमा णत्थित्ति रत्तिं वुट्ठो, पडिगतो, अन्नं जिनपडिमरूवं कातुं आगतो, तत्थ ठामे ठवेत्ता जीय-स्सामी सुवण्णगुलिया य आणीया, ताहे तत्थ नलगिरिणा मुत्तियं लेंडं च मुक्कं जाव तेण गंधेण हत्थी उम्मत्ता, तं च दिसं गंधो एति जाव पलोइज्जइ नलगिरिस्स पदं, किं निमित्तमागतोत्ति जाव चेडी न दीसति, राया भणति- चेडी नीता नाम, पडिमं पलोएह, णवरि अच्छतित्ति निवेदितं, अच्चणवेलाए राया आगतो जाव पेच्छति पुप्फाणि सुक्काणि, निव्वण्णेति, ताहे नातं पडि-रूवगंति, ताहे भणति पडिमा हरिता, दूतो विसज्जितो, नवि ममं चेडीए कज्जं, विसज्जेहि पडिमं, सो न देति, ताहे पहावितो जेट्ठमासे दसहिं रातीहिं समं, मरुं उत्तरंताणं खंधावारो तिसाए पमओ, रण्णो निवेदितं, रण्णा पभावती चिंतिता. आगता, तीए तिण्णि पुक्खराणि कतानि, अग्गिमस्स मज्झिमस्स पच्छिमस्स, ताहे आसत्थो गतो उज्जेणिं, भणितो य पज्जोतो-किं लोगेण मारिएणं?, अस्सरथहत्थिवादेहिं वा जेण रुच्चति तेण जुज्झामो, ताहे पज्जोतो भणति-रहेहिं जुज्झामो, ताहे णलगिरिणा पडिकप्पितेण आगतो, राया य रहेण, रण्णा भणितो-असच्चसंधोऽसित्ति, तथावि ते णत्थि मोक्खो, ताहे रण्णा रहो मंडलीए दिण्णो, हत्थी वेगेण पत्थितो, ओलग्गति, रहेण जीतो, ताहे जं जं पादं उक्खिवति तत्थ तत्थ राया सरे छुभति, जाव हत्थी पडितो, उत्तरंतो

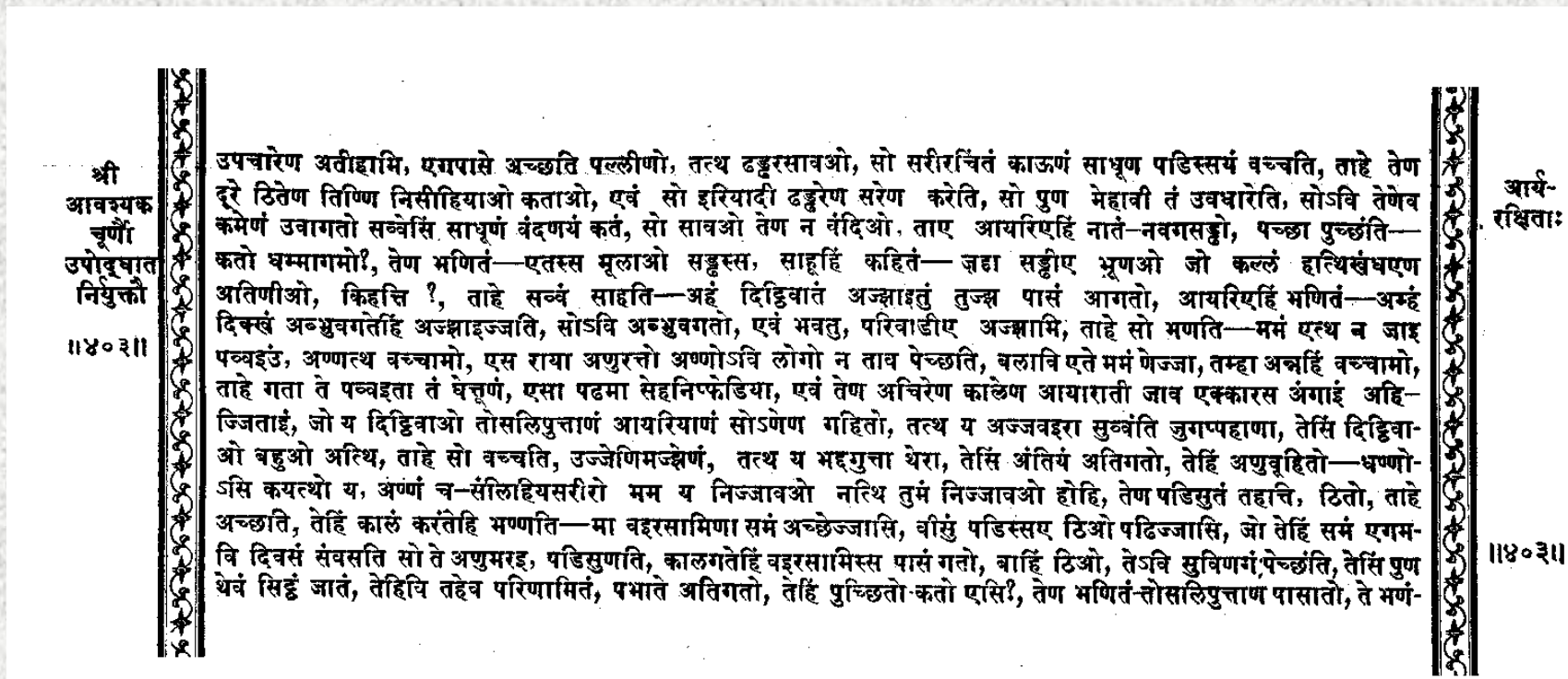
बद्धो, निडाले य से अंको कओ दासीवतिओत्ति उद्दायणस्स रण्णो, पच्छा णियगं नगरं पहाविंतो, पडिमा णेच्छतित्ति, अंतरा वासेण ओबद्धो, ताहे उक्खंदभतेण दसवि रायाणो ठिता धूलीपागारे करेत्ता, जं च राया जेमेति तं च से दिज्जति, पज्जोसवणा य जाता, ताहे सो पुच्छिज्जति-किं अज्ज जेमेसि?, सो चिंतेति—मा मारेज्जेज्जामि, ताहे भणति– किं अज्ज पुच्छिज्जामि?, भणितो—अज्ज रण्णो अभत्तट्ठो, पज्जोसवणत्ति कहितं, ताहे सो सोचितुमारद्धो—मम मातापिता संजताणि, अहं न जाणामि जथा पज्जोसवणत्ति, अहंपि सावओ, न जेमेमित्ति, रण्णो कहितं, भणति–जाणामि जहा सो धुत्तो, किं पुण मम एतंमि बद्धेल्लए पज्जोसवणा चेव न सुज्झति, ताहे मुक्को खामिओ य, पट्टो य से बद्धो सोवण्णो, मा एताणि अक्खराणि दीसिहिन्ति, सो य से विसओ दिण्णो, तप्पभितिं पट्टबद्धगा रायाणो आढत्ता, पुव्वं बद्धमउडा आसी, वत्ते वासारत्ते राया गतो, तत्थ जो वाणियवग्गो आगतो सो तहिं चेव ठितो, ताहे तं दसपुरं जातं । एवं दसपुरं उप्पण्णं ।

तंमि दसपुरे सोमदेवो माहणो, रुद्दसोमा भज्जा सड्ढी, तीसे जेट्ठपुत्तो रक्खितो बितियओ फग्गुरक्खियओ, तत्थ उप्पण्णगा अज्जरक्खिता, सो य तत्थ जं अत्थि पिउणो तं अज्झाइओ, घरेण तीरति पढितुंति ताहे गतो पाडलिपुत्तं, तत्थ चत्तारि वेदा संगोवंगं अधीतो समत्तपारायणो साखापारओ जदा जातो, किं बहुणा?, चोद्दसवि विज्जाठाणाणि गहियाणि, ताहे आगतो दसपुरं, ते य रायकुले सेवगा, णज्जंति रायकुले, तेण संविदितं रण्णो कतं, जहा एमित्ति, ताहे उब्भितपडागं सयमेव राया निग्गतो, तं अणुगतियाए दिट्ठो सक्कारितो अग्गोयरो य दिण्णो, एवं सो णगरेण सव्वेण अभिणंदिज्जंतो अप्पणो घरं पत्तो, तत्थवि बाहिरब्भंतरिया परिसा आढाति, तंपि चंदणकलसादि सोयंमि, सो तत्थ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए ठिओ लोगस्स अग्घं पडिच्छ-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

ति, ताहे वयंसगा य भित्ता य सव्वे पेच्छगा आगता, दिट्ठपरिचियस्स य लोगस्स अग्घेण पज्जेण य जाव से घरं भरितं दुपद-चतुष्पदहिरण्णसुवण्णाण, ताहे चिंतेति—अम्मं न पेच्छामि, ताहे घरं अतिगतो, मातं पासति, मातं अभिवादेति, ताए भण्णति—सागतं पुत्तत्ति, पुणरवि मज्झत्था चेव अच्छति, ताहे सो भणति—किं णं अम्मो तुब्भं न तुट्ठी? (जेण मए एंतेण णगरं विम्हियं चउद्दसण्हं विज्जाठाणाणं आगमे कए, सा भणति-कहं पुत्त! मम तुट्ठी भविस्सति?, जेण तुमं बहूणं सत्ताणं वहं अहिज्जिउं आगओ, जेण संसारो वड्ढिज्जइ तेण कहं तुस्सामि?, किं तुमं दिट्ठिवायं पठिउमागओ?, पच्छा सो चिंतेइ-कित्तओ वा सो होहिति जामि) कहिं सो अम्मा?, सा साहति—साधूणं दिट्ठिवातो, ताहे सो नामं मंतेति, सोऽक्खरार्थं वीमंसेतुमारद्धो, दृष्टीनां वादो दृष्टिवादो, ताहे भणति-नाम चेव सुंदरं, जदि ताव सत्थं नज्जति तो अज्झायितव्वं, किं पुण जेण अम्मापि तुस्सति?, वच्चामि, कहिं ते दिट्ठि-वाउजाणंतगा?, इहेव अम्हं उच्छुघरे उज्जाणे तोसलिपुत्ता नाम आयरिया, कल्लं अज्झामि, मा तुज्झे उस्सुगाओ भवह, ताहे सो रत्तिं चिंतितो न चेव सुत्तो, बियदिवसे य पभाते चेव पट्ठितो, तस्स य ओवणगरगामे पितिमित्तो वसति, तेण सो न दिट्ठ-ओ, अज्ज पेच्छामि णंति उच्छुलट्ठीओ गहाय एति नव पडिपुण्णाउ एगं च खंडं, इतरो य नीति, इमो य पत्तो, को तुमं?, अज्ज-रक्खितोत्ति, ताहे सो तुट्ठो अणुवूहति, सागतं?, अहं तुब्भे दट्ठुं आगतो, ताहे सो भणति-अतीहि, अहं सरीरचिंताए निज्जामि, एताओ य उच्छुलट्ठीओ अम्माए हत्थे देज्जाहि, भणेज्जसु य-दिट्ठो मए अज्जरक्खिओ, अहमेव पढमं दिट्ठो, ताहे सा तुट्ठा, मम पुत्तेण सुदरं मंगलं दिट्ठं, नव पुव्वा घेतव्वा खंडं च, इतरोवि तं चेव चिंतेइ-मए णव अंगाणि अज्झयणाणि वा घेत्तव्वाणि, दसमं न सव्वं, ताहे गतो उच्छुघरं, तत्थ चिंतेति— किह एमेव अहमि जहा गोहो अजाणंतो?, जो एतेसिं सावगो भविस्सति तेण



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ

॥४०३॥

उपचारेण अतीहामि, एगपासे अच्छति पल्लीणो, तत्थ ढड्ढरसावओ, सो सरीरचिंतं काऊणं साधूण पडिस्सयं वच्चति, ताहे तेण दूरे ठितेण तिण्णि निसीहियाओ कताओ, एवं सो इरियादी ढड्ढरेण सरेण करेति, सो पुण मेहावी तं उवधारेति, सोऽवि तेणेव कमेणं उवागतो सव्वेसिं साधूणं वंदणयं कतं, सो सावओ तेण न वंदिओ, ताए आयरिएहिं नातं–नवगसड्ढो, पच्छा पुच्छंति—कतो धम्मागमो?, तेण भणितं—एतस्स मूलाओ सड्ढस्स, साहूहिं कहितं— जहा सड्ढीए भूणओ जो कल्लं हत्थिखंधएण अतिणीओ, किहत्ति ?, ताहे सव्वं साहति—अहं दिट्ठिवातं अज्झाइतुं तुज्झ पासं आगतो, आयरिएहिं भणितं—अम्हं दिक्खं अब्भुवगतेहिं अज्झाइज्जति, सोऽवि अब्भुवगतो, एवं भवतु, परिवाडीए अज्झामि, ताहे सो भणति—ममं एत्थ न जाइ पव्वइउं, अण्णत्थ वच्चामो, एस राया अणुरत्तो अण्णोऽवि लोगो न ताव पेच्छति, बलावि एते ममं णेज्जा, तम्हा अन्नहिं वच्चामो, ताहे गता ते पव्वइता तं घेत्तूणं, एसा पढमा सेहनिप्फेडिया, एवं तेण अचिरेण कालेण आयाराती जाव एक्कारस अंगाइं अहिज्जिताइं, जो य दिट्ठिवाओ तोसलिपुत्ताणं आयरियाणं सोऽणेण गहितो, तत्थ य अज्जवइरा सुव्वंति जुगप्पहाणा, तेसिं दिट्ठिवाओ बहुओ अत्थि, ताहे सो वच्चति, उज्जेणिमज्झेणं, तत्थ य भद्दगुत्ता थेरा, तेसिं अंतियं अतिगतो, तेहिं अणुवूहितो—धण्णोऽसि कयत्थो य, अण्णं च–सीलाहियसरीरो मम य निज्जावओ नत्थि तुमं निज्जावओ होहि, तेण पडिसुतं तहत्ति, ठितो, ताहे अच्छति, तेहिं कालं करंतेहि भण्णति—मा वइरसामिणा समं अच्छेज्जासि, वीसुं पडिस्सए ठिओ पढिज्जासि, जो तेहिं समं एगमवि दिवसं संवसति सो ते अणुमरइ, पडिसुणति, कालगतेहिं वइरसामिस्स पासं गतो, बाहिं ठिओ, तेऽवि सुविणगं पेच्छंति, तेसिं पुण थेवं सिट्ठं जातं, तेहिवि तहेव परिणामितं, पभाते अतिगतो, तेहिं पुच्छितो-कतो एसि?, तेण भणितं-तोसलिपुत्ताण पासातो, ते भणं-

आर्य-रक्षिताः

॥४०३॥

ति–तुब्भे अज्जरक्खिया?, (आमं) साधु सागयं, तो कहिं ठितो सि?, बाहिं, ताहे आयरिया भणंति—बाहिठियाण किं अज्झाइउं जाइ?, तुमं किं न जाणसि?, ताहे सो भणइ—खमासमणेहिं अहं भद्दगुत्तेहिं थेरेहिं भणितो बाहिं ठाएज्जासि, ते उवउत्ता जाणंति–सुंदरं, न निक्कारणे आयरिया भणंति, अच्छह, ताहे अज्झाइउं पवत्तो, अचिरेण नव पुव्वाणि अधिताणि, दसममाढत्तो घेत्तुं, ताथे अज्जवइरा भणंति—जवियाइं करेहि, एयं परिकम्ममेयस्स, ताणि य सुहुमाणि, गाढं गणिते तं सुहुमं, चउवीसं जविया, सोवि ताव तं अज्झाइ।

इतो य मायापियरं सोगेण गहियं, उज्जोयं करिस्सामित्ति अंधकारतरं कयं, ताहे ताणि अप्पाहिंति, फग्गुरक्खिओ य पट्ठविओ, डहरओ भाया, जइ वच्चह तो सव्वाणि पव्वयंति, ताहे भणइ-जइ ताणि पव्वयंति तो तुमं चेव पव्वयाहि, सो पव्वइओ, अज्झातितो य, सो य जवितेसु अतीव घोलितो, ताथे पुच्छइ–दसमस्स पुव्वस्स किं गयं? किं सेसं ?, तत्थ बिंदुसमुद्दसरिसवमंदरेहिं दिट्ठंतं करेंति, बिंदुमेत्तं गतं समुद्दो अच्छति, ताहे सो विसायमावन्नो–कत्तो मम (सत्ती) एतस्स पारं गंतुं?, ताहे सो आपुच्छति-अहं वच्चामि, एस मम भाता आगतो, ताहे भणंति–अज्झाहि ताव, एवं सो निच्चमेव आपुच्छति, तत्थ अज्जवइरा उवउत्ता—किं ममातो चेव एवं वोच्छिज्जं गतं, ताहे नातं-विसज्जितो पुणो ण एस्सति एसो, आउं च थोवमप्पणो णाऊण विसज्जितो। सोऽवि ताव दसपुरं गतो, पव्वावेति सिक्खावेति य सन्नायगा सव्वे माया पिता य, सोवि ताव विहरति।

इतो य वइरसामी दक्खिणावहे विहरति, दुब्भिक्खं च जायं बारसवरिसगं, सव्वतो समंता छिन्ना पंथा, निराधारं जातं, ताहे वइरसामी विज्जाए आहडं पिंडं तद्दिवसं आणेति, पच्छा तं सव्वेसिं पव्वइगाणं दाएति, एतं बारसवरिसे भोत्तव्वं, अन्नं भिक्खं

॥४०४॥

णत्थि, जदि जाणह उस्सरंति संजमगुणा तो भुज्जतु, अह जाणह नवि तो भत्तं पच्चक्खामो, ताहे ते भणंति–किं एरिसण विज्जापिंडेण भुत्तेण ?, एवं निच्छितववसाया, आयरिएहि य पुव्वामेव णाऊण एगो पव्वइयतो य पत्थवियो पेसवणं वइरसेणो णामेण सो भणिततो–जाहे तुमं सतसहस्सनिप्फण्णं भिक्खं लभिहिसि ताहे जाणेज्जाहिसि जहा नट्ठं दुभिक्खंति, इमे य निच्छियववसाया, तत्थ य एगो खुड्डओ तं भणंति-तुमं नियत्त, सो णेच्छति, ताहे सो गामे विभोलिज्जति ताव पव्वइयगा तं गिरिं विलग्गा, आयरिया जाणंति—जहा खुड्डओ आराहओ, चित्तरक्खणट्ठा लोगस्स, सो य सव्वं जाणति, ताहे सो ताणं गतमग्गेण आगंतूण मा तेसिं असमाही होहितित्ति तस्सेव हेट्ठे सिला तत्थ खुड्डओ पाओवगओ, सो तेण उण्हेण णवणीओ जहा विराओ, अचिरकालेण वि कालगतो, देवेहि य महिमा कता, ताहे आयरिया भणंति—खुड्डएण अड्ढो साहितो, तत्थ ते साधुणो दुगुणाणियसद्धासंवेगा जाता, जदि ताव बालेण होन्तएणं एवं कतं ता अम्हे कीस ण सुंदरं करेमो?, तत्थ य देवता पडिणीया, सा ते साधुणो साविगारूवेण भत्तपाणेण निमंतेति-अज्ज मे पारणयं करेह, ताहे आयरिएहिं नातं जहा अचित्तोग्गहोत्ति, तत्थ यब्भासे अण्णो गिरी, तं गता, तत्थ ताहे देवताए काउस्सग्गो कतो, साधि अब्भुट्ठिता, अणुग्गहोत्ति अणुण्णातं, ताहे समाहीए विहिए कालगता, ताहे इंदेण रहेण वंदिता पदाहिणीकरेंतेणं, तत्थ रहावत्तो च्चेव सो य पव्वतो जातो, तंमि य भगवंते अद्धणारायं दस य पुव्वा वोच्छिण्णा, बीओ आदेसो-वइरसामीणं सिंभो जातो, पच्छा ताहे भणितं—जहा ममं सुंठिं आणेह, आणीता, तेहिं कण्णे ठविता, जेमेत्ता खाइस्संति, तं च पम्हुट्ठं, ताहे वियाले आवस्सयं करेंतस्स गुरुपोत्तियाए चालितं, पडितं, ता से उवयोगो जातो, अहो पमत्तो जातो, पमत्तस्स य णत्थि संजमो, तं सेयं खलु मम भत्तं पच्चक्खाइत्तए, एवं संपेहेत्ता पच्चक्खातं, कालगता ।

सो य साधू पेसणेणं पेसियल्लओ भमंतो पत्तो सोपारगं, तत्थ य साविया आगता, सा ईसरी, सा य चिंतेति-किह जीवीहामो?, पडिक्कओ णत्थि, ताए तद्दिवसं सतसहस्सेणं भत्तं निप्फादितं णत्थि पडिक्कउत्तिकाऊणं, मा य अम्हे सव्वं कालं उज्जलं जीविता एत्ताहे एत्थ चेव देहबलिगाहिं विंत्ति कप्पेमोत्ति, एत्थ सतसहस्साणिप्फण्णे विसं छोढूणं जेमामो तो सणमोक्काराणि कालं करेहामो, ताए सज्जितं ता, णवि ता विसेण संजोइज्जइ, एवं च सा संपेहेत्ता अच्छति,सो य साधू हिंडंतो तत्थ संपत्तो, ताहे सा हट्ठतुट्ठा तं पडिलाभेति, एवं च सव्वं परमत्थं साहति, ताहे सो साधू भणति-मा भत्तं पच्चक्खाह, महं वइरस्सामिणा सिट्ठं-जया तुमं सतसहस्साणिप्फण्णाओ भोयणाओ भिक्खं लभिहिसि ततो पाए चेव सुभिक्खं भविस्सतित्ति, ताहे पव्वइस्सह, ताहे सा वारिता । इओ य वहणेण तद्दिवसं चेव तंदुला आणीया, ताहे पडिक्कओ जातो, एवं सोऽवि ताव जीविओ, ताणि य तस्स साधुस्स अंतियं पव्वयियाणि । ततो वइरसामिस्स पउप्पयं जातं वंसो य वड्ढितो ॥ इतो य अज्जरक्खिएहिं आगंतूणं सव्वो सयणवग्गो पव्वाविओ, माता पिता भाता भगिणी, जो सो तस्स खंतओ सोऽवि तेसिं अणुरागेणं तेहिं चेव समं अच्छति, न पुण लिंगं गेण्हति लज्जाए, किह समणओ पव्वइस्सं?, एत्थ मम धूताओ सुण्हाओ पव्वावियाओ, तासिं पुरओ न तराति नग्गो अच्छितुं, एवं सो तत्थ अच्छति, बहुसो आयरिया भणंति, ताहे सो भणति—जदि ममं जुवलएणं कुंडियाए छत्तएणं उवाहणाहिं जण्णोवइएण य समं तो पव्वयामि, पव्वइतो, सो पुण चरणकरणसज्झायं अणुयत्तंतेहिं गेण्हावितव्वो, ताहे ते भणंति—अच्छह तुब्भे कडिपट्टएणं, सोवि थेरो भणंति—छत्तएण विणा ण तरामि, ताहे भणंति–अच्छउ छत्तयंपि, करगेण विणा दुक्खं उच्चारपासवणं वोसिरितुं, बंभसुत्तगंपि अच्छउत्ति अवसेसं सव्वं परिहरति । अण्णदा चेतियवंदणयाए गता, आयरिया चेडरूवाणि गाहेंति, भणह--सव्वे वंदामो एतं

॥४०६॥

छत्तइल्लं मोत्तुं, एवं भणिओ, ताहे सो जाणति—इमे मम पुत्ता णत्तुया य वंदिज्जंति, अहं कीस ण वंदिज्जामि?, ताहे भणति—किं नाहं पव्वइउत्ति?, ताणि भणंति-कओ पव्वइतगाण छत्तगाणि भवंति?, ताहे सो जाणति-एताणीवि मम पडिच्चोएंति, दे छड्डेमि, ताहे पुत्ता भणंति—अलाहि पुत्ता! छत्तगेणं, ताहे ते भणंति-अलाहि, जाहे उण्हं होहिति ताहे कप्पा उवरिं कीरिहिति, एवं ताणि मोत्तुं करइल्लं, तत्थ से पुत्तो भणति—मत्तएण चेव सण्णाभूमिं वा गंमति, एवं जण्णोवतियंपि मुयति, ताहे आयरिया भणंति—को वा अम्हे ण जाणति जहा बंभणा ?, एवं तेण ताणि मुक्काणि, पच्छा ताणि पुणो भणंति-सव्वे वंदामो मोत्तूण कडिपट्टइल्लं, ताहे सो रुट्ठो भणति--सह अज्जयपज्जयएहिं मा वंदह, अण्णे वंदेहिंति मम, एतं कडिपट्टयं न छड्डेमि, तत्थ य साधू भत्तपच्चक्खायओ, ताहे तस्स निमित्तं कडिपट्टयवोसिरणट्ठताए आयरिया वण्णेंति-एतं महाफलं भवति जो साहुं वहति, तत्थ य पढमं पव्वइया भणिएल्लया-उब्भे भणेज्जह अम्हे एतं वहामो. एवं ते उट्ठेंति, तत्थ य आयरिया भणंति--अम्हं सयणवग्गो मा णिज्जरं पावतु ?, तो तुब्भे चेव सव्वे भणह अम्हे चेव वहामो, ताहे सो थेरो भणति-किं पुत्ता ! एत्थ बहुतरिया निज्जरा ?, आयरिया भणंति-बाढं, किं एत्थ भाणितव्वं ?, ताहे सो भणति-तो खाइ अहंपि वहामि, आयरिया भणंति-एत्थ उवसग्गा उप्पज्जंति चेडरूवाणि णग्गेन्ति, जदि तरसि अहियासितुं तो वहाहि, अह णाहियासेसि ताहे अम्हं न सुंदरं भवति, एवं सो थिरो कतो, जाहे सो उक्खित्तो साधू मग्गतो पव्वइयाउ ठिताओ ताहे खुड्डगा भणिता-एत्ताहे कडिपट्टयं मुएह, ताहे सो मोत्तुं आरद्धो, ताहे अण्णेहिं भणितो-मा मुंचत्ति, तत्थ से अण्णेण कडिपट्टओ पुरतो कातूण दोरेण बद्धो, ताहे सो लज्जिओ तं वहति, मग्गओ मम पेच्छंति सुण्हाओ नत्तुइओ य, एवं तेणवि उवसग्गो उट्ठिओत्तिकातूण वूढं, पच्छा आगतो तहेव, ताहे आयरिया भणंति-किं अज्ज खंत !

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

इमं ?, ताहे सो भणति-साहासियज्जे (अहियासियव्वे) पुत्त ! उवसग्गो उट्ठितो, आणेह साडयं, ताहे भणति-किं साडएणं ? जं दट्ठव्वं तं दट्ठं, चोलपट्टओ चेव मे भवतु, एवं ता सो चोलपट्टयं गेण्हाविओ ।

पच्छा भिक्खं न हिंडति, ताहे आयरिया चिंतेंति--जदि एस भिक्खं न हिंडति तो को जाणति कदाति किंचि भवति ?, पच्छा एकल्लओ किं काहिति?, अविय-एसो निज्जरं पावेतव्वो, तम्हा (तहा) कीरतु जहा एसो हिंडति, एवं च आयवेयावच्चं से, पच्छा परवेतावच्चंपि काहिति, एवं चिंतेत्ता आयरिया ते सव्वे अप्पसारियं आभणितूण गता, जहा सव्वे आगता एकल्लया समुद्दिसह, पुरतो य खन्तस्स भणंति--खन्तस्स वट्टेज्जाह, अहं वच्चामि गामं, एवं गता आयरिया, तेऽवि आगता समाणा सव्वे एकल्लया समुद्दिसंति, सो चिंतेंति--ममं एस दाहिति, एसो दाहिति, एक्कोवि तस्स न देति, अण्णो दाहिति, एस वराओ किं लभति ?, अण्णो दाहिति, एवं तस्स न केणति किंचिवि दिण्णं, ताहे आसुरुत्तो न किंचि आलवति, चिंतेति-कल्लं ता एतु मे पुत्तो तो णं पावेमि जं केणति (ण) पाविता, ताहे बितियदिवसे आगता आयरिया, ताहे ते भणंति--खंता! किह वट्टियं भे ?, ताहे सो भणति-जदि तुमं पुत्ता! न होंतो तो हं एक्कंपि दिवसं न जीवंतो, एते य जे अण्णे मम पुत्ता नत्तुगा य एतेऽवि न किंचि देंति, ताहे आयरिएण समक्खं ते खिंसिता, तेवि य अब्भुवगता, आयरिया भणंति-आणेह, अहं अप्पणावि जामि, खंतस्स पारणयं आणेमि, ताहे सो खंतो भणति--किह मम पुत्तो हिंडिहिती ?, प्रकृष्टो न कदाति हिंडियपुव्वो, अहं चेव हिंडामि, ताहे सो खंतो अप्पणा णिग्गतो, सो य पुण लद्धिसंपण्णो चिरावि गिहत्थत्तणे, सो य अहिंडतो न जानति कत्तो दारं वऽवदारं वा ?, ताहे सो एगं घरं अवदारेण अतिगतो, तत्थ य अण्णदिवसं पगतं वत्तल्लयं, तत्थ घरसामिणा भणिता--कत्तो पव्वइतओ अतिगतो ?, घरस्स किं

दारं नत्थि ?, कीस अवदारेण अतीसि ?, ताहे तेण तत्थुप्पण्णं चेव भणितं--सिरीअ एंतीए किं दारं अवदारं वा ?, जत्तो अतीति तत्तो सुंदरा, ताहे तेहिं भणितं-- देह से भिक्खं, तत्थ लड्डुगा बत्तीसं लद्धा, सो ते घेत्तूण आगतो, आलोयेयं तेण, पच्छा आयरिया भणंति-तुज्झं बत्तीसं सीसा होहिंति परंपरएण आवलिया ठावया, ताहे आयरिया भणंति-जा तुब्भे पुव्वं राउला लद्धा किंचिअतिसेसं ताहे कस्स देह ?, तेण भणितं-बंभणाणं, एवं चेव अम्हं साधुणो पूयणिज्जा, एतेसिं एस पढमलाभो दिज्जउ, एवं होतुत्ति तं सव्वं साहूण दिण्णं, ताहे पुणो अप्पणो अट्ठाए उत्तिण्णो, पच्छाऽणेणं परमण्णं घतमहुसंजुत्तं आणितं, पच्छा सयं समुद्दिट्ठो, एवं सो अप्पणा चेव पट्ठितो लद्धिसंपण्णो बहूणं बालदुब्बलाणं आधारो जातो । एवं तस्सण्णायगपव्वज्जा ।

तत्थ य गच्छे तिण्णि पूसमित्ता–एगो दुब्बलियपूसमित्तो एगो घयपूसमित्तो एगो पोत्तपूसमित्तो, जो दुब्बलिओ सो भरओ, एगो घतं उप्पायेति एगो पोत्ताणि, तस्स घतपूसमित्तस्स इमा लद्धी-दव्वतो घतं उप्पाएतव्वं, खेत्तओ जहा उज्जेणीए, कालतो जेट्ठासाढकाले, भावतो धिज्जातिणी तीसे भत्तुणा दिवसे २ छहिं मासेहिं पसविहित्ति पिंडिओ वारतु घतस्स विताताए उवयुज्जिताति, सा य कल्ले वा परे वा वियाहितित्तिकाऊणं, तेण य जातितं, अण्णं णत्थि, तहवि पिंडितं सा हट्ठतुट्ठमाणसा देज्जा, परिमाणं तु जत्तियं गच्छस्स उवयुज्जति, सो य नितो चेव पुच्छति-कस्स केत्तिएण घएण कज्जं ?, पोत्तपूसमित्तस्स एमेव सत्ता, दव्वादि, दव्वओ वत्थं खेत्तओ वइद्धदेसे महुराए वा, कालओ वासासु सीतकाले वा, भावतो जहा काइ रंडा तीसे केणति उवाएण बहूहिं दुक्खेहिं छुहाए य मरंतीए कत्तिऊणं एगा पोत्ती वुणावेत्ता कल्लं नियंसेहामित्ति, एत्थंतरा पोत्तिपूसमित्तेण जातितं, सा हट्ठतुट्ठा देज्जा, परिमाणओ सव्वस्स गच्छस्स उप्पाएज्जा ।

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

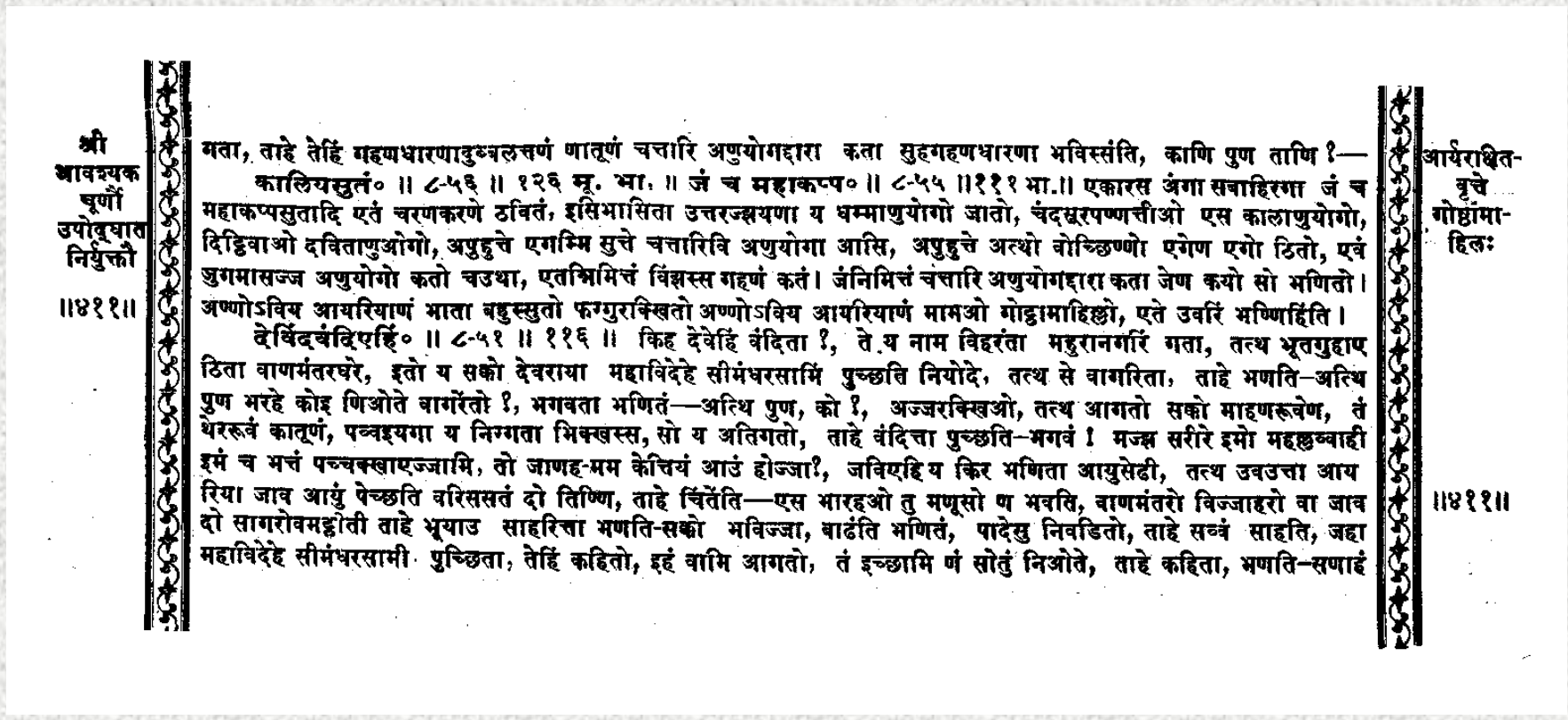
एस दोण्हं जो दुब्बलियपूसमित्तो तेण णव पुव्वाणि गहितेल्लगाणि, सो ताणि रत्तिं च दिवसं झरति, एवं सो झरणाए दुब्बलो जातो, जदि सो न झरेज्जा ताहे तस्स सव्वं चेव पम्हुसेज्जा, तस्स पुण दसपुरे चेव नीयल्लगाणि, ताणि पुण रत्तवडो-वासगाणि आयरियाणं पासे अल्लियंति, तत्थ ताणि भणंति—अम्हं भिक्खुणो झाणपरा, तुज्झं झाणं णत्थि, आयरिया भणंति-अम्हं चेव झाणं, तेसिं कुतो झाणं?, एस तुब्भं जो नियल्लओ दुब्बलियपूसमित्तो एस झाणेण चेव दुब्बलो, ताणि भणंति-एस गिहत्थत्तणे निद्धाहारेहिं बलिओ, इदाणिं णत्थि, तेण दुब्बलो, आयरिया भणंति—एस नेहेण विणा न कदाति जेमेति, ताणि भणंति—कतो तुब्भं णेहो?, घतपुस्समित्तो आणेति, ताणि न पत्तियंति, ताहे भणिताणि—एस तुब्भं घरे किं आहारेताइओ ?, ताणि भणंति—निद्धपेसला आहारेताइओ, तेसिं संबोधिं णातुं ताण घरं विसज्जिओ, एत्ताहे देह तं, ताणि तहेव दातुं पवत्ताणि, सोवि झरति, तंपि णज्जति छारे छुब्भति, ताणि गाढतरं देंति, एवं निव्विण्णा, ताहे आवादियाणि, किह?, सो भणितो—मा णिद्धं आहारेहि, मा य चिंतेहि, ताहे सो पुणोऽवि पोराणसरीरो जातो, ताहे ताण उवगतं, ताहे तेसिं धम्मो कहितो, सावगाणि जाताणि।

तत्थ य गच्छे इमे चत्तारि जणा-सो चेव दुब्बलो१ विन्झो२ फग्गुरक्खितो३ गोट्ठामाहिल्लोत्ति४। जो सो विंझो सो अतीव मेहावी सुत्तत्थतदुभयाणं गहणधारणसमत्थो, सो पुण ताव महल्लाए मंडलीए विसूरति, ताहे सो आयरिए भणति-अहं विसूरामि, न सक्का मंडलीं वोलेत्ता, तो मम संदिसह, आयरिया भणंति-आमं अज्जो!, ताहे तस्स दुब्बलिओ दिण्णो वायणायरिओ, कतिवि दिणे उवट्ठितो मम नासति, जं च सन्नायतघरे णाणुपेहितं तं च संकितं जातं, तो मम अलाहि, जदि अहं एतस्स वायणं दाहामि तो मम नवमं पुव्वं पम्हुसिहिति, ताहे आयरिया चिंतेंति—जति ताव एतस्स परममेहाविस्स एवं झरंतस्स णासति अन्नस्स नट्ठेल्लयं चेव, एवं ते उवओगं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४११॥

गता, ताहे तेहिं गहणधारणादुब्बलत्तणं णातूणं चत्तारि अणुयोगद्दारा कता सुहगहणधारणा भविस्संति, काणि पुण ताणि ?— कालियसुतं० ॥ ८-५६ ॥ १२६ मू. भा. ॥ जं च महाकप्प० ॥ ८-५५ ॥१११ भा.॥ एकारस अंगा सचाहिरगा जं च महाकप्पसुतादि एतं चरणकरणे ठवितं, इसिभासिता उत्तरज्झयणा य धम्माणुयोगो जातो, चंदसूरपण्णत्तीओ एस कालाणुयोगो, दिट्ठिवाओ दवियाणुओगो, अपुहुत्ते एगम्मि सुत्ते चत्तारिवि अणुयोगा आसि, अपुहुत्ते अत्थो वोच्छिण्णो एगेण एगो ठितो, एवं सुगमासज्ज अणुयोगो कतो चउत्था, एतन्निमित्तं विज्जस्स गहणं कतं। जंनिमित्तं चत्तारि अणुयोगद्दारा कता जेण कयो सो भणितो। अण्णोऽवि आयरियाणं भाता बहुस्सुतो फग्गुरक्खितो अण्णोऽवि आयरियाणं मामओ गोट्ठामाहिल्लो, एते उवरिं भण्णिहिंति।

देविंदवंदिएहिं० ॥ ८-५१ ॥ ११६ ॥ किह देवेहिं वंदिता ?, ते य नाम विहरंता महुरानगरिं गता, तत्थ भूतगुहाए ठिता वाणमंतरघरे, इतो य सक्को देवराया महाविदेहे सीमंधरसामिं पुच्छति नियोदे, तत्थ से वागरिता, ताहे भणति—अत्थि पुण भरहे कोइ णिओते वागरेंतो ?, भगवता भणितं—अत्थि पुण, को ?, अज्जरक्खिओ, तत्थ आगतो सक्को माहणरूवेण, तं थेररूवं कातूणं, पव्वइयगा य निग्गता भिक्खस्स, सो य अतिगतो, ताहे वंदित्ता पुच्छति—भगवं ! मज्झ सरीरे इमो महल्लव्वाही इमं च भत्तं पच्चक्खाएज्जामि, तो जाणह-मम केत्तियं आउं होज्जा?, जविएहि य किर भणिता आयुसेढी, तत्थ उवउत्ता आयरिया जाव आयुं पेच्छति वरिससतं दो तिण्णि, ताहे चिंतेंति—एस भारहओ तु मणूसो ण भवति, वाणमंतरो विज्जाहरो वा जाव दो सागरोवमट्ठिती ताहे भूयाउ साहरित्ता भणति-सक्को भविज्जा, वाढंति भणितं, पादेसु निवडितो, ताहे सव्वं साहति, जहा महाविदेहे सीमंधरसामी पुच्छिता, तेहिं कहितो, इहं वामि आगतो, तं इच्छामि णं सोतुं निओते, ताहे कहिता, भणति—सणाहं

आर्यरक्षित-वृत्ते गोष्ठामाहिलः

॥४११॥

***यत् अत्र 'चूर्णि' संपादने "जं च महाकप्प" गाथा, भाष्य-गाथा रूपेण निर्दिष्टा, सा गाथा: वृत्तिकारेण निर्युक्ति-गाथा ७७७ रूपेणा निर्दिष्टा:

***निह्नव (गोष्ठा माहिल) वृतांत आरभ्यते

भरहन्ति, इदाणिं वच्चामि, भणंति आयरिया--अच्छह ताव मुहुत्तगं जाव संजता एन्ति, सो भणति-वच्चामि, आयरिया भणंति-एत्ताहे दुक्खा संजाता, जा थिरा भवंतु जे चला जहा एत्ताहेवि देविंदा एन्ति, ताहे सो भणति--जदि ते ममं पेच्छंति तेण चेवऽप्पसत्तेण निदाणं वा काहिंति, तेण वच्चामि, किंच चिंधं कातूणं वच्च, ताहे दिव्वा गंधादी पकिण्णा, पडिस्सयं च अण्णओमुहं कातूण गतो, ताहे आगता संजता, ते पुंच्छंति--कहिं एतस्स दारं ?, आयरिएहिं वाहिता-इतो एहत्ति, सिट्ठं च जहा सको आगतो, ते भणंति--अहो अम्हेहिं न दिट्ठो ?, कीस मुहुत्तं न धारिओ ?, तं चेव साहंति जहा अप्पिड्ढिया मणुया माणियाणं काहिंति, पाडिहेरं कातूण गतोत्ति । एवं ते देविंदवंदिया भण्णंति ।

ते अण्णदा विहरंता दसपुरं गता, मथुराए य अकिरियवादी उट्ठिओ, जथा--नत्थि माता नत्थि पिता एवमादिणाहीयवादी, तत्थ संघसमवाओ कओ, तत्थ पुण वादी णत्थि, ताहे इमेसिं पयट्ठियं इमे य जुगप्पधाणा, ताहे आगता, तेसिं साहंति, ते य महप्पा, ताहे तेहिं गोट्ठामाहिलो पयट्ठितो, तस्स य वादलद्धी अत्थि, सो गतो, तेण सो वादे पराजिओ, सोवि ताव तत्थ सड्ढेहिं रुद्धो वरिसारत्ते ठिओ अच्छति ।

इतो य आयरिया समिक्खंति-को गणहरो भवेज्जा?, ताहे दुब्बलियपुस्समित्तो समिक्खितो, जो पुण तेसिं सयणवग्गे सो बहुओ,(तस्स)गोट्ठामाहिलो फग्गुरक्खितो वा अणुमतो, गोट्ठामाहिलो आयरियाण मातुलओ, तत्थ आयरिया सव्वे सद्दावेत्ता दिट्ठंतं करेंति, जहा तिण्णि कुडा-निप्फावकुडे तेल्ल० घतकुडो, ते पुण सव्वे हेट्ठाहुत्ता कता निप्फावा सव्वे णिंति, तेल्लभविणीति, तत्थ पुण अवयवा लग्गंति, घतकुडेहिं बहु चेव लग्गति, एवमेव अहं अज्जो ! दुब्बलियपूसमित्तं प्रति सुत्तत्थतदुभयेसु निप्फावकुडसमाणो

॥४१२॥

जाओ, फग्गुरक्खितं प्रति तेल्लकुडसमाणो, गोट्ठामाहिलं प्रति घयकुडसमाणो, एवं एस सुत्तेण य अत्थेण य उववेतो, एस तुब्भं आयरिओ भवतु, तेहिं सव्वं पडिच्छितं, इतरोऽवि भणितो—जहाऽहं वट्टिओ फग्गुरक्खितस्स गोट्ठामाहिल्लस्स य तथा तुमे वट्टितव्वं, ताणिवि भणिताणि-जहा तुब्भं मम वट्टिताइं तहा एतस्सवि वट्टेज्जाह, अविय-अहं कते वा अकए वा ण रूसामि, एस न खमिहिति, एवं दोऽवि वग्गे अप्पाहेत्ता भत्तं पच्चक्खातं, कालगता, दियलोगं गता। इतरेणवि सुतं जहा आयरिया कालगता, ताहे आगतो पुच्छति गोट्ठामाहिल्लो-को गणहरो ठवितो ?, कुडगदिट्ठंतो य सुतो, ताहे वीसुं पडिस्सए ठाइतूण पच्छा आगतो, ताहे तेहिं सव्वेहिं अब्भुट्ठितो, इह चेव ठायह, ताहे णेच्छति, सोऽवि बाहिं ठितो अण्णाणि उग्गाहेति, ताणि ण सक्कंति।

इतो य आयरिया अत्थपोरिसिं करेंति, सो ण सुणति, भणति- तुब्भत्थ निप्फावकुडा कहेह, तहेव तेसु उट्ठितेसु विंझो अणुभासति, अट्ठमे कम्मप्पवादपुव्वे कम्मं वण्णिज्जति, किह कम्मं अच्छति?, जीवस्स कम्मस्स य कहं बंधो ?, तत्थ ते भणंति-बद्धं पुट्ठं निकातियं, बद्धं जहा सूतिकलावओ, पुट्ठं जहा घणनिरंतराओ कताओ, निकाइतं जथा तावेतूण पिट्टिताओ, एवं कम्मं रागदोसेहिं जीवो पढमं बंधति, पच्छा तं परिणामं अमुंचंतो पुट्ठं करेति, तेणेव संकिलिट्ठं परिणामं अमुंचंतो किंचि निकाएति, निकाइतं निरुवक्कमं उदए, णवरि अण्णहा तं नवि वेतिज्जति, ताहे सो गोट्ठामाहिलो वारेति, एत्तिए ण भवंति, अण्णदावि अम्हेहिं सुतं, जदि एत्तिए कम्मं बद्धपुट्ठनिकातितं एवं मे मोक्खो न भविस्सति, कह खातिं बज्झति ?, भणति—सुणह—

पुट्ठो जथा अबद्धो कंचु० ॥ ९--९ ॥ १४३ मू. भा। जथा सो कंचुओ तं कंचुइणं पुरिसं फुसति, ण पुण सो

कंचुओ सरीरेण समं बद्धो, एवं चेव कम्मंपि पुट्ठं, ण पुण बद्धं जीवपदेसेहिं समं, जस्स य बद्धं तस्स कम्मस्स संसारवोच्छित्ती न भविस्सति, ताहे सो भणति–अम्हं आयरिएहिं एत्तियं भणितं, एसो न याणति, ताहे सो संकितो समाणो पुच्छितुं गतो, मा मए अण्णथा गहितं भवेज्जा, ताहे पुच्छिया आयरिया, ते भणंति–अम्ह न होति एयंति, जस्स पुण अबद्धं कम्मं तस्स इमे दोसातो-संसारो नत्थि, वेदणा वा, जहा आगासगता पल्लवा ते ण बाहिज्जति एवं तस्स कम्मंपि, जदि देवलोकं वच्चति ताहे छड्डेतुं वच्चति, उड्ढंगामी जीवा अहोगामी पोग्गला इति तस्स संसारो चेव न होहिति, एवं जीवसरीराणवि अबाहेण भवितव्वं, जथा कंचुए छिज्जंते तस्स बाधा नत्थि, एवमाइया दोषाः, जं पुण अम्ह पक्खे मोक्खाभावेत्ति भणितं तं न भवति, जतो असंखेज्ज-कालाओ उप्पिं कम्मस्स ठिती चेव णत्थि, तो ठिते णेहक्खयातो मोक्खोऽवि भवति, जथा-परमाणुपोग्गलाणं जथा तहाखंधत्त-परिताणं ठितिणेहक्खयातो वियोगो भवतित्ति, तेणं गंतूण सिट्ठं, एत्तिए भणितं आयरिएहिं, एवं पुणरवि सो संलीणो अच्छति, समप्पतु ता तो खोभेहामि ।

अण्णया नवमे पुव्वे पच्चक्खाणे साधूणं जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण पाणातिवायं एवं पच्चक्खाणं वण्णिज्जति, ताहे सो भणति-अवसिद्धंतो, न होति एवं, कहं पुण कातव्वं?, सव्वं पच्चक्खामि पाणातिवातं अपरिमाणाए तिविहं तिविहेणं एवं सव्वं, आयक-हितं किंनिमित्तं परिमाणं ण कीरति ?, जो सो आसंसादोसो नियत्तिओ भवति, जावज्जीवाए पुण भणंतेणं परेण अब्भुवगतं भवति, जहा हंत्थामि पाणेत्ति, एतंनिमित्तं अपरिमाणाए कातव्वं, ताहे विंझो भणति–ण होति एत्तिए, जं च तस्स अवसेसं नव-मस्स पुव्वस्स तं सम्मत्तं । ताहे सो भणति–अण्णहा आयरिएहिं भणितं, तुमं अण्णहा पण्णवेसित्ति, ताहे सो भणति-एत्तिए भणितं

आयरिएहिं, आसंसा पुण एवं न भवति,जतो न मता आसेविस्सामोत्ति परिमाणं करेंति, किं तु मा जत्थ वा तत्थ वा वयपरिच्चाग-परिणामो भविस्सति, मताणं च देवभावादो अवस्संभावी पच्चक्खाणाभावो, अपरिमाणे इयकरणे तत्थासेवणे किंनु भवतुत्ति ? जावज्जीवाए भणंतित्ति । ते य सव्वे भणंति-जहा एत्तिएण भणितं आयरिएहिंति, जेऽवि अण्णे थेरा बहुस्सुता अण्णगच्छेल्लया तेऽवि पुच्छिया एत्तिए चेव भणंति, ताहे भणति-तुब्भे किं जाणह ?, तित्थकरेहिं एत्तिए भणितं, तेहिं भणितं-तुमं न जाणासि, जाहे न ठंति, ताहे संघ समाओ कओ, देवताए य काउस्सग्गो कतो, जा भद्दिया सा आगता भणेति-संदिसहत्ति, ताहे भणिता-वच्च, तित्थयरं पुच्छ-किं जं गोट्ठामाहिल्लो भणति तं सच्चं? जं दुब्बलियप्पमुहो संघो भणति तं सच्चं?, ताहे सा भणति-अणुयलं देह, काउस्सग्गो दिण्णो, ताहे सा गता, तित्थगरो पुच्छितो, तेहिं वागरितं, जहा-संघो सम्मावादी, इतरो मिच्छावादी, निण्हओ एस सत्तमो, ताहे आगताए भणितं, उस्सारेह, संघो सम्मावादी, एस मिच्छावादी, निण्हओ य सत्तमो, ताहे सो भणइ-एस अप्पिड्ढिया वराई, का एताए सत्ती गंतूण ?, तीसेवि न सद्दहति, ताहे पूसमित्ता गमेन्ति, जथा-अज्जो ! पडिवज्ज, मा उग्घाडिज्जिहिसि, णेच्छति, ताहे सो संघेण बज्झो कतो बारसविहेणं संभोएण, तंजहा-उवहि १ सुत २ भत्तपाणे ३, अंजलीपग्गहे इय ४ । दायणा ५ य निकाए ६ य, अब्भुट्ठाणेत्ति आयरे ७ ॥ १ कितिकम्मस्स य करणे ८ वेयावच्चकरणे इय ९ । समोसरण १० सण्णिसेज्जा ११, कहाए य निमंतणे १२ ॥ २ ॥ एस बारसविहो सउत्तरभेदो जहा पंचकप्पे, सत्तमो निण्हउत्ति, एवं अणालोइयपडिक्कंतो कालगतो, एस सत्तमो निण्हओ । एतेण भणितेण अवसेसा सूइता ते पट्ठमेल्लुगे, ण जाणामो ते, तेण सुणिउमिच्छामो, तत्थ इमं निण्हगा—

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

बहुरयपदेसअव्वत्त० । ८-५६ ॥ ७१८ ॥ बहुरताणं किह उप्पत्ति ?, तेणं कालेणं० कुंडपुरं नगरं, तस्स सामिस्स जेट्ठा भगिणी सुदंसणा नाम, तीए पुत्तो जमाली, सो सामिस्स मूले पव्वइतो पंचहिं सतेहिं समं, तस्स य भज्जा सामिणो धूता अणोज्जंगी नाम, बीयं नामं से पियदंसणा, सावि तमणुपव्वतिया ससहस्सपरिवारा, जहा पण्णत्तीए तहा भाणितव्वं, एक्कारस अंगा अधीता, सामिणा अणणुण्णातो सावत्थिं गतो पंचसतपरिवारो, तत्थ तेंदुगुज्जाणे कोट्ठगे चेतिते समोसढो, तत्थ से अन्तपन्तेहिं रोगो उप्पण्णो, न तरीत तिट्ठेतुं अच्छितुं, ताहे सो समणे भणति-मम सेज्जासंथारगं करेह, ते कातुमारद्धा, पुणो अधरो भणति-कतो ? कज्जति ?, ते भणंति-न कतो, अज्जावि कज्जति, ताहे तस्स चिंता जाता-जण्णं समणे भगवं० आइक्खति 'चलमाणे चलिते उदिरिज्जमाणे उदीरिए जाव निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे' तण्णं मिच्छा, इमं णं पच्चक्खमेव दीसति सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे संथारेज्जमाणे असंथारिए, तम्हा णं चलमाणेऽवि अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणेऽवि अणिज्जिण्णे, एवं संपेहेति२ निग्गंथे सद्दाविति सद्दावेत्ता एवं वयासी-जण्णं समणे०महावीरे एवमाइक्खति चलमाणे चलिते जाव तण्णं मिच्छा, इमं णं पच्चक्खमेव दीसति जाव तम्हा णं अणिज्जिण्णे, ततेणं जमालिस्स एवं आइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स अत्थेगतिया णिग्गंथा एतमत्थं सद्दहंति, अत्थेगतिया णो सद्दहंति, जे ते सद्दहंति ते णं जमालिं चेव अणगारं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, जे ते णो सद्दहंति ते णं एवमाहंसु, जण्णं सामी आइक्खति तण्णं तह चेव, जं णं तुमं वयसि तं णं मिच्छा, कहं ?, 'चलमाणे चलिते' इत्यत्र चलितमिति स्थितिश्चयाद् यदुदितं तच्चलितमित्युच्यते, उदितं तु विपाकाभिमुखीभूतं, तच्चैवं चलत्कर्म उदयावलिकाले चलति, तस्य कालस्य असंख्येयसमयत्वात्, आदिमध्यान्तवच्च, कर्मपुद्गलानामपि अनन्ताः स्कन्धाः अनंताः प्रदेशाः क्रमेण पइसमयमेव

॥४१६॥

अत्र 'जमाली' प्रथम-निह्नवस्य कथानकं आरभ्यते

चलन्ति, तत्र योऽसावाद्यश्चलनसमयस्तस्मिंस्तच्चलदेव चलितं, कथं पुनस्तद्वर्तमानं सदतीतं भवति ?, तत्र दृष्टांतः-यथा पटः उत्पत्तिकाले प्रथमतंतुप्रवेशे उत्पद्यमान एवोत्पन्नो भवति, उत्पद्यमानत्वं तु यतस्तस्मात्कालात्प्रभृतिः,तस्यायं व्यपदेशो दृष्टः-उत्पद्य पट इति, तत्रोपपत्तिः-उत्पत्तिक्रियादिकाल एव प्रथमतंतुप्रवेशे तदुत्पन्नं, यदि हि तदा नोत्पन्नं स्यात् अतस्तस्याः क्रियाया वैयर्थ्यं स्यान्निष्फलत्वात्, उत्पाद्योत्पादनार्था हि यतः क्रिया भवति, यथा च तस्मिन् क्षणे तन्नोत्पन्नं तथोत्तरेष्वपि क्षणेषु नैव तस्योत्पत्तिः स्यात्, को हि तासामुत्तरासां च क्रियाणामात्मनि रूपविशेषः येन प्रथमया नोत्पन्नं ताभिरुत्पद्यते ?, अतः सर्वदैवानुत्पत्तिप्रसंगः, इष्टा चोत्पत्तिः,अंत्यतंतुप्रवेशे पटस्य दर्शनात्, अतः प्रथमविहरण एवांगुल्यादेः किंचिदुत्पन्नं तदुत्तरक्रियया नो(चेदु)त्पद्यते, ततस्तदेकदेशोत्पादन एव क्रियाणां कालानां च क्षयः स्यात्,यदि तु तदेशोत्पादननिरपेक्षान्या क्रिया भवति तदा उत्तरांशानामनुक्रमणं युज्यते, अनेन न्यायेन यथा पर उत्पद्यमान एवोत्पन्नः तथा तेनैव न्यायेन असंख्यातसमयपरिमाणत्वादुदयावलिकाया आदिसमयात् प्रतिसमयं चलदेव तत्कर्म चलितं,कथं?,यतो यदि हि तत्कर्म चलनाभिमुखीभूतं उदयावलिकायाःआदिसमय एव न चलितं स्यात्, ततस्तस्याद्यसमयचलनस्य वैयर्थ्यं स्यात्, तत्राचलितत्वात्, यथा च तस्मिन्समये न चलितं तथा द्वितीयादिसमयेष्वपि न चलेत्, को हि तेषामात्मनि रूपविशेषः येन प्रथमसमये न चलितं उत्तरेषु चलतीति ?, अतः सर्वदैवाचलनप्रसंगः, अस्ति चान्त्यसमये चलनं, स्थितेः परिमितत्वात्, कर्माभावदर्शनात्, अतः आवलिकाकालादिसमय एव किंचिच्चलितं, यच्च तस्मिंश्चलितं तन्नोत्तरेषु समयेषु चलति, यदि तु तेष्वपि तदेवाद्यं चलनं भवेत् ततस्तस्मिन्नेव चलने सर्वेषामुदयावलिकाचलनसमयानां क्षयः स्यात्, यदि तु तत्समयचलननिरपेक्षानि अन्यसमयचलनानि स्वचलनरूपाणि भवन्ति तत उत्तरचलनानुक्रमणं युज्यते, अत एव

॥४१७॥

वर्तमानमेव तच्चलनमतीतं भवति, एवं उदीरिज्जमाणादिसुवी भावेयव्वमिति, तम्हा कज्जमाणे कडे संथरिज्जमाणे संथरितेत्ति । जाहे न ठाति ताहे निग्गंथा जमालिस्स अंतिताओ जथा पण्णत्तीए जाव सामिं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति। सावि णं पियदंसणा ढंकस्स कुंभकारस्स घरे ठिता, सा आगता चेतियवंदिता, ताहे तंपि पण्णवेति, सावि विप्पडिवण्णा तस्स णेहाणुरागेण, पच्छा गता अज्जाणं परिकहेति, तं च ढंकं भणति, सो जाणति जथा-विप्पडिवण्णा नाहच्चएणं, ताहे सो भणति-अहं न याणामि एयं विसेसतरं, एवं तीसे अण्णदा कदायी सज्झायपोरिसिं करेंतीए तेण भायणाणि उव्वत्तंतेणं तत्तोहुत्तो इंगालो छूढो जथा तीसे संघाडी एगदेसंमि दड्ढा, सा भणति-इमा अज्ज! संघाडी दड्ढा, ताहे सो भणति-तुब्भे चेव पण्णवेह जथा-उज्झमाणे अदड्ढे, केण तुब्भं संघाडी दड्ढा ?, एत्थ सा संबुद्धा, तहत्ति पडिसुणेति, इच्छामो अज्ज ! सम्मं पडिचोदणा, ताहे सा गंतूण अमालिं पण्णवेति, सो जाहे न गेण्हति ताहे गता सहस्सपरिवारा सामिं उवसंपज्जित्ताणं विहरति ।

इमो चिंतंतो लहुं चेव गतो चंपं नगरं, सामिस्स अदूरसामंते ठिच्चा सामिं भणति-जथा णं देवाणुप्पियाणं बहवो अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्था भवित्ता छउमत्थावक्कमणेण अवक्कंता, नो खलु अहं तथा छउमत्थो भवित्ता छउमत्थावक्कमणेण अवक्कंते,अहंणं उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते, ततेणं भगवं गोतमे जमालिं एवं वदासी-नो खलु जमाली केवलिस्स णाणे वा दंसणे वा खलंसि वा थंभंसि वा जाव कहंचि वाऽऽवरिज्जति वा, जदि णं तुमं जमाली उप्पण्णणाणदंसणधरे तो णं इमाइं दो वागरणाइं वागरेहि-सासते लोके? असासते ?, सासते जीवे? असासए ?, तए णं से जमाली भगवता गोतमेणं एवं उत्ते समाणे संकिते लज्जिए जाव णो संचाएति भगवतो गोतमस्स किंचिवि पमोक्खमक्खातित्तएत्ति तुसिणीए

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

संचिट्ठति, जमालीति समणे भगवं महावीरे जमालिं एवं वयासी-अत्थि णं जमालि! ममं बहवे अंतेवासी छउमत्था जे णं पहू एतं वागरणं एवं वागरेत्तए जथा णं अहं, नो चेव णं एतप्पगारं भासं भासित्तए जथा णं तुमं, सासए लोए जमाली, जं ण कयायि णासी न कदायि न भवति न कदायि न भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे जाव निच्चे, असासए लोए जमाली !, जण्णं उस्सप्पिण्णी भवित्ता ओसप्पिण्णी भवति, सासते जीवे जमाली !, जं णं ण कदायि णासी जाव णिच्चे, असासते जीवे, जण्णं नेरइए भवित्ता तिरिक्खजोणिए भवति तिरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ२ भवित्ता देवे भवति, तते णं से जमाली सामिस्स एवं आइक्खमाणस्स एतमट्ठं नो सद्दहति, असद्दहंते सामिस्स अंतियाओ अवक्कमति २ बहूहिं असब्भावुब्भावणाहि मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणति, बहूहिं छट्ठट्ठमादीहिं अप्पाणं भावेति, भावेत्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेति २ तीसं भत्ताइं अणसणताए छेदेति, छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमट्ठितिकेसु देवेसु देवत्ताए उववण्णे, एवं जथा पण्णत्तीए जाव अंतं काहितित्ति। एताए दिट्ठीए बहुए जीवा रता तेण बहुरतत्ति भण्णति, अहवा बहुसु समएसु कज्जसिद्धिं पडुच्च रता-सक्ता बहुरता इति। चोद्दस वासाणि तदा सामिणा उप्पाडितस्स णाणस्स ताहे सो पढमओ निण्हओ उप्पण्णोत्ति॥

बितिओ सामिणा सोलसवासाइं उप्पाडितस्स णाणस्स तो उप्पण्णो। तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे गुणसिलए चेतिए वसू नाम भगवंतो आयरिया चोद्दसपुव्वी समोसढा, तस्स सीसो तीसगुत्तो नाम, सो आतप्पवादपुव्वे इमं आलावगं अज्झाति-

'तिष्यगुप्त' द्वितिय-निह्नवस्य कथानकं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

"एगे भंते ! जीवप्पदेसे जीवेत्ति वत्तव्वं सिया ?, णो तिणत्थे, एवं दो जीवप्पदेसा तिण्णि संखेज्जा असंखेज्जा जाव एगप्पदेसूणेवि य णं जीवे णो जीवेत्ति वत्तव्वं सिया,जम्हा कसिणे पडिपुण्णे लोगागासप्पदेसउड्ढपदेसे तु जीवेति वत्तव्व" मित्यादि, एत्थ सो विप्पडिवण्णो, जदि सव्वेऽवि जीवप्पदेसा एगप्पदेसहीणा जीवव्ववएसं न लभंति तो णं एसे चेव एगे जीवप्पदेसे जीवेत्ति, तब्भावभावित्वात् जीवव्ववदेसस्सत्ति, ताहे सो भणति-नो खलु एगप्पदेसमेत्तनिबंधणे जीवव्ववदेसे, किंतु कसिणपडिपुण्णलोगागासप्पदेसतुल्लपदेसानिबंधणेत्ति, तं नो खलु एगे जीवप्पदेसे जीवेत्ति, जाहे न ठाति ताहे से काउस्सग्गो कओ एएहिं, सो बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्तानिवेसेहि य अप्पाणं च परं च वुग्गाहेमाणो गतो आमलकप्पिं नगरिं,तत्थ अंबसालवणे ठितो, तत्थ मित्तसिरी नाम सवणोवासओ तप्पमुहा य अण्णे, ते निग्गता आगता साहुणत्ति, सोऽवि जाणति जहा एते निण्हगत्ति, पच्छा सो पण्णवेति, सोऽवि जाणति तहाइ माइट्ठाणेणं गतो धम्मं सुणेति, सो ते ण विरोहेति, पण्णवेहामि णं, एवं सो कमं पडिच्छंतो जाव तस्स संखडी विपुलविच्छण्णा जाता, ताहे ते णिमंतिया-तुब्भे मम घरे पादाद्याकमणं करेह, एवं ते आगता, ताहे तस्स निविट्ठस्स तं विपुलं खज्जयं नीणितं, ताहे सो ताओ एक्केक्काओ खंडं देति कूरस्स कुसणस्स वत्थस्स, ते जाणंति-एस पच्छा पुणो दाहिति अम्हं, पच्छा पादेसु पडिओ सयणं च भणति-वंदह, साधू पडिलाभिता, अहोऽहं धण्णो सपुण्णो जं तुब्भे ममं चेव घरे आगता, ताहे भणंति-किं धरिसिया अम्हे?, ताहे सो भणति-तुब्भ मतेणं सिद्धंतेण पडिलाभिता, जदि नवरि वद्धमाणसामिस्स तणएणं सिद्धंतेणं पडिलाभेमि, एत्थ संबुद्धा, इच्छामो अज्जो ! सम्मं पडिचोयणा, ताहे पच्छा सावएणं पडिलाभिता मिच्छादुक्कडं च णं कतं, एवं ते सव्वे संबोहिता, आलोइयपडिक्कंता विहरंति । बितिओ निण्हओ गतो ॥

॥४२०॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

इयाणिं ततियओ, तेणं कालेणं० समणस्स भगवतो दो वाससताणि चोद्दसुत्तराणि सिद्धिं गतस्स तो उप्पण्णो। सेयविया नयरी, पोलासं उज्जाणं, तत्थ अज्जासाढा नाम आयरिया वायणाइरिया, तेसिं च बहवे सीसा आगाढजोगपडिवण्णगा, अज्झायंति ते, तेसिं च रत्तिं विसूइया जाता, निरुद्धवातेण न चेव कोइ उट्ठविता जाव कालगता सोहम्मे नलिणिगुम्मे विमाणे उववण्णा, ओहिं पयुंजंति जाव पेच्छंति तं सरीरगं ते य साधुणो आगाढजोगपडिवण्णगा, एते न जाणंति, ताहे तं चेव सरीरगं अणुप्पविट्ठा, पच्छा उट्ठवेंति- वेरत्तियं पकरेह, एवं तेणं तेसिं दिव्वप्पभावेणं लहुं चेव समाणितं, पच्छा निप्फण्णेसु तेसु भणंति- खमह भंते! नं मए असंजतेण वंदाविता,अहं अमुगदिवसं कालगतेल्लओ, एवं सो खामेत्ता गतो,तेऽवि तं सरीरगं छड्डेतूण इमे एयारूवे अज्झत्थिए सव्वो गच्छो विप्पडिवण्णो-एच्चिरकालं असंजतो वंदिउत्ति, ताहे ते अव्वत्तभावं भावेंति जधा- सव्वं अव्वत्तं भणेज्जह, संजतोवि वा देवोवि वा,मा मुसावादो भवेज्जा असंजतवंदणं च,जहा तुमं ममं न पत्तियसि जहा संजतो न वा?,तुमंपि एवं भाणितव्वो। एवं संजतेवि सावगेऽवि ता एवं विभासा, एवं ते असब्भावेणं अप्पाणं३, तत्थ अणुसासिता ण ठिता, अणिच्छंता बारसविहेणं संभोएणं उग्घाडिता। ताहे विहरंता रायगिहं नगरं गता, तत्थ सुरियवंसप्पभूतो बलभद्दो नाम राया, सो य समणोवासओ, तेण आगमिता जहा इहमागतत्ति, ताहे तेण गोहा आणत्ता-वच्चह गुणसिलए पव्वइयगा ते इहं आणेह, ताहे तेहिं आणीता, ह (भ) णिया य-लहुं कडगमद्देण मद्दह, ताहे हत्थीहिं कडगएहि य आणीएहिं भणंति-अम्हे जाणामो जहा तुमं सावओ, सो भणति–कहिं थ सावओ?, तुब्भे केवि चारा णु चोरिया णु अभिमरा णु?, ते भणंति–अम्हे समणा णिग्गंथा, सो भणइ-किह तुब्भे समणा?, तुब्भे अव्वत्ता, तुब्भे समणा वा चारिगा वा?,अहंपि समणोवासओ वा ण वा,ते संबुद्धा लज्जिता पडिवण्णा नीसं-

॥४२१॥

आषाढाचार्य-शिष्या: तृतीय-निह्नवस्य कथानकं

किया समणा निग्गंथावो (मो) त्ति, ताहे अंबाडिता, खरेहिं मउएहि य मए तुब्भे संबोहणट्ठाए कतं, मुक्का खामिया य । एवं ततिओ गतो ॥

सामिस्स दो वाससताणि वीसुत्तराणि सिद्धिं गतस्स तो चउत्थो उप्पण्णो । महिला नगरी, लच्छीघरं चेतियं, महागिरी य आयरिया, तत्थ तेसिं सीसो कोडिण्णो, तस्सऽवि आसमित्तो सीसो, पुण अणुप्पवादे पुव्वे नेउणियावत्थु, तत्थ छिण्णच्छेदणयवत्तव्वयाए आलावओ, जथा- सव्वे पडिपुण्णसमयनेरयिया वोच्छिज्जिस्संति, एवं जाव वेमाणियत्ति, एवं तस्स तम्मि विगिच्छा जाता, जथा- सव्वे संजता वोच्छिज्जिस्संति, एवं सव्वेसिं समुच्छेदो भविस्सति, ताहे तस्स थिरं चित्तं जातं, सो आयरिएहिं भण्णति- एयं एगसमयवत्तव्वयं, मा एवं गेण्हाहि, सो णेच्छति, एवं सो णातूण निण्हउत्ति उग्घाडिओ, सो समुच्छेदणयं वागरेंतो हिंडति, जथा उ सुण्णो लोगो भविस्सति, एवं असब्भावुब्भावणाए भावेंतो कंपेल्लपुरं गतो। तत्थ खंडरक्खा णाम समणोवासगा, ते य सुंकपाला, तेहिं ते आगमितेल्लता, तेहिं मारेउमारद्धा, ताहे ते भीता भणंति- अम्हे सुतं जहा तुब्भे सड्ढा, तहावि एत्तिए संजते मारेह, ते भणंति- जे पव्वइयगा ते वोच्छिण्णा, इमे अण्णे चोरा वा०, तुब्भे किं अच्छह ?, तुब्भं चेव सिद्धंतो, सामिस्स पुण सिद्धंतेण ण वोच्छिज्जंति, जेण जथा वट्टमाणसमयनेरइया वोच्छिज्जंति एवं तत्थ अण्णे उववज्जिस्संति, तो कह संताणाविच्छेदे सति वोच्छेदं पण्णवेह, अण्णे भणंति-तत्थ इमो आलावो जहा सव्वे पढमसमयनेरइया वोच्छिज्जंतित्ति, एवं पंचगतियावि, एत्थ सो वितिगिच्छितो खणिगत्तवत्तणत्ता अहेतुगविणासवादं पण्णवेति, जथा- खणिगा पदत्था, पढमसमयिगाणं च अच्चंतभेदो, एवं बितिसमयगादीणंपि, मोग्गरादिकारणनिरवेक्खो य विणासो, जतो भूती चेव विणासे हेतुत्ति, ताहे तहेव जाव

सामुच्छेदिकः

॥४२२॥

सामुच्छेदिक: चतुर्थ-निह्नवस्य कथानकं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

खंडरक्खेहिं सावगेहिं मारिउमारद्धा, भणंति- अम्हे ते संजता जे पुव्वं तुमए अमुगत्थ दिट्ठा, तुम्हेवि किल पुव्वदिट्ठगा ते चेव सड्ढगा, तथावि एत्तिए संजते विणासेह, ते भणंति- जे ते पव्वइयगा ते तदा चेव सत एव विणट्ठा, तुब्भे अण्णे च्चेव चोरा वा चारिया वा जाव सत एव विणस्सह, को तुब्भं विणासेति ?, तुब्भं चेव सिद्धंतो, जदि परं सामिस्स सिद्धंतेणं ते चेव तुब्भे तेहिं चेव अम्हेहिं विणासिज्जह, जतो तं चेव वस्तु कालादिसामग्गिं पप्प पढमसमयकत्तेण वोच्छिज्जति, दुसमयकत्तेण उप्पज्जति, एवमादि,एत्थ ते संबुद्धा भणंति-इच्छामो अज्जो! सम्मं पडिचोदणा,एवमेतं तहत्ति,एवं तेहिं संबोहिता मुक्का खामिता पडिवण्णा य॥

इदाणिं पंचमो-सामिस्स अट्ठावीसाइं दो वाससताइं सिद्धिं गतस्स तो उप्पण्णो। उल्लुगानाम नदी,तीसे तीरे उल्लुगतीरं नगरं, बीए तीरे खेडगथामं, तत्थ महागिरीणं आयरियाणं सीसो धणगुत्तो नाम, तस्सवि सीसो गंगेयो नाम आयरिओ, सो पुव्विमे तडे उल्लुगतीरे नगरे, आयरिया से अवरिमे तडे, ताहे सो सरदकाले आयरियं वंदओ उच्चलिओ, सो य खल्लीडो, तस्स उल्लुगं नदीं उत्तरंतस्स सा खल्ली उण्हेण डज्झति, हेट्ठा य सीतलेण, पाणीएण सीतं, ताहे सो चिंतेति जथा-सुत्ते भणितं एगा किरिया वेदिज्जति-सीता उसिणा वा, अहं च दो किरियाओ वेदेमि, अतो दोऽवि किरियाओ एगसमएण वेदिज्जंति, ताहे आयरियाण साहति, तेहिं भणितं-मा अज्जो ! एवं पण्णवेहि, नत्थि एगसमएण दोऽवि किरियाओ वेदिज्जंतित्ति, जतो सीतफासस्स य उसिणफासस्स य जुगवं संफासा भवंति, न पुण जुगवं संवेदणं, जीवतदुपयोगस्वाभाव्यात्, जथा--दीहसक्कुलीभक्खणकाले पंचण्हं अत्थाणं पंचण्हं च इंदियाणं वावारो भवेज्जा, ण व जुगवं संवेदणमिति, जं पुण तहावि संवेदणकालभेदो परिबद्धो नोवलक्खिज्जति तं अतिसुहुमो कालोत्ति, जथा--उप्पलपत्तसतवेहे, समयो सहुमोत्ति न लक्खिज्जति। एवं सो असद्दहंतो असब्भावणाए अप्पाणं इ

गांगेयाचार्य पंचम-निह्नवस्य कथानकं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

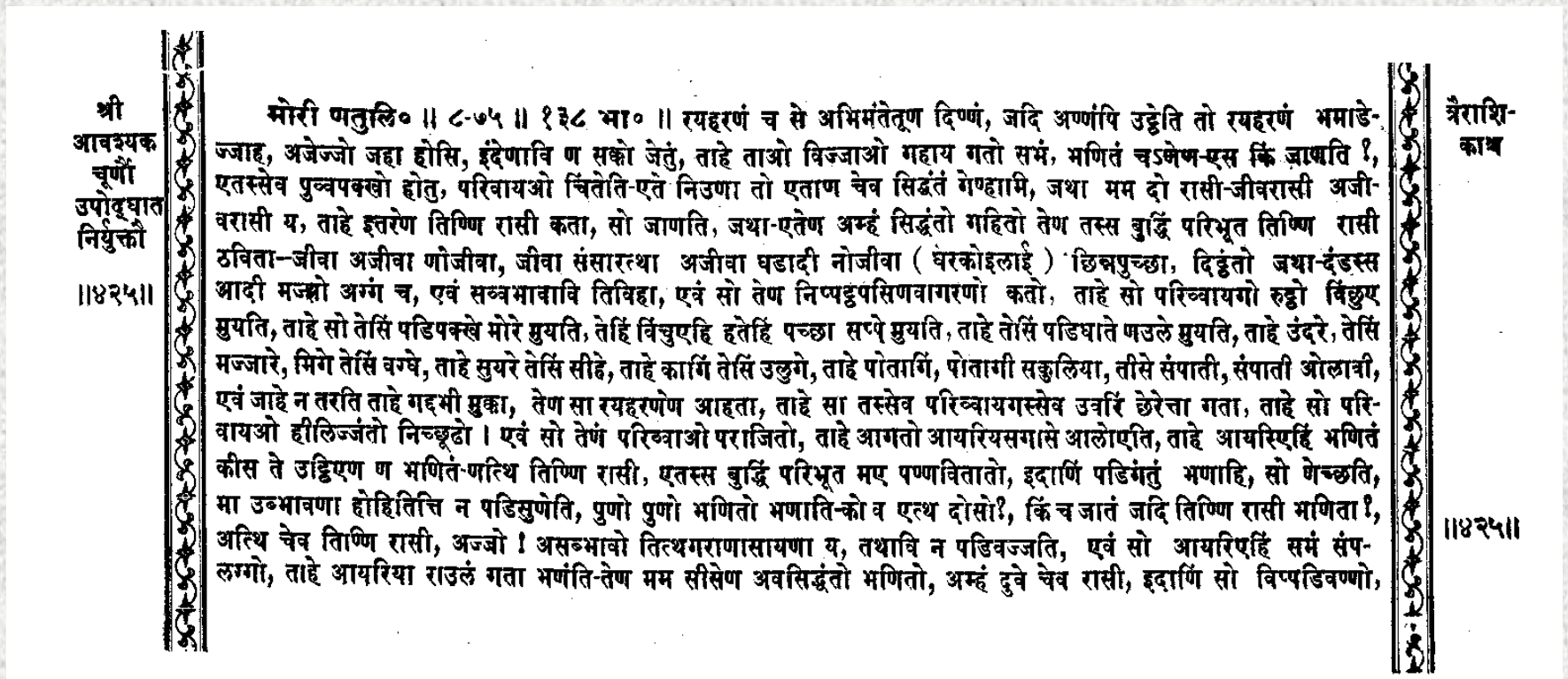
दीप अनुक्रम [-]

दुग्गाहेति, साहुणो पण्णवेति, परंपरेण सुतं, वारितो, जाहे ण ठाति ताहे उग्घाडितो, सो हिंडंतो रायगिहं गतो महातपोतीरप्पभे पासवणे, तत्थ मणिनागो नाम नागो, तस्स चेतिते वेणति, सो तत्थ परिसामज्झे कहेति, जहा-एवं खलु जीवेण एगसमएण दो किरियाओ वेदिज्जंति, ताहे तेण नागेण तीसे चेव परिसाए मज्झे भणितो-मा एतं पण्णवणं पण्णवेहि, एसा पण्णवणा दुट्ठु सेहा!, अहं एच्चिरं कालं वद्धमाणसामिस्स मूले सुणेमि जधा-एगा किरिया (एगसमएण वेइज्जति) तुमं सिलट्ठतराए उ जातो, छड्डेहि एतं वादं, मा ते दोसेण नासेहामि, एतं तेण सुंदरं, भगवता एत्थ ठितेण समोसरितेण वागरितं, एवं सो पण्णवितो अब्भुवगतो उवट्ठितो भणति- मिच्छामि दुक्कडंति। एस पंचमो निण्हओ ५ ॥

इदाणिं छट्ठओ, पंच सता चोताला सिद्धिं गतस्स वीरस्स तो तेरासियदिट्ठी उप्पण्णा। अंतरंजिया नाम नगरी, तत्थ भूतगुहं नाम चेतियं, तत्थ सिरिगुत्ता नाम आयरिया ठिता, तत्थ बलसिरी नाम राया, तेसिं पुण सिरिगुत्ताणं थेराणं सड्ढियरो रोहगुत्तो नाम, सो पुण अण्णगामे ठितेल्लओ, पच्छा तत्तो एति, तत्थ य एगो परिव्वायगो पोट्टं लोहपट्टेण बंधिऊण जंबूं सालं च गहाय हिंडति, पुच्छितो भणति-नाणेणं पोट्टं फुट्टति, तो लोहपट्टेण बद्धं, जंबूसाला य जहा जंबुदीवे नत्थि मम पडिवादी, ताहे तेण पडहओ णीणावितो जहा सुण्णा परप्पवाता, तस्स य लोगेण पोट्टसालो नामं कतं, पच्छा तेण रोहगुत्तेण वागरितं-मा तालेहि पडहगं, अहं से वादं देमि, एवं सो पडिसेहेत्ता गतो आयरियसगासं आलोएति-एवं मए पडहगो खोडितो, आयरिया भणंति-दुट्ठु कतं, सो विज्जाबलितो वादे पराजितोऽवि विज्जाहिं उवट्ठाति, सो भणति-किं सक्का एत्ताहे निलुकितुं?, ताहे तस्स आयरिया इमाओ विज्जाओ सिद्धेल्लियाओ देंति तस्स परिवक्खा

॥४२४॥

त्रैराशिक षष्ठम्-निह्नवस्य कथानकं



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४२५॥

मोरी पतुलि० ॥ ८-७५ ॥ १३८ भा० ॥ रयहरणं च से अभिमंतेतूण दिण्णं, जदि अण्णंपि उट्ठेति तो रयहरणं भमाडेज्जाह, अजेज्जो जहा होसि, इंदेणावि ण सक्को जेतुं, ताहे ताओ विज्जाओ गहाय गतो समं, भणितं चऽनेण-एस किं जाणति ?, एतस्सेव पुव्वपक्खो होतु, परिवायओ चिंतेति-एते निउणा तो एताण चेव सिद्धंतं गेण्हामि, जथा मम दो रासी-जीवरासी अजीवरासी य, ताहे इत्तरेण तिण्णि रासी कता, सो जाणति, जथा-एतेण अम्हं सिद्धंतो गहितो तेण तस्स बुद्धिं परिभूत तिण्णि रासी ठविता–जीवा अजीवा णोजीवा, जीवा संसारत्था अजीवा घडादी नोजीवा (घरकोइलाई) छिन्नपुच्छा, दिट्ठंतो जथा-दंडस्स आदी मज्झो अग्गं च, एवं सव्वभावावि तिविहा, एवं सो तेण निप्पट्ठपसिणवागरणो कतो, ताहे सो परिव्वायगो रुट्ठो विंछुए मुयति, ताहे सो तेसिं पडिपक्खे मोरे मुयति, तेहिं विंचुएहि हतेहिं पच्छा सप्पे मुयति, ताहे तेसिं पडिघाते णउले मुयति, ताहे उंदरे, तेसिं मज्जारे, मिगे तेसिं वग्घे, ताहे सुयरे तेसिं सीहे, ताहे कागिं तेसिं उलुगे, ताहे पोतागिं, पोतागी सकुलिया, तीसे संपाती, संपाती ओलावी, एवं जाहे न तरति ताहे गद्दभी मुक्का, तेण सा रयहरणेण आहता, ताहे सा तस्सेव परिव्वायगस्सेव उवरिं छेरेत्ता गता, ताहे सो परिवायओ हीलिज्जंतो निच्छूढो । एवं सो तेणं परिव्वाओ पराजितो, ताहे आगतो आयरियसगासे आलोएति, ताहे आयरिएहिं भणितं कीस ते उड्डिएण ण भणितं-णत्थि तिण्णि रासी, एतस्स बुद्धिं परिभूत मए पण्णवितातो, इदाणिं पडिगंतुं भणाहि, सो णेच्छति, मा उब्भावणा होहितित्ति न पडिसुणेति, पुणो पुणो भणितो भणाति-को व एत्थ दोसो?, किं च जातं जदि तिण्णि रासी भणिता ?, अत्थि चेव तिण्णि रासी, अज्जो ! असब्भावो तित्थगराणासायणा य, तथावि न पडिवज्जति, एवं सो आयरिएहिं समं संपलग्गो, ताहे आयरिया राउलं गता भणंति-तेण मम सीसेण अवसिद्धंतो भणितो, अम्हं दुवे चेव रासी, इदाणिं सो विप्पडिवण्णो,

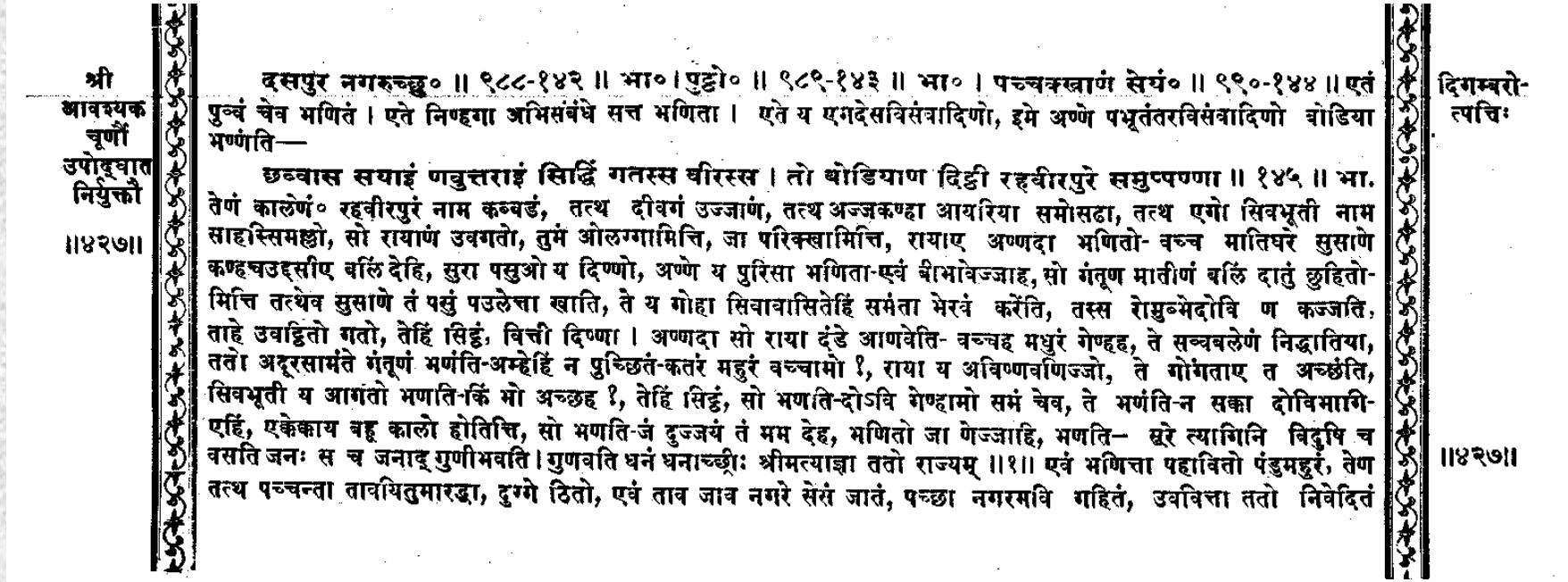
त्रैराशिकाश्च

॥४२५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

तो तुब्भे अम्हं वादं सुणेह, पडिसुणंति, तत्थ रायसभाए मज्झे रण्णो पुरतो आवाडितं, एवं जहेगदिवसं एवं उट्ठाए छम्मासा गता, ताहे राया भणति--ममं रज्जं सीदति, ताहे आयरिएहिं भणितं-इच्छाए मए एत्तिरं कालं धरिओ, एत्तो एत्ताहे णं पासह कल्लं दिवसे आगते समाणे निगिण्हामि, ताहे पभाए भणति-कुत्तियावणे परिक्खिज्जतु, तत्थ सव्वदव्वाणि अत्थि, आणेह जीवे अज्जीवे नोजीवे य, ताहे ताए देवताए जीवा अजीवा य दिण्णा, नोजीवे नत्थित्ति भणति, अजीवं वा पुणो देति, एवमादिकाणां चोतालसतेण पुच्छाणं निग्गहितो, नगरे य घोसितं-जयति महतिमहावीरवद्धमाणसामीति, सो य निव्विसओ कतो, पच्छा निण्हतुत्तिकातूणं उग्घाडितो। छट्ठ तु एसो। तेण वतिसेसितसुत्ता कता छ, उलुगो य गोत्तेणं, तेण छउलुउत्ति जातो। चोतालसतं पुण इमं, तेण छम्मूलपदत्था गहिता, तंजथा-दव्वं गुणा कम्मं सामण्णं विशेषाः समवायः, तत्थ दव्वं नवधा, तंजहा-पुढवी आउ तेउ वाउ आकासं कालो दिसा जीवो मणा। गुणा सत्तरस, तंजहा-रूवं रसो गंधो फासो संखा परिमाणं पुहुत्तं संयोगो विभागो परत्तं अपरत्तं बुद्धी सुहं दुक्खं इच्छा दोसो पयत्तो य। कम्मं पंचधा-उक्खेवणं अवक्खेवणं आउंचणं पसारणं गमणं च। सामण्णं तिविहं-महासामण्णं सत्तासामण्णं सामण्णविसेससामण्णं, अन्ने भणंति-सत्तासामण्णं सामण्णसामण्णं विसेससामण्णं, अंतविसेसे एगविहो, एवं समवादोऽवि, अण्णे पुण पभणंति, सामण्णं दुविहं-परमपरं च, विसेसो दुविहो-अन्तविसेसो अणंतविसेसो य। एते छत्तीसं। एक्केक्कंमि चत्तारि २ विकप्पा-पुढवि अपुढवि णोपुढवि णोअपुढवि, एवमवादिष्वपि, तत्थ पुढविं देहित्ति मट्टिया देति, अपुढविं देहित्ति मट्टियवतिरित्तं देति, णोपुढविं देहित्ति णो किंचि देति, पुढविवतिरित्तं वा पुण देति, णोअपुढविं देहित्ति न किंचि देति, मत्तियं वा पुणो देति, एवं जथासंभवं विभासा ॥ ६ सत्तमो पुण पंचसता चुलसीता सिद्धिं गतस्स सामिस्स अवट्ठिगदिट्ठी उप्पण्णा।



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ ॥४२७॥

दसपुर नगरुच्छु० ॥ ९८८-१४२ ॥ भा० । पुट्ठो० ॥ ९८९-१४३ ॥ भा० । पच्चक्खाणं सेयं० ॥ ९९०-१४४ ॥ एतं पुव्वं चेव भणितं । एते निण्हगा अभिसंबंधे सत्त भणिता । एते य एगदेसविसंवादिणो, इमे अण्णे पभूततरविसंवादिणो बोडिया भण्णंति—

छव्वास सयाइं णवुत्तराइं सिद्धिं गतस्स वीरस्स । तो बोडियाण दिट्ठी रहवीरपुरे समुप्पण्णा ॥ १४५ ॥ भा. तेणं कालेणं० रहवीरपुरं नाम कव्वडं, तत्थ दीवगं उज्जाणं, तत्थ अज्जकण्हा आयरिया समोसढा, तत्थ एगो सिवभूती नाम साहस्सिमल्लो, सो रायाणं उवगतो, तुमं ओलग्गामित्ति, जा परिक्खामित्ति, रायाए अण्णदा भणितो- वच्च मातिघरे सुसाणे कण्हचउद्दसीए बलिं देहि, सुरा पसुओ य दिण्णो, अण्णे य पुरिसा भणिता-एवं बीभावेज्जाह, सो गंतूण मातीणं बलिं दातुं छुहितो-मित्ति तत्थेव सुसाणे तं पसुं पउलेत्ता खाति, ते य गोहा सिवावासितेहिं समंता भेरवं करेंति, तस्स रोमुब्भेदोवि ण कज्जति, ताहे उवट्ठितो गतो, तेहिं सिट्ठं, वित्ती दिण्णा । अण्णदा सो राया दंडे आणवेति- वच्चह मधुरं गेण्हह, ते सव्वबलेणं निद्धातिया, ततो अदूरसामंते गंतूणं भणंति-अम्हेहिं न पुच्छितं-कतरं महुरं वच्चामो ?, राया य अविण्णवणिज्जो, ते गोगंताए त अच्छंति, सिवभूती य आगतो भणति-किं भो अच्छह ?, तेहिं सिट्ठं, सो भणति-दोऽवि गेण्हामो समं चेव, ते भणंति-न सक्का दोविभागि-एहिं, एक्केकाय बहू कालो होतित्ति, सो भणति-जं दुज्जयं तं मम देह, भणितो जा णेज्जाहि, भणति— सूरे त्यागिनि विदुषि च वसति जनः स च जनाद् गुणीभवति । गुणवति धनं धनाच्छ्रीः श्रीमत्याज्ञा ततो राज्यम् ॥१॥ एवं भणित्ता पहाविता पंडुमहुरं, तेण तत्थ पच्चन्ता तावयितुमारद्धा, दुग्गे ठितो, एवं ताव जाव नगरे सेसं जातं, पच्छा नगरमवि गहितं, उवविट्ठा ततो निवेदितं

दिगम्बरो-त्पत्तिः

॥४२७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

अणेण रण्णो, तुट्ठेण भणितं-भण किं देमि, ?, सो चिंतेतुं भणति-जं मए गहितं तं सुगहितं, जहिच्छितो भविस्सामि, एवं होतुत्ति, सो य बाहिं चेव हिंडंतो अद्धरत्ते आगच्छति वा न वा, तस्स य भज्जा ताव ण जेमेति सुवति वा जाव न आगतो भवति, सा निव्विण्णा, अण्णदा मातरं से वट्टेति-तुज्झ पुत्तो दिवसे दिवसे अद्धरत्ते एति, अहं जग्गामि छुहातिया य अच्छामि, ताहे ताए भण्णति-मा दारं देज्जाहि, अहं अज्ज जग्गामि, सो आगतो बारं मग्गति, इतरीए अम्बाडिओ, भणिओ य-जत्थ इमाए वेलाए उग्घाडिताणि दाराणि तत्थ वच्च, तस्स भवितव्वयाते णं मग्गंतेण उग्घाडिओ साधुपडिस्सओ दिट्ठो, तत्थ गतो वंदति, भणति-पव्वावेह मं, ते णेच्छंति, तेण सयं लोओ कतो, ताहे से लिंगं दिण्णं, अण्णदा चीवरजायणिताए तेण कंबलरयणं लद्धं, तं तस्स अणापुच्छाए गुरूहिं फालेत्ता साधूण णिसेज्जाओ कताओ, अण्णे भणंति- तं तस्स रण्णा दिण्णं, ताहे सो कसादितो चीवराणि छड्डेत्ता गतो, अण्णे भणंति-जिणकप्पे वण्णिज्जंते भणति- किं एस एवं न कीरति ?, तेहिं भणितं-वोच्छिण्णो, मम न वोच्छिज्जतित्ति सो चेव परलोगत्थिणा कातव्वो, किं उवहिपरिग्गहेण ?, परिग्गहसब्भावे कसायमुच्छाभयादयो बहू दोसा, अपरिग्रहत्वं च सुते भणितं, अचेला य जिणिंदा जिणकप्पियादयो य, तो अचेलता सुंदरत्ति, एवं सव्वं जथाय निग्गतो। तत्थुत्तरा भगिणी उज्जाणे ठितस्स वंदिया गता, तं दट्ठूण ताए ऽवि छड्डितं, ताहे भिक्खं पविट्ठा, गणिताए दिट्ठा, मा विरज्जिहितित्ति उरे से पोती बद्धा, सा णेच्छति, सो भणति-अच्छतु एतं तव देवताए दिण्णंति, अण्णे भणंति-सेज्जातरीए दिण्णं बद्धं च, तेण य दो सीसा पव्वाविता-कोडिण्णो कोट्टिवीरो य, ततो सीसपसीसाणं परंपरं फासो जातो। ताणं दोसेणं मिच्छत्तं वड्ढितं। एवं वोडितज्जणा जाता।

एवं एते भणिता० । ६-९५ ॥ १८६ ॥ मोत्तूण अतो एक्कं० । ८-९६ ॥ १८५ ॥ गोट्ठामाहिलं एकं मोत्तूणं सेसाणं

निह्नव-अधिकारस्य उपसंहार क्रियते

जावज्जीवितं पच्चक्खाणं, दो दो दोसा, बहुरता जीवप्पदेसिए भणंति-तुब्भं दोहिं कारणेहिं मिच्छादिट्ठी, जेण भणह-एगो जीवप्पदेसो जीवोत्ति १ जं च मे चलमाणं चलितं२, इमेऽवि पडिभणंति-तुब्भेऽवि जं भणह-चलमाणे अचलिते १ जं च जीवप्पदेसे जीवेत्ति न भण्णेह २, एवं सेसावि परोप्परं दो दोसे लुभंति, गोट्ठामाहिलस्स तिन्नि, मोत्तूणं गोट्ठामाहिलं सेसाणं संजयाणं पच्चक्खाणं जावज्जीवाए, एस एको बितिओ पुट्ठं जथा अबद्धं कंचु०,जं च अम्हेच्चयं न सद्दहेसि, एस ततियओ, अण्णे भणंति–एक्कस्स दो दोसा, एगं अप्पण्णा विप्पडिवण्णा, बितियं परं वुग्गाहेंतित्ति॥ आह–सव्वत्थ संपडिवण्णा जदि कहमवि एगत्थ विप्पडिवण्णा तो किं जातं ?, भण्णति—

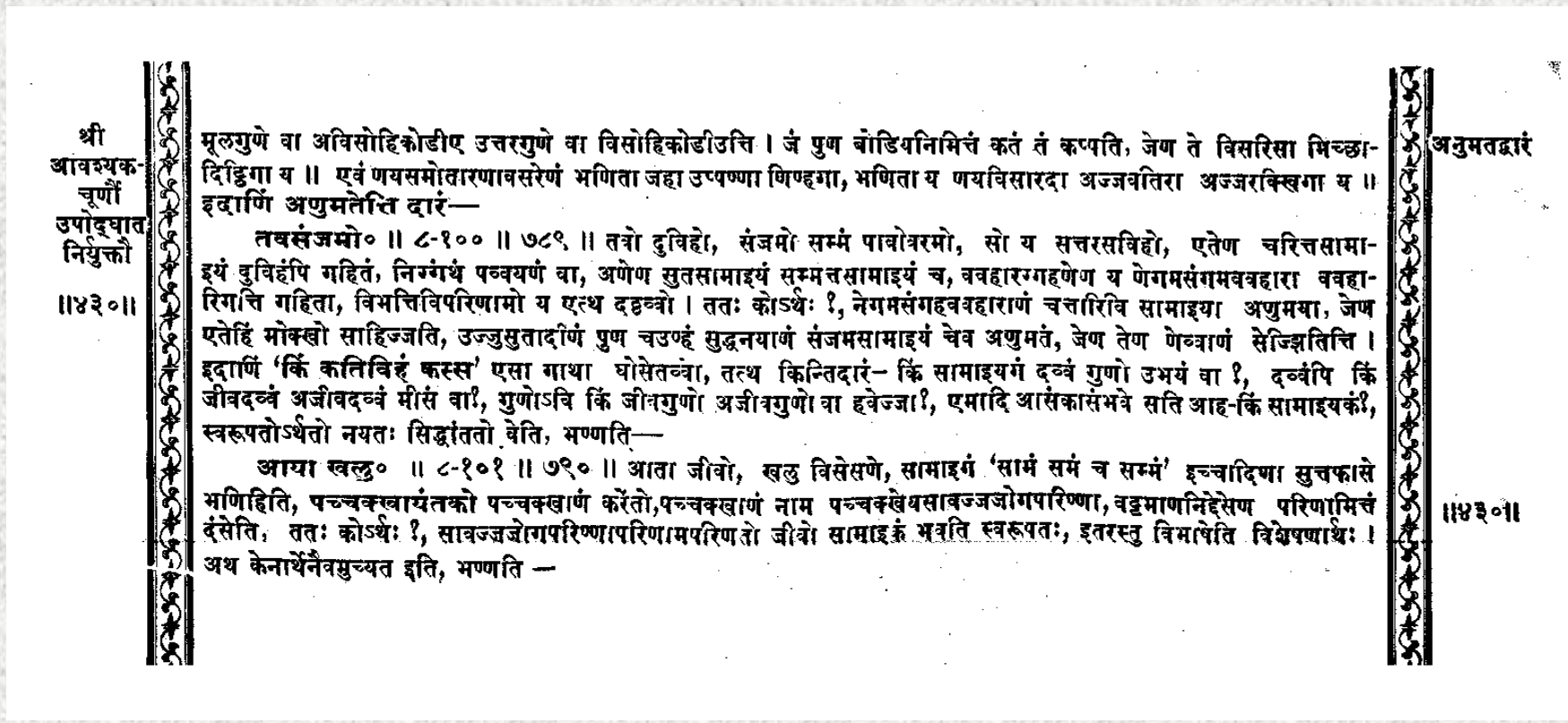
सत्तेया दिट्ठीओ० । ८-९६ । १८७ ॥ जदिवि एगत्थ विप्पडिवत्तीं तथावि एताओ सत्तवि दिट्ठीओ जातिजरामरणगब्भवसहिस्स संसारस्स मूलं भणंति । णणु किं ते समणसरूवा ण ?, भण्णति–निग्गंथा इव पडिभासंते, जतो इमं चेव लिंगं, ण पुण निग्गंथा चेव, किं तु निग्गंथरूवा इति ॥ एत्थ सीसो आह–जदि तो एवं तो जं ते पडुच्च आहाकम्मादि जातं तं कहं परिहरणाएत्ति ?, आयरिया भणंति—

पवयणनिज्जूढाणं० । ८-९८ ॥ ७८७ ॥एतेसिं पवयणनिज्जूढाणं कारितं आहाकम्ममादि सेज्जा वा पणुवीसाए दोसाणं एक्कतरं, कहं पण्णवीसा ?, सोलस उग्गमदोसा णव एसणा दोसा, संकितं मोत्तूण, सो आतसमुत्थोत्ति तं भजितं परिहरणाए, किं निमित्तं ?, जदि सो जाणति जहा एते निण्हगत्ति तेसिं मए भत्तं कतं ताहे घेप्पंति, अह विसेसं चेव ण जाणति ताहे ण घेप्पति,

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2



श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४३०॥

मूलगुणे वा अविसोहिकोडीए उत्तरगुणे वा विसोहिकोडीउत्ति । जं पुण बोडियनिमित्तं कतं तं कप्पति, जेण ते विसरिसा मिच्छादिट्ठिगा य ॥ एवं णयसमोतारणावसरेणं भणिता जहा उप्पण्णा णिण्हगा, भणिता य णयविसारदा अज्जवतिरा अज्जरक्खिगा य ॥ इदाणिं अणुमतेत्ति दारं—

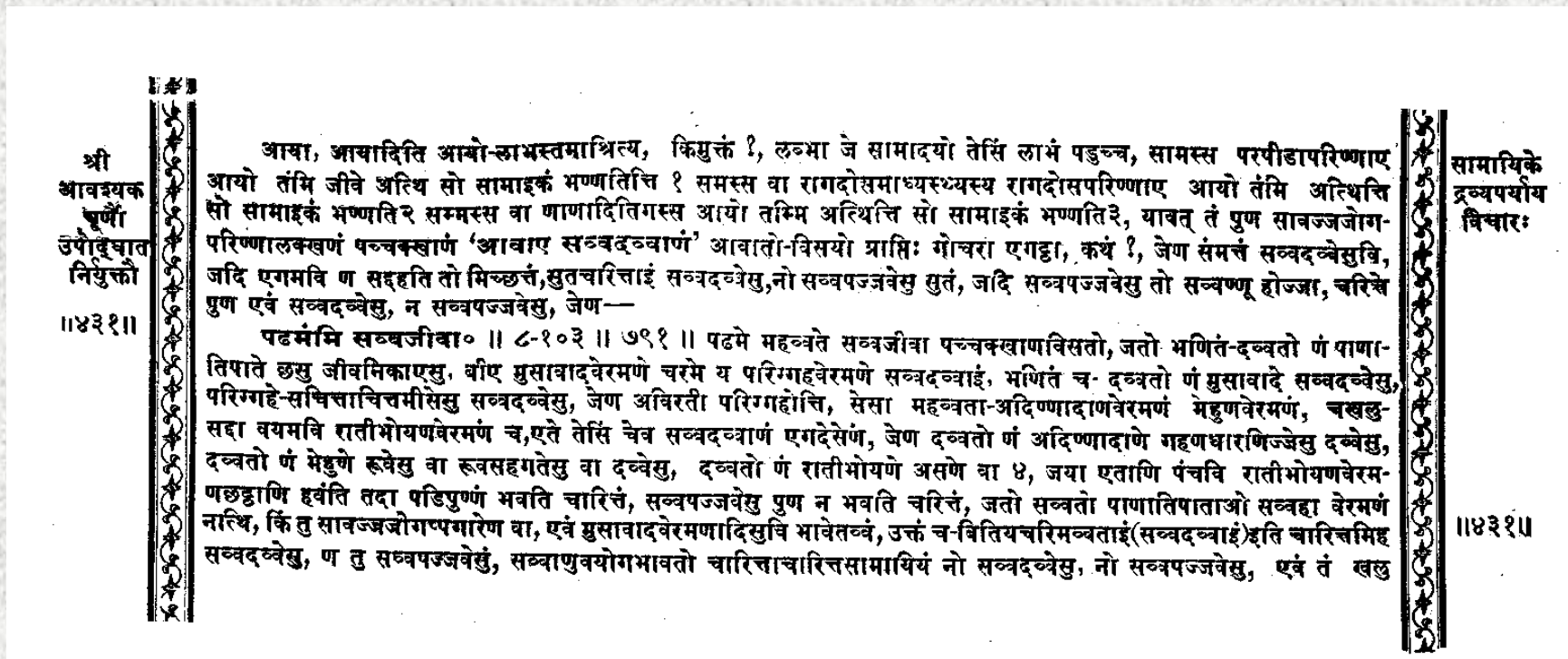
तवसंजमो० ॥ ८-१०० ॥ ७८९ ॥ तवो दुविहो, संजमो सम्मं पावोवरमो, सो य सत्तरसविहो, एतेण चरित्तसामाइयं दुविहंपि गहितं, निग्गंथं पव्वयणं वा, अणेण सुतसामाइयं सम्मत्तसामाइयं च, ववहारग्गहणेण य णेगमसंगमववहारा ववहारिगत्ति गहिता, विभत्तिविपरिणामो य एत्थ दट्ठव्वो । ततः कोऽर्थः ?, नेगमसंगहववहाराणं चत्तारिवि सामाइया अणुमया, जेण एतेहिं मोक्खो साहिज्जति, उज्जुसुतादीणं पुण चउण्हं सुद्धनयाणं संजमसामाइयं चेव अणुमतं, जेण तेण णेव्वाणं सेज्झितित्ति । इदाणिं **'किं कतिविहं कस्स'** एसा गाथा घोसेतव्वा, तत्थ किन्तिदारं– किं सामाइयगं दव्वं गुणो उभयं वा ?, दव्वंपि किं जीवदव्वं अजीवदव्वं मीसं वा?, गुणोऽवि किं जीवगुणो अजीवगुणो वा हवेज्जा?, एमादि आसंकासंभवे सति आह-किं सामाइयकं?, स्वरूपतोऽर्थतो नयतः सिद्धांततो वेति, भण्णति—

आया खलु० ॥ ८-१०१ ॥ ७९० ॥ आता जीवो, खलु विसेसणे, सामाइगं 'सामं समं च सम्मं' इच्चादिणा सुत्तफासे भणिहिति, पच्चक्खायंतको पच्चक्खाणं करेंतो,पच्चक्खाणं नाम पच्चक्खेयसावज्जजोगपरिण्णा, वट्टमाणनिद्देसेण परिणामित्तं दंसेति, ततः कोऽर्थः ?, सावज्जजोगपरिण्णापरिणामपरिणतो जीवो सामाइकं भवति स्वरूपतः, इतरस्तु विभासेति विशेषणार्थः । अथ केनार्थेनैवमुच्यत इति, भण्णति —

अनुमतद्वारं

॥४३०॥

	'सामायिक' व्याख्या एवं स्वरुपं व्यक्तिक्रियते



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४३१॥

आया, आयादिति आयो-लाभस्तमाश्रित्य, किमुक्तं ?, लब्धा जे सामादयो तेसिं लाभं पडुच्च, सामस्स परपीडापरिण्णाए आयो तंमि जीवे अत्थि सो सामाइकं भण्णतित्ति १ समस्स वा रागदोसमाध्यस्थ्यस्य रागदोसपरिण्णाए आयो तंमि अत्थित्ति सो सामाइकं भण्णति२ सम्मस्स वा णाणादितिगस्स आयो तम्मि अत्थित्ति सो सामाइकं भण्णति३, यावत् तं पुण सावज्जजोग-परिण्णालक्खणं पच्चक्खाणं 'आयाए सव्वदव्वाणं' आयातो-विसयो प्राप्तिः गोचरा एगट्ठा, कथं ?, जेण समत्तं सव्वदव्वेसुवि, जदि एगमवि ण सद्दहति तो मिच्छत्तं,सुतचरित्ताइं सव्वदव्वेसु,नो सव्वपज्जवेसु सुतं, जदि सव्वपज्जवेसु तो सव्वण्णू होज्जा, चरित्ते पुण एवं सव्वदव्वेसु, न सव्वपज्जवेसु, जेण—

पढमंमि सव्वजीवा० ॥ ८-१०३ ॥ ७९१ ॥ पढमे महव्वते सव्वजीवा पच्चक्खाणविसतो, जतो भणितं-दव्वतो णं पाणा-तिपाते छसु जीवनिकाएसु, बीए मुसावादवेरमणे चरमे य परिग्गहवेरमणे सव्वदव्वाइं, भणितं च- दव्वतो णं मुसावादे सव्वदव्वेसु, परिग्गहे-सचित्ताचित्तमीसेसु सव्वदव्वेसु, जेण अविरती परिग्गहोत्ति, सेसा महव्वता-अदिण्णादाणवेरमणं मेहुणवेरमणं, चखलु-सद्दा वयमवि रातीभोयणवेरमणं च,एते तेसिं चेव सव्वदव्वाणं एगदेसेणं, जेण दव्वतो णं अदिण्णादाणे गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु, दव्वतो णं मेहुणे रूवेसु वा रूवसहगतेसु वा दव्वेसु, दव्वतो णं रातीभोयणे असणे वा ४, जया एताणि पंचवि रातीभोयणवेरम-णछट्ठाणि हवंति तदा पडिपुण्णं भवति चारित्तं, सव्वपज्जवेसु पुण न भवति चरित्तं, जतो सव्वतो पाणातिपाताओ सव्वहा वेरमणं नत्थि, किं तु सावज्जजोगप्पगारेण वा, एवं मुसावादवेरमणादिसुवि भावेतव्वं, उक्तं च-बितियचरिमव्वताइं(सव्वदव्वाइं)इति चारित्तमिह सव्वदव्वेसु, ण तु सव्वपज्जवेसुं, सव्वाणुवयोगभावतो चारित्ताचारित्तसामाथियं नो सव्वदव्वेसु, नो सव्वपज्जवेसु, एवं तं खलु

सामायिके द्रव्यपर्याय विचारः

॥४३१॥

पच्चक्खाणं आवाए सव्वदव्वदव्वाणंति, एतस्स पुण विसयनिरूवणस्स उवरि केसुत्ति दारं सत्थाणं, जेण तत्थ भण्णिहिति- 'सव्व-गतं सम्मत्तं सुते चरित्ते ण पज्जवा सव्वे । देसविरतिं पडुच्चा दोण्हवि पडिसेहणं कुज्जा ॥ १ ॥' इह पुण पच्चक्खाणप्पसंगेणा-गतंति तातो चेव दारातो एतं विसयनिरूवणं कतंति ॥ इदाणिं विशेषणविशेष्यभावं पडुच्च आता जथा सामाइयं भवति तथा नयतो विभासिज्जति—

सावज्जजोगविरतो० । ६--१०२ ॥ १४९ भा०। एत्थ पच्छाणुपुव्वी–संगहस्स यां तां गतिं गत्वा आता सामायिकं, अतो सामाइकस्स अट्ठविशेषणानां विशेष्ये संग्रहात्, न त्वनात्मा इति, ताहे ववहारो भणति- णो एवं ववहरितुं सक्का, जेण जदि आ-ता चेव सामाइयं तो यो यो आता सो सो सामाइकमिति पत्तं, तं मा भणह- आता सामाइकं, भण-जतमाणो आता सामाइकं, जतमाणो नाम प्रयत्नपर इति, ताहे उज्जुसुतो भणति--जदि एवं तो तामलिमादिणोऽवि जतमाणा, तेऽवि सामायिकं पत्ता, तं मा एवं भण, भण-उवउत्ते जतमाणो आता सामायिकं, उवउत्तो नाम ज्ञेयप्रत्याख्येयपरिज्ञापर इत्यर्थः, ताहे सद्दो भणति-जदि एवं तो अविरतसम्मदिट्ठिदेसविरतादयोऽवि एवंन्यायास्तेवि सामाइकं पत्ता, तं मा एवं भण, भण-छसु संजतो उवउत्तो जयमाणो आया सामाइयं, छसु संजतो नाम छसु जीवनिकाएसु संघट्टणपरितावणादीविरओ इति, ताहे समभिरूढो भणति--जदि एवं तो पमत्तसंजतादयोऽवि एवंपाया तेऽवि सामाइयं पत्ता,तं मा एवं भण,भणसु-तिगुत्तो छसु संजतो इच्चादि, तिगुत्तो नाम मणवयण-काएहिं गुत्तो, अकुसलमणादिनिरोधि कुसलमणादिउदीरगो इत्यर्थः, तज्जातीयग्रहणात्पंचसमिओ य इति, ताहे एवंभूतो भण-ति—जदि एवं तो अप्पमत्तसंजतादओऽवि सामाइगं पत्ता, तं मा एवं भण, भण- सावज्जजोगविरतो इच्चादि, तत्थ सावज्जजो-

गविरतो नाम परिण्णातसावज्जवावारो, परिण्णातो दुविहाए परिण्णाए- ज्ञपरिण्णाए पच्चक्खाणपरिण्णाए य सावज्जो वावारो जेण सो परिण्णायसावज्जवावारो, सावज्जो नाम कम्मबंधो-अवज्जं सह तेण जो सो सावज्जो, जोगोत्ति वा वावारोत्ति वा वीरियंति वा सामत्थंति वा एगट्ठा इति, तदेवंभूतस्यायमभिप्रायो–यदुत यदैवैतत्सर्वविशेषणविशिष्ट आत्मा तदैव सामाइकं भवति, नान्यदेति, नेगमस्स पुण सुद्धासुद्धभेदत्ता समस्तैतद्विशेषणविशिष्ट अण्णतरएगावीसिसणावीसिट्ठो वा दुगतिगचतुष्कपंचगसंजोगविगप्पविसेसणविसिट्ठो वा आता सामाइयं भवतित्ति । अण्णे पुण भणंति-संगहस्स तहेव आता सामाइयं करेंतो, आता सामाइयस्स अट्ठेत्ति, ववहारो तहेव भणति- सावज्जजोगविरतो आता सामायियंति, उज्जुसुतो पुण संजमं चेव सामाइयं पुच्छति, एवं सम्मत्तसुत्ताइंपि सामाइयं पावंति, तो भणति- परिण्णातसावज्जजोगोऽवि जदा पंचसमितो तिगुत्तो तदा सामाइयंति, सद्दो पुण देसविरातिसामाइयं णेच्छति, एवं च देसविरतोऽवि सामायियं पावति, जतो सोऽवि सामाइयं करेंतो सावज्जजोगविरतो तिगुत्तो य भवति, तो एवमवि जदा छसु संजमो तदा सामाइयंति, समभिरूढो पुण पमत्तसंजतो जाव सुहुमसरागो ताव सामाइयं नेच्छति, एवं च एतेऽवि सामायियं पावेंति, तो एवमवि जदा उवउत्तो तदा सामायियंति, एवंभूतश्च उपशांतरागादय एव तद्भूतो अतस्त एव सामायिकमिति, एवंभूतो पुण अकेवलीसामायिकयं नेच्छति, केवलीवि सव्वो सामाइयंति णेच्छति, ते एवमवि जदा जतमाणो तदा सामाइयंति भणति, नान्यदा । एतद्विशेषणविशिष्टश्च समुद्घातादिगतः केवली अजोगीकेवली वा तावतो, अतः स एव सामायिकमित्येवंभूताभिप्राय इति ॥ नेगमस्स पुण तहेव सव्वविगप्पेहिं आता सामाइयं, अन्यतरविशेषणसद्भावेऽवि विशेषणार्थाव्यभिचारात् इति भावनीयं एत्थ ।

॥४३३॥

इदाणिं दव्वगुणनिरूवणं पडुच्च सामाइयं नयतश्चिंत्यते-णणु पुव्वं पुच्छितं-किं सामाइयं दव्वं गुणो उभयमिच्चादि, तत्थ य उत्तरं भणितं- आता खलु सामाइयमिच्चादि, तत्किं पुनरेवं चिंत्यते?, भण्णति, तत्र स्वरूपतः [सावज्जजोगपरित्याख्यानपरिणामपरिणत आत्मा सामायिकमित्याभिहितं, एवं च द्रव्यगुणसमुदयः सामाइकमित्युक्तं भवति, अत्र तु नयतश्चिन्त्यते, यतो केइ नया दव्वं सामायियंति पडिवन्ना, केइ पुण गुणोत्ति, जदि एवं तो साह—को नयो दव्वं गुणं वा सामाइयं इच्छतित्ति ?, भण्णति—

जीवो गुणपडिवण्णो० (८–१०४ ॥ ७९२ ॥ तत्थ दोहिं नयेहिं मग्गिज्जति- दव्वट्ठितेण पज्जवट्ठितेण य, जतो ते सच्च एतेसु चेव समोतरंति, आदितिगं णयाणं दव्वट्ठितो, उवरिल्ला चत्तारि पज्जवट्ठितो, तत्थ दव्वट्ठितस्स जीवो गुणपडिवण्णो सामाइयं, को गुणो?, णाणादितिगस्स आयो, तं पडिवण्णो तेण पडिवण्णो, जीवस्तु द्रव्यमतो द्रव्यमेव सामायिकं, यत्तु गुणप्रतिपन्न इत्युक्तं तद्विशेषणभावेन गुणीभूतमिति, जीव एव सामायिकं, वाचकलावकपावकवदिति । पज्जवनयट्ठितस्स पुण अयमभिप्रायो- यदुत जं चेव गुणं पडिवण्णो आता सामाइयंति भणितो सो चेव गुणो सामायियं, समाय एव सामायिकमितिकृत्वा, जं पुण 'आता खलु सामायियं' ति भणितं तं जीवस्स एस गुणोत्ति, अयमस्याभिप्रायः-यो एस णाणादितिगस्स आयो गुणो एस जीवस्साति उवयारतो आता सामायियं भण्णति, यथा शुक्लः पटः पीता हरिद्रा कृष्णो भ्रमरः, तत्त्वतस्तु स एव गुणः सामायिकमिति पज्जवज्जिट्ठित एवाह, इतश्चैतदंगीकर्तव्यं, यतः उप्पज्जंति वियंति य परिणमंति य गुणा न दव्वाइंति ७९३ । अयमभिप्रायो- यदुत सामायिकं उप्पज्जति विगच्छति परिणमति य, परिणमति नाम संखातीताइं तारतम्माइं अणुभवति, एसो य सभावो गुणाणं, जतो उप्पज्जंति वियंति य परिणमंति य गुणा, ण दव्वाइं, जेण दव्वं निच्चमवठितस्सभावं, उक्तं च-"जीवे दव्वट्ठताए

सासए, पज्जवट्ठताए असासए" अतो गुण एव सामायियमिति । एवं पज्जवट्ठितेण भणिते दव्वट्ठित आह-इत्थं चैतदङ्गीकर्तव्यं, यदुत द्रव्यमेव सामायिकं, जतो—दव्वप्पभवा य गुणा, ण गुणप्पभवाइं दव्वाइं ॥ ८-१०५।७९३ ॥ इति, अयमभिप्रायो-यदुत यो भवतो गुणो सामायियत्तणेणाभिमतो सो जीवप्पभवो, न तु तप्पभवो जीवः, यतो-दव्वप्पभवा गुणा, ण गुणप्पभवाइं दव्वाइं, दव्वे पभवो जेसिं ते दव्वप्पभवा, जतो य जीवे चेव उप्पायविगमपरिणामप्पगारेहिं तस्सप्पभवो अतो तग्गुणपडिवण्णो जीव एव उप्पज्जति विगच्छति परिणमति य, सामाइयं च भण्णति, जेथा- तंतुप्पभवो आताणवितागादिभावो, न तु तप्पभवा तंतवः, आताणवितागादिं भावं पडिवण्णा य तंतव एव उप्पज्जंति वयंति य परिणमंति य, पडो य भण्णति, जथा वा पोग्गलदव्वेसु चेव उप्पादविगमपरिणामप्पगारेहिं पुढवीभावस्स पभवो अतो तब्भावपडिवण्णा पोग्गला चेव उप्पज्जंति विगच्छंति परिणमंति य, पुढवीदव्वं भण्णति । अतो दव्वमेव सामाइयमिति स्थितं । एवं भणितं नयतो सामाइयं॥ एवं च नयविगप्पजायपरूवणं सोतूण वाउलितो सीसो आह-भगवं ! किमेत्थ तत्तं ?, अतः सिद्धान्ततो भण्णति- जं जं जे जे भावा० । ८—१०६ । ७९४ ॥ तत्थ गुरू भणति- सोम्ममुह ! जं जिणो जाणति तं तत्तं, किं पुण जिणो जाणति ?, भण्णति—जं जं किंचि वत्थुं, जे जे केइ भावे, तं तं वत्थुं ते ते सव्वे भावे व परिणमति, सव्वं वत्थुं सव्वभावपरिणामित्ति जं भणितं, तथाहि- "एको भावः सर्वभावस्वभावः, सर्वे भावाः सर्वभावस्वभावाः । एको भावस्तत्त्वतो येन दृष्टः,सर्वे भावास्तत्त्वतस्तेन दृष्टाः ॥ १ ॥ पयोगवीससत्ति केइ भावे पओगतो परिणमति केइ वीससा, तं परिणामि वत्थुं तहा सव्वभावपरिणामिप्पगारेण जाणाति, जं पुण अपज्जवतं तत्थ जाणणा णत्थित्ति, तत्किमुक्तं भवति ?- सामाइयं सव्वनयाभिप्पाएहिं परिणमति, अतो जेण जेण णय-

भिप्पाएण परूविज्जति तेण तेण स्यात्, सव्वणयसमूहमतं जिणमयंति ॥ किन्ति दारं गतं ॥ इदाणिं कतिविहंति दारं—

सामाइयं च तिविहं० । ८—१०७ ॥ ७९५ ॥ तंजथा- सम्मत्तसामाइयंपि तिविहं- खइयं उवसामियं खओवसामियं, अहवा तिविहं-सम्मत्तसामाइयं चरित्तसामाइयं सुतसामाइयं, चसद्दा सत्थाणे भेदं इच्छंति, चरित्तसामाइयं दुविहं, तंजहा- अगारसामाइयं अणगारसामाइयं च, सुतसामाइयं तिविहं- सुत्तं अत्थो तदुभयं च, सम्मत्तसामाइयं- कारगं रोचगं दीवगं, कारगं जथा साधूणं, रोचगं सेणियादीणं, दीवगं अभवसिद्धियस्स, मिच्छदिट्ठिस्स वा भवसिद्धियस्स, अभवसिद्धियस्स कहं?, सो एक्कारस अंगाइं पढति न य सद्दहति, धम्मं च कहेति, एयं दीवगं, अहवा निसग्गसम्मदंसणं च अधिगमसम्मदंसणं च, निसर्गः स्वभावः परिणाम इत्यनर्थान्तरं, जं उवदेसमंतरेणवि गेण्हति तं निसग्गसम्मदंसणं, अधिगमसम्मदंसणं च जं जीवादिनवपयत्थे उवलभितूण गेण्हतित्ति । सामाइयस्स भेदनिरूवणं कतं, इदाणिं अज्झयणस्स भेदनिरूवणं कज्जति—

अज्झयणंपिय तिविहं ०।८-१०८।।७९६॥ सेसेसुवि अज्झयणेसु होति एसेव निज्जुत्ती, अण्णेसुवि अज्झयणेसु भेदनिरूवणा एसा चेव भेदकहनिज्जुत्ती, सव्वत्थ अज्झयणभेदचिन्तायां सुत्तअत्थतदुभयभेदेण तिविहं अज्झयणंति भाणियव्वं जं भणितं, अण्णे भणंति-सुतसामाइयस्स भेदो दरिसितो पुव्वद्धेण, उत्तरद्धेण पुण सामण्णा उवघातनिज्जुत्ती सव्वअज्झयणेसुत्ति अतिदेसो कतो, **सेसेसुवि अज्झयणेसु होति एसेव निज्जुत्ती,** जथा सामाइयं उद्देसादीहिं दारेहिं मग्गितं एवं चतुव्वीसत्थयादीणिवि उद्देसादीहिं मग्गितव्वाणि, मज्झे पुण अतिदेसो तुलादंडणातेण मज्झग्गहणे आद्यंतयोर्ग्रहणमिति । अण्णे पुण इमा गाधा उवरिं चेव निरुत्तदारअवसाणे वक्खाणंति ॥ इदाणिं कस्सत्ति सामाइयं दारं, तत्थ गाथा—

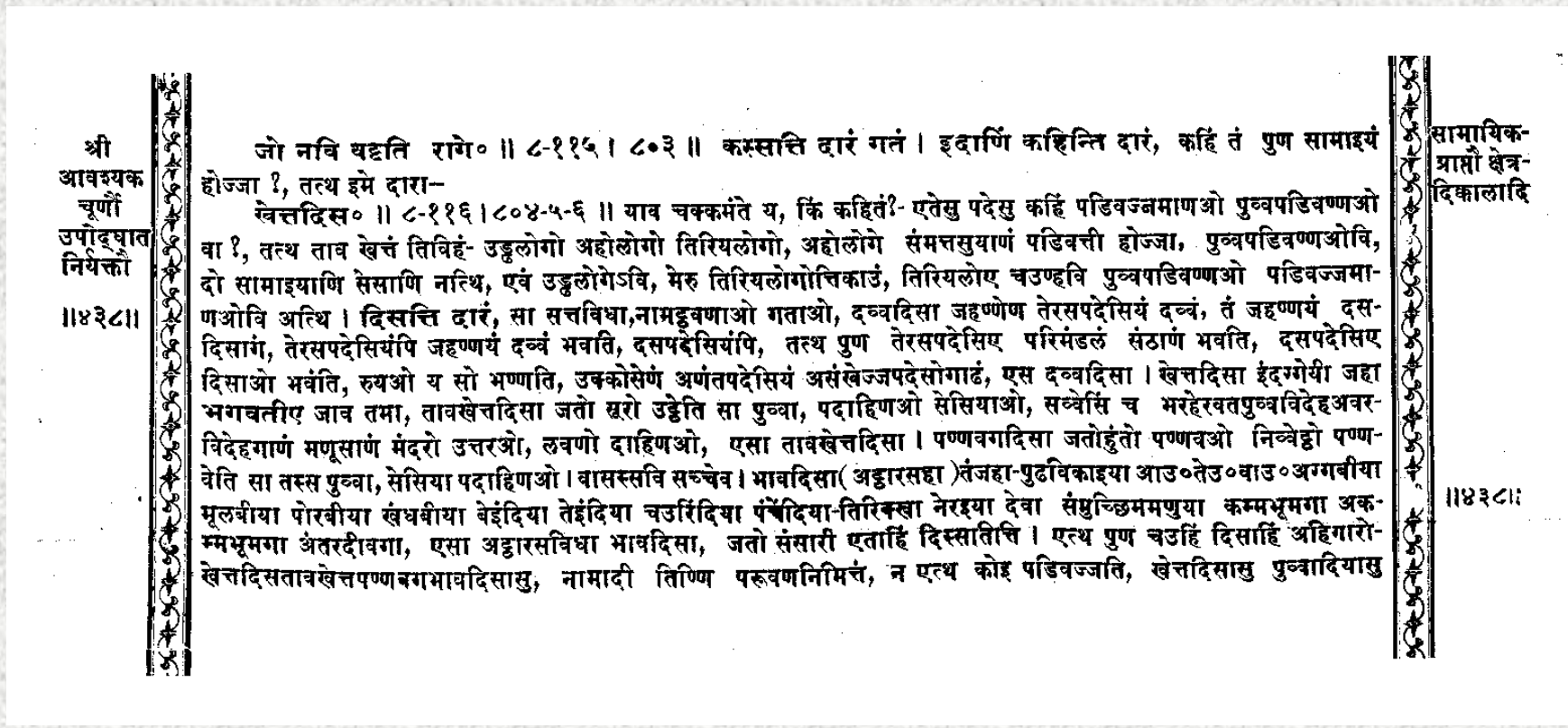
सामायिक्स्य भेदानां वर्णनं क्रियते

जस्स सामाणिओ अप्पा ०।८-१०९।७९७॥ संजमो सत्तरसविधो, नियमो इंदियनियमो नोइंदियनियमो, तवो सब्भिंतरबाहिरो, एत्थ सामाणिओ, ण पत्थो, संनिहित इत्यर्थः, तस्स सामाइयं इति केवलिभासितं, इतिशब्द समाप्तौ, एतेसु तिसु संपुण्णं सामाइयं भवतित्ति ॥ अधवा-जो समो ०।८-११०।७९८। देससामाइयं पुण सावगस्स भवतित्ति, सामिं पडुच्च जस्स सामाइयं एतं निरूवितं । इदाणिं अत्थसंबधं पडुच्च निरूविज्जति, कस्स अत्थस्स साहगं सामाइयंति?, भण्णति—

सावज्जजोगप्परिवज्जण० ॥ ८-१११ । ७९९ ॥ सावज्जजोगपरिवज्जणनिमित्तं सामाइयं, किं अविसेसेण सामाइयं सावज्जजोगपरिवज्जणनिमित्तं ?, उच्यते, केवलियं पसत्थं, केवलियं नाम संपुण्णं, सव्वसामाइयमित्यर्थः, तं पसत्थयं सावज्जजोगपरिवज्जणे अधिगमुवगारित्ति जं भणितं, कस्स सगासाओ पसत्थं ?, गिहत्थधम्मा, देससामायिकादित्यर्थः, एवं परमं णच्चा कुज्जा बुहो आतहितं परत्थं, परो- मोक्खो तदत्थं, एत्थ सीसो आह-जदि केवलियं सामाइयं एवंभूतं तो वरं एयं चेव कीरतु, किं देससामाइयस्स बहुसो करणेण ?, भण्णति- को वा किमाह ?, एवं ताव लद्धं चेव, किंतु जदा एतं कातुमसत्तो तदा देससामाइयंपि ताव बहुसो कुज्जा, यस्मादाह—

सामाइयंमि तु कते० ॥ ८-११३ । ८०१ ॥ किं च-जीवो पमादबहुलो० ॥८-११४।८०२॥ बहुसो-अणेगसो, बहुविहेसु अत्थेसु रागद्दोसादीहिं अण्णमण्णं भावं णिज्जति तेण पमत्तो, सामाइयं करेन्तो अप्पमत्तो भवतित्ति । अहवा सामण्णेण कस्स सामाइयं भवतित्ति?, भण्णति- मज्झत्थस्स, जतिभागगता मत्ता मज्झत्थस्स ततिभागगता सामाइयस्स, को य मज्झत्थो?—

॥४३७॥



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ

॥४३८॥

जो नवि वट्टति रागे० ॥ ८-११५ । ८०३ ॥ कस्सत्ति दारं गतं । इदाणिं कहिन्ति दारं, कहिं तं पुण सामाइयं होज्जा ?, तत्थ इमे दारा–

खेत्तदिस० ॥ ८-११६ । ८०४-५-६ ॥ याव चक्कमंते य, किं कहितं?- एतेसु पदेसु कहिं पडिवज्जमाणओ पुव्वपडिवण्णओ वा ?, तत्थ ताव खेत्तं तिविहं- उड्ढलोगो अहोलोगो तिरियलोगो, अहोलोगे संमत्तसुयाणं पडिवत्ती होज्जा, पुव्वपडिवण्णओवि, दो सामाइयाणि सेसाणि नत्थि, एवं उड्ढलोगेऽवि, मेरु तिरियलोगोत्तिकाउं, तिरियलोए चउण्हवि पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओवि अत्थि । दिसत्ति दारं, सा सत्तविधा,नामट्ठवणाओ गताओ, दव्वदिसा जहण्णेण तेरसपदेसियं दव्वं, तं जहण्णयं दसदिसागं, तेरसपदेसियंपि जहण्णयं दव्वं भवति, दसपदेसियंपि, तत्थ पुण तेरसपदेसिए परिमंडलं संठाणं भवति, दसपदेसिए दिसाओ भवंति, रुयओ य सो भण्णति, उक्कोसेणं अणंतपदेसियं असंखेज्जपदेसोगाढं, एस दव्वदिसा । खेत्तदिसा इंदग्गेयी जहा भगवतीए जाव तमा, तावखेत्तदिसा जतो सूरो उट्ठेति सा पुव्वा, पदाहिणओ सेसियाओ, सव्वेसिं च भरहेरवतपुव्वविदेहअवरविदेहगाणं मणूसाणं मंदरो उत्तरओ, लवणो दाहिणओ, एसा तावखेत्तदिसा । पण्णवगदिसा जतोहुंतो पण्णवओ निव्वेट्ठो पण्णवेति सा तस्स पुव्वा, सेसिया पदाहिणओ । वासस्सवि सच्चेव । भावदिसा(अट्ठारसहा)तंजहा-पुढविकाइया आउ०तेउ०वाउ०अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया-तिरिक्खा नेरइया देवा संमुच्छिममणुया कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवगा, एसा अट्ठारसविधा भावदिसा, जतो संसारी एतासिं दिस्सातित्ति । एत्थ पुण चउहिं दिसाहिं अहिगारो-खेत्तदिसतावखेत्तपण्णवगभावदिसासु, नामादी तिण्णि परूवणनिमित्तं, न एत्थ कोइ पडिवज्जति, खेत्तदिसासु पुव्वादियासु

सामायिक-प्राप्तौ क्षेत्र-दिक्कालादि

॥४३८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

महादिसासु पडिवज्जमाणएवि पुव्वपडिवण्णएवि चत्तारिवि सामाइया, अण्णदिसासु चउण्हवि णावि पुव्वपडिवण्णओ नावि पडिवज्जमाणओ, जतो तासु सुद्धासु जीवो नवगाहति, फुसणा पुण ताण भवेज्जा, तावखेत्तपण्णवगदिसासु पुण अट्ठसुवि पुव्वपडिवण्णएवि पडिवज्जमाणएवि चउण्हवि सामाइयाण होज्जा, उड्ढअहदिसिदुगे संमत्तसुताणं एवं चेव, देसविरतिसव्वविरतीण पुण पुव्वपडिवण्णओ सिया, नो पडिवज्जमाणओ, भावदिसाए एगेंदिएसु चउण्हवि सामाइयाण न पडिवज्जमाणओ, ण वा पुव्वपडिवण्णओ, विगलिंदिएसु दोण्ह पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, नेतरः, पंचिंदियतिरिएसु सव्वविरतिवज्जा तिण्णि सामाइया, पुव्वपडिवण्णओ नियमा, सिय पडिवज्जमाणओवि, भयणिज्जा,सिय नारगदेवअकम्मभूमजअंतरदीवनरेसु संमत्तसुताणं पुव्वपडिवण्णओ अत्थि, पडिवज्जमाणओ सिय, कम्मभूमजेसु चत्तारिवि सामाइया पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओवि भणेज्जा, संमुच्छिमनरेसु नत्थि एक्कंपि ॥

कालेत्ति दारं—कालो तिविधो- ओसप्पिणिकालो उस्सप्पिणीकालो णोओसप्पिणीउस्सप्पिणीकालो य, तत्थ भरहेरवएसु ओसप्पिणीकालो उस्सप्पिणीकालो य एत्तियं छव्विहो,तंजधा-ओसप्पिणीए सुसमसुसमा सुसमा चउहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं पवाहओ गच्छति पढमा१बीया सुसमा तीहिं गच्छति२ततिया सुसमादुस्समा दोहिं गच्छति३चउत्था दुस्समसुसमा सागरोवमकोडाकोडीए बातालीसवाससहस्सूणाए गच्छति४पंचमा दूसमा एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं गच्छति ५ दूसमदूसमावि एगवीसाए चेव वाससहस्सेहिं गच्छति ६, एवं चेव पच्छाणुपुव्वीए उस्सप्पिणीएवि । एवं वीसाए सागरोवमकोडाकोडीहिं दोवि गच्छंति, नोओसप्पिणीउस्सप्पिणीकालो पुण चउव्विहो, तंजधा-सुसमसुसमाआदिपलिभागो सुसमादिपलिभागो सुसमदूसमाआदिपलिभागो दूसमसु-

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ

॥४४०॥

समाआदिपलिभागो, तत्थ पढमो देवकुरुउत्तरकुरासु, बीओ हरिवासरम्मगेसु, तितिओ हेमवतएरण्णवएसु, चउत्थो विदेहेसुत्ति । तत्थ ओसप्पिणिउस्सप्पिणि छच्चेसु अरासु नोओसप्पिणिउस्सप्पिणीए य चउव्विधाएवि एतेसु संमत्तसुताइं पडिवज्जेज्जा, पुव्वपडिवण्णएवि अत्थि, ते पुण सुसमसुसमादिसु पुव्वकोडिदेसूणायुसेसा पडिवज्जंति, साहरणं पुण पडुच्च अण्णतरंपि होज्जा, चरित्तं चरित्ताचरित्तं च ओसप्पिणिं पडुच्च ततियचउत्थपंचमासु समासु पडिवज्जमाणओवि पुव्वपडिवण्णओवि, उस्सप्पिणिं पडुच्च तितियचउत्थासु समासु दोवि भणेज्जा, नोओसप्पिणिउस्सप्पिणिं पडुच्च चउत्थे पलिभागे पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओवि दोण्हवि भणेज्जा, अण्णे पुण भणंति-णोओसप्पिणिउस्सप्पिणिकालो एगविहो चेव चउत्थसमापलिभागो होज्जा, नो सेसासु, तंमि काले चउव्विहंपि सामाइयंपि पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओवि भणेज्जा, जं चरित्ताचरित्तसामाइयं सुतसामाइयं सम्मत्तसामाइयं च एवं तितयंपि बाहिरएसुवि दीवसमुद्देसु जत्थवि नत्थि सुसमाइओ कालो तत्थवि भणेज्जा ॥

गतित्ति दारं–सा चतुव्विधा, नेरइयदेवेसु संमत्तसुताणं पडिवज्जमाणोवि पुव्वपडिवण्णओवि, तिरिएसु तिण्हं दोण्णिवि, मणुएसु चउण्हं दोण्णिवि, भवसिद्धिओ चउण्हं पडिवज्जमाणओ वा पुव्वपडिवण्णओ वा होज्जा, अभविए एगमवि नत्थि। सण्णी चत्तारिवि दोहिवि पगारेहिं, असण्णी दोण्हं पुव्वपडिवण्णओ होज्जा संमसुताणं, नोसण्णिणोअसण्णि चरित्ताचरित्तसुतवज्जिताणं दोण्हं पुव्वपडिवण्णओ अत्थि, पडिवज्जमाणओ नत्थि । ऊसासओ चउण्हवि पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओ वा भणेज्जा, एवं नीसासओवि, नोऊसासगनीसासगो आणापाणुपज्जत्तिअपज्जत्तगो सम्मत्तसुताणं पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, सेसं नत्थि सव्वं, सेलेसिं गतो पुण संमत्तचरित्ताणं पुव्वपडिवण्णओ होज्जा,सेसं नत्थि। दिट्ठी तिविहा-सम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी सम्ममिच्छदिट्ठी,एत्थ दो

सामायिक-प्राप्तौ क्षेत्र-दिक्कालादि

॥४४०॥

नया- ववहारो निच्छओ य, ववहारस्स मिच्छदिट्ठी होंतओ पडिवज्जति, नेच्छइयस्स सम्मदिट्ठिरेव, जेण "नेरइए भंते ! नेरइएसु उववज्जति अनेरइए?०'आलावओ,सम्मत्तसुता एवं पुव्वपडिवण्णओ, एतेसिं संमदिट्ठी नो मिच्छादिट्ठी, दोवि सामाइया, केती पुण सुतसामाइतं मिच्छादिट्ठीवि पुव्वपडिवण्णओ भणंति,दो पुण सामाइया-चरित्तं चरित्ताचरित्तं च पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा सम्मदिट्ठी,नो मिच्छादिट्ठी,सम्मत्तसुतेसुवि णत्थि,अण्णे पुण भणंति-चरित्तं चरित्ताचरित्तं पुव्वपडिवण्णओ होज्जा,नो पडिवज्जमाणओ । आहारओ चउहिवि पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओ वा भणेज्जा, अणाहारओ चरित्ताचरित्तवज्जेसु पुव्वपडिवण्णओ होज्जा । पज्जत्तओ जथा आहारओ, अपज्जत्तओ दोण्णि पुव्वपडिवण्णओ होज्जा। किं सुत्तो पडिवज्जति ? जागरो पडिवज्जति ?, सुत्तो दुविहो-निद्दासुत्तो य भावसुत्तो य, भावसुत्तो अण्णाणी, जागरो दुविहो- निद्दाजागरो सम्मदिट्ठी, निद्दासुत्तो चउहिवि पुव्वपडिवण्णओ अत्थि, पडिवज्जमाणओ नत्थि एगमवि, भावसुत्तो पडिवज्जमाणओ पुव्वपडिवण्णओ वा नत्थि एगमवि, नयमतेण वा सिय दोण्हं पडिवज्जमाणओ, निद्दाजागरो चउण्हवि पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओ होज्जा, भावजागरो पुव्वपडिवण्णओ सुतसंमेसु अत्थि, पडिवज्जमाणओ नत्थि, नयमतेण वा सिया, चरित्तं चरित्ताचरित्तं च पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणगोवि भणेज्जा । जम्मं तिविहं-अंडजं पोतजं जरायुजं, अंडजा चरित्तवज्जाइं तिण्णि पुव्वपडिवण्णया पडिवज्जमाणगा य भणेज्जा, एवं पोतजावि, जरायुजा चउसुवि पुव्वपडिवण्णगा पडिवज्जमाणगा वा भणेज्जा, उववाइयं सम्मसुताण पुव्व० पडिवज्जमाणगा य भणेज्जा। ठितिदारं उक्कोसं गंठिओ जस्स उक्कोसा ठिती कम्मपगडीणं आउयवज्जाणं, उक्कोसट्ठिती पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा चत्तारि नत्थि, आउयस्स देवेहिं परं संमत्तसुताणि पुव्वपडिवण्णओ होज्जा,पडिवज्जमाणओ नत्थि, अज-

हण्णुक्कोसट्ठितीओ चउहिंवि पडिवज्जमाणओ पुव्वपडिवण्णओ वा होज्जा, जहण्णकम्मट्ठितिगा पुव्वपडिवण्णगा चरित्ताचरित्तवज्जेसु तिसु होज्जा, पडिवज्जमाणगा चतुसुवि न होज्जा ॥ पुरिसवदेगा चतुहिंवि पुव्वपडिवज्जमाणगा वा होज्जा, एवं इत्थिनपुंसा अवेदगा चरित्ताचरित्तवज्जेसुवि होत्था पुव्वपडिवण्णगा,जेण गिहत्थी उवसमगादी नत्थि, पडिवज्जमाणगा चउहिंवि णत्थि। संणत्ति दारं- चउसुवि सण्णासु उवउत्तो चउण्हंपि एगतरंपि न पडिवज्जति , पुव्वपडिवण्णगा चउण्हंपि होज्जा, णोसण्णोवउत्ता पडिवज्जमाणगावि होत्था चत्तारिवि,पुव्वपडिवण्णगावि, अण्णे भणंति-नोसण्णोवउत्ता चरित्ताचरित्तवज्जेसु तिसुवि पुव्वपडिवण्णगा होज्जा, नो पडिवज्जमाणगा, अण्णे पुण भणंति-णोसन्नोवउत्ता संमत्तचरित्ताणं पुव्वपडिवण्णगा अत्थि, सेसं नत्थि। कसायेत्ति दारं- सकसायी चउण्हवि पुव्व०, पडिवज्जमाणओवि होज्जा, अकसायी चरित्ताचरित्तवज्जाणं तिण्हं पुव्वपडिवन्नओ होज्जा, पडिवज्जमाणओ नत्थि, अवसेसो पुण जहा हेट्ठा 'पंढमेल्लुयाणं उदये' (१०८) गाथाहिं भणितो। अहवा कोहकसायी पडिवज्जति पुव्वपडिवण्णओवि चउहिंवि, एवं माणि० । आउत्ति दारं-संखेज्जवासाऊ किंचि दुविहोवि भणेज्जा, असंखेज्जवासाउ दोसु संमसुतेसु दुविहोवि भणेज्जा । णाणित्ति दारं-किं णाणी पडिवज्जति अण्णाणी?, एत्थ दो णया जथा दिट्ठी, एवं ता ओहेणं । इदाणिं विभागेण-पंचण्हं णाणाणं भाणितव्वं, आभिणिबोहियसुतणाणी एते पडिवज्जमाणया संमत्तसामाइयं सुत्तसामाइयं च जुगवं पडिवज्जंति, पुव्वपडिवण्णओ नत्थि, अण्णे भणंति- पुव्वपडिवण्णओवि अत्थि, चरित्तं चरित्ताचरित्तं च पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओवि भणेज्जा,ओहिण्णाणी संमत्तसुत्तसामाइए पडिवज्जमाणओ नत्थि, पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, चरित्ताचरित्तं पडिवज्जमाणओ ओहिण्णाणी नत्थि,पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, चरित्तं पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, अण्णे

भणंति-चरित्ताचरित्तवज्जाणं तिण्हं पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, चरित्ताचरित्तं पडिवज्जमाणओ ओहिनाणी नत्थि, पुव्वपडिवण्णओ होज्जा। मणपज्जवणाणी संमं सुतं चरित्तं च तिण्णि पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, पडिवज्जमाणओ (वि) चरित्तसामाइयं मणपज्जवणाणं च समयं चेव होज्जा, जथा-सामिणो, सम्मत्तसुते णत्थि पडिवज्जमाणओ, चरित्ताचरित्तं पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा णत्थि। केवलनाणी चरित्ते पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, सम्मत्ते य पडिवज्जमाणओ नत्थि,सेसेसु दोसुवि नत्थि दुविधोवि। सजोगी चतुहिंवि दुविहोवि होज्जा, अजोगी जथा केवलणाणी, मणवइकाया जथासंभवं विभासेज्जा। सागारोउत्तो चतुहिंवि दुविहोवि होज्जा, अणागारोवउत्तो चतुहिंवि पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, पडिवज्जमाणओ नत्थि, जेण सव्वाओ लद्धीओ सागारोवयोगोवउत्तस्स भवंति, नो अणागारोवउत्तस्स। ओरालियसरीरी चउहिंवि दुविहोवि होज्जा, वेउव्विओ य सरीरी सम्मत्तसुते पडिवज्जमाणओ होज्जा, सेसाण णत्थि, पुव्वपडिवण्णओ पुण चउसुवि होज्जा, आहारगसरीरी सम्मत्तसुतचरित्ते पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, नो पडिवज्जमाणओ, चरित्ताचरित्तं दोसुवि णत्थि, तेयग-कंमगाणि तदंतग्गताणि चेव कृत्वा नोच्यन्ते, अथोच्यन्ते ततः सम्मत्तसुताणं पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, सेसं नत्थि। संठाणे छव्विहे संघयणे य छव्विहे पुव्वपडिवण्णओवि पडिवज्जमाणओवि चत्तारिवि सामाइया भणेज्जा। माणत्तिदारं, माणं नाम सरीरोगाहणा, किं जहण्णोगाहणओ० पडिवज्जति उक्कोसोगाहणओ०अजहण्णुक्कोसोगाहणओ पडिवज्जति?, नेरइयदेवा जहण्णो-गाहणा ण किंचि पडिवज्जंति, पुव्वपडिवण्णया संमत्तसुतेसु होज्जा, सेसा णत्थि, उक्कोसोगाहणा पुव्वपडिवण्णगा पडिवज्ज-माणगावि संमत्तसुतेसु होज्जा, एवं अजहण्णुक्कोसोगाहणावि, तिरिक्खजोणिया जहण्णोगाहणगा ण किंचि पडिवज्जंति, पुव्वप-

डिवण्णगावि णत्थि, एगिंदिए पडुच्च, अह बेंदियादी तो अत्थि, उक्कोसोगाहणगो अजहण्णुक्कोसोगाहणगोवि तिसु सामाइएसु पडिवज्जमाणओ वा पुव्वपडिवण्णओ वा होज्जा, मणूसो जहण्णोगाहणओ पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा चउण्हवि सामाइयाण एक्कंपि णत्थि, संमुच्छिमे पडुच्च, उक्कोसोगाहणओ दोसु दुविहोवि भणेज्जा संमत्तसुते, अजहण्णुक्कोसोगाहणओ चउसुवि दुविहोवि भणेज्जा । लेसत्ति दारं, दव्वलेसं पडुच्च छसु लेसासु चत्तारिवि सामाइया दुविहावि होज्जा, भावलेसं पडुच्च छहिं लेसाहिं चउहिं सामाइएहिं पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, पडिवज्जमाणयं पडुच्च चत्तारिवि सुक्कलेसाए होज्जा, अहवा पुव्वपडिवण्णगं पडुच्च सव्वासुवि लेसासु होज्जा चतुरोवि, पडिवज्जमाणयं पडुच्च संमत्तसुताइं सव्वासु तेउपम्हसुक्कासु चरित्तं चरित्ताचरित्तं च पडिवज्जति, किं वड्ढमाणओ पडिवज्जति? पुच्छा, चत्तारिवि सामाइया वड्ढमाणओ पडिवज्जति, नो हीयमाणओ, पुव्वपडिवण्णओ दोहिवि परिणामेहिं होज्जा, अवट्ठियपरिणामओ न किंचि पडिवज्जति, पुव्वपडिवण्णओ होज्जा । किं सातावेदओ पडिवज्जति? पुच्छा, दोण्णिवि पडिवज्जंति चत्तारिवि सामाइया, पुव्वपडिवण्णगावि चत्तारिवि सामाइए । किं समोहतो असमोहतो पुच्छा, दोण्णिवि एते चत्तारिवि सामाइया पुव्वपडिवण्णा पडिवज्जमाणगा वा होज्जा ॥ समुद्घात एव कर्म समुद्घातकर्म,किं? निव्वेढिन्तो पडिवज्जति संवेढन्तो पडिवज्जति? निव्वेढन्तो पडिवज्जति,णो संवेढन्तो,सा पुण निव्वेढणा चतुव्विधा-दव्वनिव्वेढणा खेत्तनि० कालनि० भावनिव्वेढणा, दव्वनिव्वेढणा नाम जे सम्मत्तसुतचरित्तावरणपोग्गला ठिता ते निव्वेढेमाणो पडिवज्जति, खेत्तनिव्वेढणा नाम जेसु खेत्तपदेसेसु पुणो पुणो आजायन्तओ, जथा 'अयं णं भंते ! जीवे एतंसि महालयंसि लोयंसि अयवाडगादिट्ठंतेणं इमीसे रतणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससतसहस्सेसु०' एवमादितं निव्वेढेमाणो पडिवज्जति,

सामायिक-प्रापकाः

॥४४४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

कालनिव्वेढणा अणंतो कालो जं चेव संमत्तं पडिवन्नं भवति ताहे निव्वेढितो भवति, भावनिव्वेढणा जं कोहादीणि निव्वेढेऊण पडिवज्जति,एवं चउव्विहंपि सामाइयं निव्वेढित्ता पडिवज्जति,नो अनिव्वेढित्ता, अहवा भावनिव्वेढणा उदइयादी, पुव्वपडिवण्णओ चत्तारिवि सामाइए निव्वेढंतओ वा होज्जा संवेढन्तओ वा॥उव्वट्टेत्ति दारं, नेरइएसु अणुव्वट्टो जीवो पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा सम्मत्तसुतेसु दोसु होज्जा, उव्वट्टस्स दुगं तिगं वा चउक्कं वा होज्जा, तिरिएसु अणुव्वट्टमाणस्स तिण्णिवि दोहिवि पगारेहि होज्जा, उव्वट्टस्स दुविहं तिविहं चउव्विहं वा होज्जा दोसुवि पगारेसु, मणुएसु अणुव्वट्टस्स चउहिवि पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओ वा होज्जा.उव्वट्टस्स दुगं तिगं वा होज्जा, देवेसु अचुतस्स दुगं,चुतस्स दुगं तिगं चउक्कं वा दोहिवि पगारेहिं होज्जा, सव्वत्थ उव्वट्टमाणओ न किंचि पडिवज्जति, पुव्वपडिवण्णओ दुगो वा होज्जा। किं आसवओ पडिवज्जति नीसवओ पडिवज्जति आसवनीसवओ पडिवज्जाति ?, जं सामाइयं पडिवज्जति तस्स तदावरणिज्जाणं णिस्सवओ पडिवज्जति, जे त तदावरणिज्जा पोग्गला वट्टंति ते निस्सवमाणो, अण्णे पुण आसवन्ति चेव ते निस्सवमाणो पडिवज्जति, नो आसवओ पडिवज्जति,अण्णे ण पुण भणंति आसवओ वा निस्सवओ वा आसवनीसवओ वा पडिवज्जाति, पुव्वपडिवण्णेऽओ आसवओ वा०तिण्णिवि होज्जा, अण्णे पुण भणंति--आसवओ न पडिवज्जति तदावरणाणं,अण्णेसिं आसवओवि पडिवज्जति,एवं णीसवमाणेऽवि भजितो, नीसव० तदावरणाणं णिस्सवणे, अण्णेसिं आसवणे, चतुसु दोसु तदावरणमीसएवि पुव्वपडिवण्णओ। किं अलंकारं आविद्धन्तो पडिवज्जति अलंकितो०पडिमुंचंतो पडि०उम्मुक्को पडि०, चतुसुवि चत्तारि सामाइए पडिवज्जेज्जा, पुव्वपडिवण्णयावि चत्तारिवि चउसुवि होज्जा। किं आसणत्थो पडि०, सयणत्थो पडि०, दोवि चत्तारिवि सामाइए पडिवज्जाति, पुव्वपडिवण्णगावि चउसुवि

सामायिक-प्रापकाः

॥४४५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

होज्जा । किं ठाणत्थो पडिवज्जति चक्कंमंतो पडिवज्जति, एमेव होति । कहिन्ति दारं गतं । इदाणिं केसुत्तिदारं, केसु य दव्वेसु पज्जवेसु वा सामाइयं ?–

सव्वगयं संमत्तं० । ८-१४६ । ८३० ॥ **पढमंमि सव्वजीवा** (७९१) एताओ किंतिदारे भणिताओ । **केसुत्ति दारं गतं**। इदाणिं कहन्ति दारं, चउव्विहस्स सामाइकस्स कहं लंभो भवति?, जदा इमाणि ठाणाणि लद्धाणि भवंति तदा चरित्तसामाइयं लब्भति, काणि पुण ताणि ठाणाणि ?—

माणुस्सखेत्त० । ८-१४७ । ८३१ ॥ तत्थ ताव माणुस्सं इमेहिं दसहिं दिट्ठंतेहिं जहा दुल्लभं तहा परूवेति—

चोल्लगपासग० । ८-१४८ । ८३२ ॥ **चोल्लगत्ति**, जहा बंभदत्तस्स एगो कप्पडिओ ओलग्गओ, बहुसु आवतीसु अवत्थासु य सव्वत्थ ससहाओ आसी, तेण पवन्नं रज्जं, तस्स बारससंवच्छरिओ अभिसेओ, सो कप्पडिओ तत्थ अछियावंपि न लभति, ततोऽणेण उवाओ चिंतितो-वाहणा बंधिऊणं धयो कतो, ततो धयवाहएहिं समं पहाविंतो, रण्णा दिण्णो(ट्ठो) ओतिण्णेणं उवग्गहितो, अण्णे उण भणंति-ताहे तेणं दारवाले सेवमाणेण बारसमे संवत्सरे राया दिट्ठो, ताहे सो राया तं दट्ठूणं संभंतो, इमो सो वराओ जो मम दुक्खसहाओ, एत्ताहे से करेमि वित्तिं, रण्णा भणितो-भण किं देमि वित्तिं?, सो भणति-देहि ममं चोल्लए घरे, जाव सव्वंमि भरहे जाहे निट्ठियं होज्जा ताहे पुणोवि तुब्भं घरे, राया भणति- किं ते एतेण ?, देसं देमि, सुहं छत्तच्छायाए मायंगेहि य(अच्छ),ताहे सो चिंतेति-किं ममं एद्देहेण अहट्ठेण ?, एवं तेण भणिते ताहे तत्थेव पढमं जिमितो, रण्णा से जुगलगं दीणारो य

॥४४६॥

मनुष्य-भव प्राप्ते: दुर्लभत्वं "दश-द्रष्टांता:"

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

दिण्णो, एवं सो परिवाडीए सव्वेसु राउलेसु बत्तीसाए रायवरसहस्सेसु तेसिंपि जे भोइया तत्थ नगरे अणेगाओ कुलकोडीओ, सो नगरस्स चेव कया अंतं काहिति, ताहे पुणो गामे, ताहे पुणो भरहस्स, अवि सो वच्चेज्जा ण य माणुसत्तणाओ भट्ठो ।

पासयत्ति, चाणक्कस्स सुवण्णं नत्थि, ताहे केण उवादेण विढवेज्ज सुवण्णं, ताहे जंतपासगा कता, केई भणंति-वरदिण्णगा, एगो दक्खो पुरिसो सिक्खाविओ, दीणाराणं थालं भरियं, सो भणति-जइ ममं कोइ जिणति तो थालं गेण्हतु, अहं जति जिणामि तो एगं दीणारं जिणामि, तत्थ इच्छाए जंतं पाडति, एवं न तीरति जेतुं, जहा सो जिप्पति एवं माणुसलंभो अवि णाम विभासा ।

धण्णेत्ति जेत्तियाणि भरहे धण्णाणि ताणि सव्वाणि पिंडियाणि, तत्थ पत्थो सरिसवाणं छूढो, ताणि सव्वाणि अद्दूयालियाणि, तत्थ एगा जुण्णथेरी सुप्पं गहाय ते वियणेज्जा, पुणोवि पत्थं पूरेज्जा, अवि सा देवप्पभावेण पूरेज्जा न य माणुसाओ० । अहवा भणिता सव्वधण्णाणि विभत्ताणि करेहि ।

जूए, जथा-एगो राया तस्स रण्णो सभा खंभसतसंनिविट्ठा जत्थ अत्थाणियं देति, एक्केक्को य खंभो अट्ठसतं २ अंसियाणं, तस्स य पुत्तो रज्जकंखी, सो य राया थेरो, ताहे चिंतेति कुमारो-अहं एतं मारेतुं रज्जं गेण्हामि, तं च अमच्चेण नातं, ताहे सो राया विदितत्थो तं पुत्तं भणति-अम्हं जो कमं न सहति सो जूतं खेल्लति, जदि जिणति रज्जं से दिज्जति, किह पुण जिणियव्वं?, तुज्झं एगो आयो अवसेसा अम्हं, जदि तुमं एतं एक्किक्कं अंसितं अट्ठसतं वारा जिणसि तो तुब्भं रज्जं, अवि सो देवतप्पभावा विभासा ॥

रयणे । जथा एगो वाणियओ, तस्स पुत्ता, सो य महल्लो, रतणाणि से अत्थि, तत्थ मंहे अण्णे वाणियगा कोडिपडागाओ

उवट्ठवेंति, सो न उट्ठवेति, ताहे तस्स पुत्ता थेरे पउत्थे सव्वाणि विक्किणंति-पडागाओ काहामोत्ति, ते य वाणियगा समंततो गता पारसदीवादीणि, सो य थेरो आगतो, सुतं जथा विक्कियाणि, ते अम्बाडेति-लहुं आणेह, ताहे ते सव्वतो हिंडितुमारद्धा, किं ते सव्वरतणाणि पिणेज्जा ?, अवि य देवप्पभावेणं विभासा।

सुविणएत्ति, जथा-दोण्णि कप्पडिया, एगेण कप्पडिएण सुविणए चंदो पीतो, तेण कप्पडियाणं कहितं, तेहिं भणितं-चंदप्पमाणं पूयलियं लभिहिसि, लद्धा य घरच्छायणियाए, अण्णेणवि दिट्ठो, सो ण्हातो, ताहे फलं वा किंचि वा गहाय सुविणपाढकस्स कहेति, तेण भणितं-राया भविस्सति, इतो य सत्तमे दिवसे तत्थ राया अपुत्तो मतो, सो य निवण्णो अच्छति जाव आसो अहियासितो आगतो, तेण पट्ठे विलइओ, एवं सो य राया जातो, तांहे कप्पडिओ तं सुणेति, जहा तेणवि दिट्ठो एरिसओ सुविणओ, सो आदेसफलेण किर राया जातो, सो चिंतेति-वच्चामि जत्थ गोरसो, तं जेमेत्ता सुयामि, अत्थि पुण सो पेच्छेज्जा ?, अविय सो०, न य माणुसातो।

चक्केत्ति दारं-इंदपुरं नयरं, इंददत्तो राया, तस्स इट्ठाण वराण देवीणं बावीसं पुत्ता, अण्णे भणंति-एक्काए देवीए, ते सव्वे रज्जेसु रण्णो पाणसमा, अण्णा एगा अमच्चस्स धूता, सा जं परं परिणेंतेण दिट्ठेल्लिया, सा अण्णदा ण्हाता समाणी अच्छति, ताहे सा रण्णा दिट्ठा, का एसत्ति?, तेहिं भणितो-तुब्भं देवी, ताहे सो ताए समं एक्कं रत्तिं वुत्थो, सा य रितुण्हाया, तीसे गब्भो लग्गो, सा य अमच्चेण भणितेल्लिया-जया तुब्भं गब्भो लग्गति तदा ममं साहेज्जा, ताहे सो ताए सो दिवसो सिट्ठो वेला मुहुत्तो य,

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

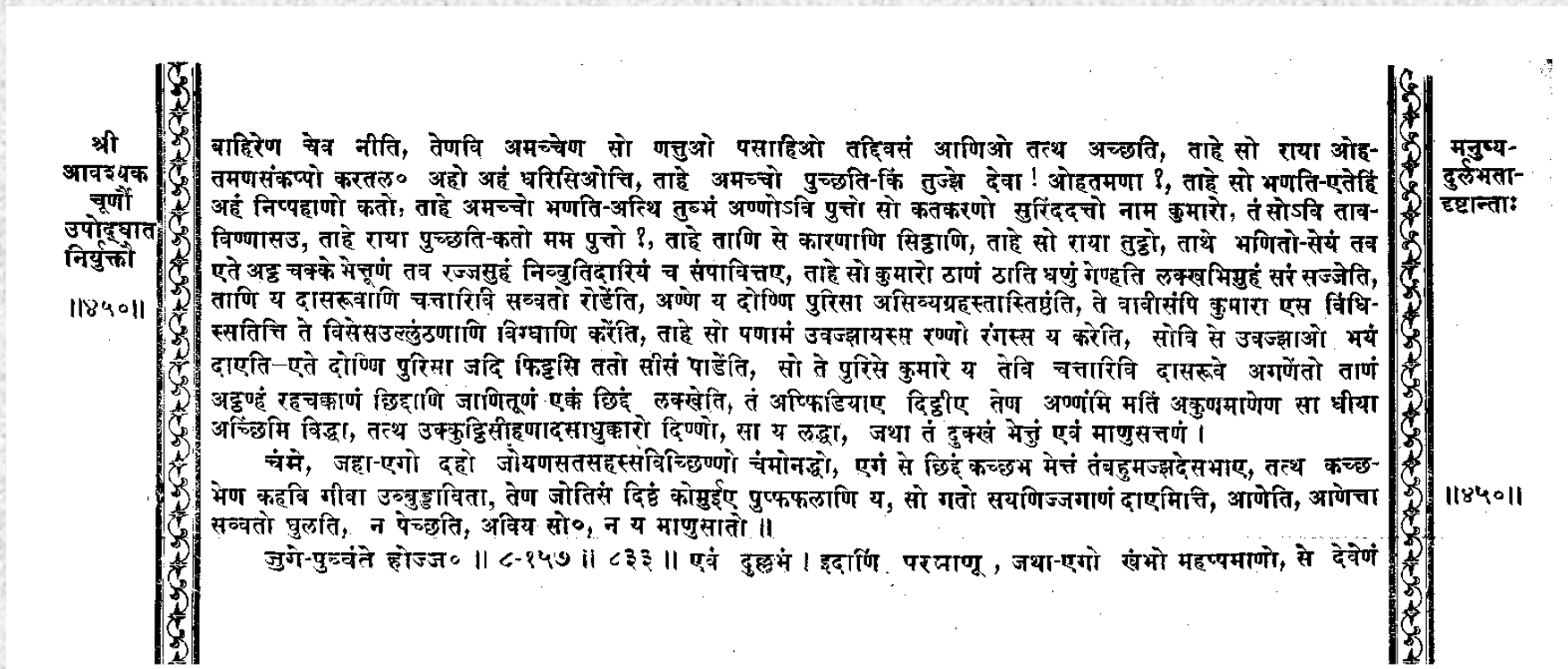
श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ

॥४४९॥

जं च रायाए उल्लावियं सातियंकारो, तेण तं पत्तए लिहियं, सो सारवेति जाव नवण्हं मासाणं दारओ जाओ, तस्स य दासचेडाणि तद्दिवसजातगाणि, तं०-अग्गियओ पव्वयओ बहुलिया सागरओ, ताणि सहजायगाणि, तेण सो कलायरियस्स उवणीओ, तेण लेहादियाओ गणियप्पहाणाओ कलाओ गहियाओ, जाहे तं चेडं गाहिंति आयरिया ताहे ताणि वट्टंति य वीउल्लंति य पुव्वपरिसएणं ताणेंति राडेंति, तेण ताणि न चेव गणियाणि, गहियाओ कलाओ, तेवि अण्णे गाहिज्जंति बावीसं कुमारा, जस्स ते आयरियस्स अप्पिज्जंति तं मत्थएहिं पिट्टेंति, अह ते कोइ पिट्टेति ताहे साहिंति अम्हामिस्सियाणं, ताहे ताओ भणंति-किं सुलभाणि पुत्तजंमाणि ?, ताहे ण सिक्खिता । इतो य मथुराए राया जितसत्तू, तस्स सुता सिद्धिका, अण्णे भणंति-णेव्वुती, सा रण्णो अलंकिता उवणीता, ताहे राया भणति-जो तुह भत्ता रोयति सो ते, ताहे ताए णातं-जो सूरो वीरो विक्कंतो होज्जा सो मम, सो पुण रज्जं देज्जा, ताहे सा तं बलवाहणं गहाय गता इंदपुरं नगरं, तत्थ इंददत्तरण्णो बहवे पुत्ता, अहवा दूतो पयट्टिओ, ताहे सव्वे रायाणो आवाहिया, ताहे तेण रण्णा सुतं, जहा-सा एति, ताहे हट्ठतुट्ठो उस्सितपडागं०, रंगो य कतो, तत्थेगंमि अक्खे अट्ठ चक्का असमाणं संभमंति, तेसिं परतो धीतिगा ठविता, सा पुण अच्छिमि विंधेतव्वा, राया संनद्धो सह पुत्तेहिं निग्गतो, ताहे सा कण्णा सव्वालंकारविभूसिया एगंमि पासे अच्छति, सो रंगो रायाणो य ते घरडंडभडभोइया जारिसो दोवतीए, एत्थ रण्णो जेट्ठपुत्तो सिरिसाली नाम कुमारो, सो भणितो-पुत्ता ! एसा दारिया रज्जं च घेत्तव्वं एतं राधं विंधेतूणं, ताहे सो तुट्ठो, अहं णूणं अण्णेहिंतो रायीहिंतो लद्धओ, ताहे सो भणितो-विंधत्ति, ताहे सो अकतकरणो तस्स समूहस्स मज्झे धणूतं घेत्तुं चेव ण चएति, कहवि णेण गहितं, तेण जत्तो वच्चतु ततोकडं वच्चतुत्ति मुक्कं, तं भग्गं, एवं कासइ एगं वोलीणं कासइ दोण्णि कासइ तिण्णि अण्णेसिं

॥४४९॥

मनुष्य दुर्लभता दृष्टान्ताः



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ

॥४५०॥

बाहिरेण चेव नीति, तेणवि अमच्चेण सो णत्तुओ पसाहिओ तद्दिवसं आणिओ तत्थ अच्छति, ताहे सो राया ओहतमणसंकप्पो करतल० अहो अहं धरिसिओत्ति, ताहे अमच्चो पुच्छति-किं तुज्झे देवा ! ओहतमणा ?, ताहे सो भणति-एतेहिं अहं निप्पहाणो कतो, ताहे अमच्चो भणति-अत्थि तुब्भं अण्णोऽवि पुत्तो सो कतकरणो सुरिंददत्तो नाम कुमारो, तं सोऽवि तावविण्णासउ, ताहे राया पुच्छति-कतो मम पुत्तो ?, ताहे ताणि से कारणाणि सिट्ठाणि, ताहे सो राया तुट्ठो, ताथे भणितो-सेयं तव एते अट्ठ चक्के भेत्तूणं तव रज्जसुहं निव्वुतिदारियं च संपावित्तए, ताहे सो कुमारो ठाणं ठाति धणुं गेण्हति लक्खभिमुहं सरं सज्जेति, ताणि य दासरूवाणि चत्तारिवि सव्वतो रोडेंति, अण्णे य दोण्णि पुरिसा असिव्यग्गहस्तास्तिट्ठंति, ते वावीसंपि कुमारा एस विधिस्सतित्ति ते विसेसउल्लुंठणाणि विग्घाणि करेंति, ताहे सो पणामं उवज्झायस्स रण्णो रंगस्स य करेति, सोवि से उवज्झाओ भयं दाएति—एते दोण्णि पुरिसा जदि फिट्टसि ततो सीसं पाडेंति, सो ते पुरिसे कुमारे य तेवि चत्तारिवि दासरूवे अगणेंतो ताणं अट्ठण्हं रहचक्काणं छिद्दाणि जाणितूणं एक्कं छिद्दं लक्खेति, तं अप्फिडियाए दिट्ठीए तेण अण्णंमि मतिं अकुणमाणेण सा धीया अच्छिमि विद्धा, तत्थ उक्कुट्ठिसीहणादसाधुक्कारो दिण्णो, सा य लद्धा, जथा तं दुक्खं भेत्तुं एवं माणुसत्तणं ।

चंमे, जहा-एगो दहो जोयणसतसहस्सविच्छिण्णो चंमोनद्धो, एगं से छिद्दं कच्छभ मेत्तं तंबहुमज्झदेसभाए, तत्थ कच्छभेण कहवि गीवा उव्वुड्डाविता, तेण जोतिसं दिट्ठं कोमुईए पुप्फफलाणि य, सो गतो सयणिज्जगाणं दाएमित्ति, आणेति, आणेत्ता सव्वतो घुलति, न पेच्छति, अविय सो०, न य माणुसातो ॥

जुगे-पुव्वंते होज्ज० ॥ ८-१५७ ॥ ८३३ ॥ एवं दुल्लभं ! इदाणिं परमाणू , जथा-एगो खंभो महप्पमाणो, से देवेणं

मनुष्य-दुर्लभता-दृष्टान्ताः

॥४५०॥

चुण्णेतुं अविभाइमाणि कातुणं नालियाए पक्खित्तो, पच्छा मंदरचूलियाठिएण फूमितो,ताणि नट्ठाणि,अत्थि पुण कोइ जो तेहिं चेव पोग्गलेहिं तमेव खंभं निव्वत्तेज्जा ?, नो तिणट्ठे०, एस अभावे, एवं नट्ठो माणुसाओ न पुणो० । अहवा सभा अणेगखंभसतसंनिविट्ठा, सा कालंतरेण झामिता पडिता, अत्थि तं पुण कोइ जो तेहिं चेव पोग्गलेहिं पुणो करेज्जा ?, नो तिनट्ठे०, एवं माणुसंपि दुल्लभं ।

एतेहिं दसहिं पदेहिं जहा माणुस्सं दुल्लभं१ एवं एतेहिं चेव दिट्ठंतेहिं खेत्तं आयरियं२ जाति३ कुलं४ आरोग्गं५ रूवं६ आयुं७ बुद्धी८सवणं धम्मस्स९गहणं१०तंमि य सद्धा११संजमो१२ तंमि य असढकरणं१३ लोगे दुल्लभाणि । एवं दुल्लभाणि एताणि दसहिं पदेहिं, एतेहिवि पदेहिं लद्धेहिं इमेहिं कारणेहिं दुल्लभं सामाइयं, जथा—

आलस्समोहवण्णा० । ८-१५८ । ८४१ । आलस्सिण साहूणं पासं नच्छियति १ अहवा निच्चप्पमत्तो मोहाभिभूतो इमं से कातव्वं नेच्छइ सुणेतुं २ अहवा अवज्ञा, किं एते जाणंते ? नग्गा हिंडंति ३ अथवा थंभेणं, किंचि जाणेज्जा, अहवा अट्ठविहस्स य तस्स अण्णतरेण थंभेणं ४ अहवा दट्ठूणं चेव पव्वइयए कोहो उप्पज्जति ५ पमाएणं पंचविहस्स अण्णतरेणं ६ अहवा किविणतामा एतेसिं किंचि दायव्वं होहित्ति तेण णच्छियति ७ भतेण वा एते णरगतिरियभयाइं दाएंति, अलाइं एतेहिं सुतेहिं ८ सोगेण धणसयणादिवियोगेण अभिभूतो ण अच्छियइ ९ अण्णाणेण वा कुपहेहिं मोहितो इमंमि से ण चेव धम्मसण्णा उप्पज्जति १० अहवा वक्खेवेणं अप्पणो निच्चमेव वाउलो ११ कोउहल्ले वा कुहेडगादिसिक्खणादिसु १२ अहवा रमणसीलो वट्टखेल्लियादिएहिं १३

एतेहिं कारणेहिं लद्धूण सु० ।८-१५९।८४२। अहवा कम्मरिवुजयेण सामाइयं लब्भति, सो य जयो सामग्गीय विणा न भवति, संजोगेण भवति, जथा -जोधस्स रिवुजयो, सा य सामग्गी इमा—

जाणावरण० ।८-१६०।८४३। जाणं रहो आसो हत्थी वा जदि नत्थि तो किं करेतु पाइक्को?, लद्धेसुवि आवरणं जदि कवयादि नत्थि तो एगप्पहारो कीरति, सति आवरणे पहरणेण विणा किं सक्का हत्थेण जुज्झितुं ?, सति पहरणे कुसलत्तं नत्थि, न जाणति किह जोहेतव्वं ?, सति कोसल्ले नीतीय विणा किं करेतु, समूहे मारिज्जति अवक्कमणं उक्कमणं अयाणंतो, जहा अगलुदत्तो दक्खत्तणेण फेडेति डेवेति वा जाव मुहं विडंबितं ताव सराण पूरियं । एतेसु सव्वेसुवि लाइएसु जदि ववसाओ नत्थि न चेव जुज्झति अणेच्छंतो, सति ववसाये सरीरेण असमत्थो किं करेतु ?, एतेण संपण्णो रिउं जिणति। एवमिहावि जाणं महव्वयाणि, आवरणं खंती, झाणं पहरणं, कुसलत्तणं कतजोगित्तं, नीती साहूणवि जहा इमं एतेण उवाएणं कातव्वं एतेण नवि, दक्खत्तं पडिलेहणवेयावच्चादीसु, ववसाओ तवसंजमकरणे उवसग्गसहणे वा दुग्गावतीए वा सरीरस्स जदि आरोग्गं, एतेहिं सामग्गीकारणेहिं सव्वेहिं कम्मरिवुं जिणति, ताहे सामाइयं लब्भति। अहवा इमेहिं कारणेहिं सामाइयं लब्भति—

दिट्ठे सुतमणु० ॥ ८-१६१ ॥ ८४४ ॥ दट्ठुं बोधी, जहा सेज्जंसो उसभसामिं, सयंभुरमणमच्छो वा जहा पडिमासंठिते मच्छे पउमे य दट्ठूणं तित्थगर०,मच्छपउमाणं सव्वसंठाणाणि अत्थि, मोत्तुं वलयसंठाणं, सोत्तूणं जहा आणंदकामदेवाणं तत्थ- तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामियं नाम नगरे होत्था, दूतिपलासए चेतिए, जितसत्तू राया, तत्थ णं आणंदे नामं

आलस्याद्या विघ्नाः यानावरणाद्युपमा व्रतादीनां

गाहावती परिवसति, अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्णविपुलभवणसयणासणजाणवाहणाकिण्णे बहुधणबहुधण्णजातरूवरयए आयोगपयो-गसंपउत्ते विच्छड्डितपउरभत्तपाणे बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूते बहुजणस्स अपरिभूते यावि होत्था, तस्स णं सिवणंदा नाम भारिया, वण्णओ, से णं आणंदे तत्थ बहूणं राईसर जाव सत्थवाहप्पभितीणं अट्ठारसण्हं सेणिप्पसेणीणं सयस्स कुडुंबस्स कज्जेसु कोडुंबेसु य जाव पडिपुच्छणिज्जे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था जाव चक्खुभूतेत्ति,तस्स णं णगरस्स बहिया अदूरसामंते उत्तर-पुरत्थिमे दिसिभाए कोल्लाए नाम सन्निवेसे होत्था, तस्स णं आणंदस्स केइ मित्तणाति जाव परिजणे वसति अड्ढे जाव अपरि भूते । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव संपाविउकामे वाणियगामस्स दूतिपलासए चेतिए समोसढे जाव विहरति । परिसा निग्गता, जितसत्तू निग्गतो जाव पज्जुवासति । तते णं से आणंदे बहुजण जाव एतमट्ठं निसम्म ण्हाति जाव पादचारवि-हारेणं जाव पज्जुवासति । ततेणं सामी आणंदस्स तीसे य परिसाए धम्मं परिकहेति, परिसा पडिगया, तते णं से आणंदे धम्मं सोच्चा हट्ठ जाव उट्ठेति उट्ठेत्ता सामिं वंदति नमंसति नमंसेत्ता एवं वयासी-सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, किं तु जथा णं देवाणुप्पियाणं अंतियं राईसरादयो चइत्ता हिरण्णं जाव पव्वयंति नो खलु अहं तहा संचाएमि, अहेणं दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामित्ति, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं, तते णं तस्स सामी सावगध-म्मविहिं उवदंसेति, सेवि य णं पडिवज्जति, एवं जथा उवासगदसासु, इच्छापरिमाणं पुण करेमाणे णण्णत्थ चउहिं हिरण्ण-कोडीहिं निहाणपउत्तेहिं एवं वड्ढिपउत्तेहिं परिमलपवित्थरोवउत्तेहिं, अवसेसं हिरण्णविधिं पच्चक्खाति जावज्जीवाए, एवं नण्णत्थ चउहिं हलसतेहिं नियत्तणसतिएणं हलेणं, णण्णत्थ चउहिं दाससतेहिं, चउहिं दासीसतेहिं, चउहिं वएहिं वयपवरेहिं दस-

गोसाहस्सिएणं वएणं, चउहिं भंडीसएहिं दिसाजत्तिएहिं, चउहिं भंडीसएहिं संवहणिएहिं, चउहिं वहणसतेहिं दिसाजत्तिएहिं सतसाहस्सिएणं वहणेणं, चउहिं वहणसतेहिं संवहणिएहिं, एवमादिं पंचअतियारपेयालविसुद्धं करेति जाव एवं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस वासाइं विइक्कंताइं, पन्छा एक्कारस उवासगपडिमाफासणं एक्कारसपडिमं ठितस्स ओहिण्णाणुप्पत्ती- तिदिसिं लवणसमुद्दे पंचजोयणसतियखेत्तपासणं उत्तरेणं चुल्लहिमवंतं जाव उड्ढं जाव सोहम्मो कप्पो अहे जाव लोलुयपत्थडंतरं चुलसीतिवाससहस्सट्ठितिगं जाणति पासति, एवं से आणंदे समणोवासए उत्तमेहिं सीलव्वएहिं जाव अप्पाणं भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासयपरियागं पाउणित्ता एक्कारसोवासगपडिमाओ संमं काएण फासेत्ता मासियाए संलेहणाए आलोइयपडिक्कंते समाधिपत्ते कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरच्छिमेणं अरुणे विमाणे देवत्ताए उववण्णे चउपलियट्ठितिके, ततो चुए महाविदेहे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति ॥

एवं कामदेवस्सवि, चंपा नगरी पुण्णभद्दे चेइए जितसत्तू राया कामदेवे गाहावती भद्दा भारिया सामिआगमणं । जहा आणंदे तेणेव कमेण सावगधम्मं पडिवज्जति, नवरं छ हिरण्णकोडीओ जाव छव्वहणसतात्ति तहेव जाव एक्कारसमं पडिमं पडिवण्णस्स एगे देवे पिसायहत्थिपण्णगरूवेण उवसग्गेति, से य न खुभति जथा उवसग्गदसासु जाव सामी समणे आमंतेत्ता एवं वयासी-जदि ताव अज्जो ! कामदेवेणं समणोवासगेणं उवसग्गा संमं सहिता किमंग पुण अज्जो ! सवणेण वा समणीय वा दुवालसंगं गणिपिडगं अहिज्जमाणेणं ?, ततेणं ते समणा णिग्गंथा तं उवदेसं संमं विणएण पडिस्सुणेंति, एवं जाव कामदेवे सामिणा उववूहिते-धण्णे सि णं तुमं कामदेवा ! जाव जस्स णं णिग्गंथे पावयणे तव इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता जाव अभि-

॥४५४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

समण्णागता, ततेणं से कामदेवे हट्ठे जाव वंदित्ता पडिगते, एवं जधा आणंदे तहेव जाव सिज्झिहिति, नवरं अरुणाभे विमाणे, सेसं तं चेव ।

अणुभूते जधा—वक्कलचीरिस्स । को य वक्कलचीरी ?, तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपानगरीए सुधम्मगुणहरो समोसढो, कोणिओ राया वंदितुं निग्गते कतप्पणामो य जंबुनामरूववंदसणविम्हितो गणहरं पुच्छति—भगवं ! इमीसे महईए परिसाए एस साहू घतसित्तोव्व वण्ही दित्तो मणोहरसरीरो य, किं मण्णे एतेण सीलं सेवितं ? तवो वा चिण्णो दाणं वा दिण्णं जतो से एरिसी तेयसंपत्ती?, ततो भगवता भणितो—सुणाहि रायं जहा तव पितुणा सेणिएण रण्णा पुच्छितेण सामिणा कहितं—तेणं कालेणं तेणं समएणं गुणसिलए चेतिए सामी समोसरितो, सेणिओ राया तित्थगरदंसणसमुस्सुओ वंदओ णिज्जाइ, तस्स य अग्गाणीए दुवे पुरिसा कुडुंबसंवडं कहं करेमाणा पस्संति एगं साधुं एगचलणपरिट्ठितं समूसवियबाहुजुयलं आतावेंतं, तत्थेक्केण भणितं—अहो एस महप्पा रिसी सूराभिमुहो तप्पति, एतस्स सग्गो मोक्खो वा हत्थगतोत्ति, बितिएण पच्चभिण्णाओ, ततो भणति—किं ण याणसि एस राया पसण्णचंदो ?, कतो एयस्स धम्मो ?, पुत्तोऽणेण बालो ठवितो, सो य मंतीहिं रज्जाओ मोइज्जति, सोऽणेण वंसो विणासिओ, अंतेउरजणोवि ण णज्जति किं पाविहितित्ति, तं च से वयणं झाणवाघातं करेमाणं सुतिपहमुवगतं, ततो सो चिन्तेतुं पयत्तो–अहो ते अणज्जा अमच्चा मया संमाणिया निच्चं पुत्तस्स मे विपडिवण्णा, जदि हं होंतो एवं च चेट्ठंता तो णे सुसासिते करेंतोमि, एवं च से संकप्पयंतस्स तं कारणं वड्ढमाणमिव जातं,तेहि य समं जुद्धजोग्गिं मणसा चेव काउमारद्धो, पत्तो य सेणिओ राया तं पदेसं, वंदितोऽणेण विणएण, पेच्छति णं झाणनिच्चलत्थं, अहो अच्छरितं एरिसं तवस्सिसामत्थं रायरिसिणो पसन्नचंद-

स्सत्ति चिन्तयन्तो पत्तो तित्थगरसमीवं, वंदितूण विणएण पुच्छति—भगवं ! पसण्णचंदो अणगारो जेमि समए मता वंदिओ जदि तंमि समए कालं करेज्ज का से गती भवेज्जा ?, भगवता भणितं- सत्तमपुढविगमणजोग्गो, ततो चिंतेति—साहुणो कहं नरकगमणंति ?, पुणो पुच्छति--भगवं ! पसन्नचंदो जइ इदाणिं कालं करेज्ज कं गतिं वच्चेज्जत्ति?, भगवता भणितं--सव्वट्ठसिद्धिगमणजोग्गो इदाणिंति, ततो भणति—कह इमं दुविहं वागरणंति ?, नरगामरेसु तवस्सिणोत्ति, भगवता भणितं--झाणविसेसेण, तंमि य इमंमि समए एरिसी तस्स असातसातकम्मादाणता, सो भणति- कहं ?, भगवता भणितं- तव अग्गाणितपुरिसमुहनिग्गतं पुत्तपरिभववयणं सोतूण उज्झितपसत्थज्झाणे तुमे वंदिज्जमाणो मणसा जुज्झति तिव्वं पराणीएण समं, तओ सो तंमि समए अहरगतिजोग्गो आसि, तुमंमि य उवगते जातकरणसत्ती सीसावरणेण पहरामि परंति लोइते सीसे हत्थं निक्खिवंतो पडिबुद्धो, अहो अकज्जं, कज्जं पयहितूण परत्थे जदिजणविरुद्धं मग्गमवतिण्णोत्ति चिंतेतूण निंदणगरहणं करेंतो मंथं पणमितूण तत्थ गतो चेव आलोइयपडिक्कंतो पसत्थज्झाणी संपत्तं तं चउणेण कम्मं खवितं सुभं अज्जितं, तेण पुण कालविभागेण दुविहगतिनिद्देसो । ततो कोणिओ पुच्छति- कहं वा भगवं ! बालं कुमारं ठवेतूण पसण्णचंदो राया पव्वइतो ?, सोतुमिच्छं, ततो भणति-पोतणपुरे णगरे सोमचंदो राया, तस्स धारिणी देवी, सा कदाइ तस्स रण्णो ओलोयणगतस्स केसे रएति, पलितं दट्ठूणं भणति- सामि ! दूतो आगतोत्ति, रण्णा दिट्ठो वितारिया, ण य पस्सति अपुव्वं जणं, ततो भणति- देवि ! दिव्वं ते चक्खु, तीय पलियं दंसितं, धम्मदूतो एसोत्ति, तं च दट्ठूण दुम्मणस्सितो राया, तं नातूण देवी भणति- लज्जह वुड्ढभावेण ?, निवारिज्जिही जणो, ततो भणति-देवि ! न एवं, कुमरो बालो असमत्थो पयापालणे होज्जत्ति मे मण्णु जातं, पुव्वपुरिसाणुचिण्णेण मग्गेण ण गतोऽहंति, न

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

विचारो, तुमं पसन्नचंदं सारक्खमाणी अच्छसुत्ति, सा णिच्छिता गमणे, ततो पुत्तस्स रज्जं दातूण धातिदेविसहितो दिसापोक्खियतावसत्ताए पदिक्खितो चिरसुण्णे आसमपदे ठितो,देवीय पुव्वाहूतो गब्भो परिवद्धति,पसण्णचंदस्स य चारपुरिसेहिं निवेदितो पुण्णसमए पसूता, कुमारो वक्कलेसु ठवितोत्ति वक्कलचीरित्ति, देवी विसूइयारोगेण मता, वणमहिसीदुद्धेण य कुमारो वड्ढाविज्जति, धातीवि थोवेण कालेण कालगता, किढणेण वहति रिसी वक्कलचीरिं, परिवड्ढितो य लिहितूण दंसिओ चित्तकोरीहिं पसण्णचंदस्स, तेण सिणेहेण गणिकादारियाओ रूवस्सिणीओ खंडमयाविविहफलेहिं णं लंभेहित्ति पत्थविताओ, ताओ णं फलेहिं मधुरेहि य वयणेहिं सुकुमालपीणुण्णतथणसंपीलणेहि य लोभेन्ति, सो कतसमवातो गमणे जाव अतिगतो तावसभंडगं घेत्तुं ताव रुक्खारूढेहिं चारपुरिसेहिं तासिं सण्णा दिण्णा रिसी आगतोत्ति, ताओ दुतमवक्कंताओ, सो तासिं वीधिमणुसज्जमाणो ताओ अप्पस्समाणो अण्णतो गतो, सो अडवीय परिब्भमंतो रहगतं पुरिसं दट्ठूण तातं अभिवादयामित्ति भणंतो रहिणा पुच्छितो–कुमार ! कत्थ गंतव्वं ?, सो भणति-पोतणं नाम आसमपदं, तस्स य पुरिसस्स तत्थेव गंतव्वं, तेण समयं वच्चमाणो रथिणो भारितं तातत्ति आलावति, तीय भणितो-को इमो उवयारो?, रथिणा भणितं-सुंदरि ! इत्थिविरहिते णूणं एस आसमपदे वड्ढितो, ण याणति विसेसं, न से कुप्पितव्वं, तुरये भणति-किं इमे मिगा वाहिज्जंति तात ?, रथिणा भणितो–कुमार ! एते एतंमि चेव कज्जे उवकज्जंति, न एत्थ दोसो, तेणवि से मोदगा दिण्णा, सो भणति-पोयणासमवासीहिं मे कुमारेहिं एतारिसाणि चेव फलाणि दत्तपुव्वाणित्ति, वच्चंताण य से एक्कचोरेण सह जुद्धं जातं, रथिणा गाढप्पहारो कतो, सिक्खागुणपरितोसिओ भणति-अत्थि विउलं धणं तं गेण्हसु सूरत्ति, तेहिं तीहिंवि जणेहिं रहि भरितो, कमेण पत्ता पोतणं, मोल्लं गहाय विसज्जितो, उडयं मग्गामुत्ति

सो भमन्तो गतो गणियाघरे-तात! अभिवादये,देह इमेण मुल्लेण उडयंति,गणियाए भणिओ-दिज्जति नि(ञ्जि)वेसत्ति,तीय कासवओ सद्दाविओ, ततो अणिच्छंतस्स कतं णहपरिकम्मं, अवणीयवक्कलो य वत्थाभरणविभूसितो गणियादारियाय पाणिं गाहितो, ण्हविओ य, मा मे रिसिवेसं अवणेहित्ति जंपमाणो ताहिं भण्णति-जे उडगत्था इहमागच्छंति तेसिं एरिसो उवयारो कीरति, ताओ व गणियाओ उवगायमाणीओ वधूवरं चिट्ठंति, जो य कुमारविलोभणनिमित्तं रिसिवेसो जणो पेसितो सो आगतो कहेति रण्णो- कुमारो अडविं अतिगतो, अम्हेहिं रिसिस्स भएण न तिण्णो सद्दाविउं, ततो राया विसण्णमानसो भणति-अहो अकज्जं, न य पितुसमीवे जातो न य इहं, न णज्जति किं पत्तो होहिति?, चिंतापरो अच्छति, सुणति य मुतिंगसद्दं, तं च से सुतिए वड्ढमाणं, भणति-मते दुक्खिते को मण्णे सुहितो गंधव्वेण रमतित्ति ?, गणियाए अहितेण जणेण कहितं, सा आगता पादपडिता, रायं पसन्नचंदं विन्नवेति-देव ! नेमित्तिसंदेसो मे-जो तावसरूवो तरुणो गिहमागच्छेज्जा तस्समेव दारियं देज्जासि, सो उत्तमपुरिसो, तं संसित्ता विउलसोक्खभागिणी होहितित्ति, सो य जहा भणिओ णेमित्तिणा अज्ज मे गिहमागतो,तं च संदेसं पमाणं करेंतीए दत्ता से मया दारिया, तन्निमित्तं उस्सवो, न याणं कुमारं पणट्ठं, एत्थ मे अवराहं मरिसेहत्ति, रण्णा संदिट्ठा मणुस्सा जेहिं आसमे दिट्ठपुव्वो कुमारो, तेहिं गतेहिं पच्चभियाणिओ, निवेदितं च पियं रण्णो, परमपीतिमुव्वहंतेण य वधूसहितो सगिहमुवणीओ, सरिसकुलरूवजोव्वणगुणाण य रायकण्णयाण य पाणिं गाहितो, कतरज्जसंविभागो य जहासुहमभिरमइ, रहिओ य चोरदत्तं दव्वं विक्किणंतो रायपुरिसेहिं चोरोत्ति गहितो, चीरिणा मोइतो पसण्णचंदविदितं, सामचंदोवि आसमे कुमारं अपस्समाणो सोगसागरविगाढो सन्नचंदसंपेसितेहिं पुरिसेहिं नगरगतवक्कलचीरिनिवेदतेहिं कहंचि संठवितो, पुत्तमणुसंभरंतो अंधो जातो, रिसीहिं साणुकंपेहिं

कवफलसंविभागो तत्थेव आसमे निवसति, गतेसु य बारससु वासेसु कुमारो अड्ढरत्ते पडिबुद्धो पितरं चिंततुमारद्धो-किह मण्णे तातो मता णिग्घिणेण विरहितो अच्छातीत्ति पिउदंसणसमुस्सुगो पसण्णचंदसमीवं गंतूणं विण्णवेति-देव ! विसज्जेह मं उक्कंठितोहं तातस्स, तेणं भणितो- समयं वच्चामो, गता य आसमपदं, निवेदितं च रिसिणो- पसण्णचंदो पणमातित्ति, चलणोवगतो य णेण पाणिणा परामुट्ठो, पुत्त ! निरामयोसित्ति?, वक्कलचीरी पुणो अवदासिओ, चिरकालधरियं च से बाहं मुयंतस्स ओमिल्लाणि णयणाणि, पस्सति ते दोवि जणा, परमतुट्ठो पुच्छति य सव्वं गतं कालं, वक्कलचीरीवि कुमारो अतिगतो उदयं, पस्सामि ताव तातस्स ताव-सभडयं अणुवेक्खिज्जमाणं केरिसं जातंति, तं च उत्तरीयंतेण पडिलेहेउमारद्धो जतिविव पत्तं पायकेसरियाए, कत्थ मण्णे मया एरिसं करणं कतपुव्वंति विधिमणुसरंतस्स तदावरणक्खएण पुव्वजातिस्सरणं जातं, सुमरती य देवमाणुस्सभवे य, सामण्णं पुरा कतं संभरितूण वेरग्गमग्गं समोतिण्णो, धम्मज्झाणविसतातीतोवि विसुज्झमाणपरिणामो य चितियसुक्कज्झाणभूमिमतीक्कंतो, नट्ठमोहावरणविग्घो केवली जातो य, परिकहिति धम्मो जिणप्पणीतो पितुणो पसन्नचंदस्स य रण्णो, ते दोऽवि लद्धसम्मत्ता पणता सिरेहिं केवलिणो सुट्ठु मे दंसितो मग्गोत्ति, वक्कलचीरी पत्तेयबुद्धो गतो पितरं गहेतूण महावीरवद्धमाणसामिस्स पासं, पसन्नचंदो नियकपुरं, जिणो य भगवं सगणो विहरमाणो पोतणपुरे मणोरमे उज्जाणे समोसरिओ, पसन्नचंदो वक्कलचीरिवयण-जणितवेरग्गो परममणहरतित्थगरभासितामतवाड्ढितुच्छाहो बालं पुत्तं रज्जे ठविऊण पव्वइतो, अधिगतसुत्तत्थो तवसंजमभावि-तमती मगहपुरमागतो, तत्थ य सेणिएण सादरं वंदितो आतावेंतो, एवं निक्खंतो जाव भगवं नरगामरगतीसु उक्कोसट्ठितिजोग्गतं झाणपच्चयं पसण्णचंदस्स वण्णेति ताव य देवा तंमि पदेसे उवतिता, पुच्छितो य अरहा सेणिएण रण्णा- किण्णामित्तो एस देव-

संपादोत्ति ?, सामिणा भणितं- पसण्णचंदस्स अणगारस्स णाणुप्पत्तीहरिसिता देवा उवागतत्ति । तत्तो पुच्छति–एयं महाणुभावं केवलनाणं कत्थ मण्णे वोच्छिज्जिहिति ?, तं समयं बंभिंदसमाणो विज्जुमाली देवो चउहिं देवीहिं सहितो वंदितुमुवगतो उज्जोवेन्तो दस दिसाओ, सो दंसिओ भगवता, एवमादि जहा **वसुदेवहिंडीए**, एत्थ पुण वक्कलचीरिणो अहिगारो । एवं अणुभूते लंभो भवति । कम्माणं खए जथा **चंडकोसितस्स**, उवसमे जहा **अंगरिसिस्स**, मणवइकायजोगेहिं पसत्थेहिं देवता वा अणुकंपति चतुसु ठाणेसु, एतेसिं निगमणं—

माणुस्स० ॥ ८३१ ॥ **आलस्स०** ॥ ८४१ ॥ **जाण०** ॥ ८४३ ॥ **दिट्ठे सुत०** ॥ ८४४ ॥ एते चत्तारि ठाणा, अहवा इमेहिं कारणेहिं बोही सुदुल्लहावि लब्भति— **अणुकंपऽकाम०** ॥ ८-१६२ ॥ ८४५ ॥ तत्थ अणुकंपाए ताव जथा— **सो बाणरजूभवती०** ॥ ८-१६४ ॥ ८४७ ॥

बारवती णगरी कण्हो वासुदेवो, तस्स दो वेज्जा-धन्नंतरी य वेतरणी य, धन्नंतरी अभविओ वेतरणी भविओ, वेतरणी साधूण गिलाणाण पिएण साहति,जं जस्स कातव्वं तं तस्स सव्वं साहति, जहा साधूणं फासुतं तथा साहति, फासुतेण पडोयारेण साहति, जदि सो अप्पणो ओसहाणि अत्थि तो देति। सो पुण धन्नन्तरी जाणि सावज्जाणि ताणि साहति असाहुप्पायोग्गाणि. जाहे भण्णति-अम्हं कतो? ताहे भणति-न मए समणाणं अट्ठाए वेज्जयसत्थं अज्झाइयं, ते दोवि महारंभा महापरिग्गहा य सव्वाए बारवतीए तिगिच्छं करेंति । अण्णदा कण्हो वासुदेवो तित्थगरं पुच्छति- एते बहूणं ढंकाण य जाव वहकरणं कातूण कहिं गच्छिहिति ?, ताहे सामी साहति-एस

धन्नंतरी अपतिट्ठाणे णरए उववज्जिहिति, एस पुण वेतरणी कालंजरवत्तणीए गंगाए महानदीए विंझयस्स अंतरा वाणरत्ताए पच्चायाहिति, ताहे सो उम्मुक्कबालभावो सयमेव जूहपतित्तणं काहिति, तत्थण्णदा साहुणो सत्थेण समं वीतिवयंति, तत्थ एगस्स साहुस्स सल्लो पादेसु भग्गो, ताहे ते भणंति-अम्हे पडिच्छामो, सो भणति- मा सव्वे मरामो, वच्चह तुब्भे, अहं भत्तं पच्चक्खामि, ताहे निब्बंधं णातूणं सोवि सल्लो न तीरति नीणेतुं पच्छा थंडिल्लं पावितो छाहिं च, तेवि गता । ताहे सो वानरगजूहवती तं पदेसं एति जत्थ सो साधू जाव पुरिल्लेहिं दट्ठुं किलिकिलाइयं, ताहे सो किलकिलेंते दट्ठूण रुट्ठो जा दिट्ठो सो तेण साधू, तस्स तं साधुं दट्ठूणं ईहावूहा, कहिं मए एरिसो दिट्ठो ?, ताहे तस्स सुभेणं परिणामेणं जातिस्सरणं समुप्पण्णं, सव्वं बारवतिं संभरति, ताहे तं साहुं वंदति, तं च से सल्लं पेच्छति, ताहे सो तिण्णिच्छं सव्वं संभरति, ताहे गिरिं विलग्गो सल्लुद्धरणाणि ओसहाणि संरोहणि य उच्चारेति, ताहे सल्लुद्धरणं(काउं)पाए अल्लियावेंति, ताहे सो सल्लो एगन्ते पाडितो, संरोहणीय पउणावितो, ताहे तस्स साहुस्स पुरतो अक्खराणि लिहति जहाऽहं वेतरणी नाम वेज्जो होसुं पुव्वभवे बारवतीए, एतेहिवि सो सुयओ, ताहे सो साधू से धम्मं कहेति, ताहे सो भत्तं पच्चक्खाति, तिण्णि रातिंदियाणि जाव सहस्सारं गतो, ताहे ओहिं पउंजति जाव पेच्छति तं सरीरगं तं च साहुं, ताहे आगतो तं देविड्ढिं दाएति, भणति-तुब्भं पभावेण, भणह किं करेमि ?, ताहे साहरिओ जहिं ते अण्णे साहवो, ते पुच्छंति- किहसि आगतो ?, ताहे सव्वं साहति, एवं तस्स सम्मत्तसामाइयसुतअभिगमो जातो, अणुकंपाए मोइओ अप्पा, अंतराणि रायपायोग्गाणि, ततो चुतस्स चरित्तसामाइयं भविस्सति सिद्धी य ॥

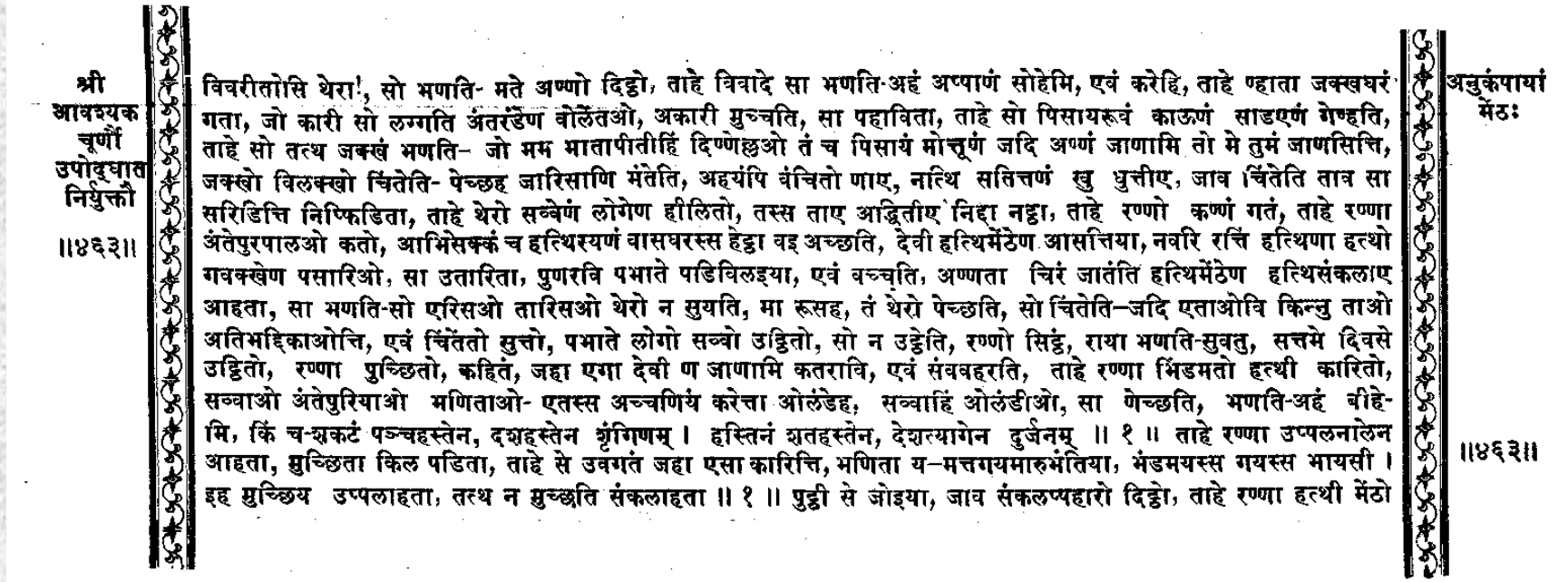
अकामनिज्जराए वसंतपुरं नगरं, तत्थेगा इब्भवधूगा नदीए ण्हाति, अण्णो य तरुणो तं दट्ठूण भणति-सुण्हातं ते पुच्छति

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ ॥४६२॥

एस नदी मत्तवारणकरोरु । एते य नदीरुक्का वयं च पाएसु ते पणता ॥ १ ॥ ताहे सावि तं भणति-सुभगा होंतु नदीओ चिरं च जीवंतु जे नदीरुक्खा । सुण्हायपुच्छगाणं घत्तीहामो पियं कातुं ॥२॥ ताहे सो तीए णं घरं वा बारं वा न जाणतित्ति । अन्नपानैरेद्धालां, यौवनस्थां विभूषया । वेश्यास्त्रीमुपचारेण, वृद्धां कर्कशसेवया ॥ १ ॥ तीसे य पीतिज्जगाणि चेडरूवाणि रुक्खे पलोएंताणि अच्छंति, तेण तेसिं पुप्फाणि फलाणि य दिण्णाणि, पुच्छिताणि य– का एसा? कस्स वा?, तेहिं भणितं-अमुगस्स सुण्हा, ता सो तीसे अतियारं णो लभेति, चिंतेति, चरिगा भिक्खस्स एति, सा च- कुसुंभसदृशप्रभं तनुसुखं पटप्रावृता, नवागरुविलेपनेन शरदिंदुलेखा इव । यथा हसति भिक्खुणी सललितं विटैर्वीदिता, ध्रुवं सुरतगोचरे चरति गोचरान्वेषिणी ॥ १ ॥ तं ओलग्गति, सा तुट्ठा भणति– किं करेमि ?, अमुगस्स मं भणाहि, सा गता, भणिता य-जहा अमुओ ते एवंगुणजाती पुच्छति, तीए रुट्ठाए पत्तुल्लगाणि धोवंतीए मसिलित्तेण हत्थेण पट्ठीए आहता पंचंगुलियं, पच्छादारेण य निच्छूढा, सा गता साहति-नामंपि न सहति, तेण णातं जहा कालपंचमीए, ताहे पंचमदिवसे पुणरवि पत्थविता पवेसजाणणाणिमित्तं, ताए सलज्जाए आहणितूणं असोगवणिताए छिंडियाए निच्छूढा, सा गता साहति जथा नामंपि न सहति आहणित्ता य अवरदारेण धाडितामि, तेण णाओ पवेसो, तेण सो अवद्दारेण अतिगतो असोगवणिताए, सुत्ताणि जाव ससुरेण दिट्ठाणि, तेण णातं, जहा- न होति मम पुत्तोत्ति, ताहे से पादाओ णेउरं गहितं, चेतियं च ताए भणितो य सो- नास लहुं, सहायकिच्चं करेज्जासि, पच्छा इतरी गंतूण भत्तारं भणति– धम्मो एत्थ असोगवणितं जामो, गताणि य सुत्ताणि य, जाहे सो सुत्तो ताहे उट्ठवेति, उट्ठवेत्ता भणति– तुब्भं एतं कुलाणुरूवं जं ममं सुत्तियाए ससुरो पादातो नेउरं गेण्हति?, सो भणति-सुण्हाहि, पभाए लभिहिसि, थेरेण सिट्ठं, सो रुट्ठो भणति–

अकामनिर्जरायां मेंठः

॥४६२॥



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४६३॥

विचरीतोसि थेरा!, सो भणति- मते अण्णो दिट्ठो, ताहे विवादे सा भणति-अहं अप्पाणं सोहेमि, एवं करेहि, ताहे ण्हाता जक्खघरं गता, जो कारी सो लग्गति अंतरंडेण वोलेंतओ, अकारी मुच्चति, सा पहाविता, ताहे सो पिसायरूवं काऊणं साडएणं गेण्हति, ताहे सो तत्थ जक्खं भणति- जो मम मातापीतीहिं दिण्णेल्लओ तं च पिसायं मोत्तूणं जदि अण्णं जाणामि तो मे तुमं जाणसित्ति, जक्खो विलक्खो चिंतेति- पेच्छह जारिसाणि मंतेति, अहयंपि वंचितो णाए, नत्थि सतित्तणं खु धुत्तीए, जाव चिंतेति ताव सा सरिडित्ति निप्फिडिता, ताहे थेरो सव्वेण लोगेण हीलितो, तस्स ताए अद्धितीए निद्दा नट्ठा, ताहे रण्णो कण्णं गतं, ताहे रण्णा अंतेपुरपालओ कतो, आभिसेक्कं च हत्थिरयणं वासघरस्स हेट्ठा वइ अच्छति, देवी हत्थिमेंठेण आसत्तिया, नवरि रत्तिं हत्थिणा हत्थो गवक्खेण पसारिओ, सा उतारिता, पुणरवि पभाते पडिविलइया, एवं वच्चति, अण्णता चिरं जातंति हत्थिमेंठेण हत्थिसंकलाए आहता, सा भणति-सो एरिसओ तारिसओ थेरो न सुयति, मा रूसह, तं थेरो पेच्छति, सो चिंतेति–जदि एताओवि किन्नु ताओ अतिभद्दिकाओत्ति, एवं चिंतेंतो सुत्तो, पभाते लोगो सव्वो उट्ठितो, सो न उट्ठेति, रण्णो सिट्ठं, राया भणति-सुवतु, सत्तमे दिवसे उट्ठितो, रण्णा पुच्छितो, कहितं, जहा एगा देवी ण जाणामि कतरावि, एवं संववहरति, ताहे रण्णा भिंडमतो हत्थी कारितो, सव्वाओ अंतेपुरियाओ भणिताओ- एतस्स अच्चणियं करेत्ता ओलंडेह, सव्वाहिं ओलंडीओ, सा णेच्छति, भणति-अहं वीहेमि, किं च-शकटं पञ्चहस्तेन, दशहस्तेन शृंगिणम् । हस्तिनं शतहस्तेन, देशत्यागेन दुर्जनम् ॥ १ ॥ ताहे रण्णा उप्पलनालेन आहता, मुच्छिता किल पडिता, ताहे से उवगतं जहा एसा कारित्ति, भणिता य–मत्तगयमारुभंतिया, भंडमयस्स गयस्स भायसी । इह मुच्छिय उप्पलाहता, तत्थ न मुच्छति संकलाहता ॥ १ ॥ पुट्ठी से जोइया, जाव संकलप्पहारो दिट्ठो, ताहे रण्णा हत्थी मेंठो

अनुकंपायां मेंठः

॥४६३॥

सा य तिण्णिवि छिण्णकडए विलइताणि, मेंठो भणितो–पाडेहि हत्थिं, दोहिं पासेहिं वेलुयग्गाहा ठिता, जाव एगो पादो आगासे कतो, जणो भणति- किं एस तिरिओ जाणति ?, एताणि मारेतव्वाणि, तहावि राया रोसं न मुयति, ततो दो पादा आगासे, ततियवाराए तिण्णि आगासे, एगेण ठितो, ताहे लोगेण अक्कंदो कतो, भणितो– किं एतं रतणं विणासेह ?, ताहे रण्णो चित्तं ओगलितं, भणितो-तरासि हत्थिं नियत्तेउं ?, भणति– जदि अभयं देसि ?, दिण्णं, तेण अंकुसेण नियत्तिओ, जहा भमित्ता थले ठितो, ताणि उत्तारित्ता णिव्विसताणि कताणि । एगत्थ पच्चन्तगामे सुण्णघरे ठिताणि, तत्थ य रत्तिं गामेल्लयपरद्धो चोरो तं सुण्णघरं अतिगतो, तेहिं भणितं-वेढेउं अच्छामो, मा कोइ पविसतु, गोसे पेच्छामो, सोवि चोरो लोट्टेंतो किहवि तीसे दुक्को, तीए फासो वेदिओ, सो दुक्को पुच्छितो- को सि तुमं ?, चोरोऽहं, तीए भणितो- तुमं मम पती होहि, एतं साहामो जहा चोरोत्ति, तेहिं पभाते मिंठो गहितो, एताए उवइट्ठोत्ति । विचढंतो थले भिण्णो ।

तेण समं सा वच्चति जाव अंतरा नदी, ताहे सा तेण भणिता-एत्थ सरत्थंबे अच्छ जाव अहं एताणि वत्थाणि आभरणाणि य उत्तारेमि, सो गतो, उत्तिण्णो पधाविंतो, सा भणति- पुण्णा नदी दीसति कायपेज्जा, सव्वं पियाभंडग तुज्झ हत्थे । जहा तुमं पारमतीतुकामो, धुवं तुमं भंडग हंतुकामो ॥ १ ॥ सो भणति-चिरसंथुओ वाऽलियसंथुतेणं, मेल्लेवि ताव ध्रुव अध्रुवेणं । जाणेप्पि तुज्झं प्रकृतिस्वभावं, पण्णो नरो को तुह विस्ससेज्जा? ॥१॥ सा भणति-कहिं जासि ?, सो भणति- जहा सो मरावितो एवं ममंपि कहिंवि मारावेहिसि। इतरो तत्थ विद्धो उदगं मग्गति, तत्थ एगो सड्ढो भणति-जदि नमोक्कारं करेसि ता ते देमि, सो उदगस्स अट्ठा गतो, जाव तंमि एंते चेव नमोक्कारं करेन्तो कालगतो, वाणमन्तरो जातो, सो य सड्ढो आरक्खियपुरिसेहिं गहितो, सो

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

ओहिं पउंजति जाव पेच्छति तं सरीरगं तं सङ्घं वज्झं, ताहे सिलं विउव्विचा मोएति। तं च सरत्थंबमज्झे पेच्छति, ताहे से घिणा उप्पण्णा, सियालरूवं विउव्विचा मंसपेसीहत्थगता उद्गतीरेण वोलेंति जाव मच्छयं पेच्छति, तं मंसपेसिं मोत्तुं तस्स मच्छस्स पथावितो, तंपि सेणेण हरितं, मच्छोवि जलं अतिगतो, ताहे सियालो झायति, तीए भणितं-मंसपेसिं परिचज्ज, मच्छं पत्थेसि जंबुका! । चुक्को मच्छं च मंसं च, कलुणं झायसि कोल्हुका ? ॥ १ ॥ तेण भण्णति- पत्तपुडिपरिच्छण्णे, सरत्थंबे अपाउए। चुक्का पतिं च जारं च, कलुणं झायसि बंधुकी ॥ १ ॥ एवं भणिता विलिता जाता, ताहे सो सयं रूवं दंसेति, पण्णाविता भणिता-पव्वताहित्ति, तेण सो राया तज्जिओ, तेण पडिवन्ना, सक्कारेण निक्खंता, दियलोगं गता। एवं अकामनिज्जराए मेंठस्स ॥

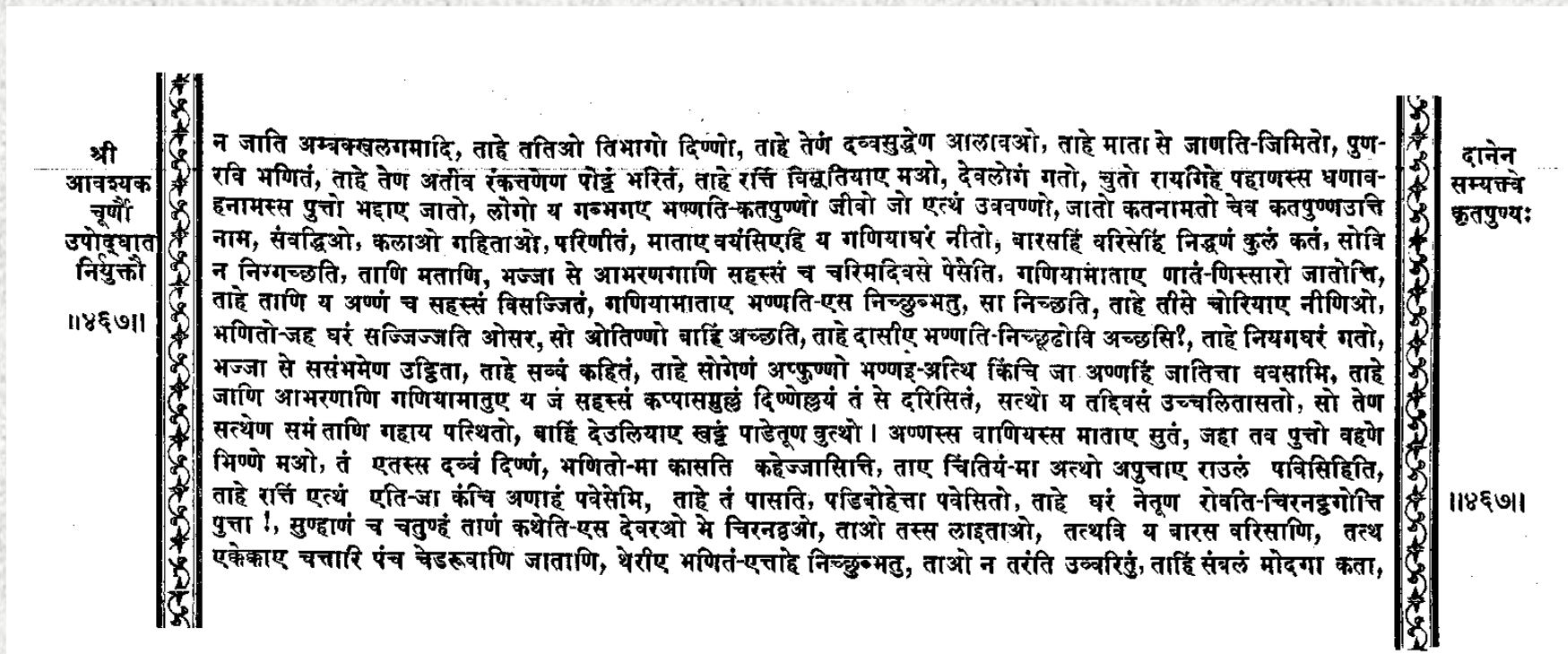
बालतवेणं जिण्णपुरं नगरं, सेट्ठिघरं मारिए उच्छादितं, तत्थ इंदनागो दारओ, सो छुहिओ गिलाणो पाणियं मग्गति जाव सव्वाणि मताणि पेच्छति, वारंपि लोगेण कंटियाहिं घट्टितं, ताहे पुण छिद्दिण निग्गतो, ताहे नगरे कप्परेण भिक्खं हिंडइ, एवं लोगो देति सुतपुव्वोत्ति, संवड्ढति, लोगो से अणुकंपाए देति। अण्णदा रायगिहाओ वाणियओ एति, सो य वाणियओ रायगिहं जातितुकामो नगरे घोसावेति, तेण तं घोसणतं सुतं, ताहे तेण सत्थेण समं पत्थितो, तत्थ तेण सत्थे कूरो लद्धो, सो जिमितो, बितिते दिवसे न जीरति, ताहे अच्छति, तं तं सेट्ठी पेच्छति, उववासं करेतित्ति जाणिएल्लओ, सो य अव्वत्तलिंगी, बितियदिवसे हिंडंतस्स सेट्ठिणा बहुं निद्धं च दिन्नं, सो तेण दुवे दिवसा अजिण्णएण अच्छति, सेट्ठी जाणति-एस छट्ठणकालिओ, तस्स अत्था जाता, ततियदिवसे हिंडंतो सत्थवाहेण सद्दाविंतो-कीस मे कल्लं नागतो ?, तुण्हिक्को अच्छति, जाणति-छट्ठं कतेल्लयं, ताहे से पहाणं निद्धं च दिण्णं, तेणवि अण्णे दो दिवसे अच्छाविंतो, पच्छा लोगोऽवि पणतो, अण्णस्स निमंतेन्तस्सवि ण गेण्हति, अण्णे

बालतपसि इन्द्रनागः

॥४६५॥

भणंति-एगपिंडओ सो, तेण य तं अड्ढापयं लद्धेल्लयं, वाणियएण भण्णति-मा अण्णस्स खणं गेण्हेज्जासि जाव नगरं गंमति, नगरं गता, तेण से नियघरे मढो कतो, ताहे सीसं मुंडेति कासायाणि य करेंति, ताहे सो विक्खातो जातो, ताहे तस्सवि णेच्छति, ताहे जद्दिवसं पारणयं तद्दिवसं लोगो नीणेति, सो पडिच्छति, ताहे अतिगतंपि न जाणंति, ताहे लोगेण जाणणानिमित्तं भेरी कता, जो देति सो तालेति, ताहे लोगेऽतिपविसति, एवंकालो वच्चति। सामी य समोसढो, ताहे साहू संदिसावेन्ता भणिता-मुहुत्तं अच्छह, अणेसणा, तंमि जिमिते भणिता-उत्तरह, गोतमो य भणितो-ममं वयणेण भणिज्जासि-भो अणेगपिंडिता ! एगपिंडिओ तं दट्ठुमिच्छति, ताहे गोतमेण भणितो, रुट्ठो भणति-तुब्भे अणेगपिंडसताणि भुंजह, अहं च एगत्थ भुंजामि, तो अहं चेव एगपिंडिओ, मुहुत्तंतरे उवसंतो चिंतेति-न एते मुसं वदंति, किह होज्जा ?, जाव लद्धा सुती, होमि अणेगपिंडिओ, जद्दिवसं मम पारणगं तद्दिवसं अणेगाणि पिंडसताणि कीरंति, एते पुण अक्कारितं एगं भुंजंति, तं सच्चं भणंतित्ति चिन्तेन्तेण जाती सरिया, पत्तेयबुद्धो जातो, अज्झयणं भासइ ! 'इंदनागेण अरहता बुइत्तं,' सिद्धो य, एवं तेण बालतवेण सामाइयं लद्धं।

दाणेण लद्धं, जथा एगाए वच्छवालियाए पुत्तो, लोगेण उस्सवे पायसो उक्खडितो, तत्थ आसण्णपुरे दारगरूवाणि, पायसं जेमिन्ताणि दारगरूवाणि पासति, ताहे मातरं वेढुति-ममवि पायसं देहि, ताहे नत्थित्ति सा अद्धितीए परुण्णा, ताओ सयज्जियाओ पुच्छंति, निब्बंधे कहितं, ताहे अणुकंपाय अण्णाएवि २ आणितं दुद्धं सालि तंदुला य, ताहे थेरीए पायसो रद्धो, सो य ण्हवितो थालं च से घतमहुसंजुत्तस्स भरितं, सो ताव उवट्ठितो, साहू य मासक्खमणी आगतो, जाव थेरी अंतो वाउला ताव तेणवि धम्मोऽवि मे होतुत्ति ताहे तिभागो दिण्णो, पुणोऽवि चिन्तितं-अवि थोवं, वितितु तिभागो दिण्णो, पुणोवि चिंतेति-एत्थं अण्णंपि



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४६७॥

न जाति अम्बक्खलगमादि, ताहे ततिओ तिभागो दिण्णो, ताहे तेणं दव्वसुद्धेण आलावओ, ताहे माता से जाणति-जिमितो, पुणरवि भणितं, ताहे तेण अतीव रंकत्तणेण पोट्टं भरितं, ताहे रत्तिं विसूतियाए मओ, देवलोगं गतो, चुतो रायगिहे पहाणस्स धणावहनामस्स पुत्तो भद्दाए जातो, लोगो य गब्भगए भण्णति-कतपुण्णो जीवो जो एत्थं उववण्णो, जातो कतनामतो चेव कतपुण्णउत्ति नाम, संवड्ढिओ, कलाओ गहिताओ, परिणीतं, माताए वयंसिएहिं य गणियाघरं नीतो, बारसहिं वरिसेहिं निद्धणं कुलं कतं, सोवि न निग्गच्छति, ताणि मताणि, भज्जा से आभरणगाणि सहस्सं च चरिमदिवसे पेसेति, गणियामाताए णातं-णिस्सारो जातोत्ति, ताहे ताणि य अण्णं च सहस्सं विसज्जितं, गणियामाताए भण्णति-एस निच्छुब्भतु, सा निच्छति, ताहे तीसे चोरियाए नीणिओ, भणितो-जह घरं सज्जिज्जति ओसर, सो ओतिण्णो बाहिं अच्छति, ताहे दासीए भण्णति-निच्छूढोवि अच्छसि?, ताहे नियगघरं गतो, भज्जा से ससंभमेण उट्ठिता, ताहे सव्वं कहितं, ताहे सोगेणं अप्फुण्णो भण्णइ-अत्थि किंचि जा अण्णहिं जातित्ता ववसामि, ताहे जाणि आभरणाणि गणियामातुए य जं सहस्सं कप्पासमुल्लं दिण्णेल्लयं तं से दरिसितं, सत्थो य तद्दिवसं उच्चलितासतो, सो तेण सत्थेण समं ताणि गहाय पत्थितो, बाहिं देउलियाए खड्डं पाडेतूण वुत्थो। अण्णस्स वाणियस्स माताए सुतं, जहा तव पुत्तो वहेण भिण्णे मओ, तं एतस्स दव्वं दिण्णं, भणितो-मा कासति कहेज्जासित्ति, ताए चिंतियं-मा अत्थो अपुत्ताए राउलं पविसिहिति, ताहे रत्तिं एत्थं एति-जा कंचि अणाहं पवेसेमि, ताहे तं पासति, पडिबोहेत्ता पवेसितो, ताहे घरं नेतूण रोवति-चिरनट्ठगोत्ति पुत्ता !, सुण्हाणं च चतुण्हं ताणं कथेति-एस देवरओ मे चिरनट्ठओ, ताओ तस्स लाइताओ, तत्थवि य बारस वरिसाणि, तत्थ एक्केक्काए चत्तारि पंच चेडरूवाणि जाताणि, थेरीए भणितं-एत्ताहे निच्छुब्भतु, ताओ न तरंति उव्वरितुं, ताहिं संबलं मोदगा कता,

दानेन सम्यक्त्वे कृतपुण्यः

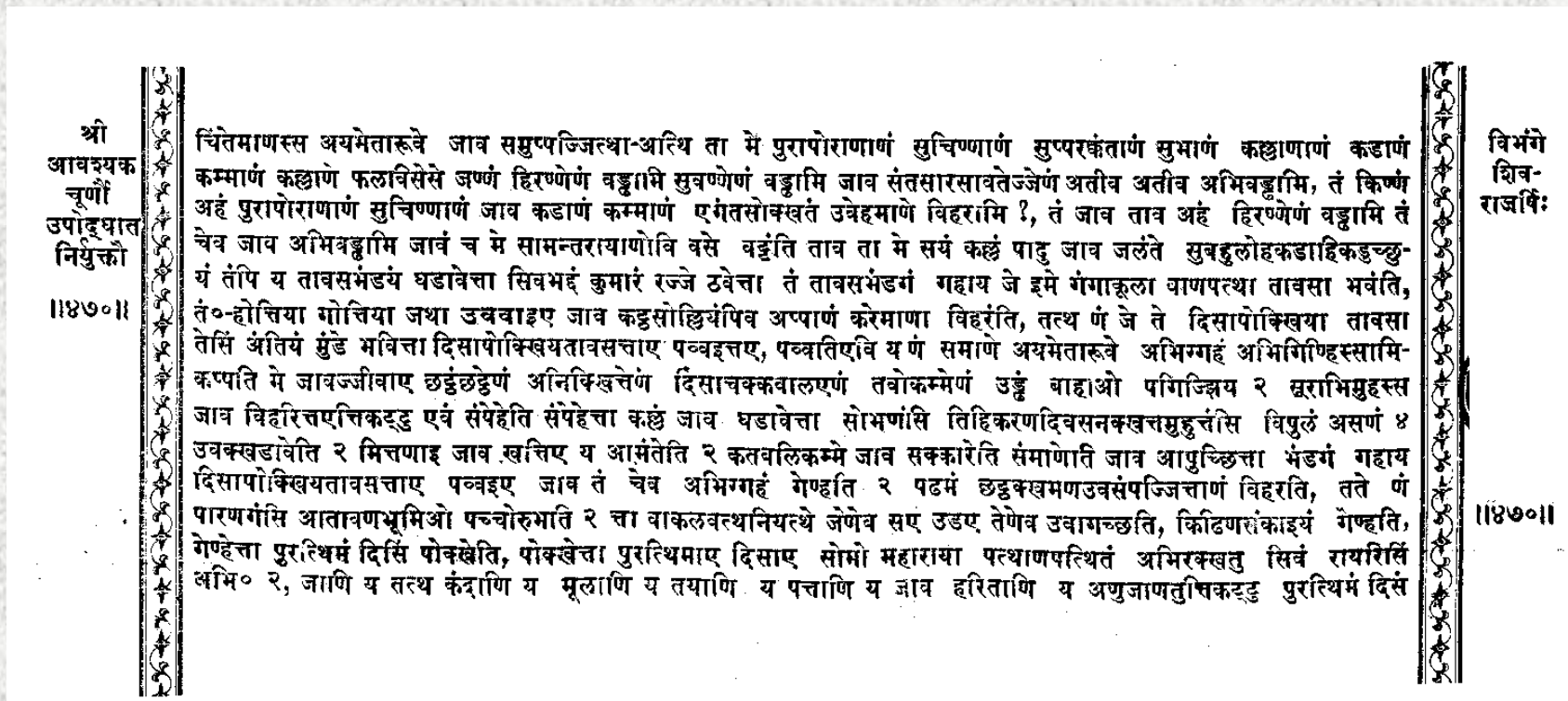
॥४६७॥

अंतो अणग्घेताण रतणाण भरिता, वरं से एतं होन्तं, ताहे वियडं पातेत्ता ताए चेव देउलिताए ओसीसए संबलं ठवेत्ता पडिगता, सो सीतलएण वाएणं संबुद्धो, पभातं च, सोऽवि य सत्थो तद्दिवसं आगतो, एयाएवि गवेसओ पत्थविओ, ताहे उट्ठवेत्ता घरं आणितो, भज्जा से संभमेण उट्ठिता, संबलं गहितं, पविट्ठा अब्भंगादीणि कीरति, पुत्तो य से तदा गुव्विणीए जातओ, सो एक्कारसवरिसो लेहसालाए आगतो रोवति-देहि कूरं माऽहं हंमीहामि, ताए से तत्तो मोदओ दिण्णो, सो तं खातंतो निग्गतो, तं रयणं पेच्छति, लेहिच्चएहिं दिट्ठं, तेहिं पूवितस्स दिण्णं दिवसं २ पूयलियाओ देहित्ति, इमोऽवि जिमितो, मोदए भिंदति, तेण दिट्ठाणि, भणति-सुंकभएण छूढाणि, तेहिं रतणेहिं तहेव पवित्थरिओ ॥ सेयणतो य गंधहत्थी णदीए तंतुएण गहिओ, राया अद्दण्णो, अभओ भणति-जदि जलकंतो अत्थि तो नवरि मुच्चति, सो राउले अतिबहुगत्तेण रतणाणं चिरेण लब्भतित्ति, ताहे पडहओ निप्फेडिओ-जो जलकंतं देति तस्स राया अद्धं रज्जस्स धूतं च देति, ताहे पूविएण णीणिओ, उदगं पणासितं, तंतुओ जाणेति जहा अहं थलं नीतो, ताहे मुक्को, सो राया चिन्तेति-कतो पूवितस्स ?, ताहे पूविओ पुच्छितो-कतो एस तुज्झं ?, निब्बंधे सिट्ठं-कतपुण्णगपुत्तेण दिण्णोत्ति, राया तुट्ठो भणति-कत्तो अण्णस्स होहितित्ति ?, ताहे रण्णा से सद्दावेत्ता धूता दिण्णा, दिण्णो विसओ य, ताहे भोगे भुंजति, पच्छा गणियावि आगता, सा उवट्ठिता भणति-अहं एच्चिरं कालं तुज्झच्चएण अच्छिता, एस वेणी मेवि बद्धेल्लिया, मए य सव्व-वेतालीओ तुज्झच्चएण गवेसाविताओ, नवरि एत्थ सि दिट्ठो, ताहे अभयं भणति-एत्थ मम नगरे चत्तारि महिलाओ, तं च अहं न जाणामि, ताहे चिंतियं घरं कतं, लेप्पगजक्खो य कतपुण्णगसरिसो कतो, तस्स अच्चणिता घोसाविता, दो य दाराणि कताणि-एगेणं पवेसो एगेणं निप्फेडो, ताहे अभओ कतपुण्णओ य एगत्थ दारब्भासे आसणवरगता अच्छंति, ताहे कोमुती आणत्ता, पडि-

मापधेसा अच्चणितं करेह, नगरे घोसितं-सव्वमहिलाहिं सडिक्करूवाहिं एतव्वं, ताहे लोगो एति, ताओवि आगताओ, ताहे ताणि चेडरूवाणि तस्स बप्पोत्ति उच्छंगे निविसंति, एवं नाताओ, ताहे अभएण थेरी अंबाडिता, ताओवि आणीताओ, पच्छा जहासुहं भोगे भुंजति। एवं सो विपुलभोगसमण्णागतो, वद्धमाणसामी तत्थ आगतो, समोसरणं, ताहे कतपुण्णओ भद्दारगं पुच्छति-मम संपत्ती विपत्ती किं कारणं ?, भगवता कहितं-पायसदाणं, संवेगेण पव्वइतो। एवं दाणेणवि बोही होज्जा।

विणएण जहा मगहाए गोब्बरगामो, तत्थ पुप्फसालो गाहावती, भद्दा भारिया, पुत्तो जातो, नामं च से पुप्फसालसुतोत्ति, सो मातापितरं पुच्छति-को धम्मो ?, तेहिं भणितं-मातापितरं सुस्सूसितव्वं-दोच्चेव देवताणि माता य पिता य जीवलोगंमि। तत्थवि पिता विसिट्ठो जस्स वसे वट्टती माता ॥ १ ॥ ताहे सो ताण पदे मुहधोवणादि विभासा, देवताणि जहा सुस्सूसति। अण्णदा तत्थ गामभोइओ आगतो, ताणि संभंताणि तस्स पाहुण्णं करेंति, ताहे सो चिंतेति-एताणवि एस देवतं, एतं पूजेमि तो धम्मो होहिति, तस्स सुस्सूसं पकतो, अण्णदा तस्स भोइतो, तस्सवि अण्णो जाव सेणियरायाणं ओलग्गिउमारद्धो, तत्थ सामी समोसढो, सेणिओ इड्ढीए निग्गओ, सामिं वंदति, इतरो सामिं भणति-अहं तुज्झं ओलग्गामि, सामिणा भणितो-अहं खु रतहरणपडिग्गहमाताए ओलग्गिज्जामि, ताण सुणणाए संबुद्धो। एवं विणएणं ॥

विब्भंगेण ॥ विभंगेण जहा—तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरं नाम नगरं, तत्थ णं सिवे नामं राया महता० वण्णओ, तस्स धारिणी नामं देवी, सिवभद्दे नामं पुत्ते होत्था, तते णं तस्स सिवस्स रण्णो अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि रज्जधुरं



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४७०॥

चिंतेमाणस्स अयमेतारूवे जाव समुप्पज्जित्था-अत्थि ता मे पुरापोराणाणं सुचिण्णाणं सुप्परक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणे फलविसेसे जण्णं हिरण्णेणं वड्ढामि सुवण्णेणं वड्ढामि जाव संतसारसावतेज्जेणं अतीव अतीव अभिवड्ढामि, तं किण्णं अहं पुरापोराणाणं सुचिण्णाणं जाव कडाणं कम्माणं एगंतसोक्खतं उवेहमाणे विहरामि ?, तं जाव ताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि तं चेव जाव अभिवड्ढामि जावं च मे सामन्तरायाणोवि वसे वट्टंति ताव ता मे सयं कल्लं पादु जाव जलंते सुबहुलोहकडाहिकडुच्छुयं तंपि य तावसभंडयं घडावेत्ता सिवभद्दं कुमारं रज्जे ठवेत्ता तं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूला वाणपत्था तावसा भवंति, तं०-होत्तिया पोत्तिया जधा उववाइए जाव कट्ठसोल्लियंपिव अप्पाणं करेमाणा विहरंति, तत्थ णं जे ते दिसापोक्खिया तावसा तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइत्तए, पव्वतिएवि य णं समाणे अयमेतारूवे अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि-कप्पति मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालएणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स जाव विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति संपेहेत्ता कल्लं जाव घडावेत्ता सोभणंसि तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असणं ४ उवक्खडावेति २ मित्तणाइ जाव खत्तिए य आमंतेति २ कतबलिकम्मे जाव सक्कारेति संमाणेति जाव आपुच्छित्ता भंडगं गहाय दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए जाव तं चेव अभिग्गहं गेण्हति २ पढमं छट्ठक्खमणउवसंपज्जित्ताणं विहरति, तते णं पारणगंसि आतावणभूमिओ पच्चोरुभति २ त्ता वाकलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छति, किढिणसंकाइयं गेण्हति, गेण्हेत्ता पुरत्थिमं दिसिं पोक्खेति, पोक्खेत्ता पुरत्थिमाए दिसाए सोमो महाराया पत्थाणपत्थितं अभिरक्खतु सिवं रायरिसिं अभि० २, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य जाव हरिताणि य अणुजाणतुत्तिकट्टु पुरत्थिमं दिसं

विभंगे शिव-राजर्षिः

॥४७०॥

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ

॥४७१॥

पसरति २ कंदादीणि गेण्हति २ किढिणसंकाइयं करेति, करेत्ता दब्भे य कुसे य समिहाओ य पत्तामोयं च गेण्हति, सयं उडमयं उवागच्छति, उवागच्छेत्ता बलिं उद्धेति, उवलेवणसम्मज्जणं करेति, करेत्ता दब्भकलसहत्थगते गंगाए उवागच्छति, जलमज्जणं करेति, आयंते चोक्खे सुतिभूते देवतापितिकतकज्जे सदब्भकलसहत्थगते उडयं उवागच्छति, दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाए य वेदिं रएति, सरएणं अरणिं मथेति अग्गिं पाडेति समिहाकट्ठाइं पक्खिवति अग्गिं उज्जालेति अग्गिस्स दाहिणे पासे सत्तंगाइं समादधे, तं०-सकहं वक्कलं ठाणं सज्झाभंडं कमंडलुं दंडदारुं तवप्पाणं, अह ताइं समितो समादधे मधूण य घतेण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणति चरुं साहेति बलिं विस्सदेवं करेति अतिहिपूयं करेति, ततो पच्छा अप्पणा आहारेति । ततो दोच्चं छट्ठक्खमणं, एवं जधा पढमं, नवरं दाहिणं दिसिं पोक्खेति, जमे राया, सेसं तं चेव । एवं तच्चं, दिसा पच्छिमा राया वरुणो । चउत्थं उत्तरा दिसा वेसमणो महाराया । ततेणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं जाव आयावेमाणस्स पगतिभद्दत्ताए जाव विणीतताए अण्णया कदायी तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहा-वूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विभंगे नामं अण्णाणे समुप्पण्णे, से णं तेणं पासति अस्सिं लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे, तेण परं न जाणति, तते णं से रायरिसी हत्थिणापुरे णगरे सिंघाडगतिय जाव पहेसु अण्णमण्णस्स एवं आइक्खइ- एवं खलु देवाणुप्पिया! अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं दीवा य सागरा य वोच्छिण्णा, तते णं बहुजणो अण्णमण्णस्स एवं आतिक्खति- एवं खलु तं चेव जाव तेण परं वोच्छिण्णा, से कहमेतं मण्णे एवं ? ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढो, जाव परिसा पडिगता, तेणं कालेणं तेणं समएणं गोतमो जाव अडमाणो बहुजणस्स

विभंगे शिव-राजर्षिः

॥४७१॥

॥४७२॥

सद्दं निसामेति, तं चेव, तते णं गोतमे जातसड्ढे भगवंतमाह-से कहमेतं भंते ?, भगवानाह-एवं खलु गोतमा ! तस्स सिवस्स सव्वं भाणितव्वं जाव तं मिच्छा, अहं पुण गोतमा ! एवमाइक्खामि--जंबुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा, संठाणतो एगविधे, वित्थारतो अणेगविधविहाणो दुगुणा दुगुणं पडुप्पाएमाणे २ एवं जहा जीवाभिगमे जाव सयंभुरमणपज्जवसाणा अस्सिं तिरियलोके असंखेज्जा दीवसमुद्दा समणाउसो !, तते णं से परिसा एयमट्ठं सोच्चा हट्ठा भगवं वंदति जाव पडिगता। तते णं बहुजणो अण्णमण्णस्स एवं आइक्खति-जण्णं सव्वं भाणितव्वं जाव समणाउसो!, ततेणं से सिवे एतमट्ठं निसामित्ता संकिते जाव कलुसमावण्णे यावि होत्था, ततेणं विब्भंगे खिप्पामेव परिवडिते, ततेणं तस्स अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था- एवं खलु समणे भगवं जाव इह सहसंबवणे उज्जाणे विहरति, तं गच्छामि णं सामिं वंदामि पज्जुवासामि, एतं णे इहभवे परभवे य जाव भविस्सतित्तिकट्टु जाव सव्वं भंडोवगरणं गहाय जेणेव भगवं तेणेव उवागच्छति, तिक्खुत्तो वंदति, वंदित्ता नच्चासण्णे जाव पंजलिकडे पज्जुवासति, ततेणं भगवता धम्मे कहिते, ततेणं सिवे धम्मं सोच्चा जहा खंदओ उत्तरपुरत्थिमं जाव तं सव्वं एडेति,सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, एवं जहा उसभदत्तो तहेव पव्वतिओ, तहेव एक्कारस अंगाइं अधिज्जति, तहेव जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। एवं विभंगेणं सव्वस्स लाभो।

संजोगेणं वियोगेण लंभो होज्जा। जधा दो महुराओ, तत्थ उत्तराओ वाणियओ दक्खिणं गओ, तत्थवि तत्प्रतिमो वाणियओ, तेण से पाहुणयं कतं, ताहे ते निरंतरमित्ता जाता, अम्हं थिरतरा पीती होहित्ति जदि अम्हं पुत्तो धूता य जाति तो संजोगं करेस्सामो, ताहे दक्खिणेणं उत्तरस्स धूता वरिता, तेण दिण्णा, बालाणि, एत्थंतरे दक्खिणमहुरओ वाणियओ मतो, पुत्तो से तंमि ठाणे ठितो, अण्णदा सो ण्हाति, चउद्दिसिं सोवण्णिता कलसा, ताण बाहिं रुप्पमता ताण बाहिं तंबिता ताण

॥४७२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

बाहिं मड्डियामया, अण्णदा ण्हाणविही रयिता, तस्स पुव्वाए दिसाए सोवण्णिओ कलसो आगासेण नट्ठो, एवं चउद्दिसिंपि, एवं सव्वे णट्ठाओ, उट्ठितस्स ण्हाणपीढमवि णट्ठं, तस्स अद्धिती जाता, नाडइज्जाओ वारिताओ जाव घरं पविट्ठो, ताहे उवट्ठवितो भोयणविधी, ताहे सोवण्णियरुप्पमताणि रइयाणि, एक्केक्कं भायणं नासितुमारद्धं, ताहे सो ते णासंतए पेच्छति, जावि से मूलपाती सावि से णासितुमारद्धा, ताहे तेण गहिता, तं हत्थेण गहितं तत्तियं लग्गं, सेसं नट्ठं, ताहे सिरिघरं गतो जोएति जाव सोवि रीक्कओ, जंपि निधाणपउत्तं तंपि नट्ठं, जंपि आभरणं तंपि नत्थि, जंपि वड्ढिपउत्तं तेवि भणंति- तुमं न जाणामो, जोवि सो दासीदासवग्गो सोवि से णट्ठो, ताहे चिंतेइ- पव्वइयामि, धम्मघोसाणं अंते पव्वइतो, सामाइयमादीणि एक्कारस अंगाणि अधीयाणि, तेण खंडेण हत्थगएणं कोतुहलेणं जदि पेच्छिज्जामि विहरंतो उत्तरमहुरं गओ, ताणिवि तस्स रयणाणि ससुरकुलं गयाणि, ते य कलसा, ताहे सो माधुरो उवगिज्जंतो मज्जति जाव ते आगता कलसा, ताहे सो तेहिं चेव पमज्जितो, ताहे भोयणवेलाए तं भोयणभंडगं उवट्ठवितं, जहापरिवाडीय ठितं, सोवि साधू तं घरं पविट्ठो, तस्स सत्थवाहस्स धूता पढमजोव्वणे वट्टमाणी वीयणगं गहाय अच्छति, ताहे सो साधूवी भोयणभंडगं पेच्छति, सत्थवाहेण से भिक्खं नीणावितं, गहितेवि अच्छति, ताहे सत्थाहो भणति- किं भगवं! एतं चेंडिं पलोएह ?, ताहे सो भणति-नत्थि ममं चेडीय पयोयणं, भंडगं पलोएमि, ताहे पुच्छति- कतो एतस्स तुज्झ आगमो ?, सो भणति- अज्जगपज्जगागतं, तेण भणितं- सब्भावं साहह, तेण भणितं- ममं ण्हातंतस्स एवं चेव ण्हातविधी उवट्ठिता, एवं सव्वाणिवि, जेमणवेलाए भोयणविधी जाव सिरिघराणि भरिताणि, निक्खेवाणिवि दिट्ठाणि, अदिट्ठपुव्वा य धारणया आणेत्ता देंति, ताहे सो भणति-एतं सव्वं मम आसी, किंत्थ ?, ताहे कहेति सो ण्हाणादी, जदि न पत्तियसि तो इमं पादीखंडं

पेच्छ जाव ढोइतं, चडत्ति लग्गं, पितुणो य नामं साहति, ताहे नातं- एस सो जामातुओ, ताहे सो उट्ठेत्ता अवतासेतूणं परुण्णो, पच्छा भणति-एयं सव्वं तदवत्थं अच्छति, अच्छह, एसा तव पुव्वादिण्णा चेडी, सो भणति-पुरिसो वा पुव्वं कामभोगे विप्पजहति, कामभोगा वा पुव्वं पुरिसं विप्पजहंति, ताहे सोऽवि संवेगमावण्णो, ममंपि एमेव विप्पजहिस्सति ?, ताहे सो विप्पजहितो, एवं ते संजोगविप्पयोगेणं ।

वसणेणवि होज्जा, दो भाउगा सगडेण वच्चंति, एगा य यमलुंडी सगडवज्जए लोलति, महल्लेण भणितं-उव्वत्तेहि भंडी, इतरेण वाहिया भंडी, सा सण्णी मुणति, ताहे चक्केण छिण्णा मता इत्थी जाता हत्थिणापुरे नगरे, सो महत्तरओ पुव्विं मरित्ता तीसे पोट्टे आयातो, पुत्तो जातो, इट्ठो, इतरोवि मतो, तीए चेव पोट्टे आताओ, जं चेव उववण्णो तं चेव सा चिंतेति--सिलं व हाविज्जामि, गब्भपाडणे ऽवि ण पडति, एवं सो जातो, ताहे ताते दासीहत्थे दिण्णो, जहा छड्डेह, उच्छाइओ, पट्टितो, एसो सेट्ठिणा णीणिज्जंतो दिट्ठो, ताए से सिट्ठं, तत्थ तेण अण्णाए दासीए दिण्णो, सो तत्थ संवड्ढति, तत्थ महल्लस्स नामं रायललितोत्ति, इतरस्स गंगदत्तो, सो महल्लो जं किंचि लभति तत्तो तस्सवि देति, तंसे पुण अणिट्ठो, जहिण्णं पेच्छति तहिं कट्ठेण वा पत्थरेण वा आहणति, पच्छा अण्णदा इंदमहो जातो; ताहे पिता से भणति--आणेह तं अप्पसारितं भुंजिहिति, ताहे सो आणिओ, तेणं आसंदगस्स हेट्ठा कतो, ओहाडियओ जेमाविज्जति, ताहे किहवि दिट्ठो, ताहे गहाय कड्ढिऊणं बाहिं चंदणियाए पविट्ठो, ताहे सो तं ण्हाणे रोवयति य । एत्थंतरा साधू समुदाणस्स अतिगतो, ताहे सो पुच्छति--भगवं ! अत्थि पुत्तो मातुयाए अणिट्ठो भवति ?, हन्ता भवति, किह पुण ?, ताहे भणति—यं दृष्ट्वा वर्धते क्रोधः, स्नेहश्च परिहीयते । स विज्ञेयो मनुष्येण, एष मे पूर्ववैरिकः ॥१॥

यं दृष्ट्वा वर्धते स्नेहः, क्रोधश्च परिहीयते । स विज्ञेयो मनुष्येण, एष मे पूर्वबांधवः ॥ २ ॥ ताहे सो भणति—भगवं ! एतं पव्वावेघ?, बाढंति विसज्जितो, ताहे सो पव्वाविंतो, तेसिं आयरियाण य पासे भायावि से णेहेण पव्वइतो, ते साधू ईरियासमिता अणिस्सितं तवं करेंति, ताहे सो तत्थ निदाणं करेति-जदि अत्थि इमस्स फलं तो आगमेस्साणं जणनयणाणंदणो भवामि, निदाणं करेति, घोरं च तवं करेति, ताहे कालगतो देवलोकं गतो, चुतो वसुदेवपुत्तो वासुदेवो जातो, इतरोऽवि बलदेवो, एवं तेण वसणेणं सामाइयं लद्धं ॥

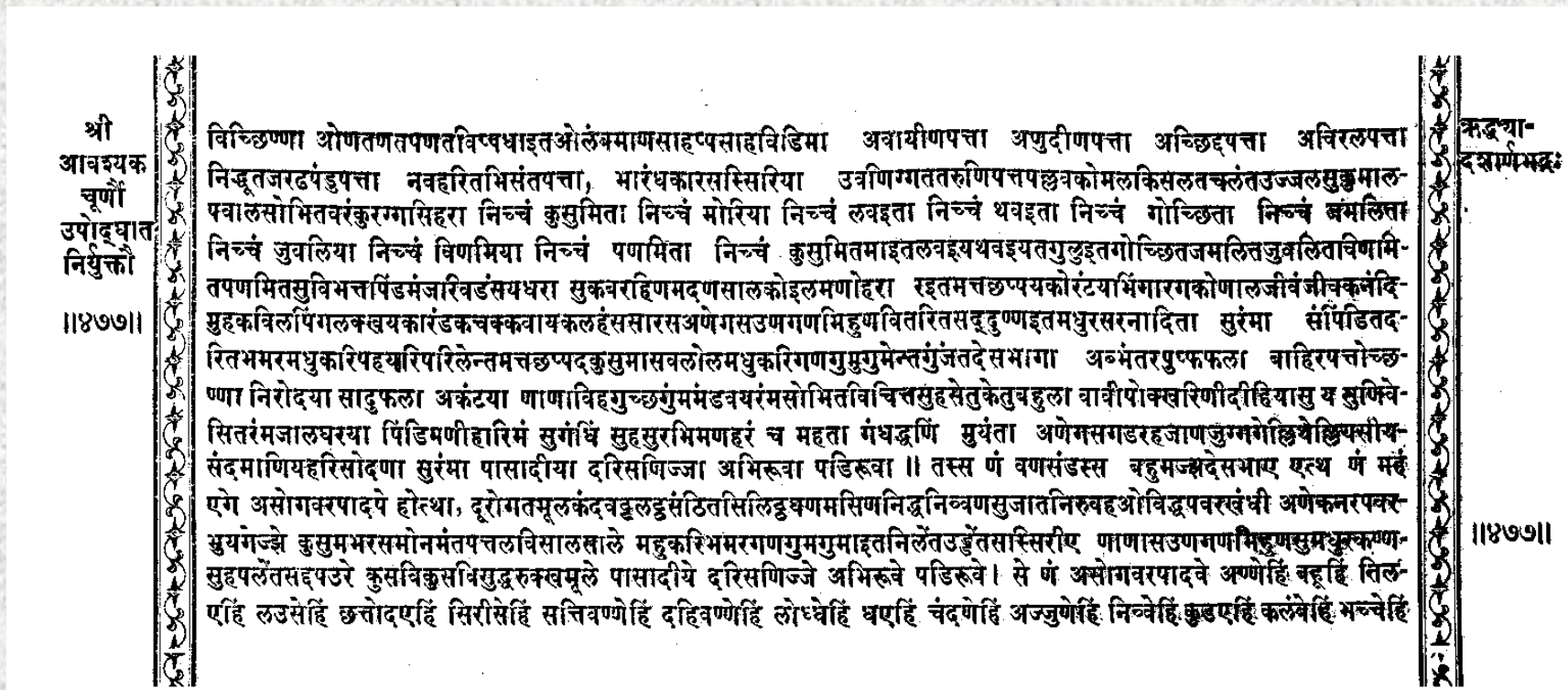
उस्सवे जहा पच्चंतियाणि आभीराणि, ताणि साहूण पासे धम्मं सुणेंति, ताहे देवलोगं वण्णेति, एवं तेसिं अत्थि तंमि धंमे बुद्धिः, अण्णदा कदाइ इंदमहे वा अण्णम्मि वा उस्सवे ताणि णगरिं गताणिं, जारिसा बारवती, तत्थ लोगं पेच्छंति मंडियपसाहियं सुगंधविचित्तणेवत्थं, ताणि तं दट्ठूण भणति-एवं एस देवलोगो जो सो तदा साहूहिं वण्णितो, एत्ताहे जदि वच्चामो तो सुंदरतरं करेमो जा अम्हेवि देवलोगे उववज्जामो, ताहे ताणि गताणि साहंति तेसिं साधूणं—जो तुब्भेहिं अम्हं कहितो देवलोको अम्हेहिं पच्चक्खं दिट्ठो, ताहे ते भणंति-न तारिसो देवलोगो, अण्णारिसो, ततो अणंतगुणो, ताहे ताणि अब्भहियजतिहरिसाणि पव्वइताणि, एवं उस्सवेण सामाइयलंभो ॥

इड्ढित्ति, तेणं कालेणं तेणं समएणं दसण्णपुरं नाम नगरं होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धं मुदितजणुज्जाणजाणवदं आइण्णजणमणूसं हलसतसहस्ससंकड्ढविकड्ढलद्धपण्णत्तसेतुसीमं कुक्कुडसंडेययगामगोउलइक्खुजवसालिमालिणीयं गोमहिसगवेलकप्पभूतं आयारवन्त-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

चेतियजुवतीसंनिविट्ठबहुलं उक्कोडितपावगंठिभेदयभडतक्करखंडरक्खरहितं खेमं निरुवद्दुतं सुभिक्खं वसित्थसुहावासं अणेगकोडी-कुडुंबियाइण्णं निव्वुतसुहं णंदणवणसण्णिभप्पकासं उव्विद्धविरलगंभीरखाइयफलिहं चक्कगयामुसलमुसुंढिओरोहसतग्घिजमलक-वाडघणदुप्पवेसं धणुकुडिलवंकपागारपरिक्खित्तं कविसीसयवट्टरइतसंठितचिरायमाणअट्टालयचरियदारगोपुरतोरणउण्णतसुविभत्तरा-यमग्गं छेयायरियरयितदढफलिहइंदकीलं विवणिवणिछेयसिप्पियाइण्णनिव्वुतसुहं सिंघाडयतियचउक्कचच्चरपणियावणविविहवे-सपरिमंडियं सुरम्मं नरवतिपविइण्णमहापहं अणेकनरतुरयमत्तकुंजररहपहकरसीयसंदमाणियाइण्णजाणजुग्गं विमउलनवनलिणी-सोभितजलं पंडरवरभवणसंणिवहितं उत्ताणयनयणपेच्छणिज्जं पासादीयं दरिसणज्जं अभिरूवं पडिरूवं ॥ तस्स णं दसण्ण-पुरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे दसण्णकूडे नामं पव्वते होत्था, तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे नाणाविहरुक्ख-गुच्छगुम्मलतावल्लिपरिगते हंसमिगमयूरकोंचसारसचक्कागमयणसालकोइलकुलोववेते अणेकतडकडगविसमउज्झरपवातपब्भार-सिहरपउरे अच्छरगणदेवसंघविज्जाहरामेहुणसंविभिण्णे निच्चुण्णए दसण्णवरवीरपुरिसतेलोक्कबलवगस्सासमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे पासादीये ॥ तस्स णं पव्वतस्स अदूरसामंते णंदणवणे णामं वणसंडे होत्था, से णं किण्हे किण्होभासे एवं नीले हरिते सीते निद्धे जाव तिव्वे तिव्वोभासे किण्हे किण्हच्छाते घणकडितकंकडच्छाए रम्मे महामेहणिउरुंबभूते सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे णंदणप्पगासे पासादीए ॥ तत्थ णं पादवा मूलवंतो एवं कंद० खंद० तया० सालप्पवालपत्तपुप्फफलबीयवंतो- मूले कंदे खंधे तया य साले तथा पवाले य । पत्ते पुप्फे य फले बीये दसमे तु नातव्वे ॥ १ ॥ अणुपुव्वसुजातरुइलवट्टभावपरिणता एकखंधी अणेगसाला अणेगसाहप्पसाहविडिमा अणेगनरवामसुप्पसारितभुजागेज्झघणविउलवट्टखंधी पादीणपडिणायतसाला उदीणदाहिण-



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४७७॥

विच्छिण्णा ओणतणतपणतविप्पधाइतओलंबमाणसाहप्पसाहविडिमा अवायीणपत्ता अणुदीणपत्ता अच्छिद्दपत्ता अविरलपत्ता निद्धूतजरढपंडुपत्ता नवहरितभिसंतपत्ता, भारंधकारसस्सिरिया उवणिग्गततरुणिपत्तपल्लवकोमलकिसलतचलंतउज्जलसुकुमालपवालसोभितवरंकुरग्गसिहरा निच्चं कुसुमिता निच्चं मोरिया निच्चं लवइता निच्चं थवइता निच्चं गोच्छिता निच्चं जमलिता निच्चं जुवलिया निच्चं विणमिया निच्चं पणमिता निच्चं कुसुमितमाइतलवइयथवइयतगुलुइतगोच्छितजमलितजुवलितविणमितपणमितसुविभत्तपिंडमंजरिवडंसयधरा सुकवरहिणमदणसालकोइलमणोहरा रइतमत्तछप्पयकोरंटयभिंगारगकोणालजीवंजीवकनंदिमुहकविलपिंगलक्खयकारंडकचक्कवायकलहंससारसअणेगसउणगणमिहुणवितरितसद्दुण्णइतमधुरसरनादिता सुरंमा संपिंडितदरितभमरमधुकरिपहयारिपरिलेन्तमत्तछप्पदकुसुमासवलोलमधुकरिगणगुमुगुमेन्तगुंजतदेसभागा अब्भंतरपुप्फफला बाहिरपत्तोच्छण्णा निरोदया सादुफला अकंटया णाणाविहगुच्छगुंममंडवयरंमसोभितविचित्तसुहसेतुकेतुबहुला वावीपोक्खरिणीदीहियासु य सुणिवेसितरंमजालघरया पिंडिमणीहारिमं सुगंधिं सुहसुरभिमणहरं च महता गंधद्धणिं मुयंता अणेगसगडरहजाणजुग्गसंगेल्लिजेल्लिप्पसीयसंदमाणियहरिसोदणा सुरंमा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे असोगवरपादपे होत्था, दूरोगतमूलकंदवट्टुलट्ठसंठितसिलिट्ठघणमसिणनिद्धनिव्वणसुजातनिरुवहओविद्धपवरखंधी अणेकनरपवरसुयगेज्झे कुसुमभरसमोनमंतपत्तलविसालसाले महुकरिभमरगणगुमगुमाइतनिलेंतउट्ठेंतसस्सिरीए णाणासउणगणमिहुणसुमधुरकण्णसुहपलेंतसद्दपउरे कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूले पासादीये दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे। से णं असोगवरपादवे अण्णेहिं बहूहिं तिलएहिं लउसेहिं छत्तोदएहिं सिरीसेहिं सत्तिवण्णेहिं दहिवण्णेहिं लोधेहिं धएहिं चंदणेहिं अज्जुणेहिं निच्चेहिं कुडएहिं कलंबेहिं भव्वेहिं

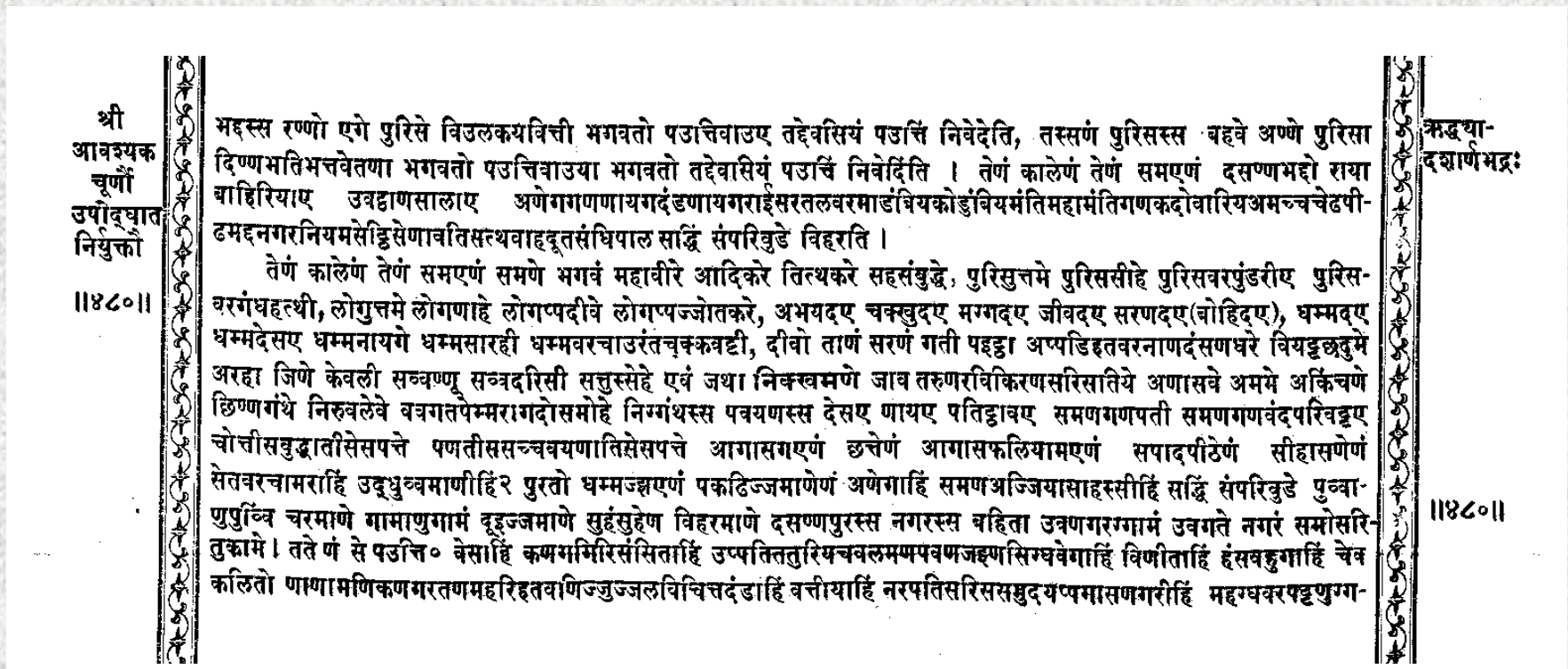
॥४७७॥

पणसेहिं दालिमेहिं सालेहिं तालेहिं तमालेहिं पियएहिं पियंगूहिं पारेवएहिं रायरुक्खेहिं णंदिरुक्खेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते, ते णं तिलता जाव णंदिरुक्खा कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला मूलवंतो जाव बीयवंतो अणुपुव्वसुजातरुयिलवट्टभावपरिणता सोभित-वरंकुरग्गहिरा निच्चं कुसुमिता जाव वडेंसयग्गधरा सुतवरहिणमदणसालकोइल एवमादि जधा वणसंडपादवा जाव अभिरूवा। ते णं तिलया जाव नंदिरुक्खा अण्णाहिं वहूहिं पउमलताहिं नागलताहिं असोगलताहिं चंपयलताहिं चूतलयाहिं वणलताहिं वासं-तियलताहिं अतिमुत्तयलताहिं कुंदलताहिं सोमलताहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता, ताओ णं पउमलताओ जाव सम्मं० लताओ निच्चं कुसुमिताओ जाव वडिंसयधरीओ संपिंडितदरितभमरमधुकरीपहकरपरिलेंतमत्तछप्पदकुसुमासवलोलमहुकरिगणगुमगुमेन्तगुं-जंतदेसभागाओ संपिंडियनिहारिमं जाव मुयंतीओ पासातीयाओ जाव पडिरूवाओ।तस्स णं असोगवरपादवस्स उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा पण्णत्ता, तंजधा- सोत्थिय सिरिवच्छ नंदियावत्त वद्धमाणय भद्दासण कलस मच्छ दप्पण सव्वरतणामया पासादीया जाव पडिरूवा। तस्स णं असोगवरपादवस्स उवरिं वहवे किण्हचामरज्झया, एवं नीललोहितहालिद्दसुक्किल्लचामरज्झया अच्छा सण्हा रुप्पवट्टवइ-रामयदंडा जलयामलगंधिया सुरूवा। तस्स णं असोगवरपादवस्स उवरिं वहवे छत्तादिछत्ता पडागातिपडागाओ घंटाजुयला चामरजुयला उप्पलहत्थया पउमहत्थया एवं कुमुयणलिणसुभगसोगंधियपुंडरीयहत्थया सतपत्तसहस्सपत्तहत्थया सव्वरयणामया अच्छा जाव सउज्जोया पासादीया। तस्स णं असोगवरपादवस्स हेट्ठा एत्थ णं महेगे पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते, ईसीखंधसमल्लीणे विक्खंभुस्सेहसुप्पमाणे कण्हे अंजणयघणकुवलयहलधरकोसेज्जसरिसआकासकेसकज्जलकक्केतणइंदनीलरिट्ठगअसिकुसुमप्पगासे भिंग-जणभंगभेदरिट्ठयनीलगुलियगवलातिरेगभमरनिकुरंबभूते जंबुप्फलअसणकसणबंधणनीलुप्पलपत्तनिगरमरगतसासगगणहितरासिवण्णे

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

निद्धोप्पण्णे अज्जुसिरे रूवयपडिरूवदरिसणिज्जे आयंसतलोवमे सुरम्मे सीहासणसंठिते सुरूवे मुत्ताजालखइयंतकण्णे आयीणकरुय-बूरणवणीततूलतुल्लफासे सव्वरतणामए अच्छे सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे नीलइए निम्मले निप्पंके निक्कंकडच्छाए सप्पभे समीरिईए सउ-ज्जोवे जाव पडिरूवे। तत्थ णं दसण्णपुरे नगरे दसण्णभद्दे नामं राया होत्था, महताहिमवंतमहन्तमलयमंदरमहिंदसारे अच्चंतवि-सुद्धरायकुलवंससमप्पसूते निरंतरं रायलक्खणविराइतंगमंगे बहुजणबहुमाणपूजिते सव्वगुणसमिद्धे खत्तिए मुदिते मुद्धाभिसित्ते माउ-पितुसुजाते दयामते सीमंकरे सीमंधरे मणुस्सिंदे जणवदपिता जणवदपुरोहिते सेउकरे केउकरे णरवरे पुरिसवरे पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरि-सासीविसे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्णविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णे बहुधणबहुजातरूवरयते आयोगपयोगसंपउत्ते विच्छड्डितपउरभत्तपाणे बहुदासीदासगोमहिसगवेलयप्पभूते पडिपुण्णजंतकोसकोट्ठागारायुधधरे बलवदुब्बल-पच्चामित्ते ओहयकंटयं निहतकंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं अप्पडिकंटयं अकंटयं ओहयसत्तुं उद्धितसत्तुं निज्जितसत्तुं पराजितसत्तुं ववगतदुब्भिक्खचोरमारिभयविप्पमुक्कं खेमं सिवं सुभिक्खं पसंतडिंबडमरं फीतं पुरो जाणवदं रज्जं पसासेमाणे विहरति। तस्स णं दसण्णभद्दस्स रण्णो मंगलावती नामं देवी होत्था सुकुमालपाणिपादा अधीणपडिपुण्णपंचेंदियसरीरा लक्खणवंजणगुणोववेता माणुम्माणप्पमाणपडितुज्झा(पुण्णा)सुजातसव्वंगसुंदरंगी ससिसोम्माकारकंतपियदंसणा सुरूवा करतलपरिमितपसत्थतिवलीयवलि-तमज्झा कुंडलुल्लिहियपीणगंडलेहा कोमुदिरयणिगरविमलपडिपुण्णसोम्मवदणा सिंगाराकारचारुवेसा संगतगतहसितभणितचेट्ठित-विलाससललितसंल्लावणिपुणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथणजहणवदणकरचरणणयणलायण्णरूयजोव्वणविलासकलिता दसण्णभद्देण रण्णा सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरति। तस्स णं दसण्ण-



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४८०॥

भद्दस्स रण्णो एगे पुरिसे विउलकयवित्ती भगवतो पउत्तिवाउए तद्देवसियं पउत्तिं निवेदेति, तस्सणं पुरिसस्स बहवे अण्णे पुरिसा दिण्णभतिभत्तवेतणा भगवतो पउत्तिवाउया भगवतो तद्देवासियं पउत्तिं निवेदिंति । तेणं कालेणं तेणं समएणं दसण्णभद्दो राया बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेगगणणायगदंडणायगराईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियमंतिमहामंतिगणकदोवारियअमच्चचेडपीढमद्दनगरनियमसेट्ठिसेणावतिसत्थवाहदूतसंधिपाल सद्धिं संपरिवुडे विहरति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आदिकरे तित्थकरे सहसंबुद्धे, पुरिसुत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी, लोगुत्तमे लोगणाहे लोगप्पदीवे लोगप्पज्जोतकरे, अभयदए चक्खुदए मग्गदए जीवदए सरणदए(बोहिदए), धम्मदए धम्मदेसए धम्मनायगे धम्मसारही धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी, दीवो ताणं सरणं गती पइट्ठा अप्पडिहतवरनाणदंसणधरे वियट्टछउमे अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी सत्तुस्सेहे एवं जथा निक्खमणे जाव तरुणरविकिरणसरिसातिये अणासवे अममे अकिंचणे छिण्णगंथे निरुवलेवे वज्जगतपेम्मरागदोसमोहे निग्गंथस्स पवयणस्स देसए णायए पतिट्ठावए समणगणपती समणगणवंदपरिवट्टए चोत्तीसबुद्धातीसेसपत्ते पणतीससच्चवयणातिसेसपत्ते आगासगएणं छत्तेणं आगासफलियामएणं सपादपीठेणं सीहासणेणं सेतवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं२ पुरतो धम्मज्झएणं पकढिज्जमाणेणं अणेगाहिं समणअज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेण विहरमाणे दसण्णपुरस्स नगरस्स बहिता उवणगरग्गामं उवगते नगरं समोसरितुकामे। तते णं से पउत्ति० वेसाहिं कण्णमिरिसंसिताहिं उप्पत्तितुरियचवलमप्पवणजइणसिग्घवेगाहिं विणीताहिं हंसवहुगाहिं चेव कलितो णाणामणिकणगरतणमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाहिं वत्तीयाहिं नरपतिसरिससमुदयप्पमाणगरीहिं महग्घवरपट्टणुग्ग-

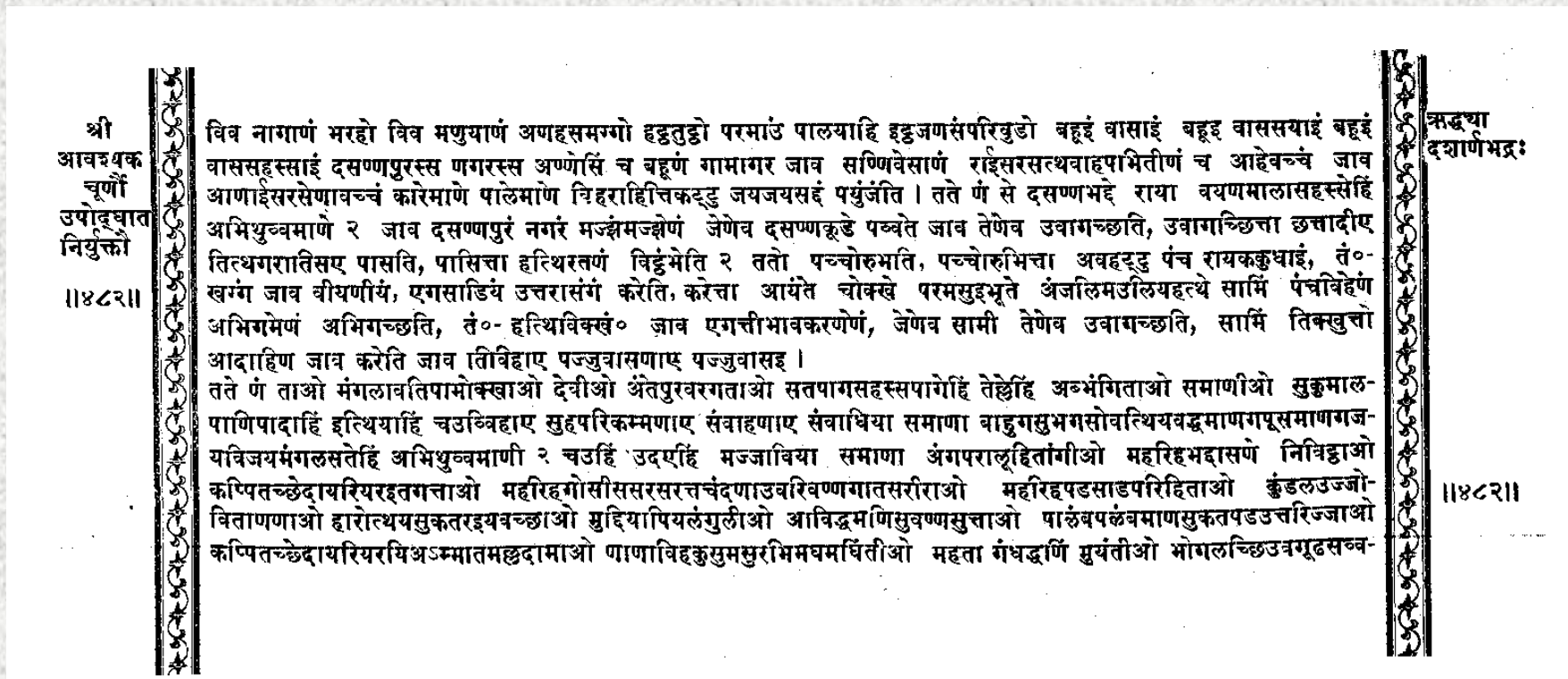
ऋद्ध्या-दशार्णभद्रः

॥४८०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

ताहिं समिद्धरायकुलसेवियाहिं कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतसुरभिमघमघेंतगंधुद्धुयाहिरामाहिं सललियाहिं उमओ पासिंपि चामराहिं उक्खिप्पमाणाहिं सुहसीतलवातवीजितंगे मंगलजयसद्दकतालोए अणेगगणणायगजावसंपरिवुडे धवलमहामेहनिग्गते विव गहगणदिप्पंतरिक्खतारागणाण मज्झे ससिव्व पियदंसणे णरवती मज्जणघराओ पडिणिक्खमति, २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छति, अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवतिं नरवति दुरूढे। ततेणं तंमि तस्स दूरूढस्स समाणस्स तप्पढमताए इमे अट्ठट्ठ मंगलगा पुरतो अधाणु०, एवं महिंदज्झयदेवादिवज्जं जथा सामिस्स निक्खमणे जाव पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता दसण्णभद्दस्स रण्णो पुरतो य मग्गतो य पासतो य अहाणुपुव्वीए संपट्ठिता, ततेणं तस्स पुरतो महं आसा आसवारा जाव रहसंगेल्ली अथा०, ततेणं दसण्णभद्दे राया हारोत्थयसुकतरइतवच्छे कुंडलउज्जोतिताणणे मउडदित्तसिरए णरसीहे णरवती णरिंदे णरवसभे मरुयरायवसभरायकप्पे अब्भहितं रायतेयलच्छीए दीप्पमाणे हत्थिखंधवरगते जाव से कोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेतवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं सव्विड्ढीए जाव सव्वारोहेणं सव्वपुप्फ जाव णिग्घोसणाइतरवेणं दसण्णपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जाव दसण्णकूडे पव्वते जेणेव सामी तेणेव पहारेत्थ गमणाए। ततेणं तस्स तथा निग्गच्छमाणस्स सिंघाडगजाव पहेसु बहवे अत्थत्थिता कामत्थिता जाव घंटियगणा ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धण्णाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हादणिज्जाहिं अट्ठसतियाहिं अपुणरुत्ताहिं मितमहुरगंभीराहिं गाहियाहिं वग्गूहिं अभिणंदंता य अभित्थुणंता य एवं वयासी- जय जय णंदा! जय जय भद्दा! अजितं जिणाहि जितं पालयाहि जितमज्झंमि त वसाहि तं देव! सयणमज्झे, इंदो विव देवाणं चंदो विव ताराणं चमरो विव असुराणं धरणो



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४८२॥

विव नागाणं भरहो विव मणुयाणं अणहसमग्गो हट्ठतुट्ठो परमाउं पालयाहि इट्ठजणसंपरिवुडो बहूइं वासाइं बहूइ वाससयाइं बहूइं वाससहस्साइं दसण्णपुरस्स णगरस्स अण्णेसिं च बहूणं गामागर जाव सण्णिवेसाणं राईसरसत्थवाहपभितीणं च आहेवच्चं जाव आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहराहित्तिकट्टु जयजयसद्दं पयुंजंति । तते णं से दसण्णभद्दे राया वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे २ जाव दसण्णपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव दसण्णकूडे पव्वते जाव तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थगराति सए पासति, पासित्ता हत्थिरतणं विट्ठंभेति २ ततो पच्चोरुभति, पच्चोरुभित्ता अवहट्टु पंच रायककुधाइं, तं०- खग्गं जाव वीयणीयं, एगसाडियं उत्तरासंगं करेति, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूते अंजलिमउलियहत्थे सामिं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छति, तं०- हत्थिविक्खं० जाव एगत्तीभावकरणेणं, जेणेव सामी तेणेव उवागच्छति, सामिं तिक्खुत्तो आदाहिण जाव करेति जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ।

ततेणं ताओ मंगलावतिपामोक्खाओ देवीओ अंतेपुरवरगताओ सतपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगिताओ समाणीओ सुकुमालपाणिपादाहिं इत्थियाहिं चउव्विहाए सुहपरिकम्मणाए संवाहणाए संवाधिया समाणा बाहुगसुभगसोवत्थियवद्धमाणगपूसमाणगजयविजयमंगलसतेहिं अभिथुव्वमाणी २ चउहिं उदएहिं मज्जाविया समाणा अंगपरालूहितांगीओ महरिहभद्दासणे निविट्ठाओ कप्पितच्छेदायरियरइतगत्ताओ महरिहगोसीससरसरत्तचंदणाउवरिविण्णगातसरीराओ महरिहपडसाडपरिहिताओ कुंडलउज्जोवितापणाओ हारोत्थयसुकतरइयवच्छाओ मुद्दियापियलंगुलीओ आविद्धमणिसुवण्णसुत्ताओ पालंबपलंबमाणसुकतपडउत्तरिज्जाओ कप्पितच्छेदायरियरयिअउम्मातमल्लदामाओ णाणाविहकुसुमसुरभिमघमघिंतीओ महता गंधद्धणिं मुयंतीओ भोगलच्छिउवगूढसव्व-

ऋद्धया दशार्णभद्रः

॥४८२॥

देहाओ बहूहिं खुज्जाहिं चिलायाहिं वडभिताहिं वामणियाहिं पप्परीहिं बउसियाहिं जोणियाहिं पण्हवियाहिं ईसिणियाहिं घरुणियाहिं लासियाहिं देविलीहिं सिंहलीहिं आरबीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीयाहिं बहलीहिं मुरुंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं णाणादेसिवेसपरिमंडिताहिं इच्छितचिंतितपत्थियवियाणियाहिं सदेसणेवत्थगहितवेसाहिं विणीताहिं चेडियाचक्कवालवरिसधरकंचुइज्जमहयरगवंदगपरिक्खित्ताओ अंतेउराओ निग्गच्छंति २ जेणेव ताइं जाणाइं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता जाव पाडिएक्कं २ जुग्गाइं जाणाइं दुरूहंति २ नियतपरियाल सद्धिं संपरिवुडाओ नगरं मज्झंमज्झेणं जाव सामंतेणेव उवागच्छंति, छत्तादीए जाव पासित्ता जाणादीणि विट्ठंभंति, तेहिं पच्चोरुभित्ता पुप्फतंबोलमादीयं पाहाणाउ पविसज्जेंति २ आयंता जाव पंचविहेणं अभिगच्छंति, तं०-सच्चित्ताणं दव्वाणं विउसरणताए एवं जहा पुव्विं जाव एगत्तीभावेणं जेणेव से भगवं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता समणं भ० म० तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेंति करेत्ता वंदंति णमंसंति २ दसण्णभद्दरायं पुरतो काउं ठिताओ चेव सपरिवाराओ सुस्सूसमाणीओ णमंसमाणीओ अभिमुहाओ य विणएण पंजलियडाओ तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे जाव विहरति,ततेणं दसण्णस्स रण्णो इमं एयारूवं अणुट्ठितं जाणित्ता एरावणं हत्थिरायं सद्दावेति२एवं वयासि-गच्छाहि णं भो तुमं देवाणुप्पिया! चोवट्ठिं दंतिसहस्साणि विउव्वाहि,एगएगाए बोंदीए चोवट्ठिं अट्ठ दन्ताणि अट्ठ सिराणि विउव्वाहि,एगमेगे दंते अट्ठट्ठ पुक्खरिणीओ,एगमेगाए पुक्खरिणीए अट्ठट्ठ पउमाणि सतसहस्सपत्ताणि, एगमेगे पउमपत्ते दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुत्तिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेहि, पुक्खरकण्णियाए य पासादवडेंसगं, तत्थ सक्के अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सद्धिं जाव उग्गिज्जमाणे उवनच्चिज्जमाणे जाव पच्चप्पिणाहि, सेवि जाव तहेव करेति । ततेणं से

सक्के हरिणेगमेसिं सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं व०- खिप्पामेव भो सभाए सुहम्माए जोयणपरिमंडलं जथा उसभसामिस्स आभिसेगे जाव सामिंतेण उवागतो। ताहे एरावणविलग्गे चेव तिक्खुत्तो आदाहिणपदाहिणं करेति, ताहे सो हत्थी अग्गपादेहिं भूमीए ठितो, ताहे तस्स हत्थिस्स दसण्णकूडे पव्वते पदाणि देवतप्पभावेण उट्ठिताणि, ताहे से णामं जातं गयत्थपतउत्ति।

तते णं से दसण्णभद्दे राया पुव्वं निग्गते पासति सक्कस्स देविंदस्स दिव्वं देविड्ढिं जाव एगमेगेसु णट्टविधिं, सक्कं च देविंदं एरावणहत्थिवरगतं सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणं पासति २ विम्हिते समाणे अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणे चिट्ठति, ततेणं तस्स रण्णो राइड्ढी सक्कस्स देवरण्णो दिव्वेणं पभावेणं हतप्पभा जाव लुप्पप्पभा जाता यावि होत्था, तते णं सक्के देविंदे दसण्णभद्दरायं एवं वयासी—हं भो दसण्णभद्दराया! किण्णं तुमं न याणसि जथा—देविंदअसुरिंदनागिंदवंदिता अरहंता भगवंतो, तथावि णं तव इमे अज्झत्थिए-गच्छामि णं भंते भगवं महावीरं वंदए जथा ण अण्णेण केणइ, गच्छतित्ति, ततेणं से राया लज्जिते विलिए वेड्डे तुसिणीए संचिट्ठति, चिंतेति य—कतो एरिसी अम्हारिसाण इड्ढित्ति?, अहो कएल्लओ णेण धम्मो, अहमवि करेमि, भणति-(पइण्णा) पालणं च कतं होहितित्ति सव्वं पयहिऊण पव्वइतो। एवं सामाइयं इड्ढीए लब्भतित्ति।

सक्कारेणं, एक्को धिज्जाइओ तथारूवाणं थेराणं अंतिके सोच्चा पव्वइओ समहिलो उग्गं उग्गं पव्वज्जं करेति, नवरमवरोप्परं पीतिते ओसरति, महिला मणागं धिज्जाइणित्ति गव्वमुव्वहति, मरिऊण देवलोगं गताणि, जहाउगं भुत्तं, इतो य इलावद्धनगरं, तत्थ इला देवता, तं एगा सत्थवाही पुत्तमलभमाणी उवाणति, सो चइऊण पुत्तो से जातो, इलापुत्तो नाम कतं, कलाओ अधिज्जितो, इतरावि लंखगकुले जाता, दोवि जोव्वणं पत्ताणि, अण्णदा सो तीए रूवे अज्झोववण्णो, सा मग्गिज्जंतीवि ण लब्भति, ता

भणंति—जतियं तुलति तत्तियं देमो, ताणि भणंति--एसा अम्हं अक्खयणिधी, जा तादि परं सिप्पं अम्हेहि य समं हिंडति तो देमो, सो तेहिं समं हिंडाति सिखिक्तो य, ताहे विवाहनिमित्तं रण्णो पेच्छणयं करेहित्ति भणितो बेण्णातडं गताणि, तत्थ राया पेच्छति संतेपुरो, सो दरिसेति, रायादिट्ठी दारियाए उवरिं, राया ण देति, साधुक्काररावं वदुति, भणितो- लंख ! पडणं करेहि, तं च किर वंससिहरे अड्डं कट्ठं, तत्थ य दो खीलगा, सो पाउआओ आविंधति, तत्थ य मूले विगिट्ठगाओ, ततो असिखेडगहत्थग-तो आगासं उप्पतित्ता खीलगा पओगणालियाए पएसेतव्वा सत्त अग्गिमोव्विद्धे काऊणं, जदि फिट्टइ तो पडितो स तथा खंडिज्जति, तेण तं कतं, रायावि दारियं पलोएति, लोएण कलकलो कतो ण य देति राया न देतित्ति, राया चिंतेति--जदि एस मरति तो णं अहं लएहामि, भणति--न दिट्ठं, पुणो करेहि, पुणोऽवि कतं, तत्थवि न दिट्ठं, ततियंपि कतं, चउत्थियाए भणितं, रंगो विरत्तो, ताहे सो इलापुत्तो वंसग्गलए ठितो चिंतेति–धिरत्थु भोगाणं, एस राया एत्तियाहिं महिलाहिं न तित्तो, एताए रंगोवजीवियाए लग्गितुं मग्गति, एताए कारणा ममं मारेतुमिच्छति, सो य उवट्ठिओ, एगत्थ सेट्ठिघरे साहुणो पडिलाभिज्जमाणे पासति सव्वालंकारविभूसिताहिं, साधू य पसन्तचित्तेण पलोएमाणे पासति, ताहे भणति--अहो धण्णा निःस्पृहा विसएसु, अहं सिद्धिसुतो सयणं परिचइत्ता आगतो, एत्थवि एसा अवत्था, तत्थेव विरागं गतस्स केवलणाणं उप्पण्णं, ताएवि चेडीए विरागो विभासा, अग्गमहिसीएवि, रण्णोवि पुणरावत्ती, चत्तारिवि केवली जाया सिद्धा य । एवं सक्कारेण । अहवा तित्थगरादीणं देवासुरेहिं सक्कारं दट्ठूणं जथा मरिइस्स । अहवा इमेहिं कारणेहिं लंभो—

अब्भुट्ठाणे विणए० ।८-१६५॥८४८॥ अब्भुट्ठाणं आसणपरिच्चाओ, आसणत्थं वांदित्ता विणएण पुच्छति, ताहे विणीउत्ति

साधू कहेति, विणओ नाम अंजलिग्रग्रहप्रणिपातादिः, परक्कमो परा (ना) क्रमतीति पराक्रमः, के च परे ?, कषायादयः, अथवा साधुसमीवं चंक्रमणेन, गमनेनेत्यर्थः, साहुसेवणा जत्थ ठिता तत्थ खणविखणं सेवति, एवं लंभो सम्मदंसणस्स वरितए मीसगस्स य । सीसो चोदेति-एवं पाठोऽस्तु 'सम्मत्तस्स तु लंभो सुतचरणे देसविरतीए' अत्रोच्यते, सुतसामाइयं मिथ्यादृष्टेः सम्यग्दृष्टेश्च भवति, चरित्राचरित्राणि तु नियमात् सम्यग्दृष्टेः, अतः श्रुतसामायिकद्वैविध्यार्थं तद्ग्रहणं न कृतं, अथवा (य) ग्रहणात्प्रत्येतव्यं, अथवा सम्यगदर्शनं यत्र तत्र नियमात् श्रुतसामायिकं, कथं ?, उच्यते, जत्थाभिणिबोहियणाणं तत्थ सुतमाणं, अथवा आभिणिबोहियनाणग्रहणे नियमा सुतग्गहणं कयं,-एवं जिणपण्णत्ते सद्दहमाणस्स भावतो भावे । पुरिसस्साभिणिबोहे दंसणसद्दो हवति जुत्तो ॥ १ ॥ **कहंति गतं । इदाणिं केच्चिरंति दारं, तस्सेवं लद्धस्स केच्चिरं अवट्ठाणं? —**

सम्मत्तस्स सुतस्स य० ।८-१६६।८४९। सम्मत्तस्स य सुतस्स य जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठिसागरोवमा अहिता, जेण अणुत्तरेसु उक्कोसट्ठितिगो दो वारे होज्जा, इह य मणुस्साउगेण अधियाइं, तं च तिण्णि पुव्वकोडीओ वासपुहुत्ताणि वा, चरित्तसामाइयस्स जहण्णेणं समओ, उक्कोसेणं पुव्वकोडी देसूणा, विरताविरतीओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, जेण एताणि एगभवग्गहणे, पढमबितिया णाणाभवग्गहणाणि, जेण 'इहभविए भंते ! णाणे० ' आलावओ, इदाणिं णाणाजीवाणं भण्णति, तत्थ चत्तारिवि सव्वद्धं । **इदाणिं कतित्ति दारं—**

कतित्ति संखा, एत्थ तिण्णि विसेसा-पुव्वपडिवण्णगा पडिवज्जमाणगा पडिपडितित्ति वा, पडिवत्तिओ य पुव्वपडिवण्णगा पडिपडिता य होंति तेण पडिवत्ती तावं भण्णति-संमत्तस्स देसविरतीए पडिवज्जमाणगा सिय अत्थि सिय णत्थि, जदि अत्थि

जहण्णेण एगो वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण खेत्तपलिओवमस्स असंखेज्जतिभागे जावतिया आगासपदेसा एवतिया एगसमएणं पडिवज्जेज्जा, चरित्ताचरित्ता सम्मद्दिट्ठी असंखेज्जगुणा, सुतस्स सिय अत्थि सिय नत्थि, जदि अत्थि जहण्णेणं एगो वा दो वा तिण्णि वा उक्कोसेणं लोगसेढीए असंखेज्जतिभागे जावतिया आगासपदेसा एवतिया एगसमएणं पडिवज्जेज्जा, किं कारणं ?, उच्यते, सुबहुतरा सुतं मिच्छादिट्ठिस्स, चरित्ते सिय अत्थि सिय नत्थि, जदि अत्थि एगो वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सहस्सपुहुत्तं पडिवज्जेज्जा। इदाणिं पुव्वपडिवण्णगा संमत्ते चरित्ताचरित्ते य, ते पुण पडिवज्जमाणएहिंतो नियमा असंखेज्जगुणा तेण असंखेज्जा भण्णंति, ते जहण्णपदेवि असंखेज्जा उक्कोसपदेवि असंखेज्जा, जहण्णपदाओ उक्कोसपदे विसेसाधिया, ते पुण जावतिया एगसमएणं पडिवज्जंति ततो असंखेज्जगुणा, सुए जहण्णपदेवि उक्कोसपदेवि जावतिया एगस्स लोगागासयतस्स असंखेज्जतिभागे लोगागासपदेसा एवतिया होज्जा, जहण्णपदासी उक्कोसपदे विसेसाधिका, ते पुण पडिवज्जमाणएहिंतो नियमा संखेज्जगुणा, पडिपडिता संमत्तचरित्तस्स मीसगस्स य जे पंडिता ते नियमा अनंतगुणा, जे संसारी ते सव्वे सुतपडिपडिता, कहं ?, बे मिच्छद्दिट्ठी अभविगा वा तेवि एक्कारसंगाणि पढंति, उड्ढचंगमादि वा, जे पुण जहण्णपदातो उक्कोसपदे अधिया ते चउत्थं सम्मं पडुच्च, तदा बहवे मणुया अजितसाभियकाले। कतित्ति दारं गतं।

इदाणिं अंतरं, सम्मत्तस्स चरित्तस्स मीसगस्स एगं जीवं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अद्धं परियट्टं देसूणं, सुतस्सवि सम्मत्तपरिगहितस्स एक्किरं, मिच्छत्तपरिगहितस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो, णाणाजीवाणं णत्थि अंतरं महाविदेहं पडुच्च॥ इदाणिं अविरहितंति दारं, केच्चिरं विरहितो पडिवत्तिकालो अविरहितकालो य ?, तत्थ अविरहितकालो पडिव-

ज्जिन्ताणं सुतसामाइयस्स जहण्णेणं दो समया उक्कोसेण असंखेज्जसमए निरंतरं पडिवज्जेंति, तं पुण णाणाजीवे प्रति भण्णति, ते पुण समया आवलियसमयाणं असंखेज्जतिभागे, एवं चेव संमत्तदेसविरतावि, अविरहितकाले चरित्ते जहण्णेणं दोण्णि समया, उक्कोसेणं अट्ठ समया निरंतरं पडिवत्ती। इदाणिं विरहितकालो संमत्तसुताणं–जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं सत्त अहोरत्ता, एतंमि समए न लब्भति अवरो विधी, जंमि समए एगो वा अणेगा वा पडिवण्णा संमत्तसुतं तातो जहण्णेणं ततिए समए एगस्स वा अणेगस्स वा अणेगाण वा पडिवत्ती, अजहण्णेण चउत्थे वा पंचमे वा, उक्कोसेणं जाव सत्तमस्स अहोरत्तस्स चरिमो समओ, अतो परं नियमा अण्णेण पडिवज्जितव्वं, विरताविरतीए जहण्णेणं ततिए समए, उक्कोसेणं बारसण्हं अहोरत्ताणं, चारित्ते जहण्णेणं ततिए समए उक्कोसेणं पण्णरस अहोरत्ते, एवं विरहितकालो।

इदाणिं कस्स कइ भवाणि लंभो भवेज्जा ?, सम्मत्तस्स जहण्णेणं एगं भवं, उक्कोसेण खेत्तपलितोवमस्स असंखेज्जतिभागे जावतिया आगासपदेसा एवतियाणि भवाणि लंभो भवेज्जा, एवं देसविरतीएवि जहण्णुक्कोसा लंभो, चरित्ते जहण्णेणं एक्कं भवं उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाणि अविराधेन्तो, सुते जहण्णेणं उक्कोसेणं अणंताइं, एक्कं जथा मरुदेवाए, सेसाणि जहा चित्तंतरगंडियाए।

इदाणिं आगरिसा, आकर्षणमाकर्षः, ग्रहणमोचनमित्यर्थः, ते दुविहा-एगभवग्गहणिया नाणाभवग्गहणिया य, सुतसामाइयं एगभवे जहण्णेणं एक्कसिं आगरिसेति, उक्कोसेण सहस्सपुहुत्तवाराए, एवं सम्मत्तस्सवि, देसविरतीए विरईए य जहण्णेणं एक्कसिं उक्कोसेण सतपुहुत्तं वारा, णाणाभवग्गहणिता सुतस्स जहण्णेणं दोण्णि उक्कोसेणं तं चेव सहस्सपहुत्तं असंखेज्जएणं गुणिजति,

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

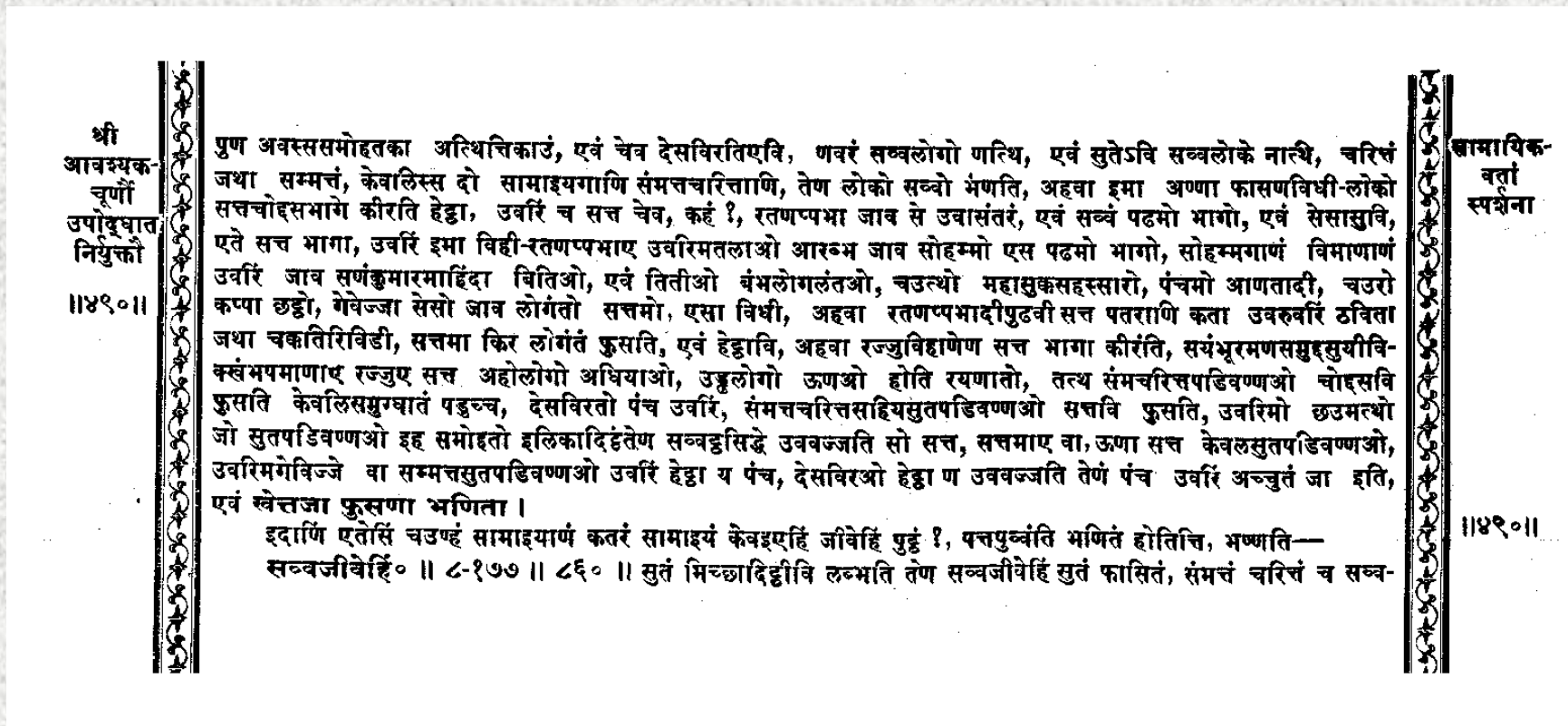
॥४८९॥

जम्हा पलितस्स असंखेज्जतिभागमेत्त भवा सम्मत्तपरिग्गहितस्स सामायिकस्स लंभोत्तिकाउं, जंपि सम्मद्दिट्ठिस्स सुतसामायिकं तस्सवि एसेव कालो, ते पुण कहं ?, एत्थ आलावओ-अत्थि णं भंते! समणा निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति?, हंता अत्थि, कहं णं भंते !०, गोयमा! तेसु तेसु णाणंतरेसु चरित्तंतरेसु लिंगंतरेसु पवयणंतरेसु पावयणंतरेसु कप्पंतरेसु मग्गंतरेसु भंगंतरेसु णयन्तरेसु वादंतरेसु पमाणंतरेसु संकिता कंखिता जाव कलुसमावण्णा वेदेंति' एवं पुव्वकोडायू मणूसा पुणो २ पडिवज्जंति। जोवि असंखेज्जवासाउओ सोवि पुव्वकोडिसेसाउओ पडिवज्जति, तस्स नत्थि आगरिसा जो खइएण उववज्जति, एवं चरित्ताचरित्तेवि, चरित्ते णाणाभव० जहण्णेणं दोण्णि उक्कोसेणं सहस्सपुहुत्तं वारा, सुते णाणाभवग्गहणिता अणंता आगरिसा एवं।

इदाणिं फासणा–॥ ८-१७६ ॥ ८५९ ॥ स्पर्शना प्राप्तिरवगाहो लंभ इत्यर्थः, संमत्तसामाइयपडिवण्णो उ जीवो लोगस्स कतिभागं फुसेज्जा ?, किं संखेज्जतिभागं० असंखेज्जतिभागं फुसति संखिज्जे भागे० असंखिज्जे भागे० सव्वं लोगं०?, एगं जीवं पडुच्च णो संखेज्जइभागं फुसति, असंखेज्जइभागं फुसति, णो संखेज्जभागे फुसति, सव्वओ लोगं वा फुसति, णाणाजीवेवि एमेव भयणाए सव्वलोगं फुसति, तं पुण केवलिसमुग्घातं प्रति, एवं चरित्तसामाइयस्सवि, छाउमत्थियसमुग्घायं प्रति एगजीवो वा सव्वजीवा वा नियमा असंखेज्जतिभाए लोगस्स फुसेज्जा, सेसेसु चउसुवि नत्थि, सुतं चरित्ताचरित्तसामाइयं च नियमा लोगस्स असंखेज्जतिभागे भोज्जा, अण्णे पुण भणंति-एगं जीवं पडुच्च संखेज्जतिभागं वा फुसति असंखेज्जतिभागं वा संखेज्जे वा भागे असंखेज्जे वा० सव्वलोगं वा, णाणाजीवे सव्वस्स लोगं फुसति, तं पुण केवलिसमुग्घातं पढमबिइयततियचउत्था भागा, वेयणादिमारणंतियसमुग्घायं प्रति पंचमभागो, केवलिसमुग्घायं प्रति अण्णतरो, एगो जीवो समोहण्णति वा ण वा, नाणाजीवाणं

सामायिक-स्याकर्षाः

॥४८९॥



श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४९०॥

पुण अवस्ससमोहतका अत्थित्तिकाउं, एवं चेव देसविरतिएवि, णवरं सव्वलोगो णत्थि, एवं सुतेऽवि सव्वलोके नास्ति, चरित्तं जथा सम्मत्तं, केवलिस्स दो सामाइयगाणि संमत्तचरित्ताणि, तेण लोको सव्वो भणति, अहवा इमा अण्णा फासणविधी-लोको सत्तचोद्दसभागे कीरति हेट्ठा, उवरिं च सत्त चेव, कहं ?, रतणप्पभा जाव से उवासंतरं, एवं सव्वं पढमो भागो, एवं सेसासुवि, एते सत्त भागा, उवरिं इमा विही-रतणप्पभाए उवरिमतलाओ आरब्भ जाव सोहम्मो एस पढमो भागो, सोहम्मगाणं विमाणाणं उवरिं जाव सणंकुमारमाहिंदा बितिओ, एवं तितीओ बंभलोगलंतओ, चउत्थो महासुक्कसहस्सारो, पंचमो आणतादी, चउरो कप्पा छट्ठो, गेवेज्जा सेसो जाव लोगंतो सत्तमो, एसा विधी, अहवा रतणप्पभादीपुढवी सत्त पतराणि कता उवरुवरिं ठविता जथा चक्कतिरिविडी, सत्तमा किर लोगंतं फुसति, एवं हेट्ठावि, अहवा रज्जुविहाणेण सत्त भागा कीरंति, सयंभूरमणसमुद्दसुयीवि-क्खंभपमाणाए रज्जुए सत्त अहोलोगो अधियाओ, उड्ढलोगो ऊणओ होति रयणातो, तत्थ संमत्तचरित्तपडिवण्णओ चोद्दसवि फुसति केवलिसमुग्घातं पडुच्च, देसविरतो पंच उवरिं, संमत्तचरित्तसहियसुतपडिवण्णओ सत्तवि फुसति, उवरिमो छउमत्थो जो सुतपडिवण्णओ इह समोहतो इलिकादिदंतेण सव्वट्ठसिद्धे उववज्जति सो सत्त, सत्तमाए वा, ऊणा सत्त केवलसुतपडिवण्णओ, उवरिमगेविज्जे वा सम्मत्तसुतपडिवण्णओ उवरिं हेट्ठा य पंच, देसविरओ हेट्ठा ण उववज्जति तेणं पंच उवरिं अच्चुतं जा इति, एवं खेत्तजा फुसणा भणिता।

इदाणिं एतेसिं चउण्हं सामाइयाणं कतरं सामाइयं केवइएहिं जीवेहिं पुट्ठं ?, पत्तपुव्वंति भणितं होतित्ति, भण्णति—

सव्वजीवेहिं० ॥ ८-१७७ ॥ ८६० ॥ सुतं मिच्छादिट्ठीवि लब्भति तेण सव्वजीवेहिं सुतं फासितं, संमत्तं चरित्तं च सव्व-

सामायिक-वर्त्ता स्पर्शना

॥४९०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

सिद्धेहिं फासिताइं, जेण तेहिं विरहितस्स णेव्वाणं णत्थि, जे पुण सिद्धा देसविरतिं फासेत्ता सिद्धिगतिं गता ते कित्तिया ?, सव्व-सिद्धा बुद्धिच्छेदेणं असंखेज्जा भागा कता, ताण असंखेज्जाणि ठाणाणि, तत्थ असंखेज्जेहिं चेव ठाणेहिं देसविरतिं काउं ठाते-ल्लया होज्जा, तेवि य पच्छा चरित्तं पडिवज्जित्ता गता, जे पुण सुद्धाइं चेव संमत्तचरित्ताइं फासेतूण गता ते देसविरतिसिद्धाणं असंखेज्जतिभागो । **फोसणा गता ।**

इदाणिं निरुत्ती--निश्चिता उक्तिः निरुक्तिः, निरुत्ताणि किंनिमित्तं ?, उच्यते, असंमोहत्थं, यथा चन्द्रः शशी निशाकरः उडुपतिः रजनिकर इत्येवमादिः, आदित्यस्य सविता भास्करः दिनकर इत्येवमादीनि, एवं सर्वत्र योज्यते । यो हि शशिपर्याया-भिज्ञो भवति तस्य एकस्मिन् शशिपर्याये आकारिते सर्वेष्वेव प्रत्ययो भवति, न मुह्यति, एवं चतुर्णां सामायिकानां पर्यायाभिज्ञः एकस्मिन् पर्याये आकारिते न मुह्यति, यथा सत्यपि प्रकाशकत्वे आदित्य इत्युक्ते नोक्तं भवति चन्द्रमाः, चन्द्रमा इति वा नादित्य इत्युक्तं भवति, एवं श्रुतसामायिकमित्युक्ते नोक्तं भवति चरित्रसामायिकं, चरित्रे वा श्रुतं सत्यपि सामाइकसामान्ये, एवमसं-मोहार्थं निरुक्तावतारः । तत्र सम्यक्त्वसामायिकपर्यायाः—

सम्मदिट्ठी अमोह० ॥ ८-१७८ ॥ ८६१ ॥ **सुतसा०** ॥ ८-१७९ ॥ ८६२ ॥ **अक्खरसण्णी०** ॥ ८-१८० ॥ ८६३ ॥ चरित्ते **सामाइकं समइयं०** ॥ ८-१८१ ॥ ८६४ ॥ आदिल्लाणं तिण्हवि जथाविधीए विभासा कातव्वा, ततो चरित्ते तत्थ ताव सामाइके उदाहरणं, जथा केण समभावो कतो ?—

***सामायिक शब्दस्य पर्याया: कथानकं सहितेन कथयते

***चूर्णि-संकलित निर्युक्ति-क्रमांक (यहां चूर्णिमे जो निर्युक्ति-क्रम दिये है वे वृत्तिमे दिये निर्युक्ति क्रमांकन से आगे-पीछे है ।

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

तेणं कालेणं तेण समएणं हत्थीसीसयं नगरं, दमदन्तो राया विक्कंतो, हत्थिणपुरे पांडवा, तेसिं च तत्थ य वेरं, तेहिं दमदन्तस्स रायगिहं गतस्स जरासंधमूलं सो विसओ दड्ढो लूडिओ य, अण्णदा दमदन्तो आगतो, तेण हत्थिणपुरं रोहितं, ते भएण ण णिन्ति, भणति-सियाला ! मम सुण्णयं विसयं लूडेह, इदाणिं णीह, ते ण णिन्ति, ताहे सविसयं गतो। अण्णदा निव्विण्णकामभोगो पव्वइतो, अण्णदा एगल्लविहारं पडिवण्णो, विहरंतो हत्थिणपुरमागतो, बाहिं च पडिमं ठितो, जुधिट्ठिलेणं अणुजत्तानिग्गतेणं वंदितो, पच्छा सेसएहिं चउहिं वंदितो पंडवेहिं, जाहे दुज्जोहणो आगतो तस्स मणुस्सेहिं कहितं, जथा-एस दमदन्तो, तेण मातुलिंगेण आहतो, पच्छा खंधावारेण एंतेण पत्थरं पत्थरं खिवंतेणं पत्थररासीकतो, जुधिट्ठिलो नियत्तो पुच्छेति-एत्थ साधू दिट्ठो आसि, कहितं से जहा एसो सो पत्थररासीकतो दुज्जोहणेणं, ताहे अंबाडिओ सो, ते य अवणीया पत्थरा, तेल्लेणं अब्भंगितो खामितो य। तस्स दिट्ठो किर भगवतो दमदन्तस्स दुज्जोहणे पंडवेसु वा समो भावो आसि, एवं कातव्वं।

समइए-साकेते नगरे चंदवडेंसओ राया, तस्स धारिणी महादेवी, से दुवे पुत्ता-गुणचंदो मुणिचंदो य, गुणचंदो जुवराया, मुणिचंदस्स उज्जेणी दिण्णा कुमारभोत्तीए, अण्णे य दो पुत्ता अण्णाए देवीए, सो राया माहमासे पडिमं ठितो सागारं करेति जाव दीवओ जलति, दासी चिंतेति-सामी पडिमं ठिओ, अंधकारे मा अभिमरो पविसेज्जा, पुणरवि तेल्लं दिण्णं, बितियं जामं जलति, ततिएवि दिण्णं, चउत्थे य दिण्णं, राया सुकुमारो निरामीभूतो मतो यं। पच्छा गुणचंदो राया जातो महताहिमवन्त०, सो ताणं डहरगाणं मातं भणति-रज्जं गेण्हह अहं पव्वतामि, सा णेच्छति एतेण रज्जं आतत्तन्नि, सो राया अतिजाणनिज्जाणेसु रायलच्छीए अतीव दिप्पति, सा तं रायसिरिं पासित्ता चिंतेति-मते पुत्ताणं रज्जं दिज्जंतं न इच्छितं, तेवि एवं सोभन्ता, इदाणिंपि

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मारेमि, छिद्दाणि मग्गति, सो य राया छुहालू, तेण सूतस्स संदेसओ दिण्णो-एत्तो च्चेव पुव्वण्हितं पत्थवेज्जासि, जह विरावेमि, तेण अप्पितं चेडीय हत्थे, ताहे सा तं निज्जंतं पेच्छति, तं चेडिं भणति-दे पेच्छामि केरिसो ?, तीए उवणीतो, अहो सुरभी मोयगो विसलित्तेहिं हत्थेहिं मक्खेइत्ति, चेडी य णिप्फडति, राया य अतीति, सा णियत्ता रायाए समं चेतियघरं जाति, सा बारे अच्छति, निप्फिडंतस्स निवेदितं एत्तोत्ति, ते य दो कुमारा छायाव पासे ओलग्गंति, चिंतेति-अण्णे अहं खाइस्सं, एआणं यच्छामि, पच्छा तेसिं कुमाराणं भागे कातूण देति, ते हत्थिखंधवरगता खाइउमारद्धा बालत्तणेणं जाव विसवेगा आरद्धा, संभंतेण वेज्जा सद्दाविता, सुवण्णं पाइता, सज्जा, पच्छा य दासी सद्दाविता, पुच्छिता भणति-न कोति पेच्छति, नवरं एताणं माताए पराभुट्ठो, सा सद्दाविता, णाता जहा एसा कारित्ति, ताहे अंबाडिता, भणिता य, जथा-पावे! तदा नेच्छसि, मा णामऽकतसंबलो संसारे छूढो' होन्तो, तेसिं रज्जं दातूणं पव्वइतो सागरचंदाण समीवे। अण्णदा संघाडओ साधूणं उज्जेणीओ आगतो, सो पुच्छितो-तत्थ निरुवसग्गं ?, भणति-णवरं रायपुरोहियपुत्तो य बाहेति पासंडत्थे साहुणो य, सो गतो, अमरिसेण विस्सामितो, ते य संभोइया साधू, भिक्खवेलाए भणितो-आणिज्जउ, भणति-अत्तलाभितो मि, णवरं ठवणपडिकुट्ठाणि दावेह, कोइ चेल्लओ दिण्णो. सो तं पुरोहितघरं दंसेत्ता आगतो, इमोऽवि तत्थ पविट्ठो वड्ढेणं सद्देणं धम्मलाभोत्ति, अंतेपुरियाओ निग्गताओ हाहाकारं करेंतीओ, सो वड्ढवड्ढेणं सद्देणं भणति-किं एतं साविएत्ति, निग्गता बारं बाहिं बंधंति--इमोवि अब्भंतरे, ते भणंति--नच्चसु, परिग्गाहगं ठवेत्ता पणच्चितो, ते ण जाणंति वाएउं, भणंति-जुज्झामो, दोवि एक्कसराए आगता, मम्मेहिं आहता, जहा जंताणि तथा खलाविया, निसट्ठं हणितूणं दाराणि उग्घाडेत्ता गतो, उज्जाणे अच्छति, रायाए कहितं, तेण मग्गावितो, साधू भणंति-पाहुणओ, न याणामो, तेहिं गवे-

समतायां मेतार्यो-दाहरणं

॥४९३॥

संतेहिं उज्जाणे ठितो (दिट्ठो), राया गतो, खामितो य, नेच्छति मोत्तुं, जदि पव्वयंति ततो मुयामि, ताहे पुच्छति, पडिस्सुयं, एगत्थ गहाय चालिया जहा सट्ठाणे पडियाणि, लोओ कओ, पव्वइया, रायपुत्तो सम्मं करेति-ममं पितियएत्ति, पुरोहितसुतो दुगुंछति-अम्हे एतेण कवडेण पव्वाविता, दोवि मता, गता देवलोगं, संगारं करेंति-जो चयति पढमं सो संबोधितव्वो, पुरोहितसुतो तीए दुगुंछाए रायगिहे मेतीपोट्ठे आगतो, तीसे एगा सेट्ठिणी वयंसिया, किह जाता ?, सा मंसं विकिणति, ताए भण्णति-मा अण्णत्थ हिंडाहि, अहं सव्वं किणामि, दिवे दिवे आणेति, एवं तासिं पीती घणा जाता, तेसिं चेव घरस्स समोसिताणि ठिताणि, सा य सेट्ठिणी णिद्, ताहे मेतीए रहस्सियं पवावती, से पुत्तो दिण्णो, इतरीएवि धूता मतिया दिण्णा, पच्छा सेट्ठिणीए पादेसु पाडिओ तवप्पभावेण जीवउ, तेण से नामं कतं मेतिज्जोत्ति, संवड्ढितो, कलाओ गाहितो, देवेण संबोहितो, न संबुज्झति, ताहे अट्ठण्हं इब्भकण्णगाणं पाणिं गेण्हाविओ, सिबियाए नगरे हिंडति, देवो मेतं अणुप्पविट्ठो, जदि ममवि धूता जीवंती तीसेवि अज्ज विवाहो कओ होन्तो, भत्तं च नातगाणं दिण्णं होन्तं, ताहे ताए मेताए सिट्ठं, ताहे रुट्ठो देवाणुभावेणं गंतुं सिबिताए पाडितो, भणितो-तुमं असरिसीओ परिणेसित्ति खड्डाए छूढो, ताहे देवो भणति-किह ?, सो भणति-अवण्णोत्ति, तत्थ संबुद्धो भणति-एत्तो मं मोएहि, किंचि य कालं अच्छामि, बारस वरिसाणि, तो भण-किं करेमि ?, भणति-रण्णो धूतं दवावेहि, तो सव्वा अकिरिया ओहाडिया भविस्सतीत्ति, ताहे छगलओ दिण्णो, सो रतणाणि वोसिरति, तेण रतणाणं थालं भरितुं पितु कहिओ-रण्णो धूतं वरेति, सो रतणाणं थालं गहाय गतो, भणितो-किं मग्गसि ?, तेण भणितं-धूतं, ताहे निच्छूढो, एवं दिवसे लं गेण्हति, ण य देंति, अभएण भणितं-कतो तुज्झ रतणाणि ?, तेण भणितं-छगलओ हगति, भणति-अम्हवि दिज्जतु, दिण्णो

जाव मडगगंधाणि बोसिरति, अभयो भणति-देवाणुभावो, किं पुण?, परिक्खिज्जउ, किह?, ताहे भणितो-राया दुक्खं वेहारं सामी-वंदओ जाति, रहमग्गं करेहि, सो कतो, अज्जवि दीसति, भणति-पागारं सोवण्णं करेहि, कतो, पुणोवि भणितो- देमो जदि समुद्दं आणेसि, तत्थ ण्हातो सुद्धो होहिसि तो देहामो, आणीतो, वेलाए ण्हाताणं विवाहो, सिबिगाए हिंडंताणं ताओवि अण्णाओ आणियाओ, एवं भोगे भुंजति बारसवरिसाणि, पच्छा बोहितो महिलाहिं बारसवरिसा मग्गिता य, चउव्वीसाए वासेहिं सव्वाणि पव्वइयाणि, नवछुव्विओ जाव एगल्लविहारं पडिवण्णो, तत्थेव रायगिहे हिंडति, एगं सुवण्णगारगिहं भिक्खस्स अतिगतो, सो य सेणियस्स अट्ठसतं सोवण्णियाण जवाण करेति चेतियअच्चणितानिमित्तं, तं परिवाडीए सेणी करेति तिसंझं, तस्स गिहं साधू अतिगतो, ताणि तस्स एगाए वायाए भिक्खं ण णीणेंति, सो अतिगतो, ते य जवा कोंचएण खइता, ण य पेच्छति, रण्णो य वेला ढुक्कति, भणति-अज्ज अहं अट्ठखंडाणि कीरामि, सो साहुं संकति, पुच्छति, साधूवि तुण्हिक्को अच्छति, ताहे तेण रुट्ठेण तस्स सीसावेढो बद्धो, साह-केण सहिता?, तहवि तुण्हिक्को अच्छति, ताहे तेण तथा आढवितो जथा अच्छीणि भूमिए पडिताणि, कोंचओ य दारुगं खोडेंताणं सलिंकाए गलगे आहतो, तेण वंता, लोगो भणति-पावा! एते ते जवा, सोऽवि भगवं तं वेदणं अधियासेंतो कालगतो, सिद्धो य, लोगो आगतो, दिट्ठो मेतज्जो, रण्णो कहितं, वज्झाणि आणत्ताणि, घरं ठएत्ता पव्वइताणि, ताहे भणति-धम्मलाभो सावगा!, सुक्काणि, भणिताणि य-जदि उप्पव्वयह तो मे कवल्लीए कड्ढेमि। एवं सामाइयं अप्पए य कतं परे य कतं।

सम्यग्वादो संमावादो-तुरुविणी नगरी, जितसत्तू राया, तस्स भज्जा धिज्जातिगिणी, पुत्तो सो य दत्तो मामओ, अज्ज-कालओ माउलओ तस्स दत्तस्स, सो य पव्वइओ, सो य दत्तो जूयपसंगी ओलग्गिउमारद्धो, पधाणदंडो जातो, कुलपुत्तए

समतायां मेतार्यः

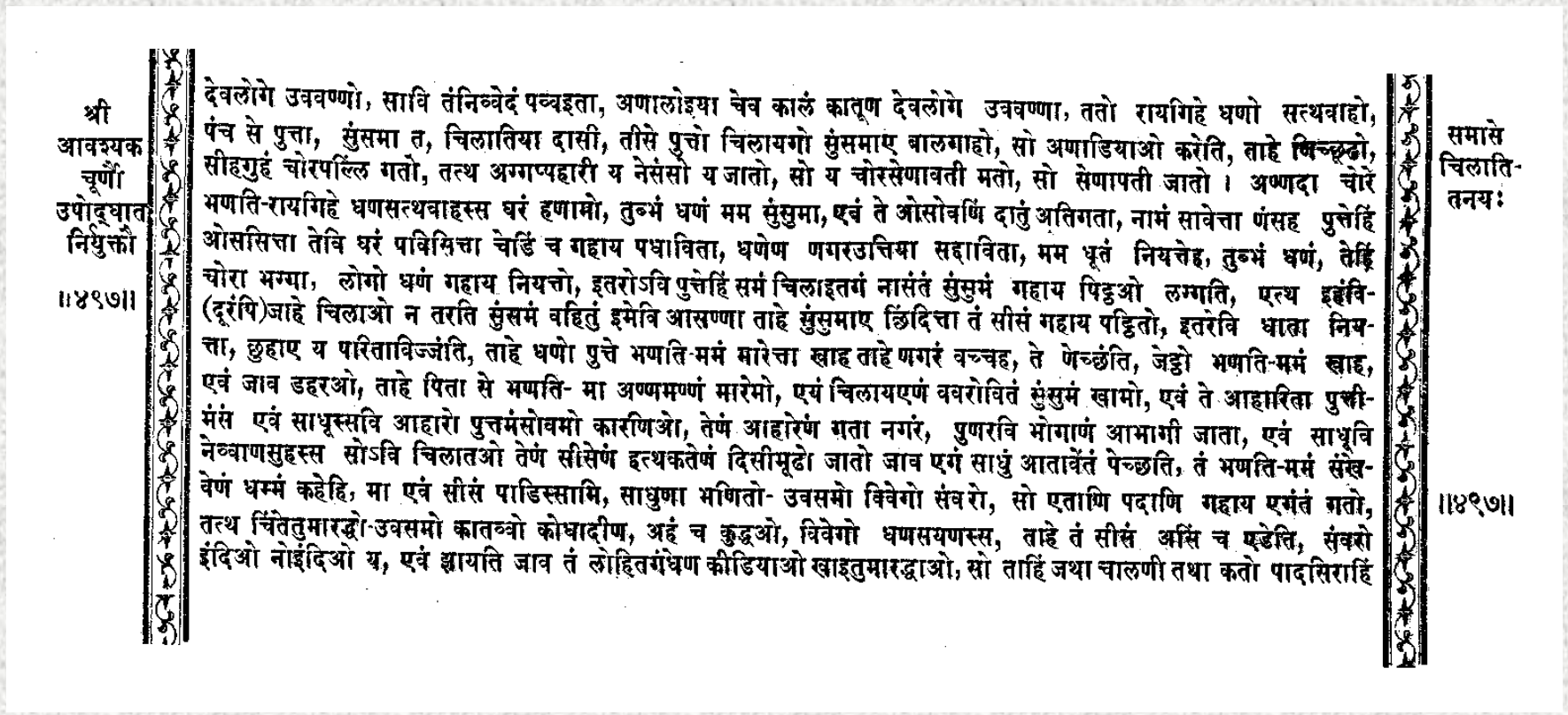
॥४९५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पभिंदित्ता राया धाडितो, सो राया जातो, जण्णा णेण बद्धू जट्ठा। अण्णदा तं मामयं पेच्छतितुं रुट्ठो भणति-धम्मं सुणेमित्ति, जण्णाण किं फलं ?, सो भणति- किं धम्मं पुच्छासि ?, धम्मं कहेति, पुणोवि पुच्छति, नरगाण पंथं पुच्छासि?, अधम्मफलं साहति, पुणोवि पुच्छति, भणति- असुभाणं कम्माणं उदयं पुच्छसि?, तं परिकहेति, पुणोवि पुच्छति, ताहे रुट्ठो भणति- निरया फलं जण्णस्स, सो रुट्ठो भणति- को पच्चतो?, जथा तुमं सत्तमे दिवसे सुणगकुंभीपाके पच्चिहिसि, को पच्चतो ?, जथा तुब्भं सत्तमे दिवसे सण्णा मुहंमि अतिगच्छिहिति, ताहे रुट्ठो भणति- तुज्झं का मच्चू?, सो भणति-अहं सुचिरं कालं पव्वज्जं कातुं दियलोगं गच्छामि, ताहे रुट्ठो भणति- रुंभह, ते दंडा तस्स निव्विण्णा, तेहिं सोच्चेव राया आवाहितो- एहि जा ते एतं बंधित्ता अप्पेमो, सो य पच्छण्णे अच्छति, तस्स दिवसा विस्सरिता, सो सत्तमदिवसे ते रायपहे सोधावियं मणुस्सेहि य रक्खावेति, एगो य देउलिओ पुप्फकरंडगहत्थगतो पच्चूसे पविसति, सो सण्णाइओ वोसिरित्ता पुप्फेहिं ओहाडेति, रायावि सत्तमे दिवसे पए आसचडगरेण जाति तं समणगं मारेमि, वोल्लितो जाति जाव अण्णेण आसकिसोरेण सह पुप्फेहिं उक्खिवित्ता खुरेणं पादो भूमीए आहतो, सण्णा तस्स मुहं अतिगता, तेण णातं जथा सच्चं मारिज्जामित्ति, ताहे दंडाणं अणापुच्छाए णियत्तिउमारद्धो, ते दंडा जाणंति- णूणं रहस्सं भिन्नं जाव घरं न जाति ताव णं गेण्हामो, तेहिं गहितो, इतरो राया जातो, ताए कुंभीए सुणए छुभित्ता बारं बद्धं, हेट्ठा अग्गी जालितो, ते ताविज्जंता खंडखंडेहिं छिंदंति, एस संभावादो कालगज्जस्स॥

समासो-एगो भिज्जाइओ पंडितमाणी सासणं खिंसति, सो वादे पतिण्णाए उग्गाहेतूण पराइणित्ता पव्वाविंतो, पच्छा देवता वंदेंतस्स उवगतं, दुगुंछं न मुचति, सण्णायगा से उवसंता, अगारी से णेहं ण छड्डेति, कंमणं दिण्णं, किह मे वसे होज्जा?, मतो,



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४९७॥

देवलोगे उववण्णो, सावि तंनिव्वेदं पव्वइता, अणालोइया चेव कालं कातूण देवलोगे उववण्णा, ततो रायगिहे धणो सत्थवाहो, पंच से पुत्ता, सुंसमा त, चिलातिया दासी, तीसे पुत्तो चिलायगो सुंसमाए बालगाहो, सो अणाडियाओ करेति, ताहे णिच्छूढो, सीहगुहं चोरपल्लिं गतो, तत्थ अग्गप्पहारी य नेसंसो य जातो, सो य चोरसेणावती मतो, सो सेणापती जातो। अण्णदा चोरे भणति-रायगिहे धणसत्थवाहस्स घरं हणामो, तुब्भं धणं मम सुंसुमा, एवं ते ओसोवणिं दातुं अतिगता, नामं सावेत्ता णंसह पुत्तेहिं ओससित्ता तेवि घरं पविसित्ता चेडिं च गहाय पधाविता, धणेण णगरउत्तिया सद्दाविता, मम धूतं नियत्तेह, तुब्भं धणं, तेहिं चोरा भग्गा, लोगो धणं गहाय नियत्तो, इतरोऽवि पुत्तेहिं समं चिलाइतगं नासंतं सुंसुमं गहाय पिट्ठओ लग्गति, एत्थ इहंवि-(दूरंपि)जाहे चिलाओ न तरति सुंसमं वहितुं इमेवि आसण्णा ताहे सुंसुमाए छिंदित्ता तं सीसं गहाय पट्ठितो, इतरेवि धाता नियत्ता, छुहाए य परितावेज्जंति, ताहे धणो पुत्ते भणति-ममं मारेत्ता खाह ताहे णगरं वच्चह, ते णेच्छंति, जेट्ठो भणति-ममं खाह, एवं जाव डहरओ, ताहे पिता से भणति- मा अण्णमण्णं मारेमो, एयं चिलायएणं ववरोवितं सुंसुमं खामो, एवं ते आहारिता पुत्ती-मंसं एवं साधूस्सवि आहारो पुत्तमंसोवमो कारणिओ, तेणं आहारेणं गता नगरं, पुणरवि भोगाणं आभागी जाता, एवं साधूवि नेव्वाणसुहस्स सोऽवि चिलातओ तेणं सीसेणं इत्थकतेणं दिसीमूढो जातो जाव एगं साधुं आतावेंतं पेच्छति, तं भणति-ममं संखे-वेणं धम्मं कहेहि, मा एवं सीसं पाडिस्सामि, साधुणा भणितो- उवसमो विवेगो संवरो, सो एताणि पदाणि गहाय एगंतं गतो, तत्थ चिंतेतुमारद्धो-उवसमो कातव्वो कोधादीण, अहं च कुद्धओ, विवेगो धणसयणस्स, ताहे तं सीसं असिं च पडेति, संवरो इंदिओ नोइंदिओ य, एवं झायति जाव तं लोहितगंधेण कीडियाओ खाइतुमारद्धाओ, सो ताहिं जथा चालणी तथा कतो पादसिराहिं

समासे चिलाति-तनयः

॥४९७॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

जाव सीसकरोडी ताव गताओ अड्ढाइज्जेहिं राइंदिएहिं कालं किच्चा सहस्सारे उववण्णो ।

संखेवो-चत्तारि बालतवस्सी सतसहस्से गंथे काउं जियसत्तुस्स उट्ठिता, अम्ह सत्थाणि सुणेहि, तुमं पंचमो लोगपालो, तेण भणितं-केत्तियं ?, ते भणंति-चत्तारि संधिताओ सतसहस्साओ, सो भणति-एच्चिरेणं ममं रज्जं सीदति, एवं अद्धद्धं उसरंतं जाव एक्केको उ सिलोगो, तंपि णत्थि, ताहे चतुण्हंवि एगो सिलोगो-जिण्णे भोयणमत्तेओ, कविलो पाणिणं दया । विहस्सतीरविस्सासो, पंचालो त्थीसु मद्दवं ॥ १ ॥ एवं चेव इमं सामाइयं चोद्दसण्हं पुव्वाणं संखेवो ।

अणवज्जे-वसंतपुरं नगरं, जितसत्तू राया, धारिणी देवी, तेसिं पुत्तो धम्मरुयी, सो राया थेरो जातो, अण्णदा ताव सो पव्वइतुकामो धम्मरुइस्स रज्जं दातुमिच्छति, सो मातरं पुच्छति-कीस रज्जं पजहति ?, सा भणति-एतं संसारबंधणं, सो भणति-ममवि न कज्जं, ताहे सह तेण पिता तावसो जातो, तत्थ अवमासाए गंडओ उग्घोसेति आसमे-कल्लं अमावसातो पुप्फफलाणं संगहं करेह, कल्लं छिंदितुं न वट्टति, सो चिंतेति-जदि सव्वकालं न छिंदेज्जा तो सुंदरं होज्जा, अण्णदा साधू अमावासाए तावसासमस्स अदूरेण वोलेंति, ते धम्मरुती पेच्छति, ताहे भणति-भगवं ! तुब्भं अणाउट्टी णत्थि तो अडविं जाह?, तेहिं भणितं-अम्हं जावज्जीवमणाउट्टी, सो संभंतो चिंतेउमारद्धो, साधुवि गता, जाति संभरिता, पत्तेगबुद्धो जातो ।

सोऊण अणाउट्टीं० । ८-१९६ ॥ ८७७ ॥ अणंतं-कम्मं तस्स भीतो अणवज्जं-अगरहितं धंममुवगतो धम्मरुई । परिण्णाए इलापुत्तो, सो जथा हेट्ठा, परिजाणितूण जीवे० । ८-१९७ ॥ ८७८ ॥ जाणणापरिण्णाए णाता पच्चक्खाणपरिण्णाए पच्चक्खाता सावज्जजोगकरणं परिजाणति से इलापुत्तो ।

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

इदाणिं पच्चक्खाणे-तेतलिपुरं नगरं, कणगरहो राया, पउमावती देवी, राया भोगलाभो पुत्ते जाते २ वियंगेति, तेतलि अमच्चो, कलारो मूसियारे सेट्ठी, तस्स धूता पोट्टिला, आगासतलए दिट्ठा, मग्गिता लद्धा य, अमच्चं पउमावती य भणति-एगं कुमारं किहवि सारक्ख, तो तव मम भिक्खाभायणं भविस्सति, मम उदरे पुत्तो, एतं रहिस्सगं सारवेमो, संपत्तीय पोट्टिला य देवी य समं चेव पसूता, पोट्टिलाए दारिया देवीए दिण्णा, कुमारो पोट्टिलाए, संवड्ढति, कलाओ य गेण्हति। अण्णदा पोट्टिला तेतलिस्स अणिट्ठा जाता, नामवि ण गेण्हति, अण्णदा पव्वइयाओ पुच्छति-अत्थ किंचि जाणह जेण अहं पिता होज्जा, ताओ भणंति-अम्हं एतारिसं न वट्टति, ताहे से धम्मो कहितो, सा य संवेगमावण्णा, आपुच्छति-पव्वयामित्ति, सो भणति-संगोहेज्जासि, ताए पडिस्सुतं, सा सामण्णं कातूणं दियलोगं गता। सो राया मतो, ताहे तं कुमारं पउरस्स दंसेति रहस्सं च भिंदाति, ताहे सो अभिसित्तो, कुमारमाता भणति-तेतलिस्स सुट्ठु वट्टेज्जा, एतस्स पभावेण तंसि जातो, तस्स णामं कणगज्झओ, ताहे सो सव्वगतो जातो, देवो तं संबोहेति, न संबुज्झति, ताहे रायाणगं विप्परिणामेति, सो तं णो आढाति, वीधीएवि न कोइ आढाति, बाहिरियावि परिसा दासपेसादिगा जाव अब्भंतरिगावि पुत्तसुण्हादिगा, एवं चेव वित्तंपि न लभति, ताहे विसण्णो तालपुडगं विसं खाति, न मरइ, कंको असि खंधे नस्सति, सोवि न छिंदति, वेहासं करेंतस्स रज्जु छिण्णो, पच्छा पाहाणं गलए बंधित्ता अत्थाहं पाणियं पविट्ठो, तत्थवि थाहो जातो, ताहे तणकूडे अग्गिं दातुं पविट्ठो, तत्थवि न डज्झति, ताहे अडविं पविसति, तत्थ पुरतो छिण्णगिरिसिहरकंदरप्पवाते पिट्ठतो कंपेमाणेव्व मेदिणितलं आकड्ढंतव्व पादवगणे विफोडेमाणेव्व अंबरतलं सव्वतमोरासिव्व पिंडिते पच्चक्खमिव सव्वं कतंते भीमे भीमारवं करेंते महावारणे समुट्ठिते, दोसु चक्खुनिवातेसु पयंडधणुजुत्तविप्पमुक्को पुंखमेत्तवसेसा धरणितलपवेसाणि

सराणि पतंति, हुतवहजालासहस्ससंकुलं समंततो पलित्तंव धगधगेति सव्वारण्णं, अइरुग्गतबालसूरसुंजद्धपुंजनिगरप्पगासं क्षियाति इंगालभूतं गिहं, ताहे चिंतेति-पोट्टिला जदि मे नित्थारेज्जासि, एवं वयासी-आउसो पोट्टिला! आहता आयणाहि, ततेणं सा पोट्टिला पंचवण्णाइं सखिखिणीयाइं जाव एवं वयासी-आउसो तेतलिपुत्ता ! एहि ता आदाणाहि, पुरतो छिण्णगिरिसिहरकंदरप्पवाते तं चेव जाव इंगालभूतं गिहं तं आउसो तेतलिपुत्ता! कहिं वयामो, ततेणं से तेतली एवं वयासी-सद्धेयं खलु भो समणा वयंति, सद्धेयं खलु भो माहणा वयंति, अहमेगो असद्धेयं वदिस्सामि, एवं खलु अहं सह पुत्तेहिं अपुत्तो को मे तं सद्दहिस्सति?, एवं सह मित्तेहिं० सह दारेहिं० सह वित्तेण०, सह परिग्गहेण० सह दासेहिं जावदाणमाणसक्कारोवयारसंगहिते तेतलिपुत्तस्स सयणपरियणेवि तगं गते को मे तं स० ?, एवं खलु तेतलिपुत्ते कणगज्झतेणं अवज्झातके को मे तं स० कालक्कमणीतिसत्थविसारदे तेतलिपुत्ते विसादं गतेति को मे तं सं० ?, ततेणं तेतलिपुत्तेणं तालपुडे विसे खइते सेवि य पडिहतेत्ति को मे तं स० ?, एवं असी वेहासे जले अग्गी जाव रण्णेवि पुरतो पवाते एमादि को मे तं सद्दहि० ?, जातिकुलरूवविणओवयारसालिणी पोट्टिला मुसिकारधूता भिच्छं विप्पडिवण्णा को मे तं सद्दहिस्सति ?, ताहे पोट्टिला भणति-एहि ता आदाणाहि, भीतस्स खलु भो पव्वज्जा ताणं, आतुरस्स भेसज्जं किच्चं अभिउत्तस्स पच्चयकरणं संतस्स वाहणकिच्चं महाजले वाहणकिच्चं माइस्स रहस्सकिच्चं उक्कंठितस्स देसगमणकिच्चं छुहितस्स भोयणकिच्चं पिवासितस्स पाणकिच्चं सोहातुरस्स जुवतिकिच्चं परं अभियुंजितुकामस्स सहायकिच्चं खंतस्स दंतस्स गुत्तस्स जितेंदियस्स एत्तो एगमवि न भवति । सुट्ठु सुट्ठु तण्णं तुमं तेतलिपुत्ता ! एवमट्ठं आदाणाहित्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयति, वयेत्ता जामेव० तामेव पडिगता। ततेणं तस्स अण्णं चिंतेमाणस्स सुद्देण परिणामेणं जाव जातिस्सरणे समुप्पण्णे-एवं खलु अहं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥५०१॥

जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे पुक्खलावतिंमि पुंडरीगिणीए महापउमे णाम सया होत्था, थेराणं अंतिके पव्वतिते सामाइयमादीयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए आलोइयसमाहिपत्ते कालं किच्चा महासुक्के कप्पे देवत्ताए उववण्णे, ततेणं ताओ चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे भरहे तेतलिपुरे तेतलिस्स अमच्चस्स दारके जाते, तं सेतं खलु पुव्वि दिट्ठाइं सतमेव उवसंप्पज्जित्ताणं विहरित्तएत्तिकट्टु तहेव करेति करेत्ता जेणेव पमदवणे तेणेव उ० २ असोगपादवस्स अहे सुहनिसन्ने, तत्थ अणुचिन्तेमाणस्स पुव्वाधीताइं चोद्दस पुव्वाइं सतमेव अभिसमण्णागताइं, ततेणं से सुहेणं जाव केवली जाते, अथासाणिहितेहिं देवेहिं महिमा कता, इमीसे कहाए लद्धट्ठे कणगज्झए माताए समं निग्गते सव्विड्ढीए, खामेति, धम्मे कहिते सावगे जाते जाव पडितागते, भगवंपि तेतली अज्झयणं भासति जथा—कों कं ठावेति?, णण्णत्थ सगाइं कम्माइं, एवमादि जहा रिसिभासितेसु, पच्छा सिद्धे, एवं तेण पच्चक्खाणेण समता कता सावज्जजोगा परिण्णाता। निरुत्तिदारं गतं। एवं च दारविही गतो। गता य उवग्घातनिज्जुत्ती ॥

इयाणिं सुत्तफासियनिज्जुत्ती इच्छावेति, जा सुत्तं फुसति निज्जुत्ती सा सुत्तफासियनिज्जुत्ती भन्नति, असति य सुत्ते सा किं फुसतु ?, तेणं सुत्तं उच्चारेयव्वं पच्छा फुसिस्सति तेण सुत्त०, तं चेव भन्नति। तत्थ य सुत्ताणुगमस्स अवतारो, एत्थ य सुत्ताणुगमो सुत्तालावगनिप्फन्नो निक्खेवो सुत्तफासितनिज्जुत्ती य समयं गच्छंति, कह ?, जदा संथिता सव्वा उच्चारिता भवति तत्थ सो सुत्ताणगमो, जो पदे छिंदिऊण अत्थो भन्नति, जो पदं पदेण णामादीहिं निक्खिप्पति सो सुत्तालावगनिप्फण्णो निक्खेवो, सो चेव जदा निज्जुत्तीए वित्थारिज्जति तदा सुत्तफासियनिज्जुत्ती, सुत्ते य अणुगते सुत्तालावगनिप्फन्नो निक्खेवो सुत्तफासिय-

तेतलिसुतोदाहरणं सूत्रस्पर्शिकाद्याः ॥५०१॥

अत्र उपोद्घात-निर्युक्ति: समाप्ता:, अथ सूत्रफ़ास-निर्युक्ति: आरभ्यते

नमस्कार व्याख्यायां ॥५०२॥

निज्जुत्ती य भवति, तम्हा सुत्तं अणुगंतव्वं । तं च पंचनमोक्कारपुव्वं भणंति पुव्वगा इति सो चेव ताव भन्नइ, सो य इमेहिं एक्कारसदारेहिं अणुगंतव्वो, तंजहा—

उप्पत्ती निक्खेवो० ।९-१।८८७ तत्थ पढमं दारं उप्पत्ती, उत्पाद उप्पत्ती, उत्पादनमुद्भृतिरित्यर्थः, तत्थ नमोक्कारो किं उप्पन्नोऽणुप्पन्नोत्ति, एत्थ नयेहिं मग्गणा, केइ उप्पन्नं इच्छंति केइ अणुप्पन्नं, नया य पुव्वभणिता सत्त णेगमादी मूलणया, तत्थ णेगमो अणेगविहो, तत्थ आदिणेगमस्स अणुप्पन्नो नो उप्पन्नो, कहं ?, जहा—पंचत्थिकायाणि वा, एवं नमोक्कारोवि न कयाइ नासी ३ ण एस ताव केणइ उप्पाइएत्तिकट्टु, जदावि भरहेरवएहिं वोच्छिज्जति तदावि महाविदेहे अवोच्छित्ती, तम्हा अणुप्पन्नो, संसाणं णेगमाणं छण्हं च नयाणं विसुद्धाण उप्पन्नो कीरति, अविसुद्धाणं पुण आदिणेगमे चेव अवयारो, कहं ?, पन्नरससुवि कम्मभूमीसु पुरिसादिभावं पडुच्च, जदि उप्पन्नो कहं उप्पन्नोत्ति ?, तिविहेण सामित्तेण-समुत्थाणसामित्तेण वायणासामित्तेण लद्धिसामित्तेण, एत्थ को णयो कं उप्पत्तिं इच्छति ?, तत्थ जो पढमवज्जा णेगमा संगहो ववहारो य ते तिविहंपि उप्पत्तिं इच्छंति, समुट्ठाणं नाम संमं आयरियादीण उपस्थापनमित्यर्थः तेन, वायणाए वायणायरियणीसाए, जहा भगवता गोयमसामी वाइतो, लद्धी जहा भविकस्स, अभविकस्स णत्थि, उवदेसमंतरेणावि भविकस्स किंचि निमित्तं लद्धूण णमोक्कारावरणिज्जाणं कम्माणं खयोवसमेणं नमोक्कारलद्धी समुप्पज्जति, जहा सयंभुरमणसमुद्दे पडिमासंठिया साहुसंठिया य मच्छा, पउमपत्तावि, सव्वाणिवि किर संठाणाणि अत्थि, मोत्तूण वलयं संठाणं, एरिसं णत्थि जीवस्सेति, ताणि संठाणाणि दट्ठूण कस्सति णमोक्कारलद्धी भवति, उज्जुसुतो पढमं समुत्थाणं णेच्छति, किं कारणं ?, जतो से समुट्ठाणेवि सति वायणालद्धिमंतरेण ण उप्पज्जति, तेण दुविहं वायणा-

नमस्कारे उत्पन्नद्वारं

॥५०२॥

मू. (१) नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं

***मूलसूत्र -(१) "नमस्कार सूत्र" हमने पूज्यपाद आचार्य सागरानंदसूरीश्वरजी संपादित "आगममंजुषा" पृष्ठ-१२०५ के आधार से यहां लिखा है ।

*** अत्र नमस्कार-निर्युक्ति आरब्धः

नमस्कार व्याख्यायां ॥५०३॥

सामित्तं लद्धिसामित्तं च, तिण्णि सद्दणया लद्धिमिच्छंति, जेण समुट्ठाणे वायणाए य विज्जमाणे अभविगस्स ण उप्पज्जति, लद्धि-अभावात् । एवं उप्पण्णस्स वा अणुप्पण्णस्स वा दारं । णिक्खेवो स्थापना न्यास इत्यनर्थान्तरं, सो णिक्खेवो चतुव्विधो-णामणमोक्कारो०, णामट्ठवणा गताओ, दव्वणमोक्कारो जाणगसरीर० भविय० वतिरित्तो, दव्वणमुक्कारो दव्वणिमित्तं दव्वभूतो वा अणुवउत्तो वा जं करेति, अहवा णिण्हगादीणं, उग्घट्टओ वा दव्वणमोक्कारो, णिण्हगआदिग्गहणेणं बोडिगा आजीविगा य सूयिता । तत्थ दव्वणमोक्कारे इमं उदाहरणं—

वसंतपुरं नगरं, जियसत्तू राया, धारिणी देवी, तस्सहितो ओलोयणं०, दमगपासणं, अणुकंपा णदिसरिसत्ति रायाणो भणति देवी, रण्णा आणाविंतो, कतालंकारे दिण्णवत्थतेहिं उवणीतो, सो य कच्छूए-गहितेल्लओ तेल्लं लग्गाविज्जति, कालंतरेण रायाए से रज्जं दिण्णं, पेच्छति दंडभडभोइए देवयायतणपूयाओ करेमाणे, सो चिंतेति- अहं कस्स करेमि ?, रण्णो करेमि, आयतणं करेति, तस्स देवीए पडिमा कता, पडिमापवेसे आणिताणि, पुच्छंति, साहति य, तुट्ठो सक्कारेति, तिसंझं अच्चेति, पडियरणं, तुट्ठेण सव्व-ट्ठाणगाणि दिण्णाणि । अण्णदा राया दंडजत्तं गतो, सव्वंतेपुरट्ठाणेसु ठवेऊणं, तत्थ य अंतेउरियाओ णिरोहं असहमाणीओ तं चेव उवचरति, सो णेच्छति, भत्तं गुत्ताओ ण गेण्हंति, पच्छा सणयं पविट्ठो, विदाओ य, राया आगतो, सिट्ठे विणासितो । रायत्थाणीओ तित्थकरो, अंतेपुरत्थाणीता छ काया अधवा संकादयो पदा, मा सेणियादीणवि दव्वणमोक्कारो भविस्सति, दमगत्थाणीया साधू, कच्छूत्थाणीयं मिच्छत्तं, भासुरत्थाणीयं सम्मत्तं, विणिवाओ दंडो संसारो, एतस्स दव्वणमोक्कारो। भावणमोक्कारो जं उवजुत्तो सम्मदिट्ठी करेति, तत्थ दिट्ठंतो तं चेव पसत्थं, तस्स सम्मदिट्ठिस्स उवजुत्तस्स भावणमोक्कारो ॥ एत्थ णयेहिं मग्गणा-णेगमो

उत्पन्नद्वारे निक्षेपाः द्रव्य-नमस्कारे द्रमकः

॥५०३॥

द्रव्य-नमस्कारस्य व्याख्यान (द्रष्टांत सहितं)

नमस्कार व्याख्यायां ॥५०४॥

दव्वादि चउव्विहंपि इच्छति णिक्खेवं, संगहववहारा ठवणावज्जं इच्छंति, उज्जुसुत्तो ठवणदव्ववज्जं इच्छति, तिण्णि सद्दणया भावणिक्खेवं इच्छंति, सेसे तिण्णि णिक्खेवे णेच्छंति, तत्थ इमा णयगाथा-चउरोऽवि णेगमनया ववहारो संगहो ठवणवज्जं। उज्जुसुत्त पढमचरिमे इच्छति भावं च सद्दणया ॥९॥५॥ (न हारि०वृत्तौ) पढमिंदाणिं, पज्जवत इति पदं पाति वा तमर्थं पदं, तं पंचविधं पदं-णामिकादि, जथा अणुयोगदारे, एत्थ कतरं पदं?, णामिकमाख्यातिकमौपसर्गिकं नैपातिकं मिश्रं चेति णमोक्कारो, णिवाइयपदं नम इति, अहवा अरहंताइसु पंचसु णम इति, सो पुण णमोक्कारो कति पदाणि?, छ वा दस वा, तत्थ छप्पदाणि णमो अरहंताणं सिद्धाणं आयरियाणं उवज्झायाणं सव्वसाधूणं, एते छप्पदा, इमाणि दस पदाणि-णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं एवं दस। दारं। इदाणिं पदार्थः, णम इति कोऽर्थः?, नमः पूजायां नम प्रह्वत्वे, योऽस्य नमस्कारस्य प्रभुः कर्ता तस्य नमस्करणमित्युक्तं भवति, तस्य पुनः द्रव्यभावसंकोचने, एत्थ चतुभंगो-दव्वं णाम एगे संकोचेति णो भावं, पढमे भंगे पालओ, बीए भंगे अणुत्तरा, ततिए संबो, चउत्थो सुण्णो, अहवा केवलं णम इति भासति। दारं।

इदाणिं परूवणा-साधु प्रकृष्टा प्रधाना प्रगता प्ररूपणा वर्णानां प्ररूपणा, सा य णमोक्कारस्स छहि य णवहि य पदेहिं कातव्वा, तत्थ छहिं दारेहिं परूवणा इमा-किं णमोक्कारो? कस्स णमोक्कारो? केण वा णमोक्कारो? कहिं वा णमोक्कारो? केवचिरं णमोक्कारो? कतिविहो णमोक्कारो?, तत्थ किंशब्दः क्षेपप्रश्ननपुंसकव्यापारणेषु,तत्रेह प्रश्ने, किं णमोक्कारो?, जीवो तप्परिणओ, जथा सामाइयं तहा सणयं सोदाहरणं विभासेज्जा, अण्णे भणंति-किं णमोक्कारो? किं दव्वं णमोक्कारो खंधो गामो?, दव्वं णमोक्कारो, णोखंधो णोगामो, दव्वं जीवो, खंधो पंच अत्थिकाया णमोक्कारे ण भवंति, ण य तेसिं खंधाणं अत्थंतरभूतो तेण णोखंधोत्ति देसं पडिसेहयति,

निक्षेपे-नयाः

॥५०४॥

चोद्दसविहो भूतग्गामो, ण य णमोक्कारो चोद्दससुवि, ण य तेसिं अत्थंतरभूतो तेण णोगामो णमोक्कारो। एत्थ णयमग्गणा तेहिं चेव सत्तहिं, तत्थ णेगमो संगहितो असंगहितो य, संगहिओ संगहं पविट्ठो, असंगहितो ववहारे, तेण छहिं णएहिं भज्जिज्जति, संगहस्स एगस्स एगो णमोक्कारो, बहूणंपि एगो णमोक्कारो, जेण संगहितपिंडियत्थं संगहवयणं, जथा-एगोवि साली साली बहुगावि साली साली चेव, एवमादि, ववहारस्स एगस्स एगो णमोक्कारो बहुगाणं बहुगा णमोक्कारा, उज्जुसुत्तस्स पत्तेयं जीवाणं णमोक्कारो, जथा- चोद्दस पुव्वाणि एगस्सवि बहुगाणंपि, तिण्हं सद्दणयाणं णमोक्कारपरिणतो जीवो णमोक्कारो, सेसाण अणुवयुत्तोवि होज्ज आगमतो। दारं। **कस्स णमोक्कारो ?**, कस्सेति षष्ठी विभक्तिः, सा च तत्त्वे उभयत्वेऽन्यत्वे, यथा- तैलस्य धारा शिलापुत्रकस्य सशरीरिणमित्येवमादि, अन्यत्वे यथा भिक्षोः पात्रं भिक्षोः वस्त्रमित्येवमादि, उभयतो यथा- देवदत्तस्य सकुंडलं शिरः एवमादि, एवं नमस्कारः किमेकत्वे उभयत्वेऽन्यत्वे , एत्थ णया, तत्थ णेगमस्स बाहिरवत्थुमधिकिच्च अट्ठसु भंगेसु- स्याज्जीवस्य १ स्यादजीवस्य २ स्याज्जीवानां ३ स्यादजीवानां ४ स्याज्जीवस्य चाजीवस्य च ५ स्याज्जीवस्य चाजीवानां च ६ स्यादजीवस्य च जीवानां ७ स्याज्जीवानां स्यादजीवानां च ८, जीवस्य यथा-एकस्य साधोः, अजीवस्य यथा एकस्याः प्रतिमायाः, जीवाणं बहूणं साधूणं, अजीवाणं बहूणं पडिमाणं, जीवस्य अजीवस्य सपडिमस्स साधूस्स, जीवस्य च अजीवानां एकस्य तीर्थकरस्य चक्रध्वजादीनां, जीवानां चाजीवस्य साधूणं पडिमाय, जीवाणं अजीवाणं च बहूणं सपडिमाणं साधूणं, संगहस्य तहेव संगहवयणं, ववहारस्स एगस्स एगो बहूणं बहुगा, उज्जुसुत्तस्स पत्तेयं पत्तेयं, तिण्हं सद्दणयाणं आत्मभावो, पडिवज्जमाणगं पडुच्च जीवस्स च जीवाण वा, पुव्वपडिवण्णगं पडुच्च णियमा जीवाणं। दारं॥ **केन नमस्कार** इति तृतीया विभक्तिः यथा गिरिकेण काणामेघेण

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५०६॥

उग्घाडितं नभः, केण णमोक्कारो लब्भति?, णाणावरणिज्जस्स दंसणमोहणिज्जस्स य खयोवसमेणं लब्भति, तेसिं दुविहाणि फड्डगाणि- देसघातीणि य देसं घातयति सव्वघातीणि सव्वं घातयति, तेहिं उदिण्णेहिं पच्छा अण्णाणि होंति मिच्छादिट्ठी य, कदा पुण लब्भति ?. सव्वघातीहिं निरवसेसेहिं उग्घाडितेहिं देसघातीहिं अणंतेहिं भागेहिं उग्घाडितेहिं समये २ अणंतगुणविसोधीए विसुज्झमाणस्स २ पढमं णकारलंभो भवति, एवं णमोक्कारस्सवि. एवं सेसाणवि अक्खराणं । दारं॥ कस्मिन्नमस्कार इति सप्तमी विभक्तिर्भवति, सा च एकत्वे अन्यत्वे उभयत्वे, एकत्वे जीवे ज्ञानं जीवे दर्शनं, अन्यत्वे कुंडे बदराणि, उभयत्वे गृहे स्थूणा आत्मभावे च, एवं नमस्कारः किमेकत्वे अन्यत्वे उभयत्वे ?, अत्र णया- णेगमो बाहिरवत्थुमाभिकिच्चा अट्ठवि भंगे इच्छति स्याज्जीवे स्यादजीवे एवं सण्णिहाणेण अट्ठवि, संगहस्स जीवे णमोक्कारो जीवेसुवि णमोक्कारो, तहेव संगहवयणं सालिदिट्ठंता, ववहारस्सावि तहेव--एगजीवे एगो णमोक्कारो बहुसु जीवेसु बहवे, उज्जुसुतस्स सव्वेसुवि णमोक्कारेसु पत्तेगं णमोक्कारो, तिण्हं सद्दणयाणं पुव्वं एगो णमोक्कारो, बहवेसु जीवेसु पडिवज्जमाणगे पडुच्च जीवे वा जीवेसु वा उवउत्तेसु, सेसाणं अणुवउत्तेऽवि होज्जा॥दारं॥ इदाणिं केचिरं कालं णमोक्कारोत्ति,, एगस्स जीवस्स उवओगं पडुच्च जहण्णुक्कोसहिं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठिसागरोवमाहिया,विजयादिसु दोवारा उववज्जतित्ति, णाणाजीवाणं उवओगं पडुच्च जहण्णुक्कोसं अंतोमुहुत्तं, लद्धिं पडुच्च सव्वद्धा, एत्थ णया-अर्पितश्चानर्पितश्च, मनुष्ये नमस्कार इति अर्पितः, अनित्यः, अनर्पितो नित्यः, यथा सुवर्णं अंगुलेयकत्वेन अर्पितमनित्यं सुवर्णत्वेनानर्पितं नित्यमेवमादि ॥ इदाणिं कतिविहो णमुक्कारो ?, अरहंतादि पंचविधो, छप्पदा परूवणा गता । इदाणिं णवपदा परूवणा-संतपयपरूवणा दव्वप्पमाणं खेत्तं फुसणा कालो अंतरं भागं भावे अप्पबहुगंति, सदिति सद्भूतं, संतस्स पदस्स परू-

केन कस्मिन् कियच्चिर· मिति- द्वाराणि

॥५०६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५०७॥

वणा संतपदपरूवणा, संतपदपरूवणाए किं णमोक्कारो अत्थि णत्थि ?, कुतः संदेह ?, इह द्विविधमभिधानं भवति- सतां, यथा—जीवादीनां, असतां, यथा-शशविषाणादीनां, अतो नः संशयः, भण्णति—णियमा अत्थि, जदि अत्थि तो कहं होज्जा ?, तत्थ सो इमेसु ठाणेसु मग्गिज्जति, गतिमादीसु—

गति इंदिए य काए० ॥ ९-१० ॥ १४ ॥ जाव चरिमोत्ति, जहा णंदीए आभिणिबोधितणाणे तथा इहंपि १। दव्वप्पमाणमिदाणिं- णमोक्कारपडिवण्णया जीवा केत्तिया होज्जा ?, जावतिया सुहुमस्स खेत्तपलिओवमस्स असंखेज्जतिभागे आकासपदेसा एवतिया णमोक्कारपडिवण्णया जीवा, २ दारं। खेत्तओ हेट्ठा लोगस्स सत्तभागो, उवरिंपि सत्तभागा, जेसु ओगाढा ३। जथा खेत्तं तथा फुसणावि, णाणत्तं चरिमंतेसुवि जे पदेसा तेवि पुट्ठा, जथा एगो धम्मपदेसो आगासपदेसेहिं णियमा सत्तहिं ४। कालतो जथा छप्पदपरूवणताए ५। अंतरं एगं जीवं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणं अद्धपोग्गलपरियट्टं, णाणाजीवे पडुच्च णत्थि अंतरं, दारं ६। कस्मिन् भावे नमस्कारो ?, खयोवसमिए भावे णमोक्कारो, जम्हा सव्वसुतं खयोवसमियंति, अण्णे पुण भणंति-उवसमिए वा खइए वा खयोवसमिए वा, खइए जथा- सेणियादीणं, उवसमिए जथा अणागाराणं, खयोवसमिए जथा अस्मदादीनामिति दारं ७। णमोक्कारपडिवण्णगा जीवा सेसगजीवाणं कतिभागे होज्जा ?, अणंतभागे, दारं ८। अप्पाबहुं, एतेसिं पडिवण्णगाणं जीवाणं अपडिवण्णगाण य कतरे०, सव्वत्थोवा णमोक्कारपडिवण्णगा अपडिवण्णगा अणंतगुणा, एसा णवपदा सम्मत्ता ।

अहवा चसद्दसूइया पंचविधा परूवणा, तंजथा- आरोवणा भयणा पुच्छणा दावणा णिज्जवणा य, तत्थ आरोवणा- किं जीवो णमोक्कारो ? णमोक्कारो जीवो ?, आरोवणा गता, भयणा- जीवः स्यान्नमस्कारो स्यादनमस्कारो, नमस्कारो नियमा

नवपद्पंच-चतुष्पदा प्ररूपणा

॥५०७॥

नमस्कारस्य विविध प्ररुपणा

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

जीवो, खतिरवनस्पतिवत् । पुच्छणा दावणा णिज्जवणा य एगट्ठा वच्चंति, पुच्छणा कतरे खाइ मि जीवे णमोक्कारे ?, एस पुच्छा, दावणा णमोक्कारपरिणते जीवे णमोक्कारे, एस दावणा, णिज्जावणा एस खाइं से णमोक्कारपरिणते जीवे णमोक्कारे ।

अहवा चउव्विधा मग्गणा, तीए इमो दिट्ठंतो ताव भण्णति, चउव्विहं पुण मग्गणं भणिहिति, तत्थ दिट्ठंतो-घडो णोघडो अघडो णोअघडो, संपुण्णो घडो, तस्सेव देसो णोघडो, घडवतिरित्तं दव्वं अघडो, णोअघडो घडदेसो, तद्व्यतिरिक्तं च अण्णं दव्वं, एवं णमोक्कारस्सवि चतुव्विधा मग्गणा, णमोक्कारो णोणमोक्कारे अणमोक्कारे णोअणमोक्कारो, णमोक्कारोत्ति णमोक्कारपरिणतो जीवो घेप्पति, णोणमोक्कारोत्ति तस्स देसपदेसा, अणमोक्कारेत्ति णमोक्कारपरिणतजीववतिरित्तं अण्णदव्वं, णोअणमोक्कारोत्ति णमोक्कार-परिणतस्स देसपदेसा तव्वतिरित्तं च अण्णं दव्वं दव्वाणि व । एत्थ णएहिं मग्गणा-णेगमो तहेव, संगहस्स एते चत्तारिवि भंगा संगहवयणेणं, ववहारस्स णमोक्कारपरिणतो जीवो णमोक्कारो, जीवो वा णमोक्कारो, वीतीभंगे एगस्स देसपदेसा बहुगाणं च देसप-देसा णोणमोक्कारो,[णोअणमोक्कारो], ततिए अणमोक्कारो अणमोक्कारपरिणतो जीवो अणमोक्कारपरिणता वा जीवा तव्वतिरित्तं वा दव्वाणि विभासेज्जा, चउत्थे णमोक्कारपरिणतस्स जीवस्स देसपदेसा णोअणमोक्कारो जीवाणं वा देसपदेसा णोअणमोक्कारो तव्व-तिरित्तं दव्वं च दव्वाणि य घेप्पंति, उज्जुसुत्तस्स णमोक्कारोत्ति णमोक्कारपरिणताणं जीवाणं पत्तेयं एगेगं णमोक्कारं इच्छिज्जति, णोणमोक्कारोत्ति तेसिं देसपदेसा, अणमोक्कारेत्ति अण्णे जीवा दव्वा य, णोअणमोक्कारेति णमोक्कारप० जविस्स जे देसपदेसा अण्णं च दव्वं दव्वाणि वा, तिण्हं सद्दणयाणं सम्मद्दिट्ठी जीवो भावतो णमोक्कारे उवउत्ते, तेहिं चेव चउहिं भंगेहिं णमोक्कारो णोणमोक्कारो अणमोक्कारो णोअणमोक्कारो, अहवा एते दोवि णवपदा भवंति । परूवणत्ति गतं ।

॥५०८॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५०९॥

एवं परूवितस्स णमोक्कारस्स वत्थू, तत्थ वत्थू आरिहो भायणं जोग्गो गत्तति वा एगट्ठं उच्यते, वत्थू अरहंतादी, कहं ते वत्थू ?, जेणं तेसु कारणमायत्तं, हेतुर्निमित्तं कारणमकोऽर्थः, किं च तेसु कारणं?, मग्गोपदेसका अरहंता, सिद्धा एतंमग्गं अविग्घेण संपत्ता, जं णत्थि अण्णेसिं तेण गुणेण अधिगत्ति अरिहा, आयारं उवदिसंति पंचविहं,उवज्झाया विणयंति, पंचविहो आयारो, साधुणो संजमाट्ठितस्स सहायकिच्चं करेंति, इहलोकिकेण परलोकिकेण य, एतेण कारणेण अरिहा, एते सामासिया गुणा। इदाणिं पत्तेयं पत्तेयं वित्थारेण गुणा उवदंसिज्जंति। अरहंताणं ता वित्थरेण गुणकित्तणं कीरति, तत्थ दारगाथा—

अडवीए देसियत्तं तहेव णिज्जामकं समुद्दंमि। छक्कायरक्खणट्ठा महगोवा तेण वुच्चंति॥ ९ ॥ २३ ॥ ९०४ ॥

तत्थ कहं अडवीए देसियत्तं कतं ?, तत्थ अडवी दुविहा- दव्वाडवी भावअडवी य, तत्थ दव्वओ अडवीए उदाहरणं–वसंतपुरे धण्णो सत्थवाहो, णेव्वुतिनगरं गंतुकामो घोसणं जधा णंदिफलाणंते, सो तेसिं मिलियाणं पंथगुणे कहेति- एगो पंथो उज्जुओ एगो पंथो वंको, जो सो वंको तेण पुण सुहंसुहेण गंमति खंतेहि य पियंतेही य, तत्थवि कति रुक्खा अण्णाणि य कारणाणि परिहरितव्वाइं, चिरेण पुण पाविज्जति, अवसाणे य सो चेव ओतरितव्वो, जो पुण उज्जुओ तेण लहुं गम्मति, दुक्खं च सहितव्वं, जतो तत्थ बहवे णंदिफला णाम रुक्खा किण्हा किण्होभासा जाव णिकुरुम्बभूता पत्तिया पुप्फिया फलिता हरिता जाव सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति, तं जे णं देवाणुप्पिया तेसिं रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा जाव बीयाणि आहारेति तासु वा विसमति तस्स णं आवाते भद्दए भवति, ततो पच्छा परिणममाणे परिणममाणे अट्ठत्तसट्ठे अकाले चेव जीविताओ ववरोविज्जति, अण्णे य रुक्खे जो तेसिं वातेणवि छित्तो सोवि मरति, अण्णे परिसडित० पण्णत्ता, तेसिं छायाए अच्छितव्वं,

अढव्यां देशकत्वं

॥५०९॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५१०॥

फलाणि य विवण्णाणि आवातविरसाणि विवायसुहावयाणि पाणियाणि य महिता कुट्टिता विणट्ठा णिद्धखारकडुयअंबराणि, भूमीओ य णिण्णुण्णतविसमाओ तासु सुवितव्वं, सत्थिया खणंपि ण मोत्तव्वा, कालतो दिवसं गम्मति, रत्तीएवि ततिए यामे णिद्दामोक्खं कासूण पुणोवि वहितव्वं, जतो छिण्णावाता दूरद्धाणा बहुपच्चवाया य अडवी, भावतो सीयाणि य उसिणाणि य छुहा मारा सावयभयाणि य अवरोप्परो य संणिरोहो सहितव्वो, जो सो वंको तेणवि वच्चंताणं केति रुक्खा परिहरितव्वा अण्णाणि य जाणि पव्वाणि चिरेण पाविज्जंति, अवसाणे सो चेव ओतरितव्वो, मणोहररूवधारिणो मधुरवयणा य एत्थ मग्गतडट्ठिता बहवे पुरिसा हक्कारेंति तेसिं ण सोतव्वं, दुरंतो य पावो दवग्गी अप्पमत्तेहिं उल्हवेयव्वो, अणोल्हविज्जंतो य णियमेण डहति, पुणो य दुग्गुच्चपव्वओ उवउत्तेहिं चेव लंघेतव्वो, अलंघणे णियमा मरिज्जति, पुणो महतिअतिगुविलगव्वरा वंसकुडंगी सिग्घं लंघेतव्वा, तंमि ठिताणं बहुदोसा, ततो य बहुगो खड्डो, तस्समीवे मणोरहो णाम बंभणो णिच्चं सण्णिहितो अच्छति, सो भणति-भणागं पूरेह एतन्ति, तस्स ण सोतव्वं, सो ण पूरेतव्वो, सो हु पूरिज्जमाणो महल्लतरो भवति, पंथातो य भज्जिज्जति, फलाणि य एत्थ दिव्वाणि पंचपगाराणि णेत्तादिसुहकारगाणि भणागंपि नो पेक्खितव्वाणि ण भोत्तव्वाणि, बावीसं च एत्थ घोरा महाकराला पिसाया खणं खणमभिद्दवंति तेवि णं ण गणेतव्वा, भत्तपाणं च णत्थि, विभागतो विरसं दुल्लभंति, अपदाणगं च ण कातव्वं, अणवरतं च गंतव्वं, (रत्तीएवि दोण्णि जामा सुवियव्वं, सेसदुगं च गंतव्वमेव) एवं च गच्छंतेहिं देवाणुप्पिया! खिप्पामेव अडवी लंघिज्जति, लंघित्ता य तमेगंतदोगच्चवज्जितं तं पसत्थं सिवपुरं पाविज्जति, तत्थ य पुणो ण होति कोति किलेसत्ति, ततो तत्थ केइ तेणं समं पयट्टा जे उज्जुगं पधावित्ता, अण्णे पुण इतरेण, ततो सो पसत्थि दिवसे उच्चलितो, पुरतो वच्चंतो मग्गं आहणति,

अद्धव्यां देशकत्वं

॥५१०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

नमस्कार व्याख्यायां ॥५११॥

सिलासु रुक्खेसु य अक्खराणि लिहंति, पंथस्स दोसगुणे, एत्तियं गतं एत्तियं सेसंति विभासा, एवं जे तस्स णिद्देसे वट्टित्ता ते तेण समं अचिरेण तं पुरं गता, जेवि लिहिताणुसारेण सम्मं गच्छंति तेवि पावेंति, जे ण वट्टिया ण वा वहंति छायादिपडिसेविणो ते ण पत्ता ण वा पावेंति । गतो य एस दव्वमग्गोवदेसगो, एस दिट्ठंतो, एवं भावमग्गोवदेसगा, सत्थवाहत्थाणीया अरहंता उग्घोसणत्थाणीया धम्मकहा पिंडियत्थाणिया जीवा अडवित्थाणिओ संसारो उज्जुग्गो साधुमग्गो वंको सावगमग्गो पप्पपुरत्थाणीओ मोक्खो मणोहररुक्खच्छायात्थाणीओ थीगाइसंसत्तवसहीओ पडिसेडियादित्थाणीयाओ अणवज्जवसहीओ अण्णरुक्खच्छायाथाणीयाओवि अंगणाओ विवण्णअरसविरसफलथाणीया फासुएसणिज्जा आहारा कुहियथाणीयाणि फासुएसणिज्जाणि पाणियाणि णिन्नुण्णयादिभूमियाथाणीयाओ वसहिभूमीओ सत्थियत्थाणीया साधु वहियव्वथाणीयं दिवसं सव्वं पढितव्वं भिक्खाणीहारपडिलेहवज्जं ततिए जामे णिद्दामोक्खो सीतोसिणादिसहणथाणीयो पव्वज्जाकिलेसो मग्गतडत्थहक्कारणपुरिसत्थाणीया पासत्थकुतित्थियादी अकल्लाणमित्ता दवग्गादित्थाणीया कोहादयो कसाया फलथाणीया विसया पिसायथाणीया बावीसं परिसहा भत्तपाणिएसणिज्जा अपयाणगत्थाणीओ णिच्चुज्जमो पत्ताणं मोक्खसुहंति । तत्थ य तं पुरं गंतुकामो जणो उवदेसदाणादिणा परमोवगारी सत्थवाहेत्ति परमविणएणं तस्स णिद्देसे वट्टति बहु मण्णति य, एवमादिविभासा । एवं मोक्खत्थीहिं भगवं विभासा । एत्थ गाथाओ—

संसाराडवीए० ॥ ९-२३ ॥ ९०९ ॥ सम्मद्दंसण ॥ ९-२४ ॥ ९१० ॥ सम्मत्तेण दिट्ठो णाणेण णाओ, अक्खरत्थाणीयाणि चोद्दस पुव्वाणि, चरणकरणेणं पहतो महापहो जातो सो णेव्वाणपथो । चरणकरणाणि पुण- वयसमणधम्मसंजमवेयावच्चं च बंभगुत्तीओ । णाणादितियं तवकोहणिग्गहादी चरणमेतं ॥१॥ पिंडविसोधी समिती भावण पडिमा य इंदियणिरोहो । पडिले-

महानिर्याम-कत्वं

॥५११॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

हण गुत्तीओ अभिग्गहा चेव करणं तु ॥ २ ॥ तेण कारणेण तित्थकरा महासत्थवाहा जेण बहवे जीवा संसाराडवीए खज्जमाणे य लुप्पमाणे य सुहंसुहेण णेव्वाणपट्टणं पावेंति।

इदाणिं निज्जामगा, ते य दुविहा--दव्वणिज्जामगा भावणिज्जामगा य, तत्थ दव्वणिज्जामए उदाहरणं तहेव घोसणयं विभासा, तहेव भावणिज्जामएणं उवसंहारोवि ।

मिच्छत्तकालियावात०।९-७।९१३। एत्थ वाता अट्ठ वण्णेतव्वा, तंजहा--पादीणवाते दाहिणवाते पदीणवाते उत्तरवाते, जो उत्तरपुरच्छिमेणं सो सत्तासुतो, दाहिणपुव्वेणं तुंगारो, दाहिणअवरेणं वीतावो, अवरुत्तरेण गज्जहो, एवं एते अट्ठ वाता। अण्णे विदिसासु अट्ठ चेव, तत्थ उत्तरपुव्वेण दोण्णि, तंजथा-उत्तरसत्तासुओ पुरत्थिमसत्तासुओ य, इयरीएवि दोण्णि-पुरत्थिमतुंगारो दाहिणतुंगारो य, अवरदाहिणे दाहिणवितावो अवरवीतावो य, अवरुत्तरे अवरगज्जभो उत्तरगज्जभो य, एते सोलस वाता॥ तत्थ जहा जलहिंमि कालियावातरहिते, कालियो नाम णणुकूलो, गज्जभाणुकूलवाते णिउणणिज्जामगसहितो णिच्छिद्दपोतो जदिच्छितं पट्टणं पावेति, एवं मिच्छत्तकालियावातविरहिते सम्मत्तगज्जभपवाते णिज्जामगरयणअमूढमणमतिकण्णधारासहितो जीवो पोतो एगसमएण सिद्धिवसहिपट्टणं पावतित्ति। एत्थ—**णिज्जामगरयणा**पं०।९-२८-९१४। तेण कारणेण अरहंता महाणिज्जामगा तहेव विभासा ।

इदाणिं महागोवत्ति वुच्चंति, तत्थ दव्वगोवा गावीण जाणंति, जहिं गुणा हवंति तहिं णेंति, एवं भावगोवा जाणंति, छज्जीवणिकाया जथ रक्खिज्जंति तथा उवदिसंति, जेण सारक्खति संगोवेति णेव्वाणवाडगं च पावेंति तेण महागोवा। एत्थ गाथा—

नमस्कार व्याख्यायां ॥५१३॥

पालेंति जथा० ॥ ९-२९ ॥ ९१५ ॥ जीवणिकाया० ॥ ९-३० ॥ ९१६ ॥ अहवा जथा उवासगदसासु सद्दालपुत्त-गोसालाणं, तंजथा- भगवं महामाहणे जण्णं उप्पण्णणाणदंसणधरे जण्णं तीतपच्चुप्पण्णमणागतभावजाणगे जं णं सदेवमणुया-सुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे जण्णं तच्चकम्मसंपयासंपउत्ते तं णं एवं वुच्चति--भगवं महामाहणे, तहा सामी महागोवो, जण्णं संसाराडवीए मिच्छत्तनाणमोहितपहाए बहवे जीवे णस्समाणे विणस्समाणे खेज्जमाणे लुप्पमाणे धम्मितं डंडं गहाय सारक्खमाणे संगोवेमाणे अणुपालेमाणे अणुकंपमाणे णेव्वाणमहावाडं पावेति तं णं महागोवेत्ति । तथा भगवं धम्मकही, जण्णं महतिमहालयंसि संसारंसि बहवे जीवा णस्समाणे खेज्जमाणे पिज्जमाणे उम्मग्गपडिवण्णे सप्पहविणट्ठे मिच्छत्तमलाभिभूते अट्ठविहकम्मतमपडलपडो-च्छण्णे बहूहिं अट्ठेहिं वा हेतूहि य कारणेहि य वागरणेहि य चतुरंतातो संसारकंतारातो साहत्थु णित्थारेति तं णं भगवं महाधम्म-कही । तहा भगवं महासत्थवाहे, जं णं भगवं महतिमहालयंसि संसारकंतारंसि बहवे जीवे णस्समाणे जाव लुप्पमाणे जाव विलु-प्पमाणे धम्ममएणं वाहणेणं धम्मियं पत्थाणं देच्चा सारक्खमाणे संगोवेमाणे णिव्वाणमहापट्टणं साहत्थिं पावेति तण्णं महासत्थ-वाहे । तहा भगवं महासंजत्तिए, जं णं महतिमहालयंसि संसारसागरंसि बहवे जीवे णस्समाणे जाव विलुप्पमाणे णिवज्जमाणे उप्पियमाणे परिप्पवमाणे उम्मग्गपडिवण्णे धम्ममइयाए णावाए सारक्खमाणे सुहंसुहेणं णेव्वाणमहातीरं साहत्थिं पावेति तं महासं-जत्तए इच्चादि--

ता उवगारित्तणतो० । ॥ ९-३१ ॥ ९१७ ॥ णिगमणं । अहवा इमाणि कारणाणि जेहिं तेहिं अरिहा णमोक्कारस्स--

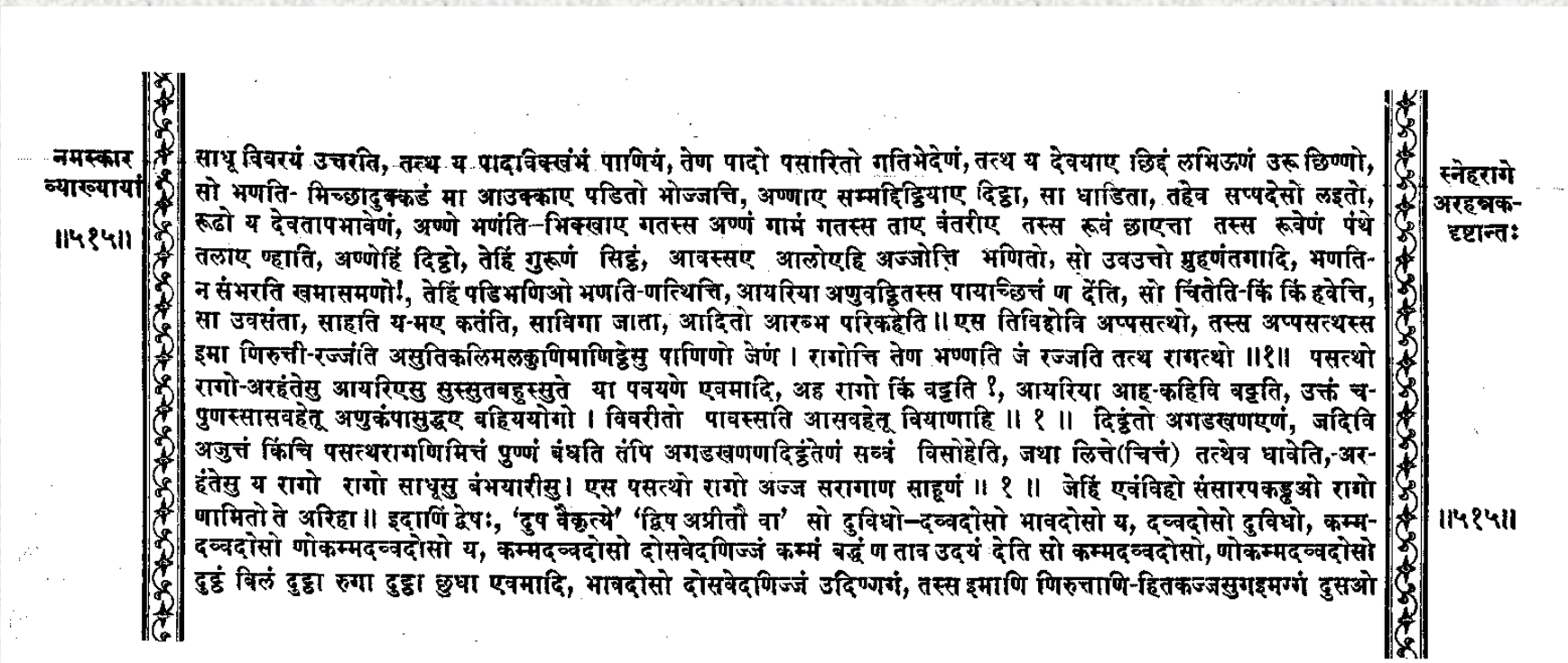
रागद्दोसकसाए० ॥ ९-३२ ॥ ९१८ ॥ तत्थ रागो ताव 'रंज रागे' रज्जंते तेन तस्मिन् वेति रागः, स य दुविहो- दव्व-

महागोपत्वं

॥५१३॥

रामो य भावरागो य, दव्वरागो दुविहो- कम्मदव्वरागो य णोकम्मदव्वरागो य, कम्मदव्वरागो रागवेदणीयं कंमं बध्धं ण ताव उदिज्जति, णोकम्मदव्वरागो दुविहो- पयोगरागो वीससारागो य, तंजहा- तत्थ प्रयोग उपाय इत्यनर्थान्तरं, सो य कुसुंभरागो लक्खारागो हालिद्दरागो एवमादि विभासा, विससारागो संझाअब्भरुक्खादि विभासा, भावरागो रागवेदणीयं कम्मं उदिण्णं जाए वेलाए वेदेति, सो तिविहो-दिट्ठिरागो विसयरागो सिणेहरागो, दिट्ठिरागो-असियसयं किरियाणं अकिरियवादीणमाहु चुलसीती । अण्णाणिय सत्तट्ठी वेणइयाणं च बत्तीसं ॥ १ ॥ स्वकीयायां दृष्टौ रक्ता ह्येते, यतो-जिणवयणबाहिरमतिमूढा णियदरिसणाणुरागेण । सव्वण्णुकहितमेते मोक्खपहं ण प्पवज्जंति ॥ १ ॥ विसयरागो णाम यो यस्मिन् शब्दाद्ये विषये रक्तः २ सिणेहरागो नाम यो यस्मिन् भावे मूर्च्छितो, तत्थ सिणेहरागे उदाहरणं–

खितिपतिट्ठियं णगरं, तत्थ दो भाउगा· अरहण्णओ अरहमित्तो य, महन्तस्स भारिया खुड्डलए रत्ता, अब्भत्थेति, सा बहुसो उवसग्गेति, भणति- किं ण पेच्छसि भाउतं मे?, ताहे विसेण मारेत्ता भणति इत्थं- संपयं इच्छ, सो तेण णिव्वेदेणं पव्वइतो, साधू जातो, सा अट्टवसट्टा मरित्ता सुणगी जाता, साधुणो य तं गामं गता, सुणियाए दिट्ठो, ताहे तस्स मग्गामग्गिं सा उवसग्गेति, रत्तिं णट्ठो, तत्थ मया मक्कडी जाता अडवीए, तेवि कम्मधम्मसंजोगेणं तीए अडवीए मज्झेण वच्चंति, तीए दिट्ठो, ताहे कंठे लग्गा, तत्थवि किलेसेण पलातो, तत्थ मता जक्खिणी जाता, तं ओधिणा पेच्छति सा, तत्थ छिद्दाणि मग्गति, सो अप्पमत्तो, सा छिद्दं ण लभति, सा सव्वादरेण तस्स छिद्दं मग्गति, एवं च जाति कालो, तस्स य जे सरिसव्वया समणा ते हसितूणं तरुणा भणंति- धण्णोसि अरहमित्ता! जेसिं पिओ सुणयमक्कडाणं च। सोभग्गस्स पडागो तुमे हितो जीवलोगस्स ॥ १ ॥ अण्णदा सो



नमस्कार व्याख्यायां ॥५१५॥

साधू विवरयं उच्चरति, तत्थ य पादविक्खंभं पाणियं, तेण पादो पसारितो गतिभेदेणं, तत्थ य देवयाए छिद्दं लभिऊणं उरू छिण्णो, सो भणति- भिच्छादुक्कडं मा आउक्काए पडितो भोज्जत्ति, अण्णाए सम्मद्दिट्ठियाए दिट्ठा, सा धाडिता, तहेव सप्पदेसो लइतो, रूढो य देवतापभावेणं, अण्णे भणंति–भिक्खाए गतस्स अण्णं गामं गतस्स ताए वंतरीए तस्स रूवं छाएत्ता तस्स रूवेण पंथे तलाए ण्हाति, अण्णेहिं दिट्ठो, तेहिं गुरूणं सिट्ठं, आवस्सए आलोएहि अज्जोत्ति भणितो, सो उवउत्तो मुहणंतगादि, भणति-न संभरति खमासमणो!, तेहिं पडिभणिओ भणति-णत्थित्ति, आयरिया अणुवट्ठितस्स पायच्छित्तं ण देंति, सो चिंतेति-किं किं हवेत्ति, सा उवसंता, साहति य-मए कतंति, साविगा जाता, आदितो आरब्भ परिकहेति ॥ एस तिविहोवि अप्पसत्थो, तस्स अप्पसत्थस्स इमा णिरुत्ती-रज्जंति असुतिकलिमलकुणिमाणिट्ठेसु पाणिणो जेणं । रागोत्ति तेण भण्णति जं रज्जति तत्थ रागत्थो ॥१॥ पसत्थो रागो-अरहंतेसु आयरिएसु सुस्सुतबहुस्सुते या पवयणे एवमादि, अह रागो किं वट्टति ?, आयरिया आह-कहिवि वट्टति, उक्तं च-पुणस्सासवहेतू अणुकंपासुद्धए बहिययोगो । विवरीतो पावस्सति आसवहेतू वियाणाहि ॥ १ ॥ दिट्ठंतो अगडखणएणं, जदिवि अजुत्तं किंचि पसत्थरागणिमित्तं पुण्णं बंधति तंपि अगडखणणदिट्ठंतेणं सव्वं विसोहेति, जथा लित्ते(चित्तं) तत्थेव धावेति,-अरहंतेसु य रागो रागो साधूसु बंभयारीसु। एस पसत्थो रागो अज्ज सरागाण साहूणं ॥ १ ॥ जेहिं एवंविहो संसारपकड्ढओ रागो णामितो ते अरिहा ॥ इदाणिं द्वेषः, 'दुष वैकृत्ये' 'द्विष अप्रीतौ वा' सो दुविधो–दव्वदोसो भावदोसो य, दव्वदोसो दुविधो, कम्मदव्वदोसो णोकम्मदव्वदोसो य, कम्मदव्वदोसो दोसवेदणिज्जं कम्मं बद्धं ण ताव उदयं देति सो कम्मदव्वदोसो, णोकम्मदव्वदोसो दुट्ठं बिलं दुट्ठा रुगा दुट्ठा छुधा एवमादि, भावदोसो दोसवेदणिज्जं उदिण्णगं, तस्स इमाणि णिरुत्ताणि-हितकज्जसुगइमग्गं दुसओ

स्नेहरागे अरहन्नक-दृष्टान्तः

॥५१५॥

णाणाइआअधम्मस्स । दोसो सो णादव्वो सव्वासुभमूलकम्मं तो ॥ १ ॥ जो सो असंतिकरणो अणुवसमो घातओ असंपत्ती । दोसो सो णायव्वो, कोधो माणो य से भेदा ॥ २ ॥ दूसेती दूसयती जम्हि य दूसज्जितित्ति पुण दोसो । अहवा संसारसुहस्स दूसओ भण्णती दोसो ॥ ३ ॥ एसो अपसत्थो दोसो, पसत्थो दोसो अण्णाणं अविरती मिच्छत्तं च दूसेति, संसारं विसए य जं द्विषति । तत्थ अपसत्थदोसे उदाहरणं—

पंदो णाविओ, गंगाए लोगं उत्तारेति, तत्थ य धम्मरुयी णाम अणगारो एति, सोवि णावाए उत्तिण्णो, जणो मोल्लं दातूण गतो, साधू रुद्धो, फिडिया भिक्खावेला, तथावि ण विसज्जेति, सो वालुयाए उण्हे छुहाइओ तिसाइओ य रुट्ठो, तेण रुट्ठेण जोइओ, सोवि दिट्ठीविसलद्धिओ, रुट्ठेण जोइओ मतो एगाए सभाए घरकोइलो जातो, सोवि किर एवं केणवि कहिंचि रोसियओ, सो साधू विहरंतो तं गामं गतो, भिक्खं समुद्दाणेत्ता तं सभं गतो, भोत्तुमारद्धो, तेण दिट्ठो, सो तं पेच्छंतो चेव आसुरुत्तो, साधू भोत्तुमारद्धो, सो तस्स उवरिं कयारं पाडेति, साधू अण्णपासं गतो, तत्थवि एवं चेव करेति, सो साधू कहिंचिवि ओवासं ण लभति, सो तं रुट्ठो पलोएति- को रे एस णाविगणंदमंगुलोत्ति दड्ढो, जत्थ समुद्दे गंगा पविसति तत्थ वच्छरे २ अण्णेण मग्गेण वहति, चिराणगा जा सा सा मतगंगा भण्णति, तत्थ हंसो जातो, सोवि माहमासे सत्थेण समं पाभातियं जाति, तेण दिट्ठो, पाणियस्स पक्खे भरितूण सिंचति, तत्थवि उद्दविओ, पच्छा सीहो अंजणपव्वते जातो, सोवि सत्थेण समं तं पदेसं वितीवयति, सीहो तं साधुं दट्ठूण उट्ठितो, सत्थो भिज्जति, सोवि साधुं ण मुंचति, तत्थवि दड्ढो सतो वणारसीए बडुओ जातो, तत्थवि तं साधुं भिक्खं हिंडंतं अण्णेहिं चेडरूवेहिं समं भणति, धूलिं च छुभति, रुट्ठेण दड्ढो, तत्थेव राया जातो, जातिं सरति, सव्वाओ

नमस्कार व्याख्यायां

॥५१७॥

तिरियजातीओ असुभाओ संभरति, ताहे चिंतेति-जदि संपदं मारेहिति तो बहुगं फिट्टो भवामित्ति, ताहे तस्स जाणणाणिमित्तं समस्सं लंबेति, जो एतं पूरेति तस्स रज्जस्स अद्धं देमि, तत्थ इमो अत्थो- 'गंगाए णाविओ णंदो, सभाए घरकोइलो। हंसो मतंगतीराए, सीहो अंजणपव्वते ॥ १ ॥ वाणारसीय बहुओ राया वत्थेव आहतो' एवं गोधा पढंति, अण्णदा सो साधू विहरंतो आगतो, उज्जाणे ठितो, आराधिओ य, पढति, साधुणा पुच्छितो-सो साहति, साधुणा भणितं-अहं पूरेमि, 'एतेसिं मारओ जो सो, भवओ देसमागतो' सो आरामितो तं पादं घेत्तुं रण्णो पासे आगतो पढति, राया तं सुणेत्ता मुच्छितो, सो हम्मति,-सो भणति हम्ममाणो कव्वं कातुं अहं ण याणामि। लोगस्स कलिकरंडो एसो समणेण मे दिण्णो ॥१॥ राया आसत्थो वारेति, पुच्छिओ-केणं कओत्ति ?, साहति- समणेणंति, राया तत्थेव मणूसे विसज्जति, जदि अणुजाणह तो वंदतो एमि, अह भणति-जथासुहं, सो आगतो, सड्ढो जातो, साधूवि आलोइयपडिक्कंतो सिद्धो। एवं संसारवद्धणो दोसो जेहिं णामितो ते अरिहा॥ एत्थ रागदोसा णयेहिं मग्गितव्वा, णगमो संगहे ववहारे य पविट्ठो, संगहस्स कोधो माणो य दोसो, माया लोभो य रागो, ववहारस्स तिण्णिवि आदिमा दोसो, लोभो रागो, उज्जुसुतस्स कोधो दोसो, माणो माया लोभो य णवि रागो ण य दोसो, भयितव्वा, तिण्हं सद्दणयाणं कोधो य दोसो माणो दोसो माया दोसो, लोभो सिय रागो सिय दोसो।

कसाया इदाणिं, कसंतित्ति कसाया,'कष गतौ' या अप्रशस्ता गतिः तां नयंतीति तेन कषायाः, अथवा शुद्धमात्मानं कलुषीकरोतीति कषायः, तेसिं अट्ठविधो णिक्खेवो-णामकसायाठवणद्दव्वसमुप्पत्तिपच्चयादेसे। रसभावकसाए या णयेहिं छहिं मग्गणा तेसिं ॥ १ ॥ हवति उदिण्णुवसंतए वज्झ उदिरिज्जमाणए भावे। पाणियरातीमादी कालो य गती चतुण्हंपि ॥२॥ एत्थ णयेहिं

धर्मरुचि-दृष्टान्तः

॥५१७॥

मग्गणा-णेगमो सव्वेवि इच्छति, संगहववहारा आदेसं उप्पत्तिं च णेच्छंति, उज्जुसुतो आदेसं समुप्पत्तिं च ठवणं च णेच्छति, तिण्हं सद्दणयाण णामकसायो भावकसायो एते वत्थू , सेसा अवत्थू। णामट्ठवणाओ गताओ, दव्वकसायो दुविहो-कम्मदव्वकसाओ णोकम्मदव्वकसायो य, कम्मदव्वकसायो कसायवेदणिज्जं बद्धअणुदिण्णं, णोकम्मदव्वकसायो सज्जकसायो लिंबकसायो य एवमादी, समुप्पत्ती जण्णिमित्तं कसाओ उप्पज्जति, जथा—कट्ठे अग्गिडितो कट्ठो कसायो, एवं जत्थ जत्थ किं एत्तो कट्ठतरं जम्मूढो खाणुयंमि आवडितो । खाणुस्स तस्स रूसति ण अप्पणो दुप्पमादस्स ॥ १॥ पच्चयकसायो णाम जदि पुव्वबद्धो पच्चया ण होज्जा ता ते णोदेज्जा, यथा- इह इंधने असति अग्नेः प्रज्वलनाभावः, आदेसकसाया णाम जथा केतवेण संदट्ठोट्ठभिउडी कसायमंतरेणावि तथा आदिश्यते एवंविध इति, रसकसायो कविट्ठादी, भावकसाया चत्तारिवि उदिण्णा कोधादी, तस्स कोधस्स णिक्खेवो चउव्विधो, दोण्णिवि गता, णोकम्मदव्वकोधो चम्मारकोधादी, कम्मदव्वकोधो चउव्विहो- अणुदिण्णो उवसंतो बज्झमाणो उदीरिज्जमाणो, अणुदिण्णो जो ण वेदिज्जति, उवसंतो जो य उवसामिओ, बज्झमाणो तप्पढमताए, उदीरिज्जमाणो उदीरणावलियापविट्ठो ण ताव वेदिज्जति, भावकोहो उदिण्णो, तस्स चत्तारि विभागा-उदगरातिसमाणो वालुय० पुढविरातिसमाणो पव्वयरायसमाणो, उदगे कड्ढिता अनंतरं, वालुयाए दिवसेहिं केहिवि, पुढवी केहि छहिं मासेहिं, पव्वतो जावज्जीवाए, जो ताए वेलाए उवसमति सो उदगरातिसमाणो, पक्खिए वालुया, चाउम्मासियाए पुढवी, संवत्सरिए वोलीणे जो ण उवसमति सो पव्वतराति, देवगतिमणुयतिरियनरएसु गच्छंति यथासंख्यं कोवोदएणं, कोवेति तत्थ उदाहरणं—

वसंतपुरे उच्छिण्णवंसो एगो दारओ देसंतरं संकममाणो सत्थेणं उज्झितो तावसपल्लिं गतो, तस्स णामं अग्गियओत्ति, ताव-

नमस्कार व्याख्यायां ॥५१९॥

सेणं संवड्ढितो, जमो णाम तावसो, जमस्स पुत्तोत्ति जम्मदग्गितो, सो घोरागारं तवच्चरणं करेति, विक्खातो जातो। इतो य देवा वेसाणरो सड्ढो धन्नंतरी तावसभत्तो, ते दोवि अन्नरोप्परं पण्णवेंति, सो तावसभत्तो भणति—परिक्खामो, सड्ढो भणति-जो अम्हं सव्वंतिमो जो य तुब्भं सव्वप्पधाणोत्ति परिक्खामो। इतो य मिहिलाए णगरीए तरुणधम्मो पउमरहो राया, सो य पव-च्चति वासुपुज्जसामिस्स मूले पव्वयामित्ति, तेहिं सो परिक्खिज्जति भत्तेण पाणेण य, पंथे य विसमे,सुकुमालओ दुक्खाविज्जति, अणुलोमे य ते उवसग्गे करेंति, सो धणिततरागं थिरो जातो, सो तेहिं ण खोभितो, अण्णे भणंति-सावओ भत्तपच्चक्खाइओत्ति सिद्धपुत्तरूवेण गता अतिसए साहंति, भणंति जथा- चिरं जीवियव्वंति, सो भणति- बहुओ धम्मो होहिति, ण सक्किओ। गतो जमदग्गिस्स मूलं, सउणरूवाणि कताणि, कुच्चे से घरओ कओ, सउणो भणति-भद्रे! अहं हिमवंतं जामि, तुमं अच्छ, सा ण देति, मा ण एहिसित्ति, सो सवहा करेति गोघातकादि जथा एमित्ति, सा भणति-ण एतेहिं पत्तियामि, जदि एतस्स रिसिस्स दुक्कयं पियसि ता विसज्जेमि, सो रुट्ठो, तेहिं दोहिवि हत्थेहिं गहिताणि, पुच्छिताणि भणति- महारिसि ! अणवच्चोसित्ति, सो भणति-सच्चयं,खोभिओ,देवो सावओ जातो। इमोवि ताओ आतावणाओ उत्तिण्णो मिगकोट्ठगं णगरं गतो,तत्थ जियसत्तू राया, तस्स सगासं गतो, राया उट्ठितो किं देमित्ति?, तेण भणितं- धूतं वि(मे)देहित्ति, तस्स धूतासतं, रण्णा भणितो-जा तुब्भे इच्छति सा तुब्भंति, सो कण्णंतेपुरं गतो, ताहिं दट्ठूण णिच्छूढं, किं ण लज्जिसित्ति य भणितो, तेण रुट्ठेण ताओ कुज्जिताओ कताओ, तत्थेगा रेणूए रमति तस्स धूता, तीसेऽणेण फलं पणामितं, इच्छसित्ति य भणिता, ताए हत्थो पसारितो,सो भणति-एसा ममं इच्छतित्ति गहिता, खुज्जाओ उवट्ठिताओ सल्लीरुवओ दायव्वोत्ति, सो भणति-ममं णत्थि, ताहिंवि भणिओ-विखुज्जीकरेहि, विखुज्जीकताओ, इतरी-

क्रोधे जम-दग्न्यादिः

॥५१९॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५२०॥

वि आसमं नीया, रण्णा सेसगो परिजणो दिण्णो, संवड्ढिता, जाहे सा जोव्वणपत्ता जाता ताहे विवाहो कतो, अण्णदा उदुंमि जमदग्गिणा भणिता-अहं ते चरुं साहेमि जेण ते पुत्तो बंभणो पधाणो होति, तीए भणितं-एवं कज्जतुत्ति,मज्झ य भगिनी हत्थिणापुरे णगरे अणंतवीरियस्स भज्जा, तीसेवि साहेहि खत्तियचरुंति, तेण साहितो, सा चिंतेति- अहं ताव अडवीमिगी जाता, मा मे पुत्तोवि एवं णासतुत्ति तीए खत्तियचरुओ जिमितो, इतरीएवि बंभणचरू पेसितो, दोण्हवि पुत्ता जाता, ताए रेणुगाए रामो इतरीए कत्तवीरिओ, सो य रामो संवड्ढति, अण्णदा दो विज्जाहरा तत्थ समोसढा, तत्थ एगो पडिभग्गो तंमि आसमे, सो रामेण पडिचरितो, तेण से तुट्ठेण परसुविज्जा दिण्णा, सरवणे छूढो अच्छति, तत्थ सरवणे साधिता, अण्णे भणंति-जमदग्गिस्स परंपरागता परसुविज्जा, सो रामो तेण पाढितोत्ति, सा रेणुका भगिणीघरं गता, तेण रण्णा सद्धिं संपलग्गा, ससुता जमदग्गिणा आणिता, रुट्ठो, सा रामेण सपुत्तिया मारिता, सो य किर तत्थेव ईसत्थं सिक्खति, तीए भगिणीए सुतं, रण्णो कहितं, सो आगतो, आसमं विणासेत्ता गावीओ घेत्तूण पधाविओ, रामस्स कहितं, तेण धावितूण परसुणा मारितो, अणंतवीरियपुत्तो कत्तविरितो राया जातो, तस्स देवी तारा, अण्णदा से पितुमरणं कहियं, तेण आगंतुं जमदग्गी मारिओ, रामस्स कहितं, तेणागतेणं जलंतेणं परसुणा कत्तविरितो मारितो, सयं चेव रज्जं पडिवण्णो। इतोवि सा तारादेवी तेण संभमेण पलायंती तावसासमं गता, पडितो य से मुहेण गब्भो, तेहिं से णामं कतं सुभोमोत्ति, अण्णे भणंति-भूमिघरे संवड्ढितो जातो यात्ति सुभूमो जातो, रामस्स य परसू जहिं जहिं खत्तियं पेच्छति तत्थ तत्थ जलति,अण्णदा तावसासमस्स पासेणं वीतिवयति जाव परसू उज्जलितो,सो तावसासमं गतो, तावसा भणंति- अम्हे च्चिय खत्तिया, तेण रामेण सत्तवारा णिक्खत्तिया पुढवी कता, दाढाणं च थालं भरितं, एवं

क्रोधे जमदग्न्यादिः

॥५२०॥

किर रामेणं कोवेणं खत्तिया वहिता, एरिसो कोधो दुरंतओ जेहिं णामितो ते अरिहा ।

माणो चउव्विधो- कम्मदव्व० तहेव णोकम्मे जाणि दुण्णामाणि दव्वाणि, भावओ उदिण्णो, तत्थ माणस्स चत्तारि विभागा- तिणिसलतासमाणो दारुथंभसामाणो अट्ठिथंभसामाणो सेलथंभसामाणो, तहेव उववातोवि, तत्थ उदाहरणं-सुभोमो तत्थ संवड्ढति, इतरोवि, विज्जाहरसेढीए मेहरहो नाम विज्जाहरो, तस्स धूता पउमसिरी, ताए धूताए कण्णाकालो, संभिण्णसोतं णाम णेमित्तियं पुच्छति- को पउमसिरीए वरो भविस्सति ?, सो भणति- सुभोमणामचक्किस्स भज्जा भविस्सति, सो कहिं ?, तावसासमे भूमिघरे संवड्ढति, एवं सुणेत्ता विज्जाहरो आगतो, तदप्पभितिं मेहरहो सुभोमं ओलग्गति सव्वत्थ रक्खति अण्णपाणादीणि य से देति । एवं सो विज्जाहरपरिग्गहितो संवड्ढति, अण्णदा विसादादीहिं परिखिज्जति । इतो य रामो णेमित्तियं पुच्छति–कतो मम विणासो होहितित्ति , तेण भणितो- जो एत्थ सीहासणे णिवेसिहिति एयाओ य दाढाओ पावसीभूताओ जो खाहिति ततो ते भयं णिच्छयं कतं, तत्थ सीहासणं धुरे ठवितं, दाढाओ य से अग्गओ ठविताओ, एवं कालो वच्चति । इतो य सुभोमो मातं पुच्छति- किं एत्तिलओ चेव लोगो ? अण्णोवि अत्थित्ति?, ताए सव्वं कहितं, ता मा णीसरिहिसि, मा मारिज्जिहिसि, सो अण्णदा रममाणो हत्थिणपुरं गतो तं सभं, तत्थ सीहासणे उवविट्ठो, देवता रडिऊण णट्ठा, ताओ दाढाओ परमभं जातं, तो तेवि माहणा कट्ठादीहिं पहता, तेहिं विज्जाहरेहिं ताणि कट्ठाणि तेसिं चेव उवरिं पाडिज्जंति, सो वीसत्थो भुंजति, रामस्स कहितं, रामो सण्णद्धो आगतो, परसुं मुयति, विज्झाइओ, इमो तं चेव थालं गहाय उट्ठितो, चक्करयणं जातं,

तेण रामस्स सीसं छिण्णं, पच्छा तेण सुभोमेण माणेणं एक्कवीसं वारा णिब्बंभणा पुहवी कता, गब्भा य फालिया, एरिसो दुरंतो माणो जेहिं णामितो ते अरिहा णमोक्कारस्स ।

माया चउव्विधा- कम्म० तहेव णोकम्मे जाणि णिधाणपउत्ताणि दव्वाणि, भावमायाए इमे विभागा- अवलेहणिया गोमुत्तिया मेंढविसाणं वंसीमूलं, गतीओ तहेव, मायाए उदाहरणं पंडरज्जा, जधा तीए भत्तपच्चक्खाइताए पूयानिमित्तं लोगो आवाहितो, आयरिएहि य णाए आलोयाविया, ततियं च वारं णालोयितं, भगति य-एस पुव्वब्भासेण आगच्छति, सा य मायासल्लदोसेण किब्बिसिणी जाता, एरिसी दुरंता मायत्ति॥ अहवा सुयगो-एगस्स खंतस्स पुत्तो खुड्डओ,सो सुहलालियए जाव अविरतियत्ति खंतेण धाडिओ, सो लोगस्स पेसणं करेंतो हिंडितूण अट्ठवसट्ठो मतो रुक्खकोटरे सुतओ जातो, सो य अक्खाणगाणि धम्मकहाओ य जाणति जाइसरत्तणेणं, पढति, वणयरएणं गहिओ, तेण पादो कुंठिओ अच्छिं च काणं कतं, वीधीए उड्डवितो, ण कोइ इच्छति, सो तं सावगस्स आवणे ठवित्ता मुल्लस्स गतो, तेण तस्स अंतिए अप्पओ जाणाविओ, तेण कीतो, पंजरए छूढो, सयणो से मिच्छदिट्ठिओ, तो तेसिं धम्मं कहेति, ताणि उवसंताणि, अण्णदा तस्स सड्ढस्स पुत्तो माहेसरधूतं दट्ठूण उम्मत्तो जातो, तेण सव्वे तद्दिवसं धम्मं ण सुणेंति,णेव पच्चक्खायंति,तेण पुच्छियं,तेहिं सिट्ठं,सो भणति-सुत्थाणि अच्छह,तेण सो दारओ सिक्खवितो-- सररक्खाणं दुक्काहि ठिकिरियं च अच्चेहि , ममं च पच्छतो इट्ठं उक्खणितूण णिहणाहि , तेण तहा कतं, सो य सरक्खसड्ढो पायपडियओ विण्णवेति, जधा- धीयाए मे वरं देहि, सुअतो भणति- जिणदासमाहेसरस्स देहेति, तेण दिण्णा, सा गव्वं वहति, जथाऽहं देवदिण्णा, अण्णदा तेण हसितं, णिब्बंधे कहितं, सा तस्स अमरिसं वहति, संखडीए वक्खित्ताणि, हरति,

नमस्कार व्याख्यायां ॥५२३॥

भणति- तुमंसि पंडियओत्ति पिच्छं उप्पाडितं, पुणवि आढत्तो, सो चिंतेति- कालं हरामि, भणति-णाहं पंडितओ, सा ण्हाविती पंडितिया । एगा ण्हाविती, कूरं छेत्तं णेति, चोरेहिं गहिता, सा भणति- अहंपि एरिसे मग्गामि, रत्तिं एह तो रूवते लएत्ता जाईहामो, ते यागया, ताए वातकाणएण णक्काणि छिण्णाणि, अण्णे भणंति- खत्तमुहे खुरेण छिण्णाणि, बितियदिवसे पुणो गहिया सा, सीसं कोट्टंती भणति-केण तुब्भेत्ति, तेहिं समं पधाइया, एगंमि गामे भत्तं आणेमित्ति कल्लालकुले विक्कीया सा, ते रूवए घेत्तूण पलाता, रत्तिं रुक्खं विलग्गा, तेवि पलाता ओलग्गंति, ते गावीओ हरितूण तत्थेव आवासिता रुक्खहेट्ठे वीसमंति मंसं च खायंति, एक्को मंसं घेत्तूण विलग्गो रुक्खं, दिसाओ पलोएति, तेण दिट्ठा, सा से रूवए दाएति, सो दुक्को, तीए जिब्भाए दंतेहिं गहितो, तेण पडंतेण एसत्ति भणिए इतरे आसत्ति काऊण णट्ठा, इतरा मोसं घेत्तूं घरं गता, सा ण्हाविती पंडितिता, णाहं पंडितओ। ताए पुणोऽवि लोमं उक्खित्तं पंडियओसित्ति, भणति-णाहं पंडियओ ण्हाविती पंडिता, पुणरवि बितिया ण्हाविता भणिता । तहा लोमुक्खणणेणं तुमं पंडितो, सो भणति- णाहं पंडितो सा वाणियदारिया पंडितिया, कहं ?, वसंतपुरे एगो वाणियओ, तेण अण्णवाणिएण समं पणियथं छिण्णं-माघमासे जो रत्तिं पाणिए अच्छति तस्स सहस्सं देमि, सो दरिद्दवाणियओ अच्छितो, इतरो चिंतेति- किह एरिसे एसो सीते अच्छितो ? ण य मतोत्ति, सो तं पुच्छति, भणइ--एत्थ णगरे एगत्थ दीवओ जलति तं अहं णिहालिंतो अच्छितो, देहि तं सहस्संति, इतरो ण ठितोत्ति भणति ण देमि, किं कारणंति, तुमं दीवकप्पभावेण अच्छितो, इतरो न लद्धंति अद्धिंतिं पत्तो घरं गतो, तस्स य धीया कुमारी, ताए भण्णति-तात ! किं अद्धिंतिं करेह ?, सो भणति- णिरत्थयं अहं पाणिमज्झे अच्छितोत्ति, सा भणति-मा अद्धिंतिं करेह, उण्हकालए आगते भत्तं कीरतु णिमंतिज्जतु य अण्णेहिं वाणियएहिं समंति, जेमेंताण

मायायां शुकवृत्तं ॥५२३॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५२४॥

य चक्खुपहे पाणियं ठविज्जतु, जदा तिसिओ पाणियं मग्गति ताहे भणिज्जह-एतं पाणितंति, तेण कतं भत्तं, णिमंतिया य जिमिता, ताहे तेण पाणियं मग्गितं, सो भणति—एतं पाणियं पेच्छिज्जतो ते तिसा णस्सतु, सो भणति—किह पेच्छं-तस्स तिसा णस्सति ?, इतरो भणति- जदि तुज्झ पाणियं पेच्छंतस्स तिसा ण णस्सति तो मम दीवगं पासंतस्स किह सीतं णत्थित्ति भणति, जितो दवावितो य दीणारसहस्सं । सो चिंतेति—एसो णिव्विन्नाणो केण एतस्स बुद्धी दिण्णा ?, कहियं से जथा- धीयाएत्ति, सो तीसे पदोसमावन्नो, सो तं रोसेण दारियं वरेति, पिता से ण देति-मा मस्सातियाए दुक्खियं काहेतित्ति, इतरीए पिता भणितो- देहि मम एतस्स, किं मारेज्जत्ति?, दिण्णे इतरे घरे कूवं खणावेंति, दारियाए भणियं- गवेसह किं मज्झ घरे वट्टति ?, गविट्ठं सिट्ठं जहा कूवं खणंति, ताहे ताएवि सगिहाओ आढत्ता सुरंगा ताव खणाविता जाव से कूवो, ताव से परिणीया, तेण परिणेत्ता कूवे छूढा, कप्पासस्स सयभारो दिण्णो, भणति य-तुमं किर पंडितिया किह ते सांप्रतं?, पच्छा भणति- अहं दिसाजत्ताए जामि, तो तेण कप्पासेणं कत्तिएणं तिहि य पुत्तेहिं मम जातएहिं जह एमि तह करेज्जासि, घरे यणेण संदिट्ठं- जहा एताए कोद्दवसेतियाए कूरं कंजितं दिवसे २ देज्जहत्ति गतो, सावि सुरंगाए पितुघरं गता भणति- एतं सुत्तं करेह भत्तग-सेतियं च पडिच्छह, अहमवि गच्छामित्ति गणियावेसेणं गता पुरतो एगत्थ णगरे, तत्थ भाडएणं घरं गहियं, सोवि तीए उवचितो, णियघरं णीतो, सो तं पुच्छति- तुमं का कण्णगा ?, सा भणति- अहं पुरिसद्वेषिणी, तुमं मम भावितो, सो तीए आराहितो, बहूणि य वरिसाणि ताए समं अच्छति, पुत्ता य तिन्नि जाता, दव्वं चणाए सव्वं आकड्ढितं, अण्णदा वाणियओ पडिएति, सावि तेणेव सत्थेण पडियागया, अग्गतरागं पितिघरं गता, सुत्तं गहाय पुत्ते य सुरंगाए तमेव कूवं गता ठिता, वाणियओवि सगिहं

मायायां शुकवृत्तं

॥५२४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५२५॥

गतो, सा यऽणेण संभरिया, किवा य से जाता, ताहे पुच्छति-तं भत्तगं कोवि एत्थ पडिच्छति ?, तेहिं कहितं-जहा पडिच्छति, ताहे रज्जूए आसंदतो उत्तारिओ, पढमं सुत्तं उत्तारियं, पच्छा पुत्तो, पुणो बितियओ, ततियएण सहप्पणा ओतिण्णा, ताहे सो तुट्ठो, गिहसामिणी कता । एवं सा पंडिया, णाहं, लोमं तहेव जाव कोलगिणि पंडितिता, किह ?- एगा कोलिगिणी कुमारी, तीसे माता-पितरो गामं गताणि, सा एक्कलिया अच्छाति, चोरो य गिहं पविट्ठो, सा अप्पणो परिपदणयं करेति-अहं मातुलपुत्तस्स दिज्जि-हामि, तो मम पुत्तो जाहिति, तस्स चंदओत्ति णामं कज्जिहिति, तो णं अहं सद्दावेस्सामि-एह चंद्रा!, तं सुणेत्ता सएज्झगचंदो सद्दं करेंतो आगतो, चोरो णट्ठो, सा पंडिया णाहं । पुणो भणति-सा कुलपुत्तगदारिया पंडिता, कहं ?, वसंतपुरं णगरं जियसत्तू राया, तस्स कुलपुत्तओ, तस्स कूलधूता, राया भणति, जथा- जो ममं असंतेण पत्तियावेति तस्स भोगं देमि, सो कुलपुत्तओ अण्णदा ओसूरे घरं गतो, धूता पुच्छति- किं ओसूरे आगतत्ति, तेण सिट्ठं, राया भणति- जो असंतेण पत्तियावेति तस्स भोगं देमि, तेण ओसूरो जातोत्ति, सा भणति- अहं पत्तियावेमि, तेण रन्नो मूलं नीता, सा रन्नो अक्खति- अहं वड्ढकुमारी, अण्णदा मातुलपुत्तस्स दिण्णा, मम य माता पिता पवसिता, सो पाहुणओ आगतो, हिदएण ममंति किण्ण करेमि ?, ताहे पाहुणं कतं, सो य रत्तिं सप्पेण खइतो, मतो, णीतो मए सुसाणं, तत्थ सिवादीणि भीमाणि उट्ठिताणि, राया भणति- कहं ण भीता ?, सा भणति- जति सच्चं होंतं, जितो राया, वाणियदारिया णेपुरइत्तिया सा पंडितिया तिलक्खाइया य, एवमादीणि पंचअक्खाणगस-ताणि अक्खाति, रन्नो विगता णिप्पिच्छितो मुक्को, सेणेण गहितो, दोण्हं सेणाण भंडंताण असोगवणियाए पडितो पेसिल्लियपुत्तेण दिट्ठो, तेण भणितो- संगोवाहि अहं ते कज्जं काहामि, तेण संगोवितो, अण्णस्स रज्जे दिज्जमाणे भिंडमए मयूरे विलग्गेऊणं रत्तिं

मायायां शुकवृत्तं

॥५२५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

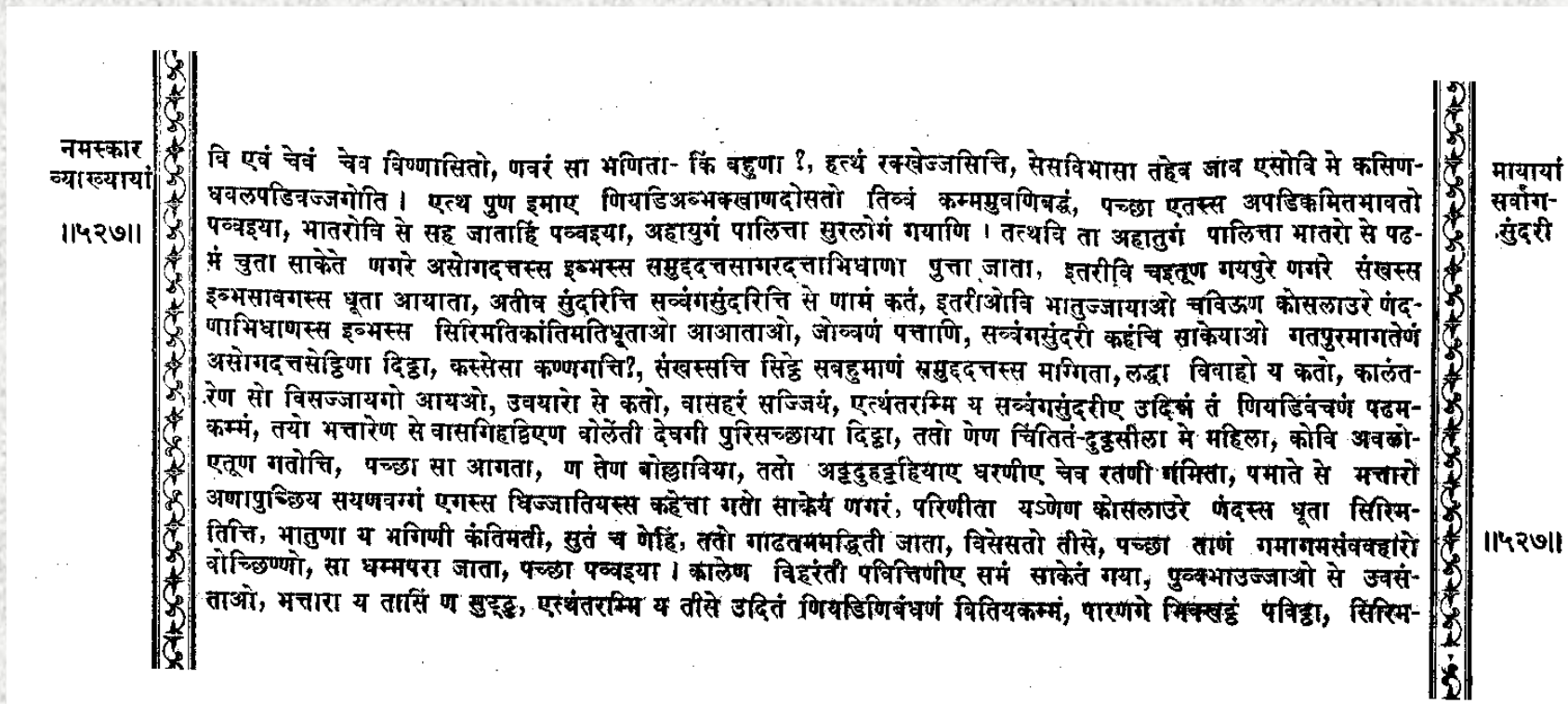
नमस्कार व्याख्यायां ॥५२६॥

राया भणितो-पेसिच्छियपुत्तस्स रज्जं देहित्ति, रण्णा दिण्णं, सूतएण सत्त दिवसाणि भग्गियं रज्जं, ते दोवि कुलाणि पव्वावितानि-सङ्कुकुलं माहेसरकुलं च, तेण सूयएण भत्तं पच्चक्खायं, सहस्सारे उववण्णो।

अहवा सव्वंगसुंदरित्ति, वसंतपुरं णगरं, जियसत्तू राया, जियवत्ति धणावहा भातरो सेट्ठी, धणसिरी य तेसिं भगिणी, सा य बालरंडा परलोगरता य, पच्छा कप्पागयधम्मघोसायरियसगासे पडिबुद्धा, भातरोवि सिणेहेण सह पव्वातितुमिच्छंति, ते संसारणेहेण ण देंति, सा य धम्मवयं खद्धं खद्धं करेति, भातुजाताओ य कुरकुरायंति, तीए चिंतियं- पेच्छामि ताव भातुगाण चित्तं, किं मे एताहिंति?, पच्छा णियडीए आलोइउण सोवणगपवेसकाले वीसत्थं रुवहुं धम्मगयं जंपितूण ततो णट्ठतुंडेण जहा से भाता सुणेति तहेगा भाओज्जातिया भणिता- किं बहुणा ? साडियं रक्खेज्जासि, तेण चिंतियं- णूणमेसा दुच्चारिणित्ति, वारियं च भगवता असतीपोसणंति, ततो णं परिट्ठवेमित्ति पल्लंके उववित्तसंती निवारिया, सा चिंतेति- हा किमेतंति ?, पच्छा तेण भणियं- घरातो मे णीहि, सा चिंतेति-किं मए दुक्कडं कतंति ?, ण किंचि पासति, ततो तत्थेव भूमीगयाए किच्छेण णीता रतणी, पभाते ओलुग्गंगी णिग्गता, धणसिरिए भणिया- कीस ओलग्गंगित्ति ?, सा रुयंती भणति- ण याणामो अवराहं गेहाओ य घाडिया, तीए भण्णति- वीसत्था अच्छाहि, अहं ते भलिस्सामि, भाता भणितो- किमेयमेवंति ?, तेण भणियं- अलं मे दुट्ठसीलाए, तीए भणितं-कहं जाणासि ?, तेण भणियं-तुब्भ चेव सगासाओ, सुता मे देसणा णिवारणं च, तीए भणियं- अहो ते पंडियत्तणं वियारक्खमयं धम्मयापरिणामो, मए सामण्णेण बहुदोसमेतं भगवया भणितं तीसे उवादिट्ठं वारिया य, किमेतावतेव दुच्चारिणी होति, ततो सो लज्जितो मिच्छादुक्कडं से दवाविओ, चिंतियं च णाए-एस ताव मे कसिणधवलपडिवज्जगो। बितिओ-

मायायां सर्वांग-सुंदरी

॥५२६॥



नमस्कार व्याख्यायां ॥५२७॥

वि एवं चेवं चेव विण्णासितो, णवरं सा भणिता- किं बहुणा ?, हत्थं रक्खेज्जासित्ति, सेसविभासा तहेव जाव एसोवि मे कसिण-धवलपडिवज्जगोति । एत्थ पुण इमाए णियडिअब्भक्खाणदोसतो तिव्वं कम्ममुवणिबद्धं, पच्छा एतस्स अपडिकमितभावतो पव्वइया, मातरोवि से सह जातार्हि पव्वइया, अहायुगं पालित्ता सुरलोगं गयाणि । तत्थवि ता अहातुगं पालित्ता मातरो से पढमं चुता साकेते णगरे असोगदत्तस्स इब्भस्स समुद्दत्तसागरदत्ताभिधाणा पुत्ता जाता, इतरीवि चइतूण गयपुरे णगरे संखस्स इब्भसावगस्स धूता आयाता, अतीव सुंदरित्ति सव्वंगसुंदरित्ति से णामं कतं, इतरीओवि भातुज्जायाओ चविऊण कोसलाउरे णंदणाभिधाणस्स इब्भस्स सिरिमतिकंतिमतिधूताओ आआताओ, जोव्वणं पत्ताणि, सव्वंगसुंदरी कहंचि साकेयाओ गतपुरमागतेणं असोगदत्तसेट्ठिणा दिट्ठा, कस्सेसा कण्णगत्ति?, संखस्सत्ति सिट्ठे सबहुमाणं समुद्दत्तस्स मग्गिता, लद्धा विवाहो य कतो, कालंतरेण सो विसज्जायगो आयओ, उवयारो से कतो, वासहरं सज्जियं, एत्थंतरम्मि य सव्वंगसुंदरीए उदिण्णं तं णियडिवंचणं पढमकम्मं, तयो भत्तारेण से वासगिहट्ठिएण बोलेंती देवगी पुरिसच्छाया दिट्ठा, ततो णेण चिंतितं-दुट्ठसीला मे महिला, कोवि अवक्कोएतूण गतोत्ति, पच्छा सा आगता, ण तेण बोल्लाविया, ततो अट्टदुहट्टहियाए धरणीए चेव रतणी गमिता, पभाते से भत्तारो अणापुच्छिय सयणवग्गं एगस्स विज्जातियस्स कहेत्ता गतो साकेयं णगरं, परिणीता यऽणेण कोसलाउरे णंदस्स धूता सिरिमतित्ति, भातुणा य भगिणी कंतिमती, सुतं च णेहिं, ततो गाढतममद्धिती जाता, विसेसतो तीसे, पच्छा ताणं गमागमसंववहारो वोच्छिण्णो, सा धम्मपरा जाता, पच्छा पव्वइया । कालेण विहरंती पवित्तिणीए समं साकेतं गया, पुव्वभाउज्जाओ से उवसंताओ, भत्तारा य तासिं ण सुट्ठ, एत्थंतरम्मि य तीसे उदितं णियडिणिबंधणं बितियकम्मं, पारणगे भिक्खट्ठं पविट्ठा, सिरिमि-

मायायां सर्वांग-सुंदरी ॥५२७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५२८॥

ती य वासघरं गता हारं पोयति, तीए अब्भुट्ठिता, सा हारं मोत्तूण भिक्खट्ठमुट्ठिया, एत्थंतरम्मि चित्तकम्मोइण्णेणं मयूरेणं सो हारो ओइलिओ, तीए चिंतियं-अच्छरीतामियं, पच्छा साडगद्धेण ठइयं, भिक्खा पडिग्गहिता, णिग्गया य, इतरीए जोइयं जाव णत्थि हारोत्ति, तीए विचिंतियं-किमेयं वद्धखेडं ?, परियणो पुच्छितो, सो भणति-ण कोति एत्थ अज्जं मोत्तूणागओ, तीए अम्बाडिओ, पच्छा फुट्टं, इतरीएवि पवत्तिणीए सिट्ठं, तीए भणियं-विचित्तो कम्मपरिणामो, पच्छा उग्गतरतवरता जाता, तेसिं चाणत्थभीयाण तं नेट्ठं न उग्गाहेति, सिरिमतिकंतिमईओ भत्तारेहिं हसिज्जंति, ण य विपरिणमंति, तीए उग्गतरतवरयाए कम्मसेसं कयं, एत्थंतरंमि सिरिमती भत्तारसहाया वासहरे चिट्ठति जाव मोरेणं चित्ता ओयरिऊण णिगिलिओ हारो, ताणि संवेगमावण्णाणि, अहो से भगवतीए महत्थता जं ण सिट्ठमिदंति खामितुं पयट्ठाणि, एत्थंतरंमि से केवलमुप्पण्णंति देवेहिं महिमा कता, तेहिं पुच्छियं, तीएवि साहितो परभववुत्तंतो, ताणि पव्वइयाणि । एरिसा दुहावहा मायत्ति ।

कम्मदव्वे तहेव, णोकम्मे आकरलोहं, एवमादी, अण्णे भणंति-णोकम्मे अकरमोत्ती एवमादि, अकरमोत्ति चिक्कणिका, भावे उदिन्नो, तस्स चत्तारि विभागा-हलिद्दारागो खंजण० कद्दम० किमिरागो, गतीओ तहेव, तत्थ उदाहरणं लुद्धणंदो-पाडलिपुत्ते णंदो वाणियओ, जिणदासो सावओ, राया जियसत्तू, तलागं खणेति, फाला दिट्ठा, सुरामोल्लंति दो गहाय गता वीथीए, सावगस्स उवणीया, तेण णेच्छिता, ताहे णंदस्स उपणीया, तेण गहिता, णाता य, ते य भणिता-जदि अण्णेवि अत्थि तो आणेज्जाह, अहं चेव गेण्हामि, एवं से दिवसे २ ते फाला गेण्हति, अण्णदा अब्भरहिते सयाणिज्जामंतणए वलामोडीय णीतो, पुत्ता भणिया-फलं गेण्हहत्ति, सो आगतो, तेहिं फाला ण गहिया, आकुट्ठा य गता पूवियसालं, तेहिं ऊणगं मोल्लंति एगंते एडिता, किट्टं पडियं,

लोभे लुब्धनंदः ॥५२८॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५२९॥

दिट्ठा, रायपुरिसेहिं गहिया, जहावत्तं कहितं रन्नो से, णंदो आगतो, सो भणति-गहिता णविन्ति, तेहिं भण्णति-किं अम्हेवि गहेण गहिया ?, तेणं अतिलोलताए एतस्स लाभस्स फिट्टो दो पादाण दोसेणंति, एक्काए कुसीए पादा भग्गा दोवि, सयणो विलवति । इतो रायपुरिसेहिं सो सावओ णंदो य राउलं णीया, पुच्छिया, सावओ भणति-मज्झ इच्छाप्पमाणातिरित्तं, अवियं कूडमाणंति ते ण गहिया, सो णंदो शूले भिण्णो सकुलो उच्छाइओ, सावओ सिरिघरिओ कतो, एरिसो लोभो जेहिं णामितो ते अरिहा णमोक्कारस्स ।

इदाणिं इंदियाणि, इन्द्रस्येदं इन्द्रियं, इन्द्रो जीवः, तेन इन्द्रो इयर्ति अनेनेति इंद्रियं, इ गतौ, इन्द्रियाणि दुविहाणि-दव्विंदियाणि भावेंदियाणि य, दव्विंदियं दुविहं-णिव्वत्तणाए उवकरणे य, णिव्वत्तणाए जहा लोहकारो भणितो एतेण लोहेण परसुं वासिं थोभणयं सूइं च णिव्वत्तेहित्ति, तेण तं गहात तेहिं पमाणेहिं खंडियाणि जाव कम्मस्स समत्थाणि सा णिव्वत्तणा, कज्जसमत्थाणि जायाणि उवगरणाइं, भावेंदियं दुविहं-लद्धीए उवयोगतो य, जाणि जेण जीवेण लद्धाइं इंदियाणि सा लद्धी, एगिंदियाणं एगा फासिंदियलद्धी, बेइंदियाणं०तेइंदियाणं०चउरेंदियाणं०पंचेंदियाणं०,पंचविहो उवयोगो, जाहे जेण इंदिएण उवजुज्जति, सव्वजीवा य किर उवयोगं पडुच्च एगिंदिया, ताणि य इंदियाणि पंच-सोइंदियाईणि, श्रूयते अनेनेति श्रोत्रेन्द्रियं, तत्थ सोइंदिए उदाहरणं-पुप्फसालो नाम गायणो, सो अतीव सुस्सरो विरूवो य, तेण वसंतपुरे णगरे जणो हतहिदतो कतो, तत्थ य णगरे एगो सत्थवाहो दिसाजत्तं गतेल्लओ, भद्दा य से भारिया, तीए केणवि कारणेण दासीओ पयट्टियाओ, ताओ सुणेंतीओ अच्छंति कालं ण याणंति, चिरेण पडिगताओ, ताओ अंबाडिताओ भणंति-मा य भट्टिणी रूसह, जं अज्ज अम्हाहिं सुतं पढणावि लोमणिज्जं, किमंग

श्रोत्रेन्द्रिये पुष्पशालः

॥५२९॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५३०॥

पुण सकण्णविण्णाणं ?, कहंति ?, ताहिं से कहियं, सा हिदएण चिंतेति-किह पेच्छेज्जामीत्ति । अण्णदा य तत्थ जत्ता कस्सति जाया, सव्वं णगरं गतं, सावि गता, लोको य पणिवतिऊणं वच्चति, पभायदेसकालो य वट्टति, सोवि गाइऊण परिसंतो परिसरे सुत्तो, सा य सत्थवाही दासीहिं समं आगया पणिवतित्ता पदाहिणं करेति, चेडीहिं दाइओ एस सोत्ति, सा संभंता, ततो गया पेच्छति विरूपं दंतुरं, तं पेच्छिऊण भणति-दिट्ठं से सरूवेण चेव गेयंति तीए निच्छूढं, तं च तेण चेतियं, कुसीलएहि य से कहियं, तस्स अमरिसो जातो, तीसे घरस्स मूले पच्चूसकालसमए गातुमारद्धो पउत्थपतियाणिबद्धं जहा आपुच्छति जहा तत्थ चिंतेति जहा लेहं विसज्जति जहा आगतो घरं पविसति, सा चिंतेति-सच्चयं वट्टतित्ति ताहे अब्भुट्ठेमित्ति आगासतलगाओ अप्पा मुक्को, सा मया, एवं सोतिंदियं दुद्दमं, तीसे पतिणा सुतं जहा एतेण मारियात्ति, तेण सो सद्दावितो, विसिट्ठं जेमणं जेमावितो जाव कंठोत्ति, तेण भणितो-गायंतो उवरिं चडाहित्ति, सो रत्तो गायति विलग्गति, उड्ढेणं सासेणं सिरं फुडियं मतो ।

चक्ष्यतेऽनेनेति चक्षुरिन्द्रियं, चक्खिंदिए उदाहरणं- मथुरा णगरी, भंडिरवडेंसियं चेतियं, जणो जत्ताए जाति, तत्थ य एगंमि वाहणे एगाए इत्थियाए सणेपूरो सालत्तओ पादो निग्गतो, तत्थ य एगो वाणियपुत्तो तं पेच्छति, सो चिंतेति-जीसे एस अवयवो सा सच्चं देवीणवि अतिरेगरूवा होज्जत्ति तेण गविट्ठा, णाता य, तत्थ समासियगं आवणं गेण्हति, तीसे दासचेडीणं दुगुणं देति, ताओ तेण हतहिततताओ कताओ, तीसेवि साहंति-एरिसरूवो वाणियओ, अण्णदा सो भणति-को एताओ पुडियाओ उग्घाडेति ?, ताहिं भणियं- अम्हं सामीणित्ति, तेण एक्काए पुडियाते लेहो भुज्जपत्ते लिहित्तूण छूढो इमेण अर्थेण-काले प्रसुप्तस्य जनार्दनस्य, मेघांधकारासु च शर्वरीषु । मिथ्या न भाषामि विशालनेत्रे !, ते प्रत्यया ये प्रथमाक्षरेषु ॥ १ ॥ पादे पादे च पादे च, पादे च

चक्षुरिन्द्रिये उदाहरणं ॥५३०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५३१॥

प्रथमाक्षरे। तत्त्वां विज्ञापयिष्यन्ति, यन्मे मनसि वर्तते ॥१॥ कालोऽयमानन्दकरः शिखीनां, मेघांधकारश्च दिशि प्रवृत्तः। मिथ्या न वक्ष्यामि विशालनेत्रे !, ते प्रत्यया ये प्रथमाक्षरेषु ॥ ३॥ ताहे से पडिलेहितो- न शक्यं त्वरमाणेण, प्राप्तुमर्थान् सुदुर्लभान्। भार्यां च रूपसंपन्नां, शत्रूणां च पराजयम् ॥ १ ॥ नेहलोके सुखं किंचिच्छादितस्यांहसा भृशम्। मृतं च जीवितं नृणां, तेन धर्मे मतिं कुरु ॥२॥ चेडीहिं पुडिआओ अप्पिताओ, इतरस्स चित्तं सा णेच्छतित्ति विसण्णो, पोत्ताणि फालेतूणं णिग्गतो, अण्णं रज्जं गतो। सिद्धपुत्ताणं वक्खाणे ढुक्को, तत्थ णीतीए एस 'सिलोगो न शक्यं त्वरमा०' वण्णिज्जति, जहा-वसंतपुरे णगरे जिणदत्तो णाम सत्थवाहपुत्तो, सो य समणसड्ढो, इतो चंपाए परममाहेसरो धणो णाम सत्थवाहो. तस्स य दुवे अच्छेरगाणि-चउसमुद्दसारभूता मुत्तावली धूता य कण्णा हारप्पभत्ति, जिणदत्तेण सुताणि, बहुप्पगारं मग्गितो ण देति, ततो णेण वंठवेसो कतो, एगागी सयं चेव चंपं गतो, अंचितं च वट्टति, तत्थेको उवज्झायगो तस्स उवट्ठितो पढामित्ति, सो भणति-भत्तं मे णत्थि, जदि णवरं कहिंपि लभिसित्ति, धणो य सरक्खाणं देति, तस्स उवट्ठितो-भत्तं मे देहि ता विज्जं गेण्हामि, जं किं (१२०००) चि देमित्ति पडिसुतं, धूता संदिट्ठा, तेण चिंतियं- सोभणं संवुत्तं, वल्लूरेण दामितो बिरालोत्ति, सो तं फलादिगेहिं उवचरति, सा ण गिण्हति उवगारं, सो य अतुरितो णीयडिग्गाहीं थक्के थक्के उवचरति, सरक्खा य णं खरंटेंति, तेण सा कालेण आवज्जिया, अज्झोववण्णा भणति- पलायम्ह, तेण भणितं- अजुत्तमेयं, अतो वीसत्था होहि, न शक्यं त्वरमाणेन० श्लोकः, किं तु तुमं उम्मत्तिया होहि, विज्जेहिं मा पउणिज्जिहिसि, तहा कयं, वेज्जेहिं पडिसिद्धा, पिता से अद्धितिं गतो, चट्टेण भणितं-मम परंपरागता विज्जा अत्थि, दुक्करो य से उवयारो, तेण भणियं- अहं करेमि, सो भणति- पयुंजामो, किं तु वंभयारीहिं कज्जं, तेण भणियं- जदि कहवि अबं-

चक्षुरिन्द्रिये उदाहरणं

॥५३१॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५३२॥

भचारिणो भवंति तो कज्जं ण सिज्झति, ते य परियाविज्जंति, जे सुंदरा ते आणेमि, कतिहिं कज्जं ?, चतुहिं, आणिता, सद्द-वेहिणो य दिसावाला, मंडलं कयं, दिसापाला भणिया- जत्तो सिवासद्दो तं मणागं विंधेज्जह, सरक्खा य भणिया- हुं फडुत्ति कते सिवारुतं करेज्जह, डिक्करिका भणिया- तुमं तह चेव अच्छेज्ज, तहा कतं, विद्धा सरक्खा, ण पउणा चेडी, विपरिणओ धणो, चट्टेण वुत्तं-भणियं मए जदि कहवि अबंभचारिणो भवंति तो कज्जं न सिज्झति इत्यादि, धणेण भणियं-को उवाओ ?, चट्टेण भणियं-एरिसा बंभचारिणो भवंति, गुत्तीओ कहेंति, दगसोयरातिसु गवेसिया, णत्थि, साहूण दुक्को, तेहिं सिट्ठाओ-वसहिकहणि-सेज्जिंदिय कुड्डंतरपुव्वकीलितपणीते । अतिमाताहारविभूसणाइं णव बंभगुत्तीओ ॥ १ ॥ एतासु वट्टमाणो सुद्धमणो जो य बंभयारी सो । जम्हा तु बंभचेरं मणोणिरोहो जिणाभिहितं ॥ २ ॥ उवगते भणिता- बंभचारीहिं मे कज्जं, साहू भणंति-ण कप्पइ णिग्ग-थाणमेतं, चट्टस्स कहितं-लद्धा बंभचारी, ण पुण इच्छंति, तेण भणियं- एरिसा चेव परिचत्तलोगवावारा मुणयो भवंति, किंतु पूइतेहिंपि तेहिं सकज्जसिद्धी होति, तण्णामाणि लिखंति, ण ताइं खुद्दंतरी अक्कमति, पूयिया, मंडलं कतं, साहूणामाणि लिहि-ताणि, सा बाला ठविया, ण कुवितं सिवाए, पउणा चेडी, धणो साहूणमल्लियंतो सड्ढो जातो, धम्मोवगारी इमोत्ति चेडी मुत्ता-वली य दिण्णा, एवं अतुरंतेणं सा तेणं बोधितत्ति सिलोगत्थो । किं च- अडवीए सूतो कप्पडिएण आराहितो, एसो मोररूवेण णच्चितुं सोवण्णं पिच्छं पाडेति दिने २, तस्स चित्तं जातं-केच्चिरं अच्छिहामित्ति सव्वाणि पिच्छाणि गेण्हामित्ति पडिजग्गितो, तेण कलावो गहितो, काको जातो, ण किंचि देतित्ति, अतः-अत्वरा सर्वकार्येषु, त्वरा कार्यविनाशिनी । त्वरमाणेन मूर्खेण, मयूरो वायसीकृतः ॥ १ ॥ इति । सो एस सुणितूण परिणामेति, अहंपि सदेसं गंतुमतुरंतो तत्थेव किंचि उवायं चिन्तिस्सा-

चक्षुरिन्द्रिये उदाहरणं

॥५३२॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५३३॥

मित्ति गतो सदेसं, तत्थ विज्जासिद्धा पाणा दंडरक्खा, तेण ते ओलग्गिया, भणंति- किं ते अम्हेहिं कज्जं ?, सिट्ठं, अम्हं तं घडेह, तेहिं मारी विउव्विया, लोगो मरितुमारद्धो, रन्ना पाणा समादिट्ठा, तेण भणियं- जाणामो ताव किं आदेशा वत्थव्वात्ति उदावणिया, तेणं साहिस्सामो, तेहिं (पढम) रत्तिं एसा सा बाहिरियं पविट्ठा, बितियाए रत्तियाए णगरं पविट्ठा एसा सा, ततीयाए रत्तीए घरं एसा सा, चउत्थीए रत्तीए माणुसहत्थसीसपादा य सयणिज्जे दीसंति, ते हत्थपादादीण साहरणं करेंति, रण्णो कथितं, भणति- सविधीए विवाडेह, तो खाइं मंडले मज्झरत्तम्मि अप्पसागारिके वावाएज्जा, तहत्ति पडिस्सुतं, णीता समिहं, रत्तिं मंडलं, सो य तत्थ पुव्वालोचितकतकवडो गतो, सा खलियारेउमारद्धा, तेण भणियं- किं एताए कयंति ?, तेहिं भणितं- मारि एसत्ति मारिज्जति, सो भणति-किमेताए आगितीए मारी हवइत्ति ?, केणवि अवसद्दो वा से दिण्णो, ता सा मारेह, मुयह एतं, ते णेच्छंति, गाढतरं लग्गो, अहं मे कोडिमुल्लं अलंकारं देमि, सुप्पह मे तं, बलामोडीए अलंकारो उवणीतो, तीएवि तस्स निक्कारणवच्छलोत्ति पडिबंधो जातो, पाणेहिं भणियं-जदि ते णिब्बंधो तो ण मारेमो, किंतु णिव्विसयाए गंतव्वं, पडिसुयं, मुक्का, सो तं गहाय पलातो, पाणप्पदो वच्छल्लगोत्ति दढतरं पडिबद्धा, आलावादीहिं घडिया, देसंतरंमि भोगे भुंजंते अच्छंति, अण्णदा सो पेच्छणगे पयट्टो, सा णेहेण गंतुं ण देति, तेण हसियं, तीए पुच्छियं- किमेतं ?, णिबंधणे सिट्ठं, निव्विन्ना, तहारूवाणं अज्जाणं अन्तिए धम्मं सोच्चा पव्वइया, इतरोऽवि अट्टदुहट्टो मरिऊण तद्दोसा चेव णरगे उवउत्तो। एवं दुक्खाय चक्खिंदियन्ति।

घाणिंदिए उदाहरणं–कुमारो गंधप्पितो, सो अणवरयं णावाकडएण खेल्लति, मातिसव्वत्तीए य मंजूसाए विसं छोढूण णदीए पक्खित्तं, तेण एगंतेण दिट्ठा, उक्कारिया, उग्घाडिऊण पलोएतुं पवत्तो पडिमंजूसादि एगगंठिओ समुग्गको दिट्ठो, सो णेण

चक्षुरिन्द्रिये उदाहरणं

॥५३३॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५३४॥

उग्घाडितूण जिंघितो, मतो य, एवं दुक्खाय घाणेंदियं ।

जिब्भिंदिए उदाहरणं-सोदासो राया मंसपितो, अमाघातो, सुयस्स मंसं विरालेण गहितं, साकरिएसु मग्गियं, ण लद्धं, पच्छा डिंभरूवं मारिय सुसंभितं, जिमितो, पुच्छति--कहिते पुरिसा दिण्णा मारेहित्ति, णगरेण णातो भिच्चेहि य, रक्खसोत्ति मधुं पाएत्ता अडवीए पविट्ठो, चच्चरे ठितो गयं गहाय दिणे २ माणुसं मारेति, केइ भणंति--विविहजणं मारेति, तेणंतेण सत्थो जाति, तेण सुत्तेण न चेइओ, साधू य आवस्सयं करेंता फिडिया, ते दट्ठुं ओलग्गति, तवतेएण ण सक्कति अल्लिइतुं, चिंतेति, धम्मकहणं, पव्वज्जा, अन्ने भणंति-सो भणति वच्चंते--ठाह, साहू भणंति-अम्हे ठिया, तुमं ठाहि, चिंतेति, संबुद्धो, सातिशया आयरिया ते ओहिणाणी, केत्तियाणमेवं होतित्ति । एवं दुक्खाय जिब्भिंदियंति ।

फासिंदिए उदाहरणं-वसंतपुरे णगरे जियसत्तू राया, सुमालिया से भज्जा, अतीव सुकुमालो फासो, राया रज्जं ण चिंतेति, सो ताण णिच्चमेव परिभुंजमाणो संवाहिज्जमाणो य तीसे फासे मुच्छितो अच्छति, रायकज्जाणि ण चिंतेति, एवं कालो वच्चति, भिच्चेहिं स मंतेतूण तीए सह निच्छूढो, पुत्तो से रज्जे ठवितो, ते अडवीए वच्चंति, सा तिसाइया, जलं मग्गियं, अच्छीणि से बद्धाणि, मा बिभेहित्ति, सिरारुधिरं पज्जिया, रुधिरे मूलिया छूढा जेण ण थिज्जति, छुधाइयाए ऊरुमंसं दिण्णं, अरुगं संरोहणीए रोहियं, जणवयं पत्ताणि, आभरणगाणि सारवियाणि, एगत्थ वाणितत्तं करेति, पंगू य से वीधीसोधगो घडितो, सा भणति-ण सक्कुणोमि एगागिणी गिहे चिट्ठितुं, बितिज्जयं लभाहि, चिंतियं चणेण-णिरवातो पंगू सोभणो, ततो णेण णेडुपालो णिउत्तो, तेण गीतच्छलितकथादीहिं आवज्जिया, पच्छा तस्सेव लग्गा, भत्तारस्स छिद्दाणि मग्गति, जाहे ण लभति ताहे उज्जा-

घ्राणेन्द्रियादिषु उदाहरणानि

॥५३४॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५३५॥

णियाए गतो सुविसत्थो बहुमज्जं पाएत्ता गंगाए पक्खित्तो, सावि य दव्वं खातितूणं वहति गायति य घरे २, पुच्छिता भणति-अम्मापितीहिं एरिसो दिण्णो, किं करेमि ?, सोऽवि राया एगत्थ णगरे उच्छलिओ, रुक्खच्छायाए सुत्तो, ण परावत्तति छाता, राया तत्थ मयओ अपुत्तो, आसो अहिवासितो तत्थ गतो, जयजयसद्देण पडिबोहिओ, राया जातो, ताणि तत्थ गताणि, रन्नो कहियं, आणावियाणि, पुच्छिया साहति-अम्मापितीहिं दिन्नो, राया भणति-बाहुभ्यां शोणितं पीतं, ऊरुमांसं च भक्षितम् । गंगायां वाहितो भर्ता, साधु साधु पतिव्रते ! ॥ १ ॥ णिव्विसियाणि आणत्ताणि, एवं दोण्हवि से सओ सुकुमालियाए दुक्खाय फासेंदियं, जेहिं एते दुज्जता दुरंता संसारवद्धणा इंदिया जिता णामिता ते अरिहा नमोक्कारस्स ।

इदाणिं परिसहा, परिस्सहंता 'सह मर्षणे' मार्गाच्यवननिर्जरार्थं च परिषोढव्याः परीसहाः, मार्गाच्यवनार्थं दर्शनपरीसहः पण्णापरीसहो य, 'णत्थि णूणं परलोगे०' सेसा निर्जरार्थं, एते बावीस प० तंजहा-दिगिंछापरीसहे १ पिवासापरीसहे २ सीत० ३ उण्ह० ४ दंसमसग० ५अचेल० ६अरति० ७इत्थी० ८चरिया० ९ णिसीहिया० १० सेज्जा० ११ अक्कोस० १२ वह० १३ जायण० १४ लाभ० १५ रोग० १६ तृणस्पर्श० १७ मल० १८ सक्कारपुरस्कार० १९प्रज्ञा० २०अण्णाण० २१ दंसणपरीसहे२२ । दव्वपरीसहा इहलोगनिमित्तं जो सहति परव्वसो वा बहबंधणादीणि, तत्थ उदाहरणं, जहा--चक्के सामाइए इंददत्तपुत्ता, भावपरीसहा जो संसारवोच्छेदनिमित्तं अणाइलो सहइत्ति, तेण चेव उवणतो पसत्थो, जहा वा उत्तरज्झयणे सुतधोसणयं सोदाहरणं विभासिज्जा।

इदाणिं उवसग्गा, उप सामीप्ये 'सृज विसर्गे' उपसरंतीति उवसग्गा, उवसृजंति वा अनेन उवसर्गाः, तेवि परीसहेहिं चेव समोतरंति अक्कोसादी, णवरं किंचि विसेसा उवसग्गत्ति भण्णंति, ते चतुर्विधा- दिव्वा माणुसा तिरिया आत्मसंवेदनीया, दिव्वा

स्पर्शनेन्द्रियं परिषहोपसर्गाश्च

॥५३५॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५३६॥

चउव्विधा--हासा पओसा वीमंसा पुढोवेमाता। हासा-खुड्गा अण्णं गामं भिक्खाचरियाए वच्चंति, वाणमंतरिं ओवायंति--जदि फव्वामो तो चिब्भडडेडरगकण्हवण्हएण य अच्चणियं देहामो, लद्धं, सा मग्गति, ते ण देंति, अण्णमण्णस्स कहणं, मग्गितूण दिण्णं, एतं ते तंति, ताहे सयं चेव तं पक्खाइया, कंदप्पिया देवया तेसिं रूवं आवरेत्ता रमति, वियालो जातो, तेहिं मग्गिया ण दिट्ठा, देवताए आयरियाण कहियं। पदोसे संगमओ वीसा, एगत्थ देउलियाए साहू वासावासं वसित्ता गता, तेसिं च एगो पुव्वपेसितो ततो चेव वरिसारत्तं आगतो, ताए देवताए आवासितो, सा देवता चिंतेति-किं दढधम्मो णवत्ति सड्ढीरूवेण उवसग्गेति, सो णेच्छति, तुट्ठा वंदति। पुढोवेमाता हासेण कातुं पदोसेण करेज्जा, एवं संयोगो ॥ माणुसा चउव्विहा-हासा पदोसा वीमंसा कुशीलपडिसेवणा, हासे-गणियाधुता खुड्डगं भिक्खस्स गयं उवसग्गेति, तेण हया, रन्नो कहियं, खुड्डओ सद्दाविओ, सो सिरिघरादिट्ठंतं कहेति। पदोसे गयसुकुमालो सोमभूतिणा ववरोविओ, अहवा एगो धिज्जातीओ एगाए अविरतियाए सद्धिं अकिच्चं सेवमाणो साधुणा दिट्ठो, पदोसमावन्नो साधुं मारेमित्ति पधावितो, साधुं पुच्छति-किं तुमे अज्ज दिट्ठंति ?, साधू भणति- 'बहुं सुणेति कन्नेहिं०' सो भणति किं निमित्तं एतं, एस अम्ह उवदेसो तित्थकराणं, उवसंतभद्दओ जाओ। वीमंसाए चंदउत्तो राया चाणक्केण भणितो-पारत्तियं करेज्जसि, सुसीसो य किर आसि, अंतेपुरे धम्मकहणं, उवसग्गिज्जंति, अण्णतित्थिया विणट्ठा णिच्छूढा य, साधू सद्दाविया भणंति- जदि राया अच्छति तो कहेमो, अतिगयो, राया उस्सरितो, अंतेपुरियाओ उवसग्गेंति, हयातो, सिरिघरदिट्ठंतं कहेति। कुसीलपडिसेवणाए ईसालुगभज्जाओ चत्तारि, रायसण्णातं तेण घोसावितं-सत्तघतिपरिक्खित्तं घरं ण लभति कोई पवेसं, अयाणंतो साहू वियाले वसहिनिमित्तं अतिगतो, सो य पविसिग्गओ, तत्थ पढमे

उपसर्गाश्च

॥५३६॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५३७॥

जामे पढमा आगया भणति- पडिच्छ, साधू कच्छं बंधेतूणं आसणं कुंमबंधं कातूणं अहोमुहो ठितो चीरवेढेणं, ण सक्किकयं, कीसित्ता गता, पुच्छंति-केरिसो ?, सा भणइ- अण्णो मणूसो नत्थि, एवं चत्तारि जामे कीसितूणं गयाओ, पच्छा एगतो मिलियाओ साहंति, उवसंताओ सड्ढीओ जाताओ ॥ तेरिच्छा चउव्विहा- भएण सुणगादी दसेज्जा, पदोसा चंडकोसिओ मक्कडादि वा, आहारहेउं सीहादी, अवच्चलेणसारक्खणहेउं काकिमादी ॥ आत्मना क्रियन्त इति आत्मसंवेदनीया, जहा उद्देसिए चेतिए पाहुडियाए य, ते चउव्विहा-घट्टणया पवडणया थंभणया लेसणया, घट्टणया अच्छिमि रओ पविट्ठो, चमढियं, दुक्खितुमारद्धं, अहवा सयं चेव अच्छिम्मि गलए वा किंचि सालुगादि उट्ठितं घट्टति, पवडणया ण पयत्तेण चंकमति, तत्थ दुक्खाविज्जति, थंभणया णाम ताव बइट्ठो अच्छितो जाव मुक्खिविट्ठो जातो, अहवा हणुगाजंतमादी, लेसणया पादं आउंटावेत्ता अच्छिते जाव तत्थ वायेण लइओ, अहवा णट्ठं सिक्खामित्ति अवणामितं किंचि अंगं तत्थेव लग्गं ॥ अहवा आयसंवेतनीया वातियपित्तियसिंभियसंनिवातिया, एते दव्वोवसग्गा, भावतो उवजुत्तस्स एते चेव । अहवा इंदियाणि कसाया य ते जेहिं०, अहवा अणेण कारणेणं अरिहा नमस्कारस्य- इंदियविसया कसाया परीसहा वेदणा ३ सरीरगादि अहवा सीता ३ उवसग्गा ते चेव, एवमादी अरयः ते हंता इतिकातूणं अरिहा णमोकारस्य, अर्हन्तीति वा अर्हन्ताः, ते दुविधा- दव्वारिहा भावारिहा य, दव्वारिहा दुविहा- पसत्था अपसत्था य, दव्वारिहा पसत्था हिरण्णअस्समादीणि, अपसत्था वधबंधतालणाइयं, भावेवि अप्पसत्था अक्कोसादीणं, पसत्था वंदणणमंसणादीणं । तत्थ गाहा—

अरिहंति वंदणणमंसणाणि० ॥ ९-३५ ॥ ९२१ ॥ वंदणं सिरसा, णमंसणं वयसा, पूया वत्थादीहिं, सक्कारो अब्भुट्ठा-

उपसर्गाश्च

॥५३७॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५३८॥

दीहिं, केहिं कीरंतस्स वंदणादिस्स ते अरिहा ?, उच्यंते, देवासुरमणुयाणं, अरिहंति पूयं, जहा सुरुत्तमा, मणुयाण रायाणो उत्तमा, ताणं देवा, देवाणं रिसतो, रिसीणं परमरिसी, ते अरिहंता चेव, अरी च पूर्वोक्ता हंता, रजं हन्ता, रजः कर्म, रतस्स हंता तेणवि अरिहंता, अरिहंतिवि इमे य शारीरा अतिशया, तथा ते य उप्पण्णा जहा-चारुसुजायंमाणं सिरिवच्छंकितविसालवच्छाणं । तेलोक्कसकयाणं णमोत्थु देवाहिदेवाणं ॥ १ ॥ तस्स णमोक्कारस्स किं फलं ?, जं तस्स फलं तं उवरिं सट्ठाणे भण्णिहिति सउदाहरणं, पंचण्हवियं सामण्णं पयोयणफलं णमोक्कारो, इमं पत्तेयफलं वण्णिज्जति—

अरिहंतनमोक्कारो जीवं मोएइ० ॥ ९-३७॥ ९२३ ॥ भवाणं सहस्सा भवसहस्सा, सो य संसारो, अणंतेसु किं भवसहस्सगहणं कतं ?, उच्यते, पसत्थाणि एवं, इतराणि अणंताणि, किं सव्वेवि मोयति ?, णेति, भावेण जो कीरति सो फलदो जीवं मोतति, अह णवि मोएति तो इमं अन्नं फलं होति, पुणरवि बोधिलाभाए, बोधी णाम संमत्ताहिगमो ॥ किं चान्यत्—

अरिहंतनमोक्कारो धण्णाण० ॥ ९-३८ ॥ ९२४ ॥ धणेण धण्णो, णाणदंसणचरित्ताणि धणं एतेण धणेण धण्णो, भवखपणं करेंताणं, भवक्खयो संसारक्खयो, जदा हिदयं ण मुंचति तदा किं करेति ?, विसोत्तियं णिरुंभति, दव्वविसोत्तिया णिक्काकंडु, तेण संकरेण पाणियं रुद्धं अण्णतो वच्चति, ते रोवगा सुक्कंति, एवं भावविसोत्तियावि संसयादी कट्ठत्थाणीया पच्छा अपसत्थपावरुक्खा सुक्खंति, एवं विसोत्तियं वारेति अरहंतणमोक्कारो इति । एवमादीहिं गुणेहिं महत्थोत्ति वण्णितो, अहवा इमेणवि कारणेणं जहा संगामेमाणो पुरिसो आतुरे कज्जे जाते अजेज्जं अपडिहतं आयुहं तेण कज्जं करेति, एवं इमेणवि चोद्दस पुव्वाणि गहियाणि,

अर्हन्नमस्कार फलं

॥५३८॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५३९॥

ण य मरणकाले तेहिं कज्जं कीरति, उत्तं च-ण य तम्मि देसकाले सक्को बाहरविहो सुतक्खंधो । सक्को अणुचिंतेतुं धन्तंपि समत्थ-चित्तेणं ॥ १ ॥ जेण णमोक्कारो तम्मि देसकाले कीरति तेण सो महत्थो, एवं सो अरहंतणमोक्कारो सव्वपावाणि पणासेति, जाणि दव्वभावमंगलाणि लोगे लोउत्तरे य एतेसिं पढमं मंगलं अरहंतनमोक्कारो।

इदाणिं सिद्धाण णमोक्कारो, 'राध साध संसिद्धौ' सिद्धः प्राप्तणिष्ठ इत्यनर्थान्तरेण, जो जस्स पारं गतो सो सिद्धो भवति, तस्स सिद्धस्स इमो णिक्खेवो चोद्दसघा-णामसिद्धो ठवण० दव्व० कम्म० सिप्प० विज्जा० मंत० जोग० आगम० अर्थ० जत्ता० अभिप्पाए तवे कम्मखयेत्ति य। णामट्ठवणाओ गताओ, दव्वसिद्धो उस्सेइमं संसेइमं उवक्खडं वत्थसिद्धोत्ति, तत्थ उस्सेइमं जथा मिरोलगादि, संसेइमं जहा तिलादी, उवक्खडं जहा पदाणादी, वत्थसिद्धं जं रुक्खे चेव पच्चति, एताणि दव्वाणि णिट्ठं पत्ताणि। कम्मसिद्धो जो कम्मस्स णिट्ठं गतो, अनाचार्यकं कर्म, तत्थ उदाहरणं—

कोंकणा एगम्मि दुग्गे सज्झस्स मंडं रुंभंति विलयति य, ताणं च किर यदि रायावि एति तेण पंथो दातव्वो, तत्थ एगो सेंधवओ पुराणो, सो पडिभज्जंतो चिंतेति-तहिं जामि जहिं कम्मेण एस जीवो भज्जति, सुहं ण विंदति, सो तेसिं मिलितो, सो भणति-गंतुकामो कुंदुरुक्खपडिबोहिल्लओ, सिद्धओ भणति-सिद्धियं देहि मम, जं सिद्धयं सिद्धया गता सज्झयं, सो य तेसिं भारव-हाणं महत्तरओ सव्ववहुं भारं वहति, तेण अण्णदा साधूण मग्गो दिन्नो, ते रुट्ठा, राउले कहंति, ते भणंति-अम्हं रायावि मग्गं देति भारेण दुःखाविज्जन्ताणं, तुमं पुण समणगस्स रिक्कविरिक्कस्स मग्गं देसि, रण्णा भणियं-दुट्ठु मे कतं, तेण भणितं-देव ! तुमे

सिद्ध-नमस्कारे कर्मसिद्धः ॥५३९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

गुरुभारवाहित्ति काऊणमेतमाणत्तं?, रण्णा आमंति पडिसुतं, तेण भणियं-जदि एवं ता ते गुरुतरभारवाही, कहं ?, जं सो अवीसमन्तो अट्ठारससीलंगसहस्साणि भारं वहति जो मएवि वोढुं ण पारितोत्ति, धम्मकहा, भो महाराय !-वुज्झंति नाम भारा ते पुण वुज्झंति वीसमंतेहिं । सीलभरो वोढव्वो जावज्जीवं अविस्सामो ॥ १ ॥ राया पडिबुद्धो, सो य संवेगं गतो अब्भुट्ठितोत्ति । एसो कम्मसिद्धोत्ति ॥ शिल्पमाचार्यकं तस्य निष्ठां प्राप्तः २, शिल्पसिद्धं प्रति उदाहरणं, कोकासो सोप्पारए रहकारो, तस्स दासीए बंभणाए जातो दासचेडो, सो पगूढभावेण अच्छति, सो ण जीहामित्ति सो अप्पणो पुत्ते सिक्खावेति, ते मंदबुद्धी ण लएंति, दासेण सव्वं गहितं, सो रहकारो मतो, रायाए दासस्स तं घरं सव्वं दिण्णं, सो सामी जातो । इतो य पाडलिपुत्ते राया जियसत्तूत्ति, इतो य उज्जेणीए राया सावगो, तस्स चत्तारि-सावगा-एगो महाणसिओ, सो रंधेति, जदि रुव्वति जिमितमेत्तं जीरति, जामेण २-३-४ वा, जदि रुच्चति ण चेव जीरति १ बितियओ अब्भंगेति, सो तेल्लस्स कुलवं छुभति, तं चेव पुणो णीणेंति २, ततियओ सेज्जं रयेति, जहा पढमे वा २-३-४ जामे वुज्झति, अहवा सुवती चेव ३, चउत्थो य सिरिघरो कतो, जो तं अतिगतो किंचि ण पेच्छति, एते गुणा तेसिं, सो पाडलिपुत्तओ तस्स णगरं रोहति, सावओ चिंतेति-किं मम जणक्खएणं कतेणंति भत्तं पच्चक्खायं देवलोगं गतो, णागरेहिं से णगरं दिण्णं, ते सावगा सद्दाविता, पुच्छति-किं कम्मं ?, सूतेण अक्खायं, भंडारिएण पवेसिओ, किंचिवि ण णेच्छति, अण्णेण दारेण दंसितं, सेज्जापालेण कहियं, अब्भंगंतेण एक्कातो पदातो तेल्लं णीणियं, एक्कातो ण णीणितं, जो मम सरिसो सो णीउत्ति, चत्तारिवि पव्वतिया । सो तेण तेल्लेण डज्झंतो कालगो जाओ, काकवण्णो से णामं जायं, पढमं से जियसत्तुत्ति णामं आसि पश्चात्काकवर्ण इति ।

नमस्कार व्याख्यायां

॥५४१॥

इतो य सोपारए दुब्भिक्खं जातं, कोक्कासो उज्जेणिं गतो, किह रायं जाणावेमित्ति कवोतेहिं गंधसालिं अवहरेति, कोट्टाकारिएणं कहियं, मग्गंतेणं दिट्ठो, आणितो, रण्णा णातो, वित्ती दिण्णा, गरुडो कतो, सो राया तेण कोक्कासेण देवीए य समं हिंडति, जो से ण णमति तं भणति-अहं आगासेण आगतो मारेमि, सव्वे वसमाणिया, तं देविं सेसिगाओ पुच्छंति जतो हिंडति, एगाए वच्चंतस्स एसा णियत्तणखीलिया गहिया, गतो, णियत्तणवेलाए णातं, कलिंगे ईसिं तला पक्खो भग्गो, तत्थ पडितो, णगरं गतो, तस्स रहकारो रहं णिम्मवेति, एगं चक्कं णिम्मवियं, एगस्स सव्वं घडिएछियं, किंचि किंचि णवि, ततो सो उवगरणाणि मग्गति, तेणं भणियं-जाव घरातो आणेमि, इमाणि राउलाओ ण लब्भंति निक्कालिऊणं, सो गतो, इमेण तावेवं संघातियं उद्धं कतं जाति, अप्फिडियं पडिणियत्तति, पच्छामुहयंपि ण पडति, इतरस्स सव्वयं जाति अफिडियं पडति, सो आगतो जाव तं णिम्मातं पेच्छति, अवक्खेवेणं गतो, रण्णो कहियं जहा कोक्कासो आगतो, तस्स बलेणं सव्वरायाणगा तेणं वसमाणीया, सो गहितो, तेण हम्मंतेण अक्खायं, ताहे सह देवीय राया गहितो, भत्तं रोधीयं, णागरेहिं अयसभीतेहिं कागपिंडिया पवत्तिया, कोक्कासो भणिओ-मम पुत्तस्स सत्तभूमिगं पासादं करेहि, मम य मज्झे, तो सव्वरायाणए आणावेस्सामि, तेण णिम्मवितो, कागवण्णपुत्तस्स सउणगजंतं कातूण लेहो विसज्जितो, एहि जाव अहं एते मारेमि, तो इमं पियं च ममं च मोएहिसित्ति दिवसो दिन्नो, पासायं सपुत्तओ राया विलइतो, खीलिया आहता, संपुडो जातो, सपुत्ततो मतो, कागवण्णपुत्तेणवि तं णगरं गहितं, पिता य कोक्कासो पमोइया, अण्णे भणंति-कोक्कासेण णिव्विण्णएणं अप्पा तत्थेव मारितो। **एस सिप्पासिद्धो।**

विज्जासिद्धो अज्जखउडो, तेसिं पासादेण विज्जा कण्णाहाडिया, विज्जासिद्धस्स णमोक्कारेणवि किर विज्जा उवट्टंति, सो

शिल्प-सिद्धः

॥५४१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५४२॥

विज्जातित्थयरो, सो त भाइणेज्जं ठवेत्ता पडिच्छायओ वादे पराजितो (सा परि०)अद्धीइए कालगतो, गुडसत्थे णगरे वड्ढकरओ वाणमंतरो जातो, तेण तत्थ सव्वे साहुणो परद्धा, तं सुणेत्ता अज्जखउडा तहिं गता, तेण जातितुं तस्स कन्ने उवाहणाओ ओलतियाओ, देवकुलिओ आगतो पेच्छति, गता लोगं घेत्तूण आगतो, ते जतो जतो उग्घाडेंति तओ २ अधिट्ठाणं, णगरे कहितं, तेहिवि तहेव दिट्ठं, कट्ठलट्ठीहिं पहता, ते य रायकुले संकमेंति, मुक्का, पविट्ठो वड्ढकरओ, अण्णाणि य वाणमंतराणि पच्छतो सपडिमाणि गच्छंति, लोगो पायवडितो विण्णवेति-मुयाहित्ति, सो य अण्णतो विप्परिणामेति, सो चिंतेति-आयरिओ ण सक्कति मोयावेतुंति, तस्स देवकुले महाविस्संदा दो दोणीओ महतिमहालियाओ पाहाणमतीओ, सो य वाणमंतराणि खडखडावेंताणि, पच्छओ सपडिमाणि हिंडंति, जणेण विण्णवितो, ताणि मुक्काणि, दोणीवि आरतो आणेत्ता छड्डिया, मम सरिसो णेहितित्ति, मुक्को। इतो य जत्थ भाइणेज्जो ठवितो सो आहारगिद्धो भरुअच्छे तच्चण्णिओ जातो, अयःपात्राणि आगासेणं उवासगाणं घरेसु भरियाणि एंति, लोगो तंमुहो बहुगो जातो, संघेणं अज्जखपुडाणं पेसितं, आगतो, अक्खायं-एरिसी अकिरियत्ति उट्ठिता, तेसिं कप्पराणं अग्गतो मत्तओ सेतेणं वत्थेणं अच्छाइओ जाति, टोप्परिया गता सव्वपधाणिया, आसणे ठिया, अण्णत्थ कया, कयाइ पुणो पुणो पंति भरिया आगता, आयरिएहिं अंतरा पाहाणो ठवितो सव्वाणि भिण्णाणि, सोवि चेल्लओ भीतो णट्ठो, आयरिया तत्थ गता, तच्चण्णिया भणंति-एहि बुद्धस्स पादेहि पडाहित्ति, आयरिएहिं भणितं-एहि पुत्ता! सुद्धोदणसुता वंद मम, बुद्धो णिग्गतो, पादेसु पडितो, तत्थ थूभो बारे, सोवि भणतितो-एहि पाएहिं पडाहित्ति, सोवि पडितो, उट्ठेहित्ति भणितो अद्धोणओ ठितो, एवं अच्छहत्ति भणितो ठितो, पासल्लिगो ठितो, सो णियंठणामितो णामेण संजातो॥ मंतसिद्धो एगंमि नगरे रायाणएण

विद्यासिद्धः

॥५४२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५४३॥

संजती गहिया, संघसमवाए कए एगेण मंतसिद्धेण रायंगणि थंभा अच्छंति ते अभिमंतिता खडखडेंति, पासखंभावि य चलिया, तेण भीएण मुक्का, संघो य खामितो ॥

जोगसिद्धो आभीरविसए कण्हाए वेण्णाए य अंतरदीवए तावसा, एगो पायलेवेणं पाणिए चंकमति एति जाति य, लोगो आउट्टो, सड्ढा हीलिज्जंति, अज्जसमिता वइरसामिस्स मातुलगा विहरंता आगता, सड्ढा उवट्ठिता अकिरियत्ति, आयरिया णेच्छंति, भणति- किं अज्जो ! ण ठाह ?, एस जोगेण केणवि मक्खेति, तेहिं अट्ठपदं लद्धं, आणितो अम्हे दाणं देमोत्ति, अह सो सावओ भणति- भगवं ! पादा धोव्वंतु, अम्हे अणुग्गहिया होमो, तस्स अणिच्छंतस्स पादा पाउयाओ य सोइयाओ, गतो, पाणिते बुड्डो, उक्कट्ठिकलकलो कतो, एवं डंभएहिं लोगो खज्जतित्ति, आयरिया णिग्गता, णदी भणिता- अहं पुत्ता ! पुरिमं कूलं जामि, दोवि तडा मिलिता, गता आयरिया, ते तावसा पव्वइता, बंभदीवगवत्थव्वत्ती बंभदीवगा जाता ॥

आगमो चोद्दस पुव्वा णिद्दं पत्ता जाव सयंभुरमणेवि जं मच्छओ करेति तंपि जाणति ।

अत्थसिद्धो मंमणवणिओ, जत्ताए जो बारसवारे समुद्दं जाति, अहवा जहा तुंडिएणं जले णट्ठं जले मग्गिज्जतित्ति सतसाहस्सीओ वाराओ भिण्णाओ, परिहीणो, सयणिज्जेहिं दिज्जमाणेवि णेच्छति, पेडएणं लोगं उत्तारेंति, देवता उवसंता, सव्वं दिण्णं, भणितो- अण्णंपि देमि, सो भणति- जो मम णामेण मुयति सो अविग्घेणं एतु ।

इदाणिं अभिप्पायसिद्धो, अभिप्पाओ णाम बुद्धीए पज्जाओ, अभिप्पायोत्ति वा बुद्धित्ति वा एगट्ठं, स च अभिप्रायश्चतुर्विधः-

योगागमार्थाभिप्रायसिद्धाः

॥५४३॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५४४॥

उप्पत्तिया वैनयिकी कर्मजा पारिणामिकी, एसा चतुव्विधा बुद्धी, पंचमा नास्ति। योऽर्थो येन भावेन उत्पत्तुकामः तमर्थं तहेव अनुगच्छति, अवबुध्यतीत्यर्थः, सोऽर्थोऽपूर्वं अदृष्टः अश्रुतः अविदितः अविचालितः तस्मिन्नेव समये तमर्थं गृह्णाति, तस्य फलं अव्याहतं ण यण्णधा भवति, एवंविधा उप्पत्तिया, सा जहा उप्पज्जति तथा इमाणि उदाहरणाणि भण्णंति—

भरहसिलपण० ॥ ९-५४ ॥ ९४० ॥ उज्जेणी णगरी जणवए अवंतीए, तत्थ णडाणं गामो, तत्थ एगस्स णडस्स भज्जा मता, तस्स य पुत्तो डहरओ, तेण अन्ना आणिता, सा तस्स दारगस्स ण वट्टति, तेण दारएण भणियं-ममं लट्ठं न वट्टसि?, तहा ते करेमि जहा मम पादेसु पडिसित्ति, तेण रत्तिं पिता सहसा भणितो-एस गोहोत्ति, तेण णायं महिला विणट्ठत्ति सिढिलो रागो जातो, सा भणति-मा पुत्त ! एवं करेहि, तेण भणितं-ण लट्ठं वट्टसि, भणति-वट्टेहामि, अहंपि लट्ठं करीहामि, सा वट्टितुमारद्धा, अण्णदा छाहा चेव एस गोहेत्ति २ भाणित्ता कहेति, पुट्ठो छाहिं दरिसेति, ततो पिया से लज्जितो सोवि एवंविधोत्ति, तीसे घणं रागो जातो, सोवि अविसंभितो पिताए समं जेमेति। अण्णदा पिताए समं उज्जेणिं गतो, दिट्ठा णगरि, णिग्गता पिता पुत्तो, पिता पुणोवि अतिगतो किंपि ठावितगं विस्सरियंति, सो सिप्पाए णदीए पुलिणे णगरिं सव्वं आलिहति, तेण णगरी सचच्चरा लिहिया, ततो राया एति, तेण राया वारितो, भणितो-मा राउलमज्झेणं एहित्ति, रण्णा कोतुहल्लेणं पुच्छितो, सचच्चरा सव्वा कहिया, रण्णा भणितो-कहिं वससित्ति ?, तेण भणितं-अमुगगामे, पिया से आगतो, ते गता, रायाए य एगूणगाणि पंच मंतिसताणि, एगं मग्गति, जो य सव्वप्पहाणो होज्जत्ति, चिंतियं-एस होज्जत्ति, तस्स परिक्खणणिमित्तं इमाणि वेसति—

सिलमिंढकुक्कुडतिलवालुयहत्थि अगडवणसंडे। परमन्नपत्तलेंडगखाइला पंच पियरो य ॥ ९४१ ॥

औत्पात्तिकी बुद्धिः ॥५४४॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५४५॥

लेहं विसज्जेति, जधा--तुज्झ गामस्स बहिं महिल्लो सिला, तीए मंडवं करेह, ते आदण्णा, सो दारतो रोहतो छुहातितो, पिता से गामेण समं अच्छति, उस्सूरे आगतो, सो रोवित--अम्हे छुहाइया अच्छामो, सो भणति--तुमं सुहितोसि, किह ?, तेण से कहियं, भणति--वीसत्था अच्छह, हेट्ठा खणह खंभे ठवेत्ता थोवथोवंतेण भूमी कया, उवलेवणकतोवतारं रण्णो निवेदितं, केण कतं ?, रोहएणं भरहगदारएणं १ । ततो मेंढतो पेसितो, एस पक्खेण एत्तिओ चेव पच्चप्पिणेतव्वो, तेहिं भरहो पुच्छितो, तेणवि विरूवेण समं बंधावितो, जवसं दिण्णं, तं चरंतस्स ण हायति बलं, विरूवं च पेच्छंतस्स भएण ण वड्ढतित्ति २ । एवं कुक्कुडो अद्दाएण समं जुज्झावितो ३ । तिलसमं तेल्लं दातव्वंति तिल्लमद्दाएण पणामियं ४ । वालुयाए वरट्टए पडिहत्थं देह ५ । हत्थिम्मि जुण्णहत्थी गामे छूढो, हत्थी अप्पाउओ मरिहितित्ति अप्पितो, मतोत्ति ण णिवेदितव्वं, हत्थी मतो, तेहिं णिवेइयं जधा ण चरति ण णीहारेति ण ऊससति ण णीससति, रण्णा भणितं--मतो ?, तेहिं भणितं-तुब्भे भणहत्ति ६ । अगडे आरण्णओ ण तीरति एक्कल्लतो णागरं अगडं देह७ । वणसंडे पुव्वावासे गतो गामो ८ । परमण्णं कारिसउम्हाए पलालुम्हाए यत्ति ९ । एवं परिक्खिऊणं समादिट्ठं--रोहगेणं आगंतव्वं, तं पुण ण सुक्कपक्खे ण कण्हपक्खे णो राति ण दिवा ण छायाए ण उण्हेणं ण छत्तेण ण आगासेणं ण पादेहिं ण जाणेणं ण पंथेणं ण उप्पहेणं ण ण्हाएणं ण मलिणेणं, पच्छा अंघोलिं कातूण चक्कमज्झभूमीए पडिक्कमेणं एगं पादं कातूण चालणीणिम्मितुत्तिमंगो, अन्ने भणंति--समदुलट्ठणीपदेसबद्धओ छाइयपडगेणं संझासमयंसि अमावासाए आगतो, रण्णा पूजितो, आसण्णे य से ठितो, यामविउद्धेण रण्णा सद्दाविओ-सुत्तो? जग्गसि ?, भणति--जग्गामि, सो सुत्तो विबुद्धो उट्ठितो, रण्णा भणितो--जग्गसित्ति ?, जह आणवेह--किं तुण्हिक्को अच्छसि ?, तेण भणियं--चिंतेमि, किं चिंतेसि ?, भणइ-असेत्थपत्ताणं किं विंटो

औत्पात्ति की बुद्धिः

॥५४५॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५४६॥

महल्लो उदाहु छिहा ?, किह ते चिंतियं ?, भणइ--दोवि समाणि, वीए जामे छालियालिंडियाओ, वातेणं, ततीए खाडइला जत्तीया पंडरगा तत्तिया कालगा, जत्तियं पुच्छं तत्तीयं सरीरंपि आयामेणं, चउत्थजामे सद्दाविओ वायं ण देति, तेण कंटियाए पच्छिन्नो उट्ठितो, भणति- किं जग्गसि सुयसि ?, भणति-जग्गामि, किं करेसि ?, चिंतेमि, किं चिन्तेसि ?, कतिहिं सि जातो ?, तो कतिहि ?, तेण भणियं--पंचहिं, केण केण ?, रण्णा वेसमणेणं चंडालेणं रयएणं विंछिएणं, तेण माया पुच्छिता, णिब्बंधे कहितं, सो पुच्छति--किह ते णायंति ?, सो भणति--येन यथान्यायेन राज्जं पालयसि तेण णज्जसि रायपुत्तोत्ति, वेसमणो दाणेणं, रोसेणं चंडालेणं, सव्वस्स हरणेणं रययो पुण, जेण ममं उच्छुंपसे तेण विंछितोत्ति, तुट्ठो राया, सव्वेसिं उवरिं ठवितो भोगा य से दिण्णा ॥

पणितए दोहिं पणियं बद्धं, एगो भणति- जो एताए लोमसियाए खाति तस्स तुमं किं देसित्ति ?, इयरो भणति- जो जिव्वति तेण जो णगरदारे मोदओ ण णीति सो दातव्वो, एगो जीतो, इतरो मग्गति, सो से रूवगं देति, इतरो णेच्छति, ताहे दोण्णि, जाहे ण तेहिं तूसति ताहे तेण जूयकारा ओलग्गिता, बुद्धी दिण्णा, ताहे पूवियावणाओ एगं मोदगं गहाय इंदखीले ठवेति, भणितो- णीहि मोदगा !, ण णीति, जीतो ॥ रुक्खे फलाणि, मक्कडा ण देंति, पाहाणेहिं हया, तेहिं फला खित्ता ।

खड्डए पसेणती राया, पुत्तो से सेणिओ, रायलक्खणसंपण्णो, तस्स किंचि ण देति-मा मारिज्जिहित्ति, सो अद्धिइए णिग्गतो, वेण्णातडं आगतो, वणियसालयाए ठितो, तस्स लाभो तप्पभावेणं, सो भत्तं देति, धूताए संपक्को, दिण्णा, रायाए लेहो विसज्जितो, सो आपुच्छति, सा भणति- तुब्भेहिं कहिं ?, सो भणति- अम्हे पंडरकुंडगा रायगिहे गोवाला पसिद्धा, गतो य, आवण्ण-

औत्पाति की बुद्धिः

॥५४६॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५४७॥

सत्ताए दोहलो देवलोगचुयस्स अभयं सुणेज्जामि, वाणितो दव्वं गहाय उवट्ठितो रण्णो, रण्णा गहियं, उग्घोसावियं, पुत्तो जातो, अभयोत्ति णामं कतं, पुच्छति- मम पिता कहिंति ?, ताए कहितं, भणति- वच्चामोत्ति, सत्थेण समं वच्चति, रायगिहस्स बहिया ठिता, णगरगवेसतो गतो, राया मंती मग्गति, सुक्ककूवे खुड्डगं पाडियं, जो गेण्हति हत्थेणं तडे ठितो तस्स राया वित्तिं देति, अभएण दिट्ठं, आहतं छाणेणं, सुक्के पाणियं मुक्कं, तडे संतएण गहियं, रण्णो समीवं णीतो, पुच्छति- तुमं को ?, भणति-तुम्ह-पुत्तोत्ति, किह वा किं वा ?, सव्वं पडिकहियं, तुट्ठो उच्छंगे कतो, माता पवेसिज्जंती मंडीति, तेण वारिया, अमच्चो जातो ।

पडे, दो जणा ण्हायंति, एगस्स दढो पडो, एगस्स जुण्णो, जुण्णइतो दढं गहाय पट्ठिओ, इतरो मग्गति, सो ण देति, ववहारो, महिलाओवि कंतावियाओ, दिण्णो जस्स जो,अण्णे भणंति- सीसाणि ओलिहिताणि, एगस्स उण्णपडओ बीयस्स सोत्तिओ ।

सरडो, सण्णं वोसिरंतस्स सरडा भंडंती, एगो तस्स अधिट्ठाणस्स हेट्ठा बिलं पविट्ठो, पुच्छिण छिक्को, घरं गतो, अद्धितीए दुब्बलो जातो, वेज्जो पुच्छितो भणति- जदि सतं देह, दिण्णं, तेण घडए सरडो छूढो लक्खाए विलेपित्ता, विरेयणं दिण्णं, वोसिरियं, सरडो कप्पेरे दिट्ठो, लट्ठीहूतो ॥ बितिओ सरडो, भिक्खुणा खुड्डओ पुच्छितो (भणति) एस सरडो किं सीसं चालेइ?, तेण भणितं- तुमं जोएति- किं भिक्खु भिक्खुणित्ति ॥

कागे, तच्चण्णिएण खुड्डओ पुच्छितो- अरहंताः सर्वज्ञाः ?, बाढं, तो किच्चिया इहं कागा?,सट्ठिं कागसहस्साइं इहयं विण्णातडे परिवसंति । जदि ऊणगा पवसिता अब्भाधिता तत्थ पाहुणगा ॥ १ ॥ बितिओ णिहिम्मि दिट्ठे महिलं परिक्खति- रहस्सं

औत्पाति की बुद्धिः

॥५४७॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५४८॥

घरेति णविति , सो भणति- ममं पंडरओ कागो अहिट्ठाणं पविट्ठो, ताए सुहिज्जिताणं कहितं जाव रण्णा सुयं, पुच्छितो, कहियं, रण्णा से सुक्कं मुक्कं, मंती य निउत्तो । ततिओ विट्ठविक्खरणे भागवतो खुड्डगं पुच्छति, खुड्डगो भणति- एस चिंतेति- एत्थ विण्हू अत्थि णत्थित्ति ॥

उच्चारे, धिज्जातियस्स भज्जा तरुणी, गामंतरं णिज्जमाणी धुत्तेण समं लग्गा, गामे ववहारो, विभत्ताणि पुच्छिताणि, आहारविरेयणं दिण्णं, तिल्लमोदगा, इयरो धाडिओ ।

गये, हत्थी महतिमहालओ जो तोलति तस्स सतसहस्सं देमि, णावाए तोलति, लंछित्ता णावाए उत्तारितूण पाहाणाणं भरिया, जाव से लेहा, पाहाणा तोलिया, एत्तियं तुलति, जितो ।

धतणो भंडो सव्वरहस्सितो, राया देवीय गुणे कहेति- णिरामयं, सो भणति- ण भवति, किह ?, जया पुप्फाणि केसवाते ढोएति, तहत्ति विण्णासियं, णाए हसियं, णिबंधे कहियं, णिव्विसओ, सुणति, उवाहणाण भारेण उवट्ठितो, उड्डाहभीताए रुद्धो।

गोलओ णक्कं पविट्ठो जतुमतो,सलागाए तावेत्ता कड्ढितो ।

खंभो तलागमज्झे, जो तडे संतओ बंधति तस्स सयसहस्सयं दिज्जति, तेमेव खीलगं बंधितूण पडिबंधितूण बद्धो, जितो ।

खुड्डए, पारिव्वाइया भणति- जो जं करेति तं मए कायव्वं कुसलकम्मं, खुड्डओ गतो भिक्खस्स, पडहओ वारितो, गओ राउलं, दिट्ठा, सा भणति- कतो गिले ?, तेण सागारियं दातियं, जिया, काइएण य पउमं लिहियं, सा न तरति, जिता ।

औत्पात्ति की बुद्धिः

॥५४८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५४९॥

मग्गेत्ति एगो भज्जं गहाय पवहणेण गामंतरं वच्चति, सा सरीरचिंताए ओतिण्णा, तीए रूवेण वाणमंतरी विलग्गा, इतरी रडति, ववहारो, दूरं हत्थो पसारितो, णातं।

इत्थित्ति मूलदेवो अप्पबितिज्जतो वच्चति, इतो य एगो पुरिसो समहिलो आगच्छति, दिट्ठो, तीए रूवे मुच्छितो, एगंते उव्वत्तिऊण अच्छति, तेण बितियएण भण्णति महिला-इत्तो मम महिला वितातुक्कामा एयं विसज्जिहित्ति, तेण विसज्जिया, सा तेण समं अच्छति, इतरीवि मूलदेवेण समं रमितूण आगता, णिग्गंतूण य तत्तो पडयं घेतूण कंडरियस्स धुत्ती भणति हसंती-पियं खु णे दारओ जातो।

पतित्ति, दोण्हं भातुगाणं एगा भज्जा, लोगे फुडं- दोण्हवि समा, रण्णा सुतं, परं विस्सयं गतो, अमच्चो भणति-कतो एवं होहित्ति?, अवस्सं विसेसो, तेणं लेहो दिण्णो जहा गामं गंतव्वं, एगो पुव्वेणं एगो अवरेण, भज्जाए अछीविओ, तीए जो पिओ सो अवरेणं पेसिओ, जो वेसो सो पुव्वं पेसितो, वेसस्स गच्छंतस्स आगच्छंतस्सवि निडाले सूरो, असद्दहंतेसु पुणोवि पट्ठवितूण समगं पुरिसा पेसिता, ते भणंति-ते दढं अपडुगा, एसो मंदसंघयणोत्ति भाणितुं तं चेव पवण्णा, एवं णायं।

पुत्ते जाए एगो वाणियओ भज्जाहिं समं अण्णं रज्जं गतो, तत्थ मतो,ताओ दोवि भणंति-मम पुत्तोत्ति,पुत्तणिमित्तं ववहारो, णेच्छति, अमच्चो भणति--दव्वं विरिंचितु दारगं दो भागे करेह करकचएणं, एगा भणति-एवं होतु, माता भणति--एतस्स पुत्तो, मा मारिज्जतु, तीसे विदिण्णो।

औत्पातिकी बुद्धिः

॥५४९॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५५०॥

मधुसित्थो काई कोलिगिणी उब्भामइला य, तेणेव विहाणेण दरिसितं, नाता उब्भामइलत्ति ।

सुद्दियाए पुरोहिते णिक्खेवए घेत्तूणं अण्णोसिं ण देति, अण्णदा दमएण ठवियं, पडियागतस्स ण देति, सो पिसायो जातो, अमच्चो वीधीए जाति, भणति--दावेह पुरोहिता ममयं सहस्सं, तस्स किवा जाता, रण्णो कहितं, रण्णा भणितं--देहि, ण गेण्हामित्ति, मग्गेति, अण्णदा रायाए समं जूतं रमति, णाममुद्दागहणं, रायाए अलक्खगं गहाय मणूसस्स हत्थे दिण्णा, अमुगं कालं साहसो णउलओ दमएण ठवितो तं देहि, इमं अभिण्णाणं, दिण्णो, आणितो, अण्णाणं णउलाणं मज्झे कतो, सो सद्दावितो, पच्चभिण्णातो, पुरोहितस्स जिब्भा छिन्ना ।

अंको तहेव एगेण णिक्खित्तं लंछेतूणं, इतरेण हेट्ठा गहिया, ओसिंचित्ता कूडरूवगाणं भरितो, पच्छा तहेव सीवितं, आगतस्स अल्लिवितो, सा मुद्दा उग्घाडिया जाव कूडगरूवगा, ववहारो, पुच्छितो केत्तिया रूवगा?, सहस्सं, गणिऊण भरिए ऊणगं जातं, तधा तडितेउं ण तीरति सव्वे तु, एवं णातं ।

णाणए तहेव णिक्खेवओ, पणा छूढा, आगतस्स दिण्णो,अण्णो णउलतो, पणे पुच्छा, राउले ववहारो,कालो को आसि?,अमुगो, अहुणत्तणगा पणा, से चिराणओ कालो, दंडिओ ।

भिक्खू तहेव णिक्खेवगं न देति, जूतकरा ओलग्गिया, तेहिं पुच्छिएणं सब्भावो कहितो, ते रत्तपडगवेसेणं गता सुवण्णस्स खोड्डियाओ गहाय, अम्हे वच्चामो, चेइयं वंदामो, इमं अच्छउ, सो य पुव्वभणितो,एतंमि अंतरे आगतेण मग्गितं तए, लेभे-

औत्पाति की बुद्धिः

॥५५०॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५५१॥

ल्लंताए दिण्णं, अण्णेवि भिक्खू एंतगा तो एगाए मंजूसाए चेव कज्जिहिंति णिग्गता।

चेडगणिधाणे, दो मित्ताणि, तेहिं णिधाणगं दिट्ठं, कल्ले सुनक्खत्ते लेहामोत्ति, एगेण रत्तिं उक्खणिऊण इंगाला छूढा, बिति-यदिवसे गता, इंगाले पेच्छंति, सो धुत्तो भणति- अहो अम्हं मंदपुण्णया, इंगाला जाता, तेण णातं, हिययं न दरिसेति, तस्स पडिमं करेति, दो मक्कडए गेण्हति, तस्स उवरिं भत्तं देति, ते छुहाइया तं पडिमं चडंति,, अण्णदा भोयणगं सज्जितं, दार-गा तस्सच्चया आणिता, संगोविता, ण देंति, भणंति-- मक्कडगा जाता, आगतो, तत्थ लेप्पगट्ठाणे आवेसावितो, मक्कडगा मुक्का, किलकिलंता तस्स उवरिं विलग्गा, णातं, दिण्णो भागो।

सिक्खा,अत्थि धणुव्वेओ एगो राजपुत्तो, जथा सेणिओ तथा हिंडंतो एगत्थ उ ईसरपुत्तए सिक्खवेति,दव्वं विढत्तं, तेसिं पिती, मिसगा चिंतेति- बहुतं दव्वं एतस्स दिण्णं, जइया जाहिति तातिया मारिज्जिहिति, तेण णातं, संचारितं णातगाणं- जहाहं रत्तिं छाणपिंडए णदीए छुभीहामि ते लएज्जह, तेण लोलगा वालिता, एसा अम्ह विधित्ति तिहिपव्वणीसु दारएहिं समं णदी-य छुभति, एवं णिव्वाहेतूण गट्ठो।

अत्थसत्थे एगेण पुत्तेण दो सवित्तीओ, ववहारो ण छिज्जइ, इतो य देवी गुव्विणी उज्जाणियं गता, ताओ उवट्ठिताओ, सा भणति- मम पुत्तो जो होहिति सो अत्थसत्थं सिक्खिहिति, एतस्स असोगस्स हेट्ठा णिविट्ठो ववहारं छिंदिहिति ताव दोवि अविसेसेणं खाह पिवहत्ति, जीसे ण पुत्तो सा चिंतेति- एत्तितो ताव कालो लद्धोत्ति पडिसुतं, णाता, ण एसा।

औत्पाति की बुद्धिः

॥५५१॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५५२॥

इच्छाए, एगाए भत्तारो मओ, वड्ढिपउत्तं तं ण उग्गमति, पतिमित्तो भणितो- उग्गमेहि, तेण भणितं-मज्झ तिभागं देहि, ताए भणितं- जं तुमं इच्छसि तं ममं देज्जासि, तेण उम्मग्गितं, सतं दिण्णं, सा णेच्छति, ववहारो, आणावितं, दो पुंजा कता, कतरं तुमं इच्छसि?, भणति- बहुं, ताए भणितो- एतं चेव ममं देहित्ति, दवावितो।

सतसहस्संति, एगो परिभट्ठतो, तस्स सतसाहस्सं खोरं,सो भणति- जो मम अपुव्वं सुणावेति तस्स एतं देमि,अण्णदा एगं णगरं गतो, तत्थ उग्घोसेति, सिद्धत्थपुत्तेण सुतं, भणति- मज्झ पितुं तुज्झ पिता धारेति अणूणगं सतसहस्सं। जदि सुतपुव्वं दिज्जतु अह ण सुतं खोरयं देहि ॥ १ ॥ जिओ। **उप्पत्तिया गता** ।

इदानीं वैनयिकी, विनयात् निष्पन्ना वैनयिकी,को विनयः?, गुरुशुश्रूषाविनयादिः,पच्छा सो गुरू तस्य बुद्धिं तस्मिन् शास्त्रे विनयति गमयति प्रापयतीत्यर्थः सा विनयिकी, सा य केवंविहा भवति ?, उच्यते—भरस्य निस्तरणसमर्था, भरो णाम अतिगुरुकं कज्जं, तस्या धारणी, त्रिवर्गो नाम धर्मार्थकामा, अहवा लोगो वेदो समयो, सूत्रं अर्थः तदुभयं, एतेसिं पेयालना, पेयालनं परिज्ञानं अभिगमनमित्यर्थः, उभयोलोगफलवती इमो परो वा, कोई इहलोइओ तीसे फलवतीओ, कोई परे, तत्थिहलोगो सक्कारा दव्वं देंति, परलोगे स्वर्गमोक्षौ च, कहं?, निमित्तं जाणति, अमुगत्थ विहरितव्वंति एवमादि परलोइयं, विनयात्समुत्थानं यस्याः सा भवति विनयसमुत्था, बुध अवगमे, सा य बुद्धी, कहं फलवती भवति ?, तत्थ उदाहरणाणि, न शक्यं दृष्टान्तिकोऽर्थो दृष्टान्तमन्तरेणोपपादयितुं तेन तीसे इमाणि उदाहरणाणि—

वैनयिकी बुद्धिः

॥५५२॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५५३॥

णिमित्ते अत्थ० ॥ ९-५८ ॥ ९४४ ॥ णिमित्ते, एगस्स सिद्धपुत्तस्स दो सीसगा णिमित्तं सिक्खंति,अण्णदा तणकट्ठस्स वच्चंति, तेहिं हत्थियपदा दिट्ठा, एगो भणति- हत्थिणियाए पादा, कहं ?, कायएण, सा हत्थिणी काणी, कहं ?, एगपासेण तणाइं खइताइं, तेण काइएण णातं जधा- इत्थी पुरिसो य विलग्गाणि, सोवि णातो, सो य जुव्वाणत्ति णातो, हत्थीणिं रुंभित्ता उट्ठिता, दारओ से भविस्सति जेण दक्खिणपादो गुरु, पोतरत्ता दसि रुक्खे लग्गा। णदीतीरे एगाए थेरीए पुत्तो पवसितओ, तस्स आगमणं पुच्छिया, तत्थ घडओ भिण्णो, तत्थ य एगो भणति- तज्जातेण य तज्जातं, तंण्णिभेण य तण्णिभं। तारूवेण य तारूवं, सरिसं सरिसेण णिद्दिसे ॥ १ ॥ मतओत्ति परिणामेति, बितिओ भणति-जाहि वुड्ढे ! सो घरं आगतेल्लओ, सा गता, दिट्ठो, तुट्ठा, तओ सा जुवलगं रूवए य गहाय आगता, सक्कारिओ, बितिओ भणति-मम सब्भावं ण कथेति, तेणं पुच्छियं, तेहिं जथाभूतं कहितं, एगो भणति-भूमिजो भूमिं चेव मिलितो, एवं सोवि दारतो, भणितं च-'तज्जाएण य तज्जातं०' सिलोगो।

अत्थसत्थे कप्पओ दधिकुंडगउच्छुकलावग एवमादि। लेहे जथा अट्ठारसलिविजाणओ। एवं गणिएवि। अण्णे भणंति वट्टेहिं रमंतेण अक्खराणि सिक्खावियाणि गणियाइ य। कूवे खायजाणएणं पमाणं भाणितं, जथा एदूरे पाणियंति, तेहिवि खतं, तो वोलीणं, तस्स कहियं, पासे आणहहत्ति भणिता,धव्वसगसद्देण जलमुट्ठाहियं। आसे, आसवाणियगा बारवतिं गया, सव्वे कुमारा थुल्ला वड्ढे य गेण्हंति, वासुदेवेण जो दुब्बलओ लक्खणजुत्तो सो गहितो। गद्दभे राया तरुणप्पितो, अण्णत्थ उद्धाइता सिणपल्हिते जारिसे, तिसाए पीडिया, थेरं पुच्छंति, घोसावितं, एगेण पियपुत्तेण आणितओ, तेण कहियं, थेरो भणति-मुयह गद्दभे, जत्थ गद्दभा उस्सिंघेंति जहिं लुठिंति य तत्थ पाणितं, खयं,पीता य। अण्णे भणंति-उस्सिंघणाए चेव जलासतं गता॥ लक्खणे पारसविसए

वैनयिकी बुद्धिः

॥५५३॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५५४॥

आसरक्खओ, धीताए तस्स समं संपत्ति, ताए भणितो- वीसत्थाणं घोलचम्मं पाहाणाणं भरेतूणं रुक्खाओ मुयाहि, तत्थ जो ण उत्तसति तं लएहि, पडहं च तालेहि, घुज्झावेह य खक्खरएणं जो ण उत्तसति तं लएहि, सो वेतणगकाले भणति--मम दो देहि, असुगं २ वा, तेण भणितं- सव्वे गिण्हाहि, किं ते एतेहिं ?, णेच्छति, भज्जाए कहणं, धीता से दिज्जतु, सा णेच्छति, सो तीसे वड्ढति, दारकं कहेति, लक्खणजुत्तेणं कुडुंबं परिवड्ढातित्ति ॥ एगस्स मातुलएणं धूया दिण्णा, कम्मं ण करेति, भज्जाए चोइतो दिवे दिवे अडवीओ रित्तओ एति, छड्डे मासे लद्धं कुलवो, सतसहस्सेणं सेट्ठिणा लइओ, अक्खयणिहित्ति॥ गंधम्मि, पाडलिपुत्ते णगरे पालित्तगा आयरिया अच्छंति,इतो य जोणिएहिं इमाणि विसज्जियाणि पाडलिपुत्तं-सुत्तं मोहितगं लड्डी समा मुद्दिओ समुग्गओत्ति, केणइ ण णाता, पालित्तयआयरिया सद्दाविता-तुब्भेहिं जाणह भगवंति?, बाढं जाणामि, सुत्तं उण्होदए छूढं,मयणं विरायं, दिट्ठाणि अग्गिमाणि, दंडओ पाणिए छूढो, मूलं गरुयं, समुग्गतो जतुणा घोलितो उण्होदए, कढितो उग्घाडितो य। तेणविय लाउयं राइल्लेऊण रयणाणि छूढाणि, तेण य सिव्विणीए सिव्वेऊण विसज्जितं, अभिदंता फेडह, ण सक्किति ॥ अगदे, परबलं णगरं रोहेतुं एतित्ति रायाए पाणियाणि विणासितव्वाणि, विसकरो पाडितो, पुंजा कता, वेज्जो जत्तमेत्तं गहाय आगतो, राया रुट्ठो, वेज्जो भणति- सतसहस्सवेधी, कहं ?, खीणाऊ हत्थी आणितो, पुच्छवालो उप्पाडिओ, तेणं चेव वालग्गेणं तत्थ विसं दिण्णं, विवण्णं करेंतं दीसति, एस सव्वो विसं, जोवि खाएति सोपि विसं, एवं सतसहस्सवेधी, अत्थि णिवारणविधी ?, बाढं तत्थेव अगदो दिण्णो पसमंतो जाति ॥ रहिय गणिया एकं चेव, पाडलिपुत्ते दो गणियाओ-कोसा उवकोसा य, कोसाए समं थूलभद्द-सामी अच्छितओ आसि, पच्छा पव्वइतो, ताहे वरिसारत्तो तत्थ गतो, सावियका जाया, अबंभस्स पच्चक्खाइ, पण्णत्थ रायाभि-

वैनयिकी बुद्धिः

॥५५४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५५५॥

योगेण, रधिएण राया आराहितो, दिण्णा, सा थूलभद्दसामिस्स अभिक्खणं २ गुणे गेण्हति, तं ण तथा उवचरति, सो ताए अप्पणो विण्णाणं दंसेतुकामो असोगवणियभूभीगतेणं अंबपिंडि च्छोडिता, कण्डपुक्खं अण्णोण्णं लाएंतेणं हत्थब्भासं आणेत्ता अङ्गुचंदेण छिण्णे गहिया, तं तथावि ण तूसति, भणति- किं सिक्खियस्स दुक्करं ?, सा भणति- पेच्छ ममंति, सिद्धत्थगरासिंमि णच्चिता, सूचीण अग्गयंमि य, कणियारपुप्फपोइयासु, सो आउट्टो, सा भणति- ण दुक्करं तोडिय अंबपिंडी, ण दुक्करं णच्चितु सिक्खियाए। तं दुक्करं तं च महाणुभागं,जं सो मुणी पमयवणं निविट्ठो॥१॥सीया साडी दीहं च तणं अवसव्वगं च कोंचस्स एक्कं चेव, रायपुत्ता आयरिएणं सिक्खाविया, दव्वलोभी य सो राया, तं मारेतुं इच्छति, ते दारगा चिंतेंति- एतेण अम्हं विज्जा दिण्णा, उवाएण णित्थारेमो, जाहे से जेमओ एति ताहे ण्हाणसाडियं मग्गति, ते सुक्खयं भणंति- अहो सीया साडी, बारमुहं तणं देंति, भणंति- अहो दीहं तणं, पुव्वं कोंचतेणं पदाहिणीकरेंति, तद्दिवसं अपदाहिणीकतो, परिगतं जधा विरत्ताणि, पंथो दीहो सीताणं तं मम कातुं मग्गातित्ति, णट्ठो ॥ णिव्वोदए, वणियभज्जा चिरपउत्थे पतिम्मि दासीए सब्भावं कहेति-पाहुणगं आणेहित्ति भणिता, ताए पाहुणओ आणियओ, आयसं च से कारियं, रत्तिं पवेसितो, तिसाइओ णिव्वोदगं दिण्णं, मओ, देउलियाए उज्झितो, अहुणा कयकम्मोत्ति ण्हाविया पुच्छिता- केण आउसं कारियं, तेण भणितं- दासीए, सा पहता, ताए कहियं, वाणिगिणी पुच्छिया, साहति सब्भावं, तयाविसो गोणसोत्ति, दिट्ठो य ॥ गोणे घोडगरुक्खपडणं च एक्कं चेव, एगो अकतपुण्णो जं कम्मं करेति तं विवज्जति, मित्तस्स जाइएहिं वतिल्लेहिं हलं वाहेति, विगाले आणिया, वाडे छूढा, सो य मित्तो से जेमिति, सो लज्जाए ण ढुक्को, तेणवि दिट्ठा, णिप्फिडिता वाडाओ, हरिया, गहितो देहित्ति, राउलं णिज्जति, पडिपहेणं घोडएणं पुरिसो एति, सो तेण

वैनयिकी बुद्धिः

॥५५५॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५५६॥

पाडितो आसेणं, सो पलाओ, तेण भणितो- आहणाहि, तेण मग्गे आहतो, मतो, तेणवि लतितो, विगालोत्ति णगरस्स बाहिरियाए वुत्था, तत्थ लोमंथिया सुत्ता, इमेवि तहिं चेव, सो चिंतेति-जावज्जीवं बंधणे करिस्सामि, वरं मे अप्पा उब्बद्धो, तेसु सुत्तेसु डण्डिखंडेण तम्मि वडरुक्खे अप्पाणं उक्कलंबेति, तं दुब्बलं, तुट्ठेतेण पडंतेण लोमंथितमहत्तरओ मारितो, तेहिवि गहितो, पभाते करणं णीतो, तेहिवि कहितं जथावत्तं, सो पुच्छितो भणति-आमंति, कुमारामच्चो भणेति- तुमं बलिंद देहि, एतस्स अच्छीणि उक्कमंतु, वितिओ भणितो- एतस्स आसं देतु, तुज्झ जीहा उक्कमतु, इतरे भणिया-एस हेट्ठा होतु तुब्भं एगो उब्बंधतु, णिपडिभोगोत्ति मंतणा कातुं मुक्को। वेणतिया गता।

कम्मया णामं कर्माज्जाता कर्मजा, सा 'उवयोगदिट्ठसारा' उवयुज्जत इत्युपयोगो, उवयोगेन यासां दृष्टो सारः सा भवति उपयोगदृष्टसारा, सारो नाम सद्भावः, निष्ठेत्यर्थः, कर्मप्रसंगो नाम अभिक्खयोगः, परिघोलणा णामं सहावपरिमग्गणं, तेण विसाला फलवती हवति बुद्धी, ताए फलं साहुक्कारो, साधु सोभणं कतंति। एगेणं चोरेणं खत्तं पउमागारेणं छिण्णं, सो जणघातं णिसामेति, करिसओ भणति- किं सिक्खितस्स दुक्करं ?, चोरेण सुतं, पुच्छितो, गंतूण छुरियं अंछितूण भणति-मारेमि, तेण पडयं पत्थरेत्ता वीहियाणं मुट्ठी भरितो, भणति- किं परंमुहा वडंतु ? आरंमुहा ?, पासिल्लया, तहेव कतं, तुट्ठो। कोलितो मुट्ठीणा गहाय तंतू जाणति-एत्तियाएहिं कण्डएहिं वुणिहितित्ति। डोए वड्ढति जाणति-एत्तियं माहिति। मोत्तियं आयणिंतो आगासे ओक्खिवित्ता तथा णिक्खिवति जथा कालवाले पडति। घते सगडे संतओ जदि रुच्चति कुण्डिताए णालए छुभति धारं। पवओ आगासे ताणि करणाणि करेति। तुंणाओ पुव्वं थुल्लाणि पच्छा जहा ण णज्जति सूयीए, तत्तियं गेण्हति जत्तिएण समप्पति, जथा

कर्मजा-बुद्धिः

॥५५६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५५७॥

साभिस्स तं दूसं धीयारेणं कारितं। बहुई अमवेतूण देवकुलरथाण पमाणं जाणति। घडगारो पमाणेण मट्टितं गेण्हति भाणस्सवि माणं अमवित्ता करेति। चित्तकारो पच्छा अमवेतूणं पमाणजुत्तं करेति, तत्तियं वा वण्णयं करेति जत्तिएणं समप्पति॥ कम्मया समत्ता॥

इदाणिं परिणामिता, परिणामनिष्पन्ना पारिणामिता, मनसो परिणामात् वयसश्च, सा य एवंविधा—

अणुमाणहेतु०। ९–६२॥ ९४८॥ अणुमाणहेतुदिट्ठंतेहिं साध्यमर्थं साधितीति अणुमाणहेतुदिट्ठंतसाधिगा, तत्थ अणुमाणं अविणाभावणिच्छियातो लिंगातो लिंगिणाणं, हेतू कारणं उवाओ, दिट्ठंतो साधम्मेण वैधम्मेण य, एतेहिं जो जेण साध्यो अत्थो तं तेण साधेति या सा तथा, वयविपाकेण य परिणामो जीए सा तथा, जथा जथा वयो विपच्चति तथा तथा विपरिणमितित्ति जं भणितं, फलं णिदंसेति 'उभयोलोगफलवती' पुव्वं वण्णितं, अहवा हियणिस्सेयसफलवती, कायहिता भवति, ण सुखा आवाते जहा कडुकरोहिणी चेवमायोज्जमिति॥ तंसि इमाणि णिदरिसणाइं—

अभए०॥ ९–६३॥ ९४९॥ खमए०॥ ९–६४॥ ९५०॥ चलणाहण०॥ ९–६५॥ ९५१॥ अभयस्स कहं पारिणामिया बुद्धी?, जदा पज्जोतो गतो, रायगिहं रोहितं, तदा अभएणं खंधावारणिवेसजाणएणं पुव्वं णिक्खंता कूडरूवगा धूमिया, कहियं च से जथा भेदिता खंधारा, दाविते सु नट्ठो, एस वा, अहवा जाहे गणियाहिं कवडेण णीयो बद्धो ताव तोसिओ चत्तारि वरा, चिंतियं चाणेणं- मोयावेमि अप्पाणं, वरो मग्गिओ- अग्गी अतीमित्ति मुक्को, ताहे भणति- अहं तुमं छलेण आणितो, अहं पुण दिवसतो पज्जोतो हरतित्ति कंदंतं नगरमज्झेण नेंमि, गतो रायगिहं, दासो उम्मत्तओ कतो, गणियाओ दारि-

परिणामिकी बुद्धिः ॥५५७॥

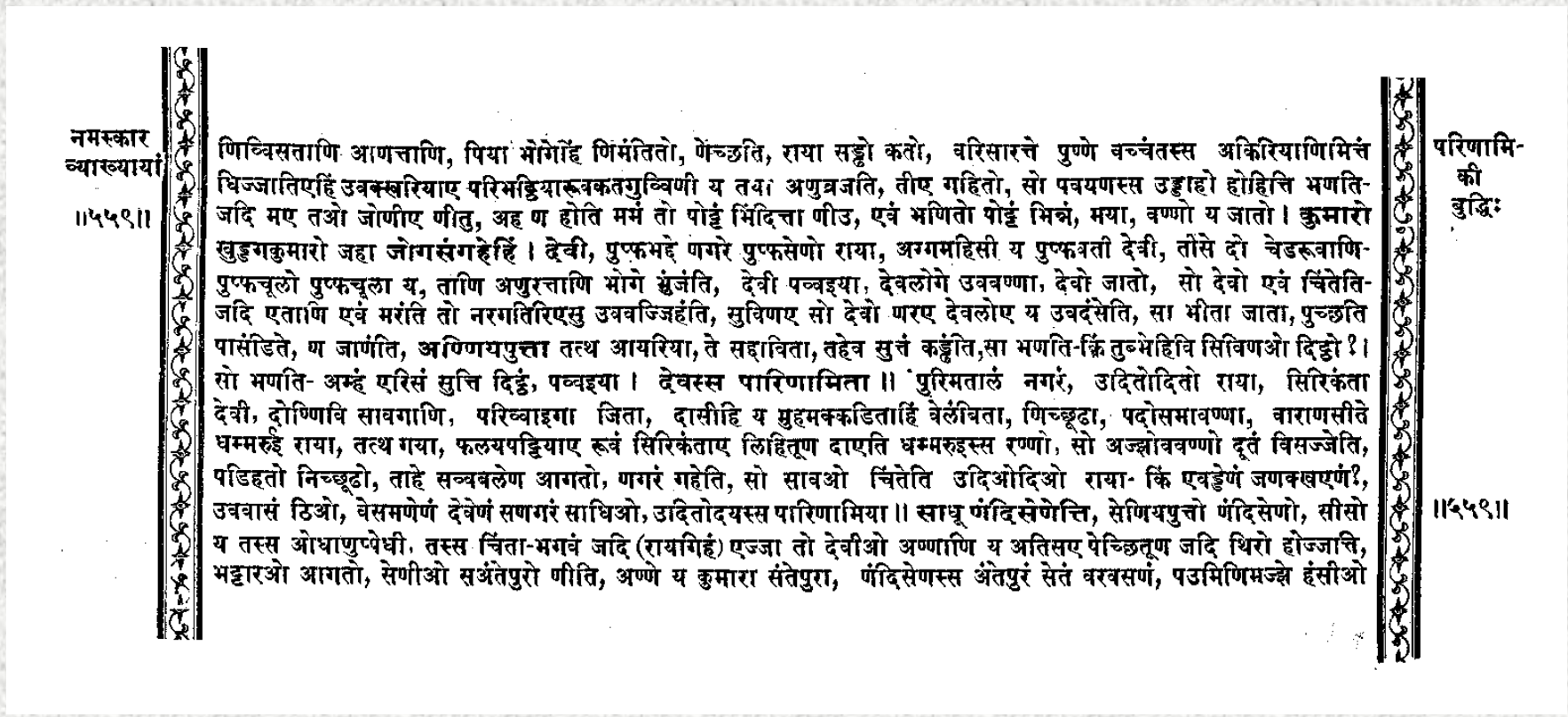
प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५५८॥

याओ गहियाओ, वाणियओ गओ, रडंतओ हितो, एवमादिगाओ बहुगाओ अभयम्मि पारिणामियाओ बुद्धीओ। सेट्ठित्ति कट्ठो णामं सेट्ठी एगत्थ णगरे वसति, तस्स णं वज्जा णामं भज्जा, तस्स णेच्चइल्लो देवसम्मो बंभणो, सेट्ठी दिसाजत्ताए गतो, भज्जा से तेण समं संपलग्गा, तस्स य घरे तिण्णि य पक्खी- सूयओ मयणसालिया कुक्कुडओ, सो ताणि अप्पाहेत्ता गतो, सो धिज्जातिओ रत्तिं अतीति, मयणसालिया भणति-को ताया ण वीहेति ?, सूयओ वारेति- जो अत्तियाए दयितो अम्हंपि पियल्लओ होति, सा मयणसलाइया अणथितासिता धिज्जातितं परिस्सवति, तीए मारिया, सूयओ ण मारिओ, तीसे पुत्तो लेहसालाए पढति, अण्णदा तस्स (घरं) साधुणो भिक्खस्स अतिगता, तं कुक्कुडगं पेच्छितूण एगो भणति-जो एयस्स सीसं खाइ सो राया होतित्ति, तं तेण धिज्जातिएणं किहवि अंतरिएणं सुतं, अविरतियं भणति-मारेहि जाव खामि, सा भणति- अण्णं आणिज्जतु मा पुत्तभंडं व संवड्ढितं, णिब्बंधे मारिओ जाव ण्हाउं गतो, ताव सो दारओ लेहसालाओ आगतो, तं च मंसं सिज्झति, सो रोवति, तस्स सीसं दिण्णं, इतरो आगतो, भाणए छूढं, सीसं मग्गति, भणति- चेडस्स दिण्णं, सो रुट्ठो भणति- मए एतस्स कज्जे मारावितो, पच्छा भणति- जति परं एतस्स दारगस्स सीसे खातेज्जा तो कतं होज्ज, णिबंधे ववसिता, दासीए सुतं, सा तं दारगं ततो चेव घेत्तूण पलाया, अण्णं णगरं गताणि, तत्थ राया मरति, आसेण परिक्खितो, सो तत्थ राया जातो। इयरोवि सेट्ठी आगतो जाव सडितपडितं पासति, सा पुच्छिता- ण कहेति, सुएण पंजरमुक्केण कहितो बंभणाइसंबंधो, सो तहेव चिंतेति, अहं एतीसे कतेण, एसा पुण एवंति पव्वतितो, इतराणिवि तं चेव णगरं आगताणि सव्वं गहाय, अण्णदा विहरंतो सो साधू तत्थ गतो, तीए पच्चभिण्णातो, भिक्खेण समं मासगा दिण्णा, पच्छा कूवितं, गहितो, रायाए सूलं नीतो, धातीए णातो, इतराणि

परिणामिकी बुद्धिः ॥५५८॥



नमस्कार व्याख्यायां ॥५५९॥

णिव्विसयाणि आणत्ताणि, पिया भोगेहिं णिमंतितो, णेच्छति, राया सड्ढो कतो, वरिसारत्ते पुण्णे वच्चंतस्स अकिरियाणिमित्तं धिज्जातिएहिं उवक्खरियाए परिभड्डियारूवकतगुव्विणी य तया अणुव्रजति, तीए गहितो, सो पवयणस्स उड्डाहो होहित्ति भणति- जदि मए तओ जोणीए णीतु, अह ण होति मम तो पोट्टं भिंदित्ता णीउ, एवं भणितो पोट्टं भिन्नं, मया, वण्णो य जातो। कुमारो खुड्डगकुमारो जहा जोगसंगहेहिं। देवी, पुप्फभद्दे णगरे पुप्फसेणो राया, अग्गमहिसी य पुप्फवती देवी, तीसे दो चेडरूवाणि- पुप्फचूलो पुप्फचूला य, ताणि अणुरत्ताणि भोगे भुंजंति, देवी पव्वइया, देवलोगे उववण्णा, देवो जातो, सो देवो एवं चिंतेति- जदि एताणि एवं मरंति तो नरगतिरिएसु उववज्जिहंति, सुविणए सो देवो णरए देवलोए य उवदंसेति, सा भीता जाता, पुच्छति पासंडिते, ण जाणंति, अण्णियपुत्ता तत्थ आयरिया, ते सद्दाविता, तहेव सुत्तं कड्ढंति, सा भणति-किं तुब्भेहिवि सिविणओ दिट्ठो?। सो भणति- अम्हं एरिसं सुत्ति दिट्ठं, पव्वइया। देवस्स पारिणामिता॥ पुरिमतालं नगरं, उदितोदितो राया, सिरिकंता देवी, दोण्णिवि सावगाणि, परिव्वाइगा जिता, दासीहि य मुहमक्कडिताहिं वेलंबिता, णिच्छूढा, पदोसमावण्णा, वाराणसीते धम्मरुइं राया, तत्थ गया, फलयपट्टियाए रूवं सिरिकंताए लिहित्तूण दाएति धम्मरुइस्स रण्णो, सो अज्झोववण्णो दूतं विसज्जेति, पडिहतो निच्छूढो, ताहे सव्वबलेण आगतो, णगरं गहेति, सो सावओ चिंतेति उदिओदिओ राया- किं एवड्डेणं जणक्खएणं?, उववासं ठिओ, वेसमणेणं देवेणं सणगरं साधिओ, उदितोदयस्स पारिणामिया॥ साधू णंदिसेणेत्ति, सेणियपुत्तो णंदिसेणो, सीसो य तस्स ओधाणुप्पेधी, तस्स चिंता-भगवं जदि (रायगिहं) एज्जा तो देवीओ अण्णाणि य अतिसए पेच्छितूण जदि थिरो होज्जत्ति, भट्टारओ आगतो, सेणीओ सअंतेपुरो णीति, अण्णे य कुमारा संतेपुरा, णंदिसेणस्स अंतेपुरं सेतं वरवसणं, पउमिणिमज्झे हंसीओ

परिणामिकी बुद्धिः ॥५५९॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५६०॥

वा ओमुक्कआभरणाओ सव्वासिं छायं हरंति, से ताओ दट्ठूणं चिंतेति-जदि भट्टारएणं ममायरिएण एरिसियाओ मुक्काओ किमंग पुण मज्झ मंदभग्गस्स असंताणं परिच्चइयव्वयाणंति णिव्वेगमावण्णो, आलोइय पडिक्कंतो थिरो जातो। धणदत्तो सुसुमाए परिणामेति- जदि एतं ण खामो तो अंतरा मरामोत्ति ॥ सावओ सावयवयंसियाए मुच्छितो, तीसे परिणामो जातो- मा अट्टवसट्टो मरिहिति, तो णरएसु वा उववज्जिहिति, संसारं हिंडिहिति, तीसे आभरणेहिं विणीतो, संवेगो, कहणं च ॥ **अमच्चोत्ति वरधणुगपिया** जतुघरे कते चिंतेति-एस कुमारो मारितो होहिति, कहिंपि रक्खिज्जतित्ति सुरंगाए णीणिओ, पलातो, अण्णे भणंति- एगो राया देवी से अतिपिया कालगता, सो य मुद्धो, सो तीए वियोगदुक्खितो न सरीरट्ठितिं करेति, मंतीहिं भणितो-देव ! एरिसी संसारट्ठितित्ति, किं करीतु ?, सो भणति- नाहं देवीए ठितिं अकरंतीए करेमि, मंतीहिं परिचिंतियं- ण अण्णो उवाओत्ति, पच्छा भणितं- देव ! सग्गं गता, तं तत्थ ठिताए चेव से सव्वं पेसिज्जतु, लद्धकयदेवी- ट्ठितिए पच्छा करेज्जसुत्ति, रण्णा पडिसुतं, मातिट्ठाणेण एगो पेसितो, रण्णो आगंतूण साहेति- कता सरीरट्ठिती देवीए, पच्छा राया करेति, एवं पतिदिणं करेंताण कालो वच्चति, देवीपेसणववदेसेण वत्थं कडिसुत्तगादि खज्जति, एगेण चिंतियं-अहंपि खतिं करेमि, पच्छा राया दिट्ठो, तेण भणितं- कुतो तुमंति ?, सो भणति- देव ! सग्गातो, रण्णा भणितं-देवी दिट्ठत्ति ?, सो भणति तीए चेव पेसितो कडिसुत्तयादिनिमित्तंति, दावितं से जहिच्छितं, किंपि न संपडति, रण्णा भणितं- कदा गमिस्सति ?, तेण भणितं- कल्लं, रण्णा भणियं- कल्लं ते संपाडिस्सं, मंती आदिट्ठो- सिग्घं संपाडेह, तेहिं चिंतियं- विणट्ठं कज्जं, को एत्थ उवाओऽत्थि ?, विसण्णा, एगेण भणियं- धीरा होह, अहं भलिस्सामि, तेणं तं संपाडेतूण राया भणितो-

परिणामि- की बुद्धिः

॥५६०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५६१॥

देव ! एस कह जाहिति ?, रण्णा भणितं- अण्णे कह जंतगा ?, तेण भणितं- अम्हे जं पट्ठवेंता तं जलणप्पवेसेणं, ण अण्णहा सग्गं गम्मतित्ति, रण्णा भणियं- तहेव पवेसेह, तहेव आढत्तो, सो विसण्णो, अण्णो य धुत्तो वायालो, रण्णो समक्खं चेडुं उवहसति, जथा देवि ! भणिज्जासि सिणेहवंतो ते राया, पुणोवि जं कज्जं तं संदिसेज्जासि, अण्णं च इमं च बहुविहं भणेज्जासि, तेण भणितं- देव ! णाहमेत्तिगमविगलं भणितुं जाणामि, एसो चेव लट्ठो पेसिज्जतु, रण्णा पडिसुतं, सो तहेव णिज्जितुं आढत्तो, इतरो मुक्को, इतरस्स माणुसाणि विसण्णाणि विलवंति- हा देव ! अम्हे किं करेज्जामो ?, तेण भणितं -नियतुंडं रक्खेज्जह, पच्छा मंतीहिं खरंटिय मुक्को, मडगं दट्ठुं, मंतिस्स परिणामिया ॥ खमए खमओ चेल्लएणं समं भिक्खं हिंडति, तेण मंडुक्कलिया मारिया, आलोयणवेलाए णो आलोएति, खुड्डएणं भणितो- आलोएहित्ति, सो रुट्ठो आहणामेति पधावितो, (थंभे अब्भिडिओ) एगत्थ विराहितसामण्णाणं सप्पाणं कुलं, तत्थ उववण्णो, दिट्ठीविसो सप्पो जातो, अपरोप्परेण जाणंति, रत्तिं चरंति मा जीवे मारेहामोत्ति, फासुगमाहारेन्ति । अण्णदा रण्णो पुत्तो अहिणा खाइतो, मतो य, राया सप्पाणं पदोसमावण्णो भणति- जो सप्पं मारेति तस्स दीणारं देमि, अण्णदा आहिंडुंडिएणं ताणं रेहाओ दिट्ठाओ, तं बिलं ओसधीहिं धम्मति, सीसाणि णिग्गच्छंताणं छिंदति, सो अभिमुहो ण णीति- मा कंचि मारेहामोत्ति जातिस्सरत्तणेण, तं णिग्गयं छिंदति, पच्छा तेण रण्णो उवणीताणि, से राया णागदेवताए बोधिज्जति, मा मारेहि, णागदिण्णो ते कुमारो होहित्ति, सो खमगसप्पो मतो समाणो तत्थ रायाणियाए पुत्तो जातो, उम्मुक्कबालभावो साधुं दट्ठुं जातिं संभरित्ता पच्छा पव्वइओ य, सो छुधालुओ अभिग्गहं गेण्हति- ण मए रुसितव्वंति, दोसीणस्स पहिंडति, तत्थ आयरियस्स गच्छे चत्तारि खमगा- मासिओ २३४ त्ति, रत्तिं देवता आगता, ते अण्णे खमए अति-

परिणामि-की बुद्धिः

॥५६१॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५६२॥

क्रमेत्ता तं वंदति, खमएण णिग्गच्छंती हत्थे गहिया, भणिया य- कडपूयणे ! एयं तिकालभोइं वंदसि, इमे महातवस्सी ण वंदसि?, सा भणति- अहं भावखमयं वंदामि, ण दव्वखमएत्ति, गता, पभाते दोसीणस्स गतो, णिमंतेति, एगेण पायं गहाय खलो छूढो, सो भणति- मिच्छामि दुक्कडं, जं मए खेलमल्लयं तुब्भ णोवणीयं, एवं सेसेहिवि, सो जिमेतुमारद्धो, तेहिं वारितो, णिव्वेगमावण्णो । पंचवि सिद्धा । विभासा ॥ अमच्चपुत्तो वरधणुओ, तस्स तेसु २ प्रयोजनेषु पारिणामिया, जथा माता मोताविता, सो पलाविओ, एयमादी सव्वं विभासियव्वं । अण्णे भणंति- एगो मंतिपुत्तो कप्पडियरायकुमारेण समं हिंडति, अण्णदा णेमित्तिओ घडितो, रत्तिं देसकुडिठियाणं सिवा रडति, कुमारेण णेमित्तिओ पुच्छितो-किं सा भणतित्ति ?, तेण भणितं- इमं भणति--इमंमि णदितित्थंमि पूराणीयं कलेवरं चिट्ठतित्ति, एयस्स कडीए सयं पायंकाणं, कुमार ! तुमं गेण्हाहि, तुज्झ पायंका मम य कलेवरंति, मुद्दियं पुण ण सक्कुणोमित्ति, कुमारस्स कोडुं जातं, ते य वंचिय एगागी गतो, तहेव जातं, पायंके घेत्तूण पच्चागतो, पुणो रडति, पुणोवि पुच्छितो, सो भणति- चप्फिलगाइयं कहति, एस भणति- कुमार ! तुज्झवि पायंका संजाता मज्झवि कलेवरंति, कुमारो तुसिणीओ जाओ, अमच्चपुत्तेण चिंतियं--पेच्छामु से सत्तं, किं किविणत्तणेण गतो आउ सोंडीरताए ?, जदि किविणत्तणेण कतं ण तस्स रज्जंति णियत्तामि, पच्चूसे भणति- वच्चह तुब्भे, मम पुण सूलं रुजति, ण सक्कुणोमि गंतुं, कुमारेण भणियं- ण जुत्तं तुमं मोत्तूण गंतुं, किं तु मा एगत्थ कोइ जाणिहित्ति तेण वच्चामो, पच्छा कुलपुत्तघरं णीतो, समप्पिओ, तं च सव्वं पेज्जामुल्लं दिण्णं, मंतिपुत्तस्स अवगतं जथा सोंडीरताएत्ति, भणितं चणेण- अत्थि मे विसेसो अतो गच्छामि, पच्छा गतो, कुमारेण रज्जं पत्तं, भोगावि से दिण्णा । एतस्स पारिणामिगी ।

परिणामिकी बुद्धिः

॥५६२॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५६३॥

चाणक्के गोल्लविसए चणियग्गामो, तत्थ चणिओ माहणो, सो य सावओ, तस्स घरे साधू ठिता, पुत्तो से जातो सह दाढाहिं, तेण साधूण पाएसु पाडिओ, तेहिं भणितं-राया होहितित्ति, तेण चिंतियं-मा दोग्गतिं जाइस्सइत्ति दंता घट्टा, पुणोवि आयरियाणं कहितं, तेहिं भणितं-किं कज्जतु?, एत्ताहेवि बिंबंतरितो भविस्सतित्ति, उम्मुक्कबालभावेण चोद्दस विज्जाठाणाणि आगमियाणि, सोवि सावओ संतुट्ठो, एगाओ भद्दमाहणाओ आणिया भज्जा से, अण्णदा कम्मि कोतुए भज्जा से मातिघरं गता, केति भणंति-भातिविवाहे गता, तीसे य भइणी अण्णेसिं खद्धादाणियाणं दिण्णेल्लियाओ, ता अलंकितभूसिताओ आगताओ, सव्वो परिजणो ताहिं समं लगति, सा एगंते अच्छति, तीसे अद्धिती जाता, घरं आगता, अद्धितिलद्धा अच्छति, णिव्वंधे सिट्ठं, तेण चिंतियं-णंदो पाडलिपुत्ते देति तत्थ वच्चामि, गतो, कत्तियपुण्णिमाए पुव्वण्णत्थे आसणे पढमे णिविट्ठो, तं च तस्स साल्लियातस्स राउलस्स सता ठविज्जति, सिद्धपुत्तो य णंदेण समं तत्थ आगतो भणति-एस बंभणो णंदवंसस्स छायं अक्कमिऊण ठितो, दासीए भणितो-भगवं ! बितिए आसणे णिवेसाहित्ति, अस्सवति बितिए आसणे कुंडियं ठवेति, एवं ततिए दंडगं, चउत्थे मणेत्तियं, पंचमे जण्णोवइयं, धिट्ठोत्ति निच्छूढो, पादो पढमो उक्खित्तो, भणति य-कोशेन भृत्यैश्च निबद्धमूलं, पुत्रैश्च मित्रैश्च विवृद्धशाखम् । उत्पाट्य नंदं परिवर्तयामि, हठाद् द्रुमं वायुरिवोग्रवेगः ॥ १ ॥ णिग्गतो, पुरिसं मग्गति, सुतं च णेणं बिंबंतरितो राया होहामित्ति, नंदस्स मोरपोसगा, तेसिं गामं गतो परिव्वायलिंगेणं, तेसिं महत्तरस्स धीताए चंदपीयने डोहलो जातो, सो समुदाणेंतो गतो, ताणि तं पुच्छंति, जदि ममं दारगं देह तो णं पाएमि चंदं, पडिसुणेंति, पडमंडवो कतो, तद्दिवसं पुण्णिमा, मज्झे छिदं, मज्झण्हं गते चंदे सव्वरसाल्लूहिं दव्वेहिं संजोएत्ता आसण्णे थाले भरितं कतं, सद्दाविता, पेक्खति पियति य, उवरि पुरिसो उच्छाडेति, अव-

परिणामिकी बुद्धिः

॥५६३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५६४॥

णीते पुत्तो जातो, संवड्ढति, इमोऽवि धातुविलागे मग्गति, सो य दारएहिं समं रमति, रायणीती विभासा, चाणक्को य पडिएइ, पेच्छति, तेण विमग्गितो, अम्हवि दिज्जतु, भणति--गावीओ लहेहि, मा मारेज्ज केति, भणति--वीरभोज्जा पुहवी, णातं जथा विण्णाणं से अत्थि, तो कस्सति दारएहिं कहिंचि परिव्वायगपुत्तो एस, अहं परिव्वाओ, जामु जा ते रायाणं करेमि, चलिया, लोगो मिलितो, पाडलिपुत्तं रोहितं, णंदेण भग्गो परिव्वायगो, आसेहिं पुट्ठिउं लग्गो, चंदउत्तो य पउमसरे णिबुड्डो, इमो उवस्सूयति, सण्णाए भणति--बोलियत्ति, उत्तिण्णा णासंति, अग्गे भणंति--चंदउत्तं पउमिणीसंडे छुभित्ता रथओ जातो, पच्छा एगेण जव्वकिसोरगगतेण आसवरेण पुच्छितो भणति-एस पउमसरे पविट्ठो, ततो तेण दिट्ठो, ततो घोडगो चाणक्कस्स अल्लिविओ, तत्थेव खग्गं मुक्कं, जले पवेसगट्ठाए कंचुयं मुयति ताव खग्गेण दुहाकतो, चंदगुत्तो वाहित्ता चडावितो, पलाया, पुच्छितो-तंवेलं किं तुमे चिंतितंति ?, भणति--धुवं एतं चेव सोभणं, अज्जो चेव जाणत्तित्ति, णातो जोगो, णएव विपरिणमतित्ति, पच्छा छुहाइओ चाणक्को तं ठवेत्ता अतिगतो, बीभेति--मा एत्थं णज्जेज्जामोत्ति, माहणस्स वहिं णिग्गयस्स पोट्टं फालिउं, दधिकूरं गहाय गतो, जिमितो, अण्णत्थ गामे रत्तिं समुदाणंति, थेरिय पुत्तमंडागं विलेवितं देति उण्हं, एक्केण मज्झे हत्थो छूढो, दड्ढो रोवति, ताए य भण्णति-चाणक्कमंगलोसि, पुच्छियं, भणति--पासाणि पढमं घेप्पंति, गता हिमवंतकूडं, पव्वइओ राया, तेण समं मित्तया जाता, भणति-सव्वं समेण विभयामो रज्जं, ओतेन्तागं एगत्थ णगरं ण पडति, पविट्ठो तिदंडी, वत्थूणि जोएति, इंदकुमारियाओ, तासिं तणएण ण पडति, माताए णीणाविताओ, पडितं णगरं, पाडलिपुत्तं रोहितं, णंदो धम्मदुवारं मग्गति, एगेण रहेण जं तरसि तं णीणेहि, दो मज्जातो एगा कण्णा दव्वं च णीणेति, कण्णा चंदउत्तं पलोएति, भणिता जाहित्ति, ताए विलग्गंतीए चंदगुत्तस्स रहे णव अरगा

परिणामि-की बुद्धिः

॥५६४॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५६५॥

भग्गा, तिदंडी भणति--मा वारेहि णव पुरिसजुगाणि तुज्झं वंसो होहितित्ति, अतिगता, दो भागा कता। एगा कन्नगा विसभाविया, तत्थ पव्वतगस्स इच्छा, सा तस्स दिण्णा, अग्गिपरियंचणे विसपरिगतो मरितुमारद्धो, भणति--वयंसग ! मरिज्जति, चंदगुत्तो रुं-भामित्ति ववसितो, चाणक्केण भिगुडी कता, णियत्तो, दो रज्जाणि तस्स जाताणि। णंदमणूसा य चोरिगाए जीवंति, सो चोरग्गाहं मग्गति, तिदंडी बाहिरियाए णलदामं मुइंगमारगं दट्ठुं आगतो, रण्णा सद्दावितो, दिण्णं आरक्खं, वीसत्था कता, भत्तदाणे सकुडुंबा मारिया। आणाए-वंसिहि अम्हगा परिक्खित्ता, विपरीते कते रुट्ठो, पलीवितो सव्वगामो, तेहिं य गामेल्लतेहिं तस्स कप्पडियत्तणे भत्तं ण दिण्णंति काउं।

कोसनिमित्तं परिणामिता बुद्धी, जूतं रमति कूडपासएहिं, सोवण्णं थालं दीणारभरितं, जो जिणति तस्स, अहं जिणामि एक्को दायव्वो, अतिचिरंति अण्णं उवायं चिंतेति, नागराणं भत्तं देति, मज्जपाणं च दिण्णं, मत्तेसु पणच्चितो भणति गायंतो-दो मज्झ धातुरत्ताओ कंचणकुंडिया तिदंडं च, राया मे वसवत्ती, एत्थवि ता मे होलं वाएहि ॥१॥ अण्णो असहमाणो भणति-गयपोयगस्स (भद्दस्स मन्थरगइए उ) जोयणसहस्सं। पदे पदे सतसहस्सा एत्थवि ता मे होलं वाएहि ॥१॥ अण्णो असहमाणो भणति-तिलआढगस्स वुत्तस्स णिप्फण्णस्स बहुसइतस्स। तिले तिले सतसहस्सं एत्थवि ता मे होलं वाएहि ॥ १ ॥ अण्णो भण्णति-णवपाउसंमि पुण्णाए गिरिनइयाए य सिग्घवेगाए। एगाहमहितमेत्तेणं णवणीतेण पालिं बंधामि ॥ १ ॥ जच्चाण वरकिसोराणं तद्दिवसं तु जायमेत्ताणं। केसेहिं णभं छाएमि एत्थवि ता मे होलं वाएहि ॥ १ ॥ दो मज्झ अत्थि रतणाणि सालिपसूई य गद्दभिया य। छिण्णा छिण्णावि रूहंति एत्थवि ता मे होलं वाएहि ॥ १ ॥ सेतसुकिल्लो णिच्चसुगंधो, मज्ज अणुव्वय णत्थि पवासो। णिरिणो य दुपंचसतो य,

परिणामि-की बुद्धिः

॥५६५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५६६॥

एत्थवि ता मे होलं वाएहि ॥१॥ एवं णाऊणं रयणाइं मग्गिऊणं गोट्ठागाराणि सालीणं भरियाणि रयणाइं गद्दभियादीणि पुच्छितो छिण्णाणि २ जायंति, आसा एगदिवसजाता मग्गिता, एगदिवसियं णवणीतं मग्गितं। **एस परिणामिता चाणक्कस्स बुद्धी** ॥

थूलभद्दस्स सामिस्स परिणामिता, पितुंमि मरिते कुमारो भण्णति-अमच्चो होहिति, सो असोगवणियाए चिंतेति-केरिसा भोगा वाउलाणंति?, ताहे पव्वइतो, राया भणति-पेच्छह, मा कवडेणं गणियाघरं जाएज्जा, णिंतस्स सुणगमडगो वावण्णो, णासं न विकूणेति, पडिलेहेत्ता रण्णा भणितं-विरत्तभोगोत्ति, सिरिओ ठाविओ।

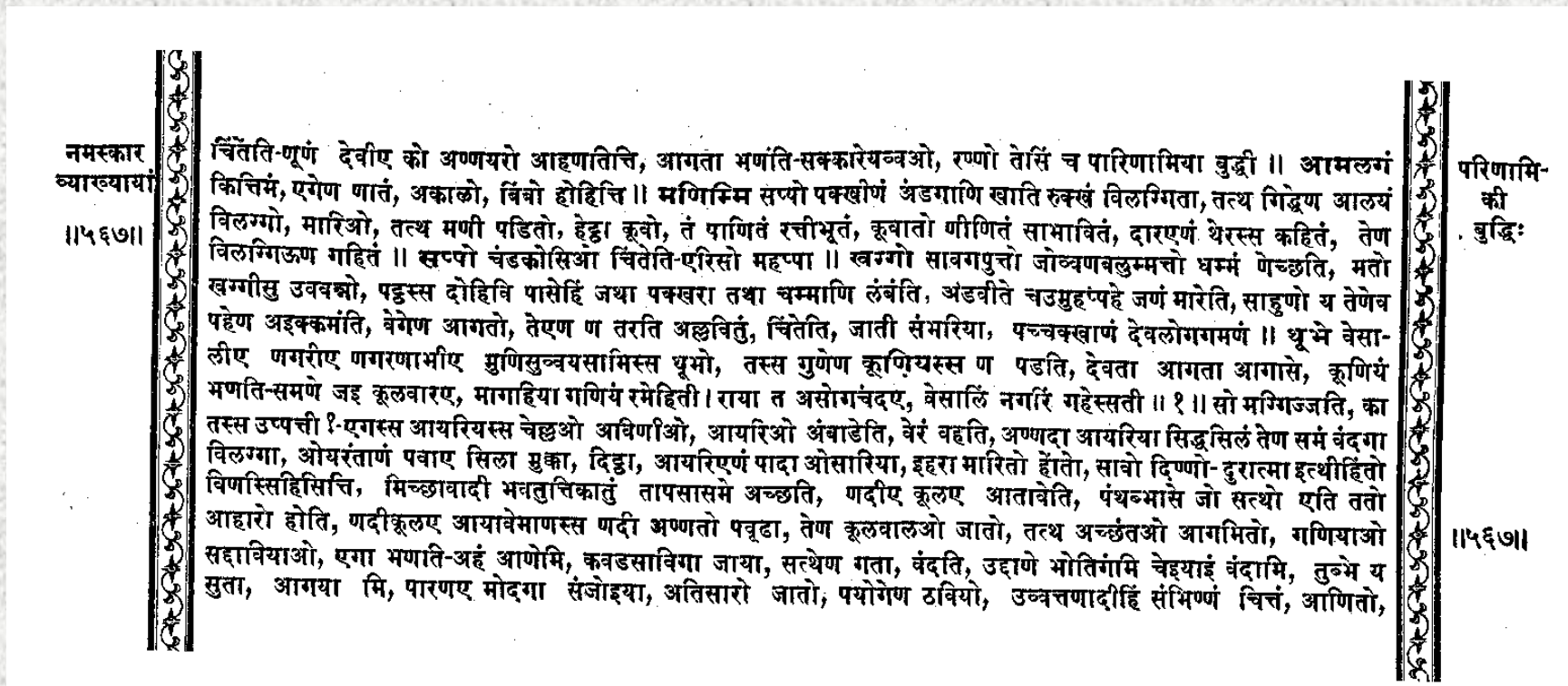
णासिक्कणगरं, णंदो वाणियओ, सुंदरी से भज्जा, सुंदरीणंदो से नामं जातं, तस्स माता पुव्वपव्वइतो, सो सुणेति-जथा तीए अज्झोववन्नो, पाहुणओ आगतो, पडिलाभितो, भाणं तेण गाहितं, एहि एत्थ विसज्जेहितित्ति उज्जाणे णीतो, सो भोगगिद्धो णगरं जाहितित्ति अधिगतरेणं उवप्पलोभेमि, सो य वेउव्वियलद्धी, मक्कडिं दरिसेत्ता पुच्छति-का सुंदरित्ति?, सुंदरी, पच्छा विज्जाघरीए, तुल्ला, पच्छा देवीए, देवी अतिसुंदरत्ति, पुच्छितो भणति-कहं एसा लब्भतित्ति?, धम्मेणत्ति पव्वइतो। **साधुस्स पारिणामिका।**

वइरसामिस्स परिणामिया, माता णाणुवत्तिया, मा संघो अवमाणिहितित्ति, पुणो देवेहिं उज्जेणीए वेउव्वियलद्धी दिन्ना, पाडलिपुत्ते मा परिभविहित्ति वेउव्वियं कयं, पुरियाए पवयणओभावणा मा होहितित्ति सव्वं कहियव्वं ॥

चलणाहणणे, राया तरुणेहिं वुग्गाहिज्जति, जथा थेरा कुमारा य अवणिज्जंतुत्ति, सो तेसिं मतिपरिक्खणणिमित्तं भणति-जो रायं सीसे पाएण आहणति तस्स को दंडो ?, तरुणा भणंति-तिलतिलं छिंदियव्वओ, थेरा पुच्छिया, चिंतेमोत्ति ओसरिया,

परिणामिकी बुद्धिः

॥५६६॥



नमस्कार व्याख्यायां ॥५६७॥

चिंतेति-णूणं देवीए को अण्णयरो आहणातित्ति, आगता भणंति-सक्कारेयव्वओ, रण्णो तेसिं च पारिणामिया बुद्धी ॥ आमलगं किच्चिमं, एगेण णातं, अकालो, बिंबो होहित्ति ॥ मणिम्मि सप्पो पक्खीणं अंडगाणि खाति रुक्खं विलग्गिता, तत्थ गिद्धेण आलयं विलग्गो, मारिओ, तत्थ मणी पडितो, हेट्ठा कूवो, तं पाणितं रत्तीभूतं, कूवातो णीणितं साभावितं, दारएणं थेरस्स कहितं, तेण विलग्गिऊण गहितं ॥ सप्पो चंडकोसिओ चिंतेति-एरिसो महप्पा ॥ खग्गो सावगपुत्तो जोव्वणबलुम्मत्तो धम्मं णेच्छति, मतो खग्गीसु उववन्नो, पट्ठस्स दोहिवि पासेहिं जथा पक्खरा तथा चम्माणि लंबंति, अंडवीते चउमुहप्पहे जणं मारेति, साहुणो य तेणेव पहेण अइक्कमंति, वेगेण आगतो, तेएण ण तरति अल्लवितुं, चिंतेति, जाती संभरिया, पच्चक्खाणं देवलोगगमणं ॥ थूभे वेसालीए णगरीए णगरणाभीए मुणिसुव्वयसामिस्स थूभो, तस्स गुणेण कूणियस्स ण पडति, देवता आगता आगासे, कूणियं भणति-समणे जइ कूलवारए, मागाहिया गणियं रमेहिती। राया त असोगचंदए, वेसालिं नगरिं गहेस्सती ॥ १ ॥ सो मग्गिज्जति, का तस्स उप्पत्ती ?-एगस्स आयरियस्स चेल्लओ अविणीओ, आयरिओ अंबाडेति, वेरं वहति, अण्णदा आयरिया सिद्धसिलं तेण समं वंदगा विलग्गा, ओयरंताणं पवाए सिला मुक्का, दिट्ठा, आयरिएणं पादा ओसारिया, इहरा मारितो होंतो, सावो दिण्णो- दुरात्मा इत्थीहिंतो विणस्सिहिसित्ति, मिच्छावादी भवतुत्तिकातुं तापससमे अच्छति, णदीए कूलए आतावेति, पंथब्भासे जो सत्थो एति ततो आहारो होति, णदीकूलए आयावेमाणस्स णदी अण्णतो पवूढा, तेण कूलवालओ जातो, तत्थ अच्छंतओ आगमितो, गणियाओ सद्दावियाओ, एगा भणति-अहं आणेमि, कवडसाविगा जाया, सत्थेण गता, वंदति, उद्दाणे भोतिगंमि चेइयाइं वंदामि, तुब्भे य सुता, आगया मि, पारणए मोदगा संजोइया, अतिसारो जातो, पयोगेण ठवियो, उव्वत्तणादीहिं संभिण्णं चित्तं, आणितो,

परिणामि-की बुद्धिः ॥५६७॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५६८॥

भणितो-रण्णो वयणं करेहि, किं ?, जथा वेसाली घेप्पतु, धूभो णीणावितो, गहिता । इंदमातुगाओ चाणक्केण पुव्वभणियाओ । एसा पारिणामिया । **अभिप्रायसिद्धाः परिसमाप्ताः** ॥

इदाणिं **तवसिद्धो**, जो य तवेण ण किलम्मति सो तवसिद्धो, जहा एगो दढप्पहारी चोरसेणावती सेणाए समं गामं हंतुं गतो, तत्थ एगो दरिद्दो, तेण पुत्तभंडाणं पायसं मग्गंताणं दुद्धं जाएत्ता पायसो सिद्धो, सो य ण्हातुं गतो, चोरा य तत्थ पडिया, एगेण तत्थ सो पायसो दिट्ठो, छुधितत्ति तं गहाय पधावितो, ताणि चेडरूवाणि रोवंताणि णिग्गताणि, पायसो हितोत्ति चोरेण, मारेमित्ति पहाविओ, महिला अवतालेतुं अच्छति तथावि जाति, सो चोरसेणावई गाममज्झे अच्छति, तेण गंतूण महासंगामो कओ, सेणावइणा चिंतियं-एतेण मम पुरतो चोरा परिभविज्जंतीत्ति सह महिलाए असिणा छिण्णो, गब्भोवि दो भागे कतो फुरुफुरेति, तस्स किवा जाता, मते अधम्मो कतोत्ति, ताहे पव्वइतो, तत्थेव विहरति, हीलिज्जति हम्मति घोराकारं च तवकिलेसं केरति, सिद्धो ॥ **कम्मक्खयसिद्धो** जो अट्ठण्हं कम्मपगडीणं खएण सिद्धो, तत्थ गाथा—

दीहकालरयं जं तु० ॥ ९। ६७ ॥ ९५३ ॥ एत्थ दीहकालं- अतीतकालितं, रजं वट्टमाणकालियं, कम्मं आत्मना आलिंगितं सव्वायपदेसेहिं पुट्ठंति भणितं, न केवलं सेसितं, तथा अहवा सितं 'सित वर्णबंधनयोः' अट्ठहा बद्धं-अट्ठहा परिणामितं णियदुक्खं, तुशब्दान्निधत्तनिकाचितादिवि घेप्पंति, तं तथाभूतं कम्मं धंता, धंता णाम झाणाणलेण दहित्ता, अकम्मीकातूणेत्यर्थः, इंति- एवं सिद्धस्स सतो योग्यतामंगीकृत्य सिद्धत्तमुवजायती, निप्पन्नार्थत्वं संपज्जते ॥ कहं पुण अट्ठविहं कंमं खवेंति,

तपः सिद्धः कर्मक्षय-सिद्धश्च

॥५६८॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५६९॥

भण्णति- जदा केवलं णाणं उप्पाडेंति तदा चत्तारि घातिकंमे खवेंति, तं च जथा खवगसेढीए तत एवं पोढाप्रकृलप्तद्रव्यगणं यथास्वं द्वितयपर्यायकलापविभूतिवशीकृतं प्रतिस्वं शेषविधिना लोकालोकं प्रकाश्य भगवंतोऽचिन्त्यभूतिविशेषाः जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण देशोनां पूर्वकोटीं केवलिपर्यायमनुभूय समवाप्नुवंति सिद्धिमजागरामिति । अथ सिध्यतां को विधिरिति प्रश्ने सिध्यद्विधिप्रक्रियादर्शनार्थं पश्चिमस्कंधनिरूपणा क्रियते, अथ किमिदं पश्चिमस्कंध इति प्रश्ने व्याख्यायते-औदारिवैक्रियाहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि स्कन्ध इत्याचक्ष्महे, पश्चिमशरीरं पश्चिमभव इति यावदुक्तं स्यात् तावदिदं पश्चिमस्कन्ध इति, कथम् ?, इह यस्मादयमनादौ संसारे परिभ्रमन् स्कंधान्तराणि भूयांसि गृह्णाति मुंचति च, तस्माद्यमवाप्य स्कन्धमाविर्भूतासाधारणज्ञानदर्शनचारित्रबलः भूयः स्कन्धान्तरमन्यदात्मा नोपादत्ते स पश्चिमस्कन्ध इति शब्द्यते, स्वोपात्तमनुष्यायुषोऽन्तः प्रक्षयवशाद् शुक्लस्यान्तर्मुहूर्तशेषे सिध्यत्पर्यायाभिमुखा अवश्यकरणं कुर्वंतीति । कथमिदमवश्यकरणमिति प्रश्ने प्रदर्श्यते, अन्वर्थत्वादवश्यकरणसंज्ञायाः, भास्करवत्, अवश्यकरणीयत्वादवश्यकरणं, कथमियमन्यर्थेति दर्श्यते, अर्थमनुगता या संज्ञा साऽन्वर्था, अर्थमंगीकृत्य प्रवर्तत इत्यर्थः, कथम् ?, इह यथा भास्करसंज्ञा अन्वर्था, कथमन्वर्था ?, भासं करोतीति भास्कर इति यो भासनार्थः तमंगीकृत्य प्रवर्तत इत्यन्वर्था, तथाऽवश्यकरणमिति इयं संज्ञा अन्वर्था, कथमिति चेत्, ब्रूमहे, अवश्यं क्रियत इत्यवश्यकरणं इति योऽवश्यकरणार्थोऽवश्यकर्तव्यता तमंगीकृत्य प्रवर्तते यस्मात् तस्मात्सर्वकेवलिभिः सिध्यद्भिरवश्यं क्रियमाणत्वादवश्यकरणमित्यन्वर्थसंज्ञासिद्धिः, अथवा अवश्यंभाव आवश्यकं 'द्वंद्वमनोज्ञादिभ्यश्चे'ति मनोज्ञादेरधिकृतत्वात् वुञि सत्यावश्यकसिद्धिः, आवश्यकं करणं आवश्यककरणं, कुतः?, लोके दृष्टत्वात् मल्लस्य कक्षाबन्धकरणवत्, यथा मल्लो युयुत्सुर्नाबद्ध्वा साटकं युध्यते, स

कर्मक्षय-सिद्धः

॥५६९॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५७०॥

हि प्रथममेव साटकेन कक्षो बध्वा अतः परं कृतावश्यककक्षाबन्धकरणः योद्धुमारभते, तथाऽन्तर्मुहूर्तायुःशेषेण केवलिना सिध्यता प्रथममेवेदं करणं अवश्यं कर्तव्यमित्यावश्यककरणमिति। केचिदावर्जितकरणमिति वर्णयंति, तेषामप्यावर्जितशब्दस्याभिमुखपर्यायवाचित्वात् आवर्जितकरणसिद्धिः, कथम्?, आवर्जितमनुष्यवत्, यथा लोके दृष्टमेतद् आवर्जितः मनुष्यः,अभिमुखः कृत इति, तथा च सिध्यतः सिध्यत्वपर्यायपरिणामाभिमुखीकरणं यत्तदावर्जितकरणं, येन कारणेन परिणत आत्मा नियमात् सिध्यत्पर्यायपरिणामाभिमुखो भवतीत्यर्थः, सर्वे च भगवंतः सिध्यन्तः केवलिनस्तीर्थकराश्च नियमादावश्यककरणं कुर्वन्ति, समुद्घातं तु केचित्कुर्वन्ति केचिन्नेति ॥ तत आवश्यककरणे कृते ये केवलिनः समुद्घातं कुर्वन्ति तत्प्रक्रियाऽऽविष्करणार्थमिदं प्रयते- येऽन्तर्मुहूर्तमादिकृत्वोत्कर्षेण आ मासेभ्यः षड्भ्यः आयुषोऽवशिष्टेभ्यः अभ्यन्तर आविर्भूतकेवलज्ञानपर्यायाः ते नियमात्समुद्घातं कुर्वन्ति, ये तु षण्मासेभ्य उपरिष्टादाविर्भूतकेवलज्ञानाः शेषास्ते समुद्घातकाद् बाह्याः, ते समुद्घातं न कुर्वन्तीत्यर्थः, शेषाः समुद्घातं प्रति भाज्याः, कस्माद्?, यस्मात् षाण्मासिकावशिष्टे आयुषि आविर्भूतकेवलज्ञानपर्यायेभ्यः सकाशात् षड्भ्यो मासेभ्यः ये उपरि समयोत्तरवृद्ध्याऽवशिष्टे आयुषि शेषे आविर्भूतज्ञानाः केवलिनः ते शेषाः समुद्घातं प्रति भाज्याः, केचित्समुद्घातं कुर्वन्ति केचिन्नेति, अतः केचित्समुद्घातं कृत्वा केचिदकृत्वैव समवाप्नुवन्ति सिद्धिं, अथवा येषां बहु संवेद्यमस्ति आयुश्चाल्पमवतिष्ठते ते नियमात्समुद्घातं कुर्वंति, नेतर इति ॥ अथ ये समुद्घातं कुर्वन्ति तेषां को विधिरिति प्रश्ने तदाविष्करणार्थमाचक्ष्महे-ते दंडकादिक्रमेण कुर्वन्ति, तत्र प्रथमसमये औदारिककाययोगस्थाः दंडकं कुर्वन्ति, अथ दंडक इति कोऽर्थः?, दंडक इव दंडकः, क उपमार्थः ?, यथा मूलमध्याग्रे ऊर्ध्वाधः समप्रदेशः परिवृत्तपर्यायः स दंडकः, तथा समुद्घातकरणवशान्निर्गतानामात्मप्रदेशानां दंडकसंस्थानेनावस्थानाद्दंडकत्व-

कर्मक्षय-सिद्धः

॥५७०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५७१॥

सिद्धिः, अथ दंडककरणे को विधिरिति प्रश्ने ब्रूमहे-इह व्यावहारिकनयवशात् ये असंख्येया जीवप्रदेशाः ते सर्वेऽपि बुध्या असंख्येया भागा निर्गच्छन्ति, असंख्येयभागोऽवतिष्ठते, ततस्तैरेव असंख्येयैर्जीवप्रदेशभागैः स्वशरीराबहिर्गतैर्हि दंडकमभिनिर्वर्तयंतः अष्टौ जीवमध्यप्रदेशान् सांततिकपरस्परावियोगिनो रुचकसंस्थितान् चक्रीवैडूर्यपटलयोरुभयो रत्नाद्यवस्थायिषु रुचकसंस्थितलोकमध्यप्रविष्टाष्टाकाशप्रदेशेषु संस्थाप्य चतुर्दशरज्ज्वायतं दंडकं कुर्वंतीति। ततो द्वितीयसमये कपाटं कुर्वन्ति, तत्समय एव चौदारिकमिश्रकाययोगो भवति, कपाटकमिति कोऽर्थः ?, कपाटमिव कपाटकं, कउपमार्थः ?, यथोभयोः प्राक्प्रत्यगुदिशोस्तिर्थग्विस्तीर्यं अपागुदग्दिशयोर्हस्वमूर्ध्वाधोदिशयोरुच्छ्रितं कपाटमिति शब्द्यते, तथा समुद्घातकरणवशान्निर्गतानामात्मप्रदेशानां पूर्वापरदक्षिणोत्तरासु दिक्षु कपाटसंस्थानेनावस्थानात्कपाटकत्वसिद्धिः, अथ कपाटकरणे को विधिरिति प्रश्ने ब्रूमहे, अतः प्रथमसमयनिर्गतात्मप्रदेशसकाशात् योऽसंख्येयभागोऽवशिष्टोऽवतिष्ठत इत्युक्तं स बुद्ध्या पुनरपि असंख्येयान् भागान् गतः, ततो द्वितीयसमये कपाटकारकाणां असंख्येया भागा निष्क्रामंति, असंख्येयभागोऽवतिष्ठते, नैकैरसंख्येयैर्भागैर्निर्गतैरेतैः कपाटकं कुर्वन्ति, तत्र ये निर्गतास्ते प्रथमसमयनिर्गतात्मप्रदेशसकाशात् असंख्येयगुणहीनाः, असंख्येयभाग इत्यर्थः, अथ तृतीयसमये प्रतरं कुर्वान्ति तत्सामयिकश्च कार्मणकाययोगो भवति, अथ प्रतरमिति कोऽर्थः ?, प्रतरमिव प्रतरं, क उपमानार्थः?, यथा घननिचितनिरन्तरप्रचितावयवसंस्थितापरिवृत्तं स्थालकं स्फलकं वा लोके प्रतरमित्युच्यते तथाऽऽत्मपरमपि परस्परप्रदेशसंसर्गविच्छेदपरिवृत्तपर्यायेणावस्थितं प्रतरमिति प्रसिद्धं, अथ तृतीयसमये प्रतरपूरकाणां को विधिरिति प्रश्ने प्रतिब्रूमहे, ततो द्वितीयसमये निर्गतात्मप्रदेशसकाशात् योऽसंख्येयभागोऽवशिष्टोऽवतिष्ठते इत्युक्तं असावपि बुद्ध्या पुनरसंख्येयभागाः कृताः, ततस्तृतीयसमये प्रतरकारकाणाम-

समुद्घातः

॥५७१॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५७२॥

संख्येयभागा निष्क्रामंति, असंख्येयभागोऽवतिष्ठते, तैरसंख्येयैर्भागैर्निर्गतैरेतैः प्रतरं पूरयंति, तत्र ये निष्क्रान्तास्ते द्वितीयसमयनिष्क्रान्तात्मप्रदेशसकाशादसंख्येयगुणहीनाः, ततश्चतुर्थसमये कार्मणकाययोगस्थान एव आकाशप्रदेशान् निष्कुटसंस्थानसंस्थितान् लोकव्यपदेशभाजोऽपूरितान् पूरयंतीति लोकपूरकाः, तथा तेषां को विधिरिति प्रश्नेऽभिदध्महे-ततस्तृतीयसमयनिर्गतात्मप्रदेशसकाशात् योऽसंख्येयभागोऽवतिष्ठत इत्युक्तं, असावपि बुद्ध्या पुनरप्यसंख्येया भागाः क्रियन्ते, ततश्चतुर्थसमये लोकपूरकानामसंख्येयभागा निष्क्रामन्ति, असंख्येयभागोऽवतिष्ठते, ततस्तैरसंख्येयभागैर्निष्क्रान्तैरेते लोकनिष्कुटान् पूरयंति, तत्र ये निष्क्रान्तास्ते तृतीयसमयनिष्क्रान्तात्मप्रदेशसकाशादसंख्येयगुणहीनाः, यश्चाधुना असंख्येयभागोऽवतिष्ठतेऽसौ स्वशरीरावगाह्यावकाशप्रमाण इति ।

तस्येदानीं मनुष्यावस्थायां या पल्योपमासंख्येयभागमात्रा कर्मत्रयसत्कर्मस्थितिरवतिष्ठते सा बुद्ध्या असंख्येयभागाः क्रियन्ते, ततः प्रथयसमये दंडककारकसत्कर्मस्थितेरसंख्येयान् भागान् हन्ति, असंख्येयभागोऽवतिष्ठते, यश्चामुष्यामवस्थायां कर्मत्रयानुभवः स बुद्ध्या अनन्तभागाः क्रियन्ते, ततोऽस्यासद्वेद्यन्यग्रोधसातिकुब्जवामनहुंडसंस्थानवज्रनाराचार्धनाराचकीलिकासंप्राप्तसृपाटिकासंहनना-प्रशस्तवर्णगंधरसस्पर्शोपघाताप्रशस्तविहायोगत्यपर्याप्तकास्थिरासुभदुर्भगदुःस्वरानादेययशःकीर्तिनीचैर्गोत्रसंज्ञिकानां(?) पंचविंशतेर-प्रशस्तानां प्रक्रीडनसमये दंडककारकानुभवस्यानन्तान् भागान् हन्ति, अनन्तभागोऽवतिष्ठते, तत्समयिकमेव सद्वेद्यमनुष्यदेवगति-पंचेन्द्रियजात्यौदारिकवैक्रियाहारकतैजसकार्मणशरीरसमचतुरस्रसंस्थानौदारिकवैक्रियकाहारकशरीरांगोपांगवज्रर्षभसंहननप्रशस्तवर्ण-गन्धरसस्पर्शमनुष्यदेवगतिप्रायोग्यानुपूर्व्यगुरुलघुपराघातातपोद्योतोच्छ्वासप्रशस्तविहायोगतित्रसबादरपर्याप्तप्रत्येकशरीरस्थिरशुभसु-भगसुस्वरादेययशःकीर्तिनिर्माणतीर्थकरोच्चैर्गोत्रसंज्ञिकानामेकचत्वारिंशतः(?)प्रशस्तानामपि प्रकृतीनां योऽनुभवः तस्याप्रशस्तप्रकृत्यनुभ-

समुद्घातः ॥५७२॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५७३॥

वघातनानुप्रवेशेनैव घातनं ज्ञेयं। अथ द्वितीयसमये कपाटकारकस्य स्थित्यनुभावघातने को विधिरिति प्रश्नेऽभिदध्महे-प्रथमसमयघातितसत्कर्मस्थितेः सकाशात् योऽसंख्येयभागोऽवतिष्ठते इत्युक्तं असावपि बुद्ध्या पुनरसंख्येयभागाः क्रियन्ते, तस्य कपाटकारकोऽप्यसंख्येयान् भागान् हन्ति, असंख्येयभागोऽवतिष्ठते, ततोऽनुभवस्यापि प्रथमसमयघातनानुभवसकाशात् योऽवशिष्टोऽनंतोऽनुभवोऽवतिष्ठत इत्युक्तं असावपि बुद्ध्या पुनरनन्तभागाः क्रियन्ते, तस्य कपाटककारोऽनंतान् भागान् हन्ति, अनन्तभागोऽवतिष्ठते, अयमपि चाप्रशस्तप्रकृत्यनुभवघातनानुप्रवेशेनैव प्रशस्तप्रकृत्यनुभवघातनं करोतीति ज्ञेयं, अथ तृतीयसमये प्रतरपूरकस्य स्थित्यनुभवघातने को विधिरिति प्रश्नेऽभिसंवादीयते, ततो द्वितीयसमयघातितसत्कर्मस्थितेः सकाशात् योऽसंख्येयभागोऽवशिष्टोऽवतिष्ठत इत्युक्तं असावपि बुद्ध्या पुनरसंख्येयभागाः क्रियते, तस्य प्रतरपूरकोऽसंख्येयान् भागान् हन्ति, असंख्येयभागोऽवतिष्ठते, ततोऽनुभवस्यापि तृतीयसमयघातितानुभवसकाशात् योऽवशिष्टोऽनन्तोऽनुभवोऽवतिष्ठते इत्युक्तं असावपि बुद्ध्या पुनरनन्तभागाः क्रियते, तस्य लोकपूरकोऽनन्तान् भागान् हन्ति, अनन्तभागोऽवतिष्ठते, अयमपि च अप्रशस्तप्रकृत्यनुभवघातनानुप्रवेशेनैव प्रशस्तप्रकृत्यनुभवघातनं करोतीति ज्ञेयं, एवं पूर्णलोकस्य कर्मत्रयसत्कर्म आयुषः सकाशात् संख्येयगुणं जातं, अनुभवोऽनन्तः॥ एवं चत्वारः समया भवन्ति, अतः परं प्रतिनिवृत्तः पंचमे समये प्रतरे तिष्ठति कार्मणकाययोगस्थः, अथास्यामवस्थायां स्थित्यनुभवघातने को विधिरिति प्रश्ने निगद्यते- अतश्चतुर्थसमयघातितस्थितिसत्कर्मणः सकाशात् या असंख्येयभागप्रमाणावशिष्टा स्थितिरवतिष्ठत इत्युक्तं सा बुद्ध्या संख्येया भागाः क्रियन्ते, पंचमसमये प्रतरस्थः संख्येयान् भागान् हन्ति, संख्येयभागोऽवतिष्ठते, यश्चतुर्थसमयघातितानुभवसकाशात् अनन्तोऽवशिष्टोऽनुभवोऽवतिष्ठते इत्युक्तं असावपि बुद्ध्या अनन्ता भागाः क्रियन्ते, तस्य पंचमसमये

समुद्घात

॥५७३॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५७४॥

प्रतरस्थोऽनन्तान् भागान् हन्ति, अनन्तभागोऽवतिष्ठते, एषु दंडकादिषु पंचसु समयेषु सामयिकं कण्डकमुत्तीर्णमितिकृत्वा समये समये स्थित्यनुभवकंडकघातको ज्ञेयः । अथ किमिदं कण्डकमिति प्रश्ने ब्रूमहे-कण्डकमिव कण्डकं, क उपमार्थः ?, यथा लोके तरोः खण्डभागः अंशः कंडकमित्याभिधीयते तथा कर्मतरोरपि खण्डं कण्डकमिति सिद्धं, अतः परं षष्ठसमयादारभ्य स्थितिकण्डकमनुभावकण्डकं वा आन्तर्मुहूर्तिकमुत्किरति, कण्डकं यतः किरति खिपति विनाशयतीत्यर्थः, एवं षष्ठे कपाटसमये औदारिकमिश्रकाययोगस्थः सप्तमे औदारिकमिश्रकाययोगस्थः अष्टमे च स्वशरीरप्रवेशसमये स्थितिकण्डकमनुभावकण्डकं च नाशार्थं स्पृष्टं सत् अनन्तरसमय एव नंष्टुमारब्धं न तावत्कात्स्र्येन नश्यति, किंतु षष्ठादिषु समयेषु कर्मतरुकण्डकस्य स्पृष्टस्य सकलसमयेष्विति, एवं तावत्समये दलमुपैति यावदन्तर्मुहूर्तः पूर्ण इति । तदनेन विधिनाऽन्तर्मुहूर्तपूरणचरमसमयानन्तरमेव कृत्स्नं कण्डकं उत्कीर्णमित्यवसेयं, उत्कीर्णं नष्टमित्यर्थः । एवं प्रतिसमयमन्तर्मुहूर्तिकः स्थित्यनुभवकण्डकघातको ज्ञेयः तावद्यावत्सयोगिनोऽन्त्यसमय इति । एवमेतानि सर्वाण्यपि संख्येयानि स्थित्यनुभवकण्डकानि ज्ञेयानि, ततः स्वशरीरं प्रविष्टोऽन्तर्मुहूर्तमास्ते, तत उपर्यनन्तरसमय एव बादरवाग्योगान् रोद्धुमारब्धः, ततोऽन्तर्मुहूर्तपूरणसमय एव बादरकाययोगबलाधानाद्बादरवाग्योगो निरुध्यमानो निरुद्धः, ततो बादरवाग्योगं निरुध्यान्तर्मुहूर्तमास्ते, न बादरयोगनिरोधः प्रवर्तत इत्यर्थः, तत उपर्यनन्तरं बादरमनोयोगं निरोद्धुमारब्धः, ततोऽन्तर्मुहूर्तस्यान्त्ये समये बादरकाययोगोपष्टंभात् बादरमनोयोगो निरुध्यमानो निरुद्धः, ततोऽन्तर्मुहूर्तं स्थित्वोपर्यनन्तरसमय एव उच्छ्वासनिश्वासौ निरोद्धुमारब्धः, ततोऽन्तर्मुहूर्तस्यान्त्ये समये बादरकाययोगोपष्टंभात् उच्छ्वासनिश्वासौ निरुध्यमानौ निरुद्धौ,ततोऽन्तर्मुहूर्तं स्थित्वोपर्यनन्तरसमय एव बादरकाययोगं निरोद्धुमारब्धः,ततोऽन्तर्मुहूर्तस्यान्त्ये समये बादरकाययोगो निरुध्यमानो निरुद्धः,

समुद्घातः

॥५७४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

नमस्कार व्याख्यायां ॥५७५॥

तत्स्थः तमेव क्षपयतीति अयुक्तमिति चेत् न, दृष्टत्वात्, तद्यथा- कारपत्रिकः ऋकचेन स्तंभे छिदिक्रियां प्रारभमाणः तत्स्थस्तमेव छिनत्ति, तथा काययोगोपष्टंभात्काये गतिरोधोऽप्यवसेयः । अत्र काययोगं निरुंधन् पूर्वस्पर्धकानामधस्तादपूर्वस्पर्द्धकानि करोति, अथ किमिदं स्पर्द्धकमिति प्रश्ने व्याचक्ष्महे- स्पर्धकमिव स्पर्द्धकं, क उपमार्थः ?, यथा लोके शालिफलककाणशानां समुदायात् मुष्टिर्भवति या स्पर्द्धकमिति शब्द्यते, कथमिति तद्विवृण्महे-'स्पर्द्ध-संहर्षे' इति शब्दाद् भवति स्पर्द्धकं, संहर्षः समुदायः पिण्ड इत्यनर्थान्तरं, अथ केषां संघर्षः इति प्रश्ने व्याचक्ष्महे, इह यथा बहूनां समुदायः क्षणे (कंडकं) संभवति, बहूनां च काण्डकस्थककाणशानां समुदायात् मुष्टिरिति भवति, तथा शालिफलकणतुल्याणामसंख्येयानां लोकानां ये प्रदेशास्तत्प्रमाणप्रमितानामविभागपरिच्छेदानां भावपरमाणुसज्जितानां समुदायात् काणसतुल्या वर्गणा भवति,एवमसंख्येया वर्गणा श्रेण्या असंख्येयभागप्रमाणा एकजीवे भवंति, तासां च बहुकाण्डस्थकणकाणशसमुदायोत्पन्नमुष्टितुल्यानां असंख्येयानां वर्गणानां श्रेण्याः असंख्येयभागमात्राणां समुदायादेकं स्पर्द्धकं भवति, एवमसंख्येयानि स्पर्द्धकानि श्रेण्या असंख्येयभागमात्राण्येकजीवे सन्ति. अथ किमिदं पूर्वपूर्वकं स्पर्द्धकानि अपूर्वस्पर्द्धकानीति च प्रश्ने व्याचक्ष्महे-यानि पर्याप्तिपर्यायेण परिणमितात्मना पूर्वमेव योगनिर्वर्तनार्थमुपात्तानि यानि चानादौ संसारे पुनः पुनर्योगनिर्वृत्त्यर्थं पूर्वमुपात्तान्यात्मना तानि पूर्वस्पर्द्धकानि इत्यभिधीयंते, तानि च स्थूलानि, यान्यधुना क्रियन्ते तानि सूक्ष्माणि, न च तथालक्षणानि अनादौ संसारे परिभ्रमता आत्मना कदाचिदप्युपात्तानि इत्यतोऽपूर्वस्पर्धकानि व्याख्यायन्ते, अथापूर्वस्पर्द्धककरणे को विधिरिति प्रश्नेऽभिदध्महे-अधस्तात्पूर्वस्पर्द्धकानामादिवर्गणा यास्तासां अविभागपरिच्छेदा ये तेषामयं योगजधर्मानुग्रहादसंख्येयान् भागानाकर्षति, असंख्येयभागं स्थापयति, जीवप्रदेशानामपि च असंख्येयभागमाकर्षयति, असंख्येयान् भागान् स्थापयति, एवं प्रथमसमये, द्वितीय- समुद्घात ॥५७५॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५७६॥

यसमये प्रथमसमयाकृष्टाविभागपरिच्छेदानां असंख्येयेभ्यो भागेभ्यः सकाशादसंख्येयगुणहीनं भागमाकर्षयति, असंख्येयभागमाकर्षयतीत्यर्थः, जीवप्रदेशानामपि च प्रथमसमयाकृष्टजीवप्रदेशासंख्येयभागसकाशादसंख्येयगुणभागमाकर्षयति, असंख्येयभागानाकर्षयतीत्यर्थः, एतेन विधिनाऽऽकृष्य योगजधर्म्मानुग्रहादपूर्वस्पर्धकानि करोति, एवं समये समये भागं करोति यावत्पूर्णोऽन्तर्मुहूर्त इति, कियन्ति पुनः स्पर्द्धकानि करोतीति प्रश्ने ब्रूमहे-श्रेण्या असंख्येयभागमात्राणि, श्रेणिवर्गमूलस्याप्यसंख्येयभागमात्राणि, पूर्वस्पर्धकानामप्यसंख्येयभागमात्राणि, एवमपूर्वस्पर्द्धककरणे समाप्ते अत ऊर्ध्वमुपर्यनन्तरसमयमेव कृष्टीः कर्तुमारब्धोऽन्तर्मुहूर्तेन सर्वाः करोति। अथ किमिदं कृष्टिरिति प्रश्नेऽभिधीयते-कर्मणः कर्शनं कृष्टिः, अल्पीकरणमित्यर्थः, अथ कृष्टेः करणे को विधिरिति प्रश्ने व्याचक्ष्महे, पूर्वस्पर्द्धकानामपूर्वस्पर्धकानां चाधस्तात् या आदिवर्गणाः तासामविभागपरिच्छेदा ये तेषामयं योगजधर्मानुग्रहात् असंख्येयान् भागान् कर्षति, असंख्येयभागं स्थापयति, जीवप्रदेशानामप्यसंख्येयान् भागान् कर्षति, असंख्येयं भागं स्थापयति, एवमादिकृष्ट्या प्रथमसमये कृष्टीः करोति, अथ द्वितीयसमये प्रथमसमयाकृष्टानामविभागपरिच्छेदानामसंख्येयेभ्यो भागेभ्यः सकाशात्संख्येयगुणहीनं भागमाकर्षयति, असंख्येयभागमाकर्षयतीत्यर्थः, जीवप्रदेशानामपि प्रथमसमयाकृष्टजीवप्रदेशासंख्येयभागसकाशादसंख्येयगुणं भागमाकर्षयति, असंख्येयान् भागानाकर्षयतीत्यर्थः, एवमनेन विधिनाऽऽकृष्याकृष्य कृष्टीः करोति, एवं समये २ कृष्टयः क्रियमाणाः क्रियन्ते तावद्यावच्चरमसमयकृष्टिरिति, तत्र प्रथमसमयाः कृष्टयः कृता असंख्येयगुणास्ततो द्वितीयसमये असंख्येयगुणहीनाः, एवं समये समये असंख्येयगुणहीनया श्रेण्या कृतास्तावद्यावदन्तर्मुहूर्त्त इति , तत्र याः कृष्टयः प्रथमसमयकृतास्ता असंख्येयगुणाः कृताः द्वितीयसमयकृताभ्यः सकाशाद् , अथ याः द्वितीयसमयकृतास्ताः प्रथमसमयकृतकृष्टिप्रमाणाः कथं भवंतीति प्रश्नेऽभिधीयते-

समुद्घात ॥५७६॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५७७॥

पल्योपमस्य संख्येयभागेन गुणिताः, प्रथमसमयकृताः कृष्टयः श्रेण्या असंख्येयभागप्रमाणाः, एवं द्वितीयादिष्वपि समयेषु श्रेण्या असंख्येयभागप्रमाणाः तावद्यावत्कृष्टिकरणस्यांतश्चाशेषो युगपन्नष्टः ॥ अधुनाऽऽयुषा समाणि कर्माणि जातानि, अधुना सूक्ष्मक्रिया-प्रतिपातिध्यानादिसमप्रकारार्थोच्छित्त्यनन्तरसमय एव योगिनः अयोगिनः, अयोगिगुणस्थानपर्यायमास्कन्दन्तः अयोगिपर्यायेण विनाशस्तेनैव चोत्पादः केवलिपर्यायेणावस्थानं, अयोगिपर्यायेत्यनन्तरमेव सैलेश्यपर्यायमवाप्नोति व्युपरतक्रियानिवृत्तिं च ध्यानं ध्यायति, चिन्ताव्यापाराभावात् ध्यानाभाव इति चेत् न, कर्मक्षपणसामान्याद् ध्यानमिव ध्यानमिति तत्सिद्धेः, कथम् ?, इह यथा पृथक्त्वैकत्ववितर्कपूर्वशुक्लध्यानद्वयपरिणत आत्माऽर्थान् चिन्तयन् सांपरायिकं दहति यथा वा धर्मस्य ध्याने परिणतः कर्मपर्वतं क्षपयति तथा सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवृत्तिध्यानद्वयपरिणतोऽप्यात्मा असत्यामपि चिन्तायां कर्म क्षपयतीत्यतः कर्म-क्षपणसामान्यात् ध्यानमिव ध्यानमिति सिद्धं, अथवा दृष्ट्वादुपयोगवत् ध्यानमिव ध्यानं, इहासर्वज्ञस्य उपलिप्सोरभोगकरणमु-पयोगः,न च ज्ञानावरणातीतत्वाद्भगवानुपलिप्सुः,कथं?,सर्वार्थप्रत्यक्षत्वाद्, अथ च पदार्थावगमसामान्यमनुभवति,उपयोग इवोपयोगः, क उपमार्थः ?, इह यथा क्षायोपशमिकोपयोगपरिणत आत्माऽर्थानेकदेशेन संगच्छमान उपयुक्त इति शब्द्यते तथा केवलज्ञानपरि-णतोऽप्यात्माऽर्थान् साकल्येन संगच्छमानोऽसत्यामप्युपलिप्सायां अर्थावगमसामान्यादुपयुक्त इति शब्द्यते, न चोपलिप्सापूर्वक उपयोगो भगवति नास्तीत्यत उपयोगाभावः प्रतिज्ञायते, साकाराष्टतयोपयोगप्रतिज्ञानात्, न चोपयोगं कृत्वा क्षायोपशमिकोप-योगतुल्यताऽस्य प्रतिज्ञायते, न वा क्षायोपशमिकातुल्यतया अस्योपयोगाप्रच्युतिर्यथा भवति तथा चिन्ताव्यापारनिरुत्सुकस्यापि भगवतो ध्यानमिति युक्तं, कर्मदहनसामान्यात्, कथम् ?, इह यथा पूर्वशुक्लध्यानद्वयपर्यायपरिणत आत्मा कर्म दहति

अयोगि-गुणस्थानं

॥५७७॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५७८॥

तथोत्तराभ्यां कर्म दहतीत्यतः कर्मदहनसामान्याद् ध्यानमिव ध्यानं, न च कर्मदहनसामान्याद् ध्याने एते इतिकृत्वा पूर्वध्यानवच्चिन्ताकृतो व्यापारोऽप्यनयोरावश्यकः प्रतिज्ञायते, न च चिन्ताव्यापाररहिते एते इतिकृत्वा पूर्वयोरपि चिन्ताव्यापाररहितताभ्यनुज्ञायते, न च पूर्वयोश्चिन्ताकृतो व्यापार इतिकृत्वा तयोरपि चिन्तातो व्यापारो भवितुमर्हतीत्यतोवशीयते, तदेवमेतेन न्यायेन चिन्ताव्यापाराभावेऽपि कर्मदहनसामान्यमिव युक्तं ध्यानं, अथवा पूर्वप्रयोगात् ध्यानमिव ध्यानमिति सिद्धं, कथं ?, कुलालचक्रभ्रान्तिवत्, यथा बाह्याभ्यन्तरभ्रमणकारणपरिणामसान्निध्ये स्वयमपि तथापरिणामात् बाह्यपौरुषप्रयत्नद्रव्यदंडादिभ्रमणकारणसंबंधापादितभ्रान्तिपर्यायं कुलालचक्रं विनिवृत्तेऽपि द्वितये भ्रमणकारणे भ्राम्यते च, तथैवात्र चिन्तानिरोधो यो ध्यानविशेषापादकस्तदभावेऽपि पूर्वप्रयोगात् ध्यानमिव ध्यानमिति सिद्धं। एवमयं असांपरायिकसद्भवस्थकेवली अलेश्यं पर्यायमवाप्नोति, अथ किमिदमलेश्यपर्याय इति, नास्मिन् लेश्याऽस्ति भवस्थकेवल्ययोगिपर्याय इति सोऽलेश्यः, तमवाप्यान्तर्मुहूर्तमवतिष्ठते, तस्य सद्वेद्येन सिध्यतश्चरमसमये सद्वेद्यं नश्यति, द्विचरमसमये असद्वेद्यं, तथा यद्यसद्वेद्येन सिध्यति ततोऽस्यासद्वेद्यं चरमसमये द्विचरमसमये सद्वेद्यं,असद्वेद्यस्य वेदयितत्वाद् दुःखजमिति चेत् न तत्कृतं दुःखं,तेनास्य सम्बन्धेऽपि दुःखाभावात्, कथं ?, क्षीरपूर्णे घटे यवमात्रनिम्बदलंप्रक्षेपेऽपि सति कटुकत्वाभावात्, तथा च सर्वप्राणिभ्योऽप्यनन्तगुणं सूक्ष्मसंपरायप्रविष्टक्षपकचरमसमयार्पितसद्वेद्यं वेदयतोऽस्य योऽसद्वेद्योदयः असद्वेद्यसत्कर्मसान्निध्यादापतति ततोऽन्यस्य दुःखं प्रपद्यत इति सिद्धं, तदेवमस्यायोगिनः असद्वेद्यदेवगत्यौदारिकवैक्रियकाहारकतैजसकार्मणशरीरसमचतुरस्रन्यग्रोधसातिकुब्जवामनहुंडसंस्थानौदारिकवैक्रियाहारकशरीरांगोपांगनिर्माणदेवगतिप्रायोग्यानुपूर्व्यौ वज्रर्षभनाराचअर्द्धनाराचकीलिकासंप्राप्तसृपाटिकासंहननवर्णगन्धर-

अयोगि-गुणस्थानं

॥५७८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५७९॥

सस्पर्शागुरुलघूपघातपराघातोच्छ्वासप्रशस्तविहायोगत्यपर्याप्तप्रत्येकशरीरस्थिरास्थिरशुभाशुभदुर्भगसुस्वरानादेययशःकीर्तिनीचैर्गोत्र-संज्ञाः चत्वारिंशत् प्रकृतयो द्विचरमसमये व्युपरतक्रियानिवर्तिध्यानं ध्यायतोऽशेषतः संक्षीणाः, अथ सद्वेद्यमनुष्यायुर्मनुष्यग-तिपञ्चेन्द्रियजातिमनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीत्रसबादरपर्याप्तसुभगादेययशःकीर्तितीर्थकरोच्चैर्गोत्रसंज्ञास्त्रयोदश प्रकृतयः चरमसमये संक्षीणाः, परिमितत्वादन्तर्मुहूर्तस्य भेदाभाव इति चेत् न, एकस्यान्तर्मुहूर्तस्यासंख्येयभेदप्रतिज्ञानात्, अतः केवलिन्यन्त-र्मुहूर्तायुष्यपि यथोक्तभूयसामन्तर्मुहूर्तानां प्रसिद्धिरिति। ततो भावलेश्यापर्यायाद्धायां संक्षीणायां सर्वकर्मविप्रमुक्तः जलधरघनपटल-निरोधविनिर्मुक्त इव चंद्रमा नीरुजो निरुपम एकसमयेन भवसमुद्रमुत्तीर्य सिध्यतीति। एत्थ गाथा—

णातूण वेदणिज्जं० ॥ ९–६८ ॥ ९५४ ॥ दंडकवाडे० ॥९–६९॥ ९५५ ॥ जह उल्ला० ॥ ९–७० ॥ ९५६ ॥ लाउय० ॥ ९–७१ ॥ ९५७ ॥ अण्णे पुण एत्थ पत्थावे एतं सामण्णेणं भणंति-जहा णेव्वाणं गंतुकामो जीवो कोपि समुद्घातं क-रेति कोति णवि, समुद्घातेति को अत्थो ?, समो आयुषो कर्मणां उद्घातः समुद्घातः, सव्वे जीवपदेसे विसारेति, एवं सिग्घं कम्मं खविज्जति तो समुग्घाओ, तं च कम्हि काले करेति?, मुहुत्तावसेसाउओ, अण्णे भणंति- जहण्णेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण छम्मासावसेसाउओ, एयं सुत्ते ण होति दिट्ठेल्लयं ॥ आउज्जति–उवयोगं गच्छति पढमभेव अंतोमुहुत्तियमुदीरणावलिकायां क-म्मपक्खेवाइरूवं परिस्पन्दनं गच्छतीत्यर्थः समुद्घातकरणकातुकामो। तत्थ गाथा—

णातूण वेदणिज्जं विसमं च समं करेति बंधणठितीहि य विसमं वेदणीज्जं अब्भहियं समं करेति आउगेणं, केण ?, बंधणेहिं ठितीहि य, ठितीघाउयबंधट्ठितिकम्मस्स जावतियं आउतं सेसं जं, तंमि समये तत्तीयाओ आवलियाओ करेति जावतियं २

योग-निरोधः

॥५७९॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५८०॥

समएणं कम्मं खवेति,सेसं समुग्घाते छुभति, एतान्निमित्तं समुग्घायकरणं ॥ कोति समुग्घातं कातूण सिज्झति, कोऽपि ण चेव समुग्घातं करेति, जम्हा अगंतूण० ॥ समुग्घातो अट्ठसमयितो, तत्थ दारगाथा–दंड कवाडे मंथंतरे य०॥ पढमसमये सरीरपमाणं हेट्ठाहुत्तं उवरिहुत्तं च जाव लोगंतो ताव दंडं करेति, बितिए कवाडं एगओ वा, एगओ वा दिसं, पुव्वावरं वा उत्तरदाहिणं च, ततिए मंथं, चउत्थे य ओवासंतराणि पूरेति, एवं तं वेदणिज्जं वेदिज्जति, जं आउगनामगोत्तेहिंतो अब्भातितं तं सडति, जथ-उल्ला साडीया० ॥ एत्थ सव्वो समुग्घातो विभासितव्वो, तत्थ समुग्घातस्स मणवइजोगे णत्थि, ततियचउत्थपंचमेसु अणाहारो भवति, तत्थ समुग्घातगतेणं जं अतिरित्तं कंमं तं सव्वं खवितं, सेसगंपिहऽसारं कतं, जथा अग्गिस्स परिपेरंतेहिं जे तणा, एवं तेणं तं च कम्मं सेसं जत्तिया आउस्स समया एत्तियाओ सेसकम्माणं आवलियाओ करेति, ततो समये समये एक्केकं वेदेति, ततो पडियागतो तिविहंपि जोगं जुंजति, वइजोगस्स सचाइ जोगं जुंजति, चउत्थं आमंतणमादी, मणेवि एते चेव जोगे दोण्णि, ते पुण किह होज्ज ?, मणसा पुच्छेज्ज कोइ,तेसिं मणसा वागरेति,अणुत्तरो अण्णो वा देवमणुयो, कायजोगं गच्छेज्ज वा चिट्ठणट्ठाणणिसीयणतुयट्टणाणि, गच्छणे उक्खेवणसंखेवणउल्लंघणपल्लंघणतिरियणिक्खेवणादीणि, पाडिहारियं वा पीठकादि पच्चप्पिणेज्जा,सो य सजोगी ण सिज्झति ततो भगवं अचिन्त्येण ऐश्वर्येण योगनिरोधं करेति,सो पुव्विं संणिस्स पढमसमयपज्जत्तगस्स हेट्ठा जाणि मणपायोग्गाणि दव्वाणी यं वा मण्णेति तेसिं ता संखेज्जाणि ठाणाणि पुव्विं अविसुद्धाणि थूलाणि य पच्छा विसुज्झमाणस्स सण्हतरगाणि विसुद्धतरगाणि य, ततो सेढी आवलिगाओ ओसरंति, जहा विसपरिगयस्स पदेसपदेसेणं विसं ओसरइ एवं सोवि रुंभमाणाणि २ ताव ओसरति जाव एगाए आवलियाए ठितो,जथा तलाए पढमं बिंदु ठितं, वड्ढमाणे भरियं,एवं सो ओसरणाओ ताव आणेति जाव जो से पढम-

योग-निरोधः

॥५८०॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५८१॥

समए पज्जत्तगस्स मणो आसी, ततोवि ओसरति पच्छा अमणो भवति, एवं बेंदियस्सवि पज्जत्तगस्स वइजोगट्ठाणेसु णिरुंभित्ता जा वइजोगी भवति, पच्छा सुहुमस्स पणगजीवस्स पढमसमयोववण्णगस्स जावतिया सरीरोगाहणा तावतियाए अप्पणगं कायजोगं हासेंते २ निरुंभंति, अण्णे पुण भणंति-तस्स पढमसमये चेव पणगस्स हेट्ठा असंखेज्जगुणं कायजोगं णिरुंभंतो णिरुंभए, तस्स किल वीरियावरणोदएणं भंदो जोगपरिप्फंदो तेण अप्पो कायजोगो भवइ, केवलिस्स पुण अंतराइयपरिक्खएणं अणुत्तरं निरावरणं जोगवीरियं, तेण अचिंतेण जोगसामत्थेणं जा सा केवलिस्स वीरियसदव्वयाए अणुवरतं पदेसपरिफुरणा तं एगिंदियजोगपप्फंदा ओसरेऊण णिरंतरं णिरुंभति, जाइं च से सरीरे कम्मणिव्वत्तियाइं सुहसवणासिरोदरादिछिद्दाइं ताणि वियोएमाणो २ तिभागूणं पदेसोगाहणं करोति, ताहे आणपाणुणिरोहं काउं अजोगी भवति । एवं सो योगत्रयनिरोहा सुक्कज्झाणस्स ततियभेयं सुहुमकिरियं अणियट्टिं अणुप्पविट्ठो करेति, पच्छा समुच्छिन्नकिरियं झाणं अणुप्पविट्ठो जावतिएणं कालेणं अतुरियं अविलंबितं ईसी पंचरहस्सक्खरा क ख ग घ ङ एते उच्चारिज्जंति एवतिकालं सेलेसिं पडिवज्जति, शैलेशी नाम 'शील समाधौ' 'ईस ऐश्वर्ये' शीले ईशस्तद्भावः शैलेशी, तस्सिं काले परं शीलं भवति, अथवा शैलेश इव तस्मिन् काले निष्प्रकम्पः, नान्यत्र, परप्रयोगात्, सेव अलेसी सेलेसी, लेश्या णाम परिणामो २ परि समंता नामो, परिणामं लेस्सा, सा दुविहा-दव्वतो भावतो य, तत्थ वण्णादिगुणपरिणामो लेस्सा, ते वण्णादिणो द्रव्ये संश्लेषं परिणता तेणं सा दव्वलेसा, ते चेव द्रव्या जीवेनात्मसंश्लेषभावपरिणामतः शुभाशुभेण शुभाशुभा य लेश्या भवति, द्रव्यात्मगुणसंश्लेषपरिणामो भावलेश्या, ण तु दव्वपरिणामविरहिया भावलेस्सा भवति, सो य जहा पुव्वनिव्वत्तिएणं हत्थेणं पदीवं गहाय अंधारए णयणविसयं फुडीकरेति, एवं सजोगी जीवो पुव्वणिवत्तिएण दव्वसंगेण अण्णेसिं दव्वाणं गहणं कातुं भावलेस्सा

योग-निरोधः

॥५८१॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५८२॥

परिणामो, एत्थ पुण जं एजति उट्ठति णहति एस जोगस्स विसओ भाणितव्वो, लेसासंजुत्तस्स पुण यो परिणामो एस अणादीओ वा अपज्जवसितो लेसापरिणामो, भणितं च--जोगेण पदेसग्गं कम्मस्स कसायओ य परिणामं। जाणाहि बज्झमाणं लेसं च ठितीविसेसं वा ॥ १ ॥ केवलिस्स पुण बाहिरदव्वग्गहणं भयणाए परपच्चयणिमित्तं वा होज्जा, सो णिच्चं सुद्धसुक्कलेसो अविदितअहक्खायचरणो होति, अजोगि पुण जोगनिरोहाणंतरं जो सो पंचक्खरुच्चारणकालो तं कालं बाहिरदव्वगहणविरहितं पुव्वोपचितं दव्विंधणसावसेसजीवप्पदेसपरिणामगतं परमसलेस्सपरिणतो अजोगी सलेस्से भवति, ततो पच्छा करणवीरियणिरोहलद्धीवीरियसहितो अल्लेसी अंतोमुहुत्तं दव्वसंश्लेषविरहितजीवप्पदेसणिरुद्धं सयुच्छिण्णकिरियं परमसुक्कं सुक्कस्स चउत्थं अंतिमं झाणभेदं झाति, तवज्झाणकम्मवक्खरणपुव्वप्पयोगेण कुलालचक्कवेगवद्धवति नोप्पेरणवत्तं, तंमि काले पुव्वरयितं आवलियगुणसेढियं च णे कंमं तीसे सैलेसिमद्धाए असंखेज्जकंमंसे खवयंते वेदणिज्जाउयणामगोत्ताइं चत्तारि कम्मंसे एगसमएणं जुगवं खवेति, अंसो पच्छिमो भाओ एगेगस्स कम्मणो, ओरालितेयगकम्मगाणि सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहति, जो चेव कम्मजहणासमयो स एव सरीराणं, सव्वविप्पजहणा णाम अंगोवंगबंधणसंघातसंठाणवण्णगंधरसफासा गहिया, पुव्वं मोत्तूण पुणोवि गेण्हति, संपइ अपुणागमा पमुक्काणि, णवणीतोदाहरणवद्, द्रव्यं सुवण्णधातू वा, जथा उज्जुसेढिपत्तो जत्तिए जीवो अवगाहे तावतियाए अवगाहणाए उड्ढं उज्जुगं गच्छति, ण वंकं, अफुसमाणगती बितियं समयं ण फुसति, अहवा जेसु अवगाढो जे य फुसति उड्ढमवि गच्छमाणो ततिए चेव आगासपदेसे फुसेमाणो गच्छति, शरीरेऽपि ण ततोऽधिके परिपेरंतेण बहिं, एगसमएणं अशरीरेणं अकुडिलेण वा उड्ढं गंता, न तिर्यग् अधो वा, भ्रमति वा, साकारोवउत्ते सिज्झति। तत्थ सिद्धे भवति सादीए, सव्वे

योग-निरोधः

॥५८२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

आलावगा भाणितव्वा। वितियदिट्ठंतो य। आह- कहं अकंमस्स गती पण्णायति ?, तत्थ गाथा—

लाउयएरंडफले० । ९—७१ ॥ ९५७ ॥ जहा पण्णत्तीए तहा विभासितव्वं, पूर्वप्रयोगा कुलालवद् भ्रुवते, असंगत्वा-दलाबुकवत्, बन्धच्छेदात् बीजवत्, तथागतिपरिणामात्, नाधः गुरुत्वाभावात्, न ऊर्ध्वं, यावद्धर्मास्तिकायः गतिसद्भावात्, न पर-तस्तदभावात्। आह—

कहिं पडिहता सिद्धा ?० ॥ ९—७२ ॥ ९५८ ॥ उच्यते-अलोए पडिहया० ॥ ९—७३ ॥ ९५९ ॥ ईसी पब्भारा विभासितव्वा जथा पण्णवणाए। ईसीपब्भाराए० ॥ ९—७४ ॥ ९६० ॥ णिम्मलदलरय० । ९—७५ ॥ ९६१ ॥ एगा जोयण० । ९—७६ ॥ ९६२ ॥ बहुमज्झदेस० ॥ ९—७७ ॥ ९६३ ॥ गंतूण० । ९—७६ ॥ ९६४ ॥ ईसीपब्भा-राए० ॥ ९—७९ ॥ ९६५ ॥ उत्ताणओ व० । ९-८१ ॥ ९६७ ॥ दीहं वा हस्सं वा० । ९-८४ ॥ ९७० ॥ जे किर णिण्णा अब्भिंतरपविट्ठायपदेसा पदेसा पविशति, तेणं अंगस्स वा उवंगस्स वा जे संठाणविसेसा आसी ते सव्वे विभागरहिता होंति, समणिच्चयपदेसओ णिगुणेणं।

तिण्णि सता तेत्तीसा० ॥ ९-८५ ॥ ९७१ ॥ मरुदेविमादीण। चत्तारि य रयणीओ० ॥ ९-८६ ॥ ९७२ ॥ सत्तरत-णियाण। एगा य होति रयणी ए० ॥ ९-८७ ॥ ९७३ ॥ वामणकुम्मगसुयमादीयाण। ओगाहणाए सिद्धा भवत्तिभागेण० ॥ ९-८६ ॥ ९७४ ॥ जत्थ य एगो सिद्धो तत्थ य णंता उ० ॥ ९-८९ ॥ ९७५ ॥ अवरोप्परं जह- धम्माधम्मागासा ॥

फुसंति अणन्ते० ॥ ९-९० ॥ ९७६ ॥ सरिसाए ओगाहणाए सरिसोगाहणओ अणंते,जे तेण देसपदेसेण पुट्ठा ते असंखेज्जगुणा, एगस्स सिद्धस्स एगेणं जविपदेसेणं अणंता पुट्ठा, सो य सिद्धो असंखेज्जपदेसो तेण तावइया असंखेज्जा रासी तेणं आदिल्लएणं सव्वपदेसपुट्ठे एतेण मिज्जमाणा ॥

असरीरा० ॥ ९-९१ ॥ ९७७ ॥ केवलंमि लक्खणं भणितं· सागारा अणगारं । इदाणिं सुहं भण्णति—

णवि अत्थि माणु० ॥ ९-९२ ॥ ९८० ॥ सुरगण० ॥ ९-९५ ॥ ९८१ ॥ तीयवट्टमाणाणायगाणं देवाणं विसयसुहं अणन्भावपट्ठवणाए घेत्तूण रासी कतो, सो अणंतगुणिते सिद्धस्स य एगस्स असरीरं सुहं गहियं, तं अणंताणंतभागीकयं, तस्स एगभागे णवि तुल्लं चेव सुहरासीसुहमिति, बितियं वा माणं· सुरगणसुहं समस्तं सव्वद्धापिंडितं एगम्मि आगासपदेसे छूढं तेणप्पमाणेणं सिद्धस्स सुहं मिज्जमाणं लोगालोगागासेवि ण माति एगस्स, णणु यदि णाम तं केवली विंदति तो किण्ण ओवम्मेणं दरिसेंति ?, भण्णति, णत्थि तस्स उवमाणं, किह णत्थि ?, जहा एगो महारण्णवासी मेच्छो रण्णे चिट्ठति, इओ य एगो य राया आसेण अवहरितो तं अडविं पवेसितो, तेण दिट्ठो, सक्कारेऊणं वंदिओ, रण्णावेसो णगरं(णीओ),पच्छा उवगारित्ति गाढमुवचरितो, जहा राया तह चिट्ठति धवलघरादिभोगेणं, विभासा, कालेणं रण्णं सरितुमारद्धो, रण्णा विसज्जितो, ततो रण्णिगा पुच्छन्ति- केरिसं णगरंति ?, सो वियाणंतोवि तत्थोवमाभावात् ण सक्कति णगरगुणे परिकहेतुं, एस दिट्ठंतो, अयमेत्थोवणओ, एवं सिद्धाणवि सोक्खस्स विसयसुहे ण उवमा, नत्थि सरीरावयवरुदाहरणं, सो य मेच्छो जहा किंचिमेत्तेण डुंगरादीणि दावेत्ता पत्तियावेति, एवं इहइंपि किंचिमेत्तेण उदाहरणं क्रियते—

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५८५॥

जह सव्वकामगुणियं० ॥ ९-९९ ॥ ९८५ ॥ सव्वकामगुणितं णाम सव्वाभिलासाणिव्वत्तगं, भोयणं णाम भुज्जत इति भोयणं- विसयं संसारोत्ति, तण्हाछुहाविमुक्को णाम णिरभिलासो णिरुओ य, जहा सो परमाणंदितो अमयतित्तोव्व ।

इय सव्वकालतित्ता ॥ ९-१०० ॥ ९८६ ॥ सिद्धत्ति० ॥ ९-१०१ ॥ ९८७ ॥ फलमिदाणिं, जहा अरहंतेसु पुव्वं । आयरियाणं संखेवेण भणितं,जहा ते णमोक्कारारिहा,इदाणिं वित्थरेण भण्णति,आङ् मर्यादाभिविध्योः 'चरिर्गत्यर्थः'मर्यादया चरन्तीति आचार्याः, आचारेण वा चरंतीति आचार्याः, ते चतुव्विहा, णामट्ठवणाओ गताओ, द्रव्यभूतो वा द्रव्यनिमित्तं वा द्रव्यमेव वा दव्वं, आयारवंतं भन्नति अनायारवंतं च. नामनं प्रति तिणिसलया य एरंडो य, धावणं प्रति हारिद्दारागो किमिरागो य, वासणं प्रति कवेल्लुगा वइरं च, सिक्खावणं प्रति मदणसलागा वायसादी य; करणं प्रति सुवर्णं घंटालोहं च, अविरोधं प्रति खीरं सक्करा य, विरोधं प्रति तेल्लं दधि य, एवमादि, एत्थ गाथा- णामणधावणवासणसिक्खावणसुकरणाविरोधीणि। दव्वाणि जाणि लोए दव्वायारं वियाणेहि ॥ १ ॥ अहवा दव्वायरिओ तिविहो- एगभविओ बद्धाउओ अभिमुहणामगोत्तो. एगभविओ जो एगेणं भवेणं उववज्जिहि, णिबद्धाउओ उ जेण आउयं बद्धं, अभिमुहणामगोत्तो जेण पदेसा उच्छूढा, अहवा मूलगुणणिव्वत्तितो उत्तरगुणनिव्वत्तिओ य, सरीरं मूलगुणो चित्तकम्मादि उत्तरगुणो, अहवा जाणओ भविओ वतिरित्तो, मंगुवायगाणं समुद्दवायगाणं नागहत्थिवायगाणं जथासंखं आदेसो, भावायरिओ दुविहो- आगमतो णोआगमतो य, आगमतो तहेव, णोआगमतो दुविहो- लोइओ लोउत्तरो य, लोइतो सिप्पाणि चित्तकम्मादिसत्थाणि वइसेसियादि जो उपदिशति, उत्तरिओ जो पंचविधं णाणादियं आयारं आयरति पभासति य अण्णेसिं, आयरियाण आचरितव्यानि दर्शयति-एवं गंतव्वं एवमादि, तेण ते भावायरिया, तेसिं फलं तहेव ॥

आचार्य-नमस्कारः

॥५८५॥

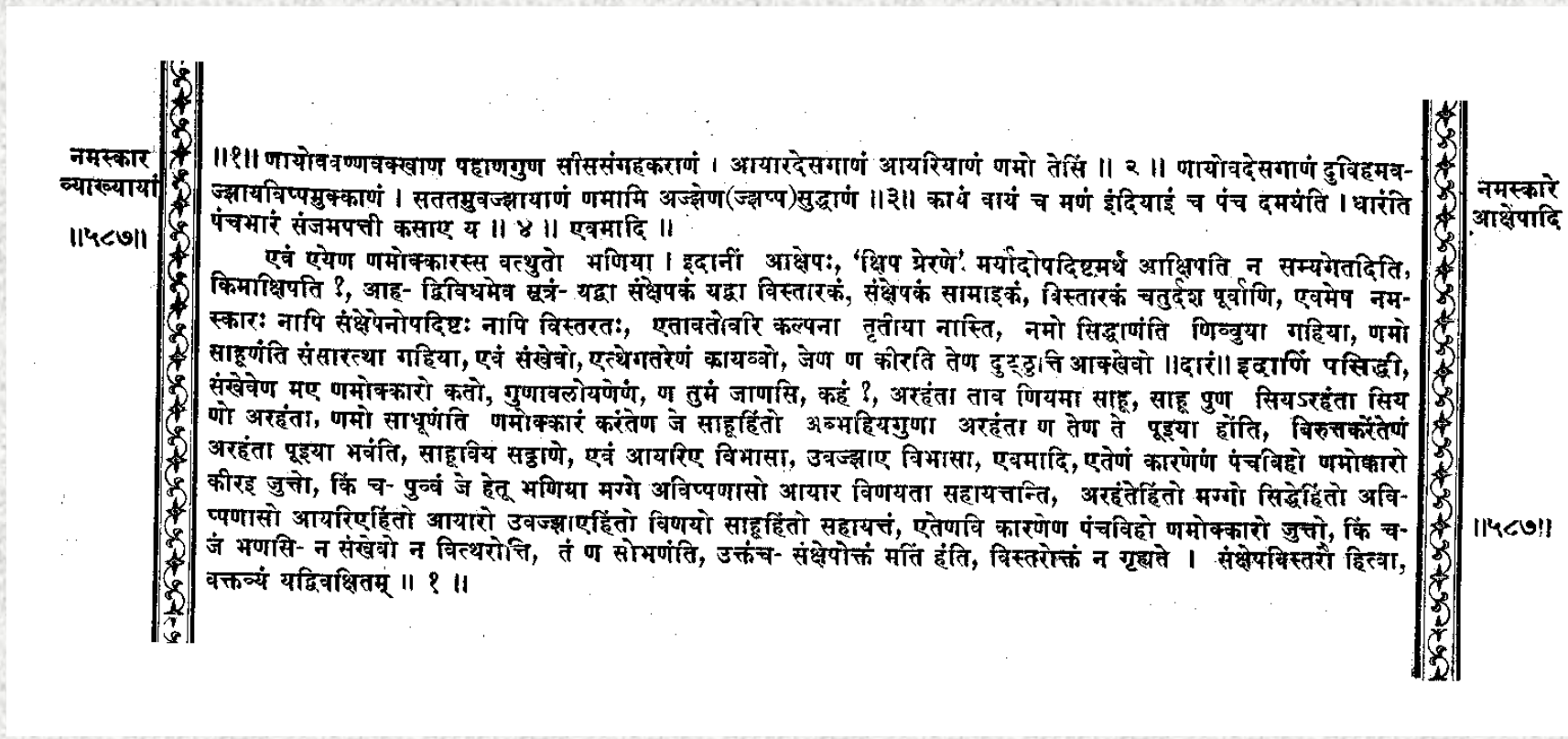
नमस्कार व्याख्यायां ॥५८६॥

इदाणिं उवज्झाओ जथा अरिहो तहा, वित्थरेणं भण्णति-तमुपेत्य शिष्टा अधीयन्त इत्युपाध्यायः, सो चउव्विहो, नामट्ठवणाओ गताओ, दव्वउवज्झाओ दव्वभूतो जहा लोइया अण्णतित्थिया य उवज्झाया, णिण्हगादी वा, भावे वा बारसंगो० ॥ ९-११५ ॥ ॥ १००१ ॥ बारसंगो- आयारादि जिणक्खातो- तित्थकरभासितो सज्झातो- सुतं कहितो बुधैः, बुधा-गणधरादी, तं उवदिशंति समीवत्थं, ते उवज्झायत्ति जम्हा तेण उवज्झाया वुच्चंति। उत्ति उवओगकरणे० ॥ ९-११६ ॥ १००२ ॥ उवत्ति उवयोगकरणे झायत्ति झाणस्स णिद्देसे, उवउत्तो झायतित्ति, एतेण कारणेण उवज्झातो उ एसो अण्णोऽवि पज्जाओ। अहवा एतं निरुत्तं उत्ति उवयोगकरणे वत्तिय पावपरिवज्जणे होति। झत्ति य झाणस्स कते ओत्ति य ओसक्कणा कम्मा ॥ १ ॥ १००३ ॥ उवओगपुव्वगं पावपरिवज्जणतो झाणाराहणेणं कंमं ओसरेतित्ति उवज्झाओ, एवमादिपर्यायाः उपाध्यायस्य, सेसं तहेव।

इदाणिं वित्थरेण साहुणमोक्कारो भण्णति- 'राध साध संसिद्धौ' साधयतीति साधुः, सो चतुव्विहो,णामट्ठवणाओ गताओ, दव्वसाहू घटद्रव्यं साधयतीति, एवं पटरहमादीणि, अहवा जो दव्वभूतो बोडिगणिण्हगादी वा दव्वसाहू, भावो- मोक्खो तं साधयतीति भावसाहू। तत्थ निरुत्तीगाहा--णिव्वाणसाहए० ॥ ९-१२४ ॥ १०१० ॥ आह-अरहंता सिद्धा आयरिया उवज्झाया य गुणाधिया ततो णमोक्कारकरणे अरिहा, समाणे गुणतवे संजमे अधिगयरे वा, किं साधूणं पणमसि ?, उच्यते-तहावि ते वंदनारिहा, जतो अतिशयगुणजुत्ता, तथा च- विसय० ॥ ९-१२६ ॥ १०१२ ॥ असहाये० ॥ ९-१२१ ॥ १०१३ ॥ फलं तहेव णमोक्कारे ॥ साहुणिरुत्तगाहाओ- सामायारिविहिण्णू संतिमाचारिया वरायारा। आयारमायरंता आयरिया तेण वुच्चंति

उपाध्याय साधु नमस्कारः

॥५८६॥



नमस्कार व्याख्यायां ॥५८७॥

॥१॥ णायोववण्णवक्खाण पहाणगुण सीससंगहकराणं । आयारदेसगाणं आयरियाणं णमो तेसिं ॥ २ ॥ णायोवदेसगाणं दुविहमवज्झायविप्पमुक्काणं । सततमुवज्झायाणं णमामि अज्झेण(ज्झप्प)सुद्धाणं ॥३॥ कायं वायं च मणं इंदियाइं च पंच दमयंति । धारंति पंचभारं संजमपत्ती कसाए य ॥ ४ ॥ एवमादि ॥

एवं एयेण णमोक्कारस्स वत्थुतो भणिया । इदानीं आक्षेपः, 'क्षिप प्रेरणे' मर्यादोपदिष्टमर्थं आक्षिपति न सम्यगेतदिति, किमाक्षिपति ?, आह- द्विविधमेव सूत्रं- यद्वा संक्षेपकं यद्वा विस्तारकं, संक्षेपकं सामाइकं, विस्तारकं चतुर्दश पूर्वाणि, एवमेष नमस्कारः नापि संक्षेपेनोपदिष्टः नापि विस्तरतः, एतावतीवरि कल्पना तृतीया नास्ति, नमो सिद्धाणंति णिव्वुया गहिया, णमो साहूणंति संसारत्था गहिया, एवं संखेवो, एत्थेगतरेणं कायव्वो, जेण ण कीरति तेण दुट्ठुत्ति आक्खेवो ॥दारं॥ इदाणिं पसिद्धी, संखेवेण मए णमोक्कारो कतो, गुणावलोयणेणं, ण तुमं जाणासि, कहं ?, अरहंता ताव णियमा साहू, साहू पुण सियऽरहंता सिय णो अरहंता, णमो साधूणंति णमोक्कारं करंतेण जे साहूहिंतो अब्भहियगुणा अरहंता ण तेण ते पूइया होंति, विरुत्तकरेंतेणं अरहंता पूइया भवंति, साहूविय सद्धाणे, एवं आयरिए विभासा, उवज्झाए विभासा, एवमादि, एतेणं कारणेणं पंचविहो णमोक्कारो कीरइ जुत्तो, किं च- पुव्वं जे हेतू भणिया मग्गे अविप्पणासो आयार विणयता सहायत्तन्ति, अरहंतेहिंतो मग्गो सिद्धेहिंतो अविप्पणासो आयरिएहिंतो आयारो उवज्झाएहिंतो विणयो साहूहिंतो सहायत्तं, एतेणवि कारणेण पंचविहो णमोक्कारो जुत्तो, किं च- जं भणसि- न संखेवो न वित्थरोत्ति, तं ण सोभणंति, उक्तंच- संक्षेपोक्तं मतिं हंति, विस्तरोक्तं न गृह्यते । संक्षेपविस्तरौ हित्वा, वक्तव्यं यद्विवक्षितम् ॥ १ ॥

नमस्कारे आक्षेपादि

॥५८७॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५८८॥

इदाणिं कमो, आह- एस णमोक्कारो णेव पुव्वाणुपुव्वी, णेव पच्छाणुपुव्वी, दुविहं च विहाणं, जं वा पुव्वाणुपुव्वी जं वा पच्छाणुपुव्वी, जहा- 'उसभमजियं' एवमादि पुव्वाणुपुव्वी, पच्छाणुपुव्वी वीरो पासो एवमादि । एवं णमोक्कारो पुव्वाणुपुव्वीए- णमो सिद्धाणं णमो अरहंताणं आयरिय०उवज्झाय०साहूणंति,जेणेव तित्थंकरो चरित्तं पडिवज्जंतो सिद्धाणं पणमति, एवं पुव्वाणुपुव्वीए भवति, पच्छाणुपुव्वीए नमो सव्वसाहूणं उवज्झायाणं आयरियाणं अरहंताणं सिद्धाणंति, एवं करेंताण पसत्थो भवति, इयरहा विपरीतः ?, उच्यते, अणुपुव्वी एसा, ण य तुमं जाणसि, कहं ?, जेण अरहंताणं उवदेसेणं सिद्धा णज्जंति तेण उवदेसगत्ति पुव्विं कता, ततो सिद्धा गुरू, कमेण च सेसगावि , अविय- णवि लोए परिसं पुव्वं पणमिऊणं परिसणायओ पणमिज्जति, पुव्वं णायओ पच्छा परिसा, एवं जहा लोए तहा सत्थेऽवि । एवं पसाधियं **पसिद्धिदारं** ॥

आह- किं पयोयणं णमोक्कारं कीरति ?, पयोयणं णाम प्रयोज्यते येन तत्प्रयोजनं, अनन्तरकार्यामित्यर्थः, उच्यते- णाणावरणादिकम्मक्खयनिमित्तं, एकैकाक्षरोच्चारणे अनंतपुद्गलरसफड्डकघातसद्भावात्, मंगलं च होहिति महारिसीणं पणामेणंति, एस एव अम्हं सव्वसत्थाणं पुव्विं उच्चारिज्जति,जहा मरुयाण उंकारो जहा लोगे तहा लोउत्तरेविति । **दारं** ॥ **इदाणिं फलेत्ति दारं**, 'फल निष्पत्तौ', किं निष्पादयति एषा नमस्कारस्मृतिः ?, उच्यते, इहलोइयं परलोइयं च फलं, इहलोइयं ताव अत्थावहो कामावहो आरोग्गावहो होति , अथ कामारोग्याः किं निष्पादयंति ?, उच्यते- अभिरतिः, परलोइओ सिद्धिगमणं वा देवलोगगमणं वा, सोभणे वा कुले आयाति, पुण बोहिलाभो वा एवमादि, **इहलोगंमि तिदंडी०** ॥ ९-१३८ ॥ १०२४ ॥ णमोक्कारो अत्थावहो कहंति ?, उदाहरणं, जथा—

नमस्कारे प्रयोजनादि ॥५८८॥

नमस्कार व्याख्यायां

॥५८९॥

एगस्स सावगस्स पुत्तो धम्मं न लएति, सो य सावओ कालगओ, सो विवाहितो, एवं चेव विहरति, अण्णदा तेसिं दार-समीपे परिव्वाओ आवासितो, सो तेण दारएण समं मित्तिगं करेति, अण्णदा सो परिव्वाओ तं दारगं भणति- जा णिरुवहतं अणाधमतगं आणेह जा ते इस्सरं करेमि, तेण गविट्ठं, लद्धं, उवबद्धओ मणुस्सो, आणितो, मसाणं णीओ, जं च तत्थ पाउग्गं, सोवि दारओ पिताए सिक्खावितो णमोक्कारं, जाहे बीभेसि ताहे णमोक्कारं करेज्जासित्ति, सो तस्स मतगस्स पुरतो ठवितो, मतगस्स य हत्थे असी दिण्णो, परिव्वाओ विज्जं परिवत्तेति, वेतालो उट्ठेतुमारद्धो, सो दारओ भीओ णमोक्कारं परियट्टेति, सो वेतालो पडिओ, पुणो जवेति, पुणोवि उट्ठिओ, सुट्ठुतरागं परियट्टेति, तिदंडी पुच्छति- किंचि जाणसि ?, सो भणति- ण जाणामि, एवं सुचिरं वट्टति , वाणमंतरेण रुट्ठेण सो तिदंडी दोखंडो कतो, सुवण्णा खोडी जाता, अंगोवंगाणि से जुत्तगाणि, सव्वरत्तिं वूढो, ईसरो जाओ णमोक्कारफलेणं, जदि णमोक्कारो ण होंतो तो वेतालेण मारिज्जंतो, सोवण्णं जातं। एत्तो कामणिप्फत्तीए सादेव्वं, कहं ?, एगा सावित्रा, तीसे भत्थारो मिच्छादिट्ठिओ अण्णं भज्जं आणेतुं मग्गति, तीसेच्चएणं ण लभति ससवत्तगं, चिंतेति- किह मारिज्जामित्ति , अण्णदा तेण कण्हसप्पो घडए छुभित्ता आणितो, संगोवितो, जिमितो भणति-आणेह पुप्फाणि अम्हगघडए ठवियाणि, सा पविट्ठा, अंधकारंति णमोक्कारं करेति, जदि किंचिवि खाएज्जा तोवि मरंतीए णमोक्कारो ण णस्सिहिति, हत्थो छूढो, सप्पो देवताए अवहितो, पुप्फमाला साहिया, ताए गहिया, दिण्णा य, सो संभंतो चिंतेति-अण्णाणि, कहियं, गतो पेच्छति घडगं पुप्फगंधं, णवि एत्थ कोइ सप्पो, ताहे आउट्टो पादपडितो सव्वं कहेति खामेति य, पच्छा सा चेव घरसामिणी जाता, एवं कामावहो ॥

नमस्कार-फले त्रिदंड्यादि

॥५८९॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५९०॥

आरोग्गाभिरतीए एगं णगरं णदितडे, खरकंमितेणं सरीरचिंतानिग्गतेण नदीए वुज्झंतं मातुलिंगं दिट्ठं, रायाए उवणीतं, सूयस्स हत्थे दिण्णं, पमाणेण य अतिरित्तं, वण्णेण य गंधेण य अतिरित्तं, तस्स मणुस्सस्स तुट्ठो, भोगा दिण्णा, राया भणति- अण्णं णदीए मग्गह जाव न लद्धं, पत्थयणे गहाय पुरिसा गया, दिट्ठो वणसंडो, जो गिण्हति फलाणि सो मरति, आगता, रण्णो कहिये भणति- अवस्सं मम आणेतव्वं, अक्खपडिया वच्चउ, एवं गता आणेंति, एगो पविट्ठो बाहिं उच्छुभति, अण्णे आणेंति, सो मरति, एवं कालो वच्चति, सावगस्स परिवाडी जाया, गओ तत्थ, चिंतेति-मा विराहितसामण्णो कोई होज्जत्ति णिसीहियं णमोक्कारं करेंतो ढुक्कति, वाणमंतरस्स चिंता, संबुद्धो, वंदति, भणति- अहं तव तत्थेव साहरामि, गतो, रण्णो कहितो सब्भावो, तस्स ऊसीसए दिणे दिणे, एवं तेण जीतं अभिरती भोगा य लद्धा, जीविता णाम किं अण्णं आरोग्गं?, रायावि तुट्ठो॥ परलोए णमोक्कारस्स केण फलं पत्तं? –

वसंतपुरे राया, गणिया साविया, चंडपिंगलेण चोरेण समं वसति, एवं कालो वच्चति, अण्णदा तेण रण्णो घरं हतं, हारो णीणितो, भीतेहिं संगोविज्जति, अण्णदा ऊजाणीयाए गमणं, सव्वाओ गणियाओ विभूसियाओ वच्चंति, तीए सव्वाओ अतिसतामिचि हारो आविद्धो, जीसे देवीए सो हारो तीसे दासीए णाओ, रण्णो कहिओ य, केण समं वसती?, कहेति, चंडपिंगलो गहितो, सूले भिण्णो, तीए चिंतियं- मम दोसेण मारिओत्ति सा से णमोक्कारं देति, भणति य- णिदाणं करेहि जथा एतस्सेव रण्णो पुत्तो पच्चायामि, कतं, अग्गमहिसीत उदरे पच्चायातो, दारओ जातो, सा से साविया कीलावणधाती जाता। अण्णदा चिंतेति- कालो समो गब्भस्स य मरणस्स य, होज्ज कदाइत्ति रमावेंति भणति-मा रोव चंडपिंगल! चंडपिंगलत्ति, संबुद्धो,

नमस्कार फले आरोग्यादि

॥५९०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४०]मूलसूत्र [१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि-2

नमस्कार व्याख्यायां ॥५९१॥

राया मतो, सो राया जातो, सुचिरेण दोवि पव्वतियाणि । एवं सुकुलपच्चायाती तंमूलागं च सिद्धिगमणं ॥ अहवा बितियं उदाहरणं- मद्दुरा णगरी, तत्थ सावओ सव्वजीवस्सरण्णो, तत्थ हूंडि चोरो णगरं मुसति, अण्णदा गहितो, सूले भिण्णो, पडियरह बितिगावि से णज्जिहिंति, पच्छण्णा माणुसा पडितरंति, सो सावओ तस्स अदूरवत्ती वयति, सो भणति- सावगा ! तुमंसि अणुकंपओ, अहं तिसाइओमि, देहि मम पाणितं जा मरामी, सावओ भणति-इमं णमोक्कारं पढ जतो पाणितं आणेमि, जदि विस्सारेसि आणितंपि न देमि, सो ताए लोभयाए भणति, सावओ पाणितं गहाय आगतो, तं वेलं पाहामित्ति णमोक्कारं पढंतस्स विणिग्गतो जीवो, जक्खभवणे जक्खो जाओ, सो य सावओ तेहिं मणुस्सेहिं गहितो चोरभत्तदायगोत्ति, रण्णो णिवेदियं, भणति- एयंपि सूले भिंदथ, आघातणं णिज्जति, जक्खो ओधिं पउंजति, जाव सावगो य अप्पणो य सरीरं पेच्छति, ताहे पव्वयं उप्पाडेऊण णगरस्स ओप्पि ठितो, ता तुब्भे मम एयं भट्टारकं ण जाणह ?, खमावेह, मा से सव्वे चूरेहामी, ताहे खामेंति। देवणिसीयस्स पुव्वेण य से आयतणं कतं । एवं फलं भवति णमोक्कारेण परलोएवि ।

॥ इति नमोक्कारनिज्जुत्ती सम्मत्ता ॥

इदाणिं सुत्तं भणति—

नंदिमणुयोगदारं विहिवदुवघातियं च णातूण । कातूण पंचमंगलमारंभो होति सुत्तस्स ॥ १० ॥ १ ॥ १०२५ ॥
कतपंचनमोक्कारो करेति सामाइयंति सोऽभिहितो । सामाइयंगमेव य जं सो सेसं तओ वुच्छं ॥१०॥२॥१२०६॥

नमस्कार फले आरोग्यादि

॥५९१॥

***अत्र नमस्कार-निर्युक्ति समाप्ता:

*** अत्र अध्ययनं -१- 'सामायिकं' आरभ्यते ***

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

प्रागुपदिष्टं च--एत्थ य सुत्ताणुगमो सुत्तालावगनिप्फण्णो निक्खेवो सुत्तफासियनिज्जुत्ती समकं गमिष्यंतीति, तथात्र सामायिकसूत्रमुच्चारयितव्यं अक्खलितयं अमिलितं एते आलावगा जथा पेढियाए दव्वावस्सगे तहा विभासितव्वा जाव सामाइयपयं णोसामाइयपयं वा, तं च इमं 'करेमि भंते ! सामाइयं' मिच्चादि, ततो तंमि उच्चारिते केसिंचि भगवंताणं केई अत्थाधिगारा अधिगता भवंति, केई पुण अणधिगता, ततो तेसिं अधिगमत्थं अणुयोगो, एवं च 'जिणपवयणउप्पत्ती' एसावि गाथा एत्थ गता भविस्सतित्ति, सो य अणुयोगो एवं-संहिता य पयं चेव, पयत्थो पदविग्गहो। चालना य पसिद्धी य, छव्विहं विद्धि लक्खणं ॥ १ ॥ तत्थ पुव्वं संहिता, संहितेति कोऽर्थः ?, पूर्वोत्तरपदयोः वर्णयोः परः संनिकर्षः संहिता, अक्खलियपयोच्चारणमित्यर्थः, तत्थ संहिता-'करेमि भंते ! सामाइयं, सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणसा वयसा कायसा न करेमि न कारवेमि करेंतमवि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि' त्ति, एसा संहिता ॥

इदाणिं पदच्छेदो, करेमीत्ति पदं भदंत इति पदं सामाइयंति पदं सव्वंति पदं सावज्जंति पदं जोगमिति पदं पच्चक्खामित्ति पदं जावज्जीवाएत्ति पदं तिविहंति पदं तिविहेणंति पदं मणसत्ति पदं वयसत्ति पदं कायसत्ति पदं ण करेमित्ति पदं न कारवेमित्ति पदं करेंतमण्णं ण समणुजाणामित्ति पदं तस्सत्ति पदं भदंत इति पदं पडिक्कमामित्ति पदं निंदामित्ति पदं गरिहामित्ति पदं अप्पाणंति पदं वोसिरामित्ति पदं ॥ इदाणिं पयत्थो, पद्यतेऽनेनार्थ इति पदं, गम्यते परिच्छिज्जते इतियावत्, एत्थ य आयरिया पदत्थमेवं वण्णयंति--यथा किर सव्वा अत्थसिद्धी सविसए जहासत्तीए पवित्तिनिव्वित्तीहिं दिट्ठा, अतो एत्थंपि मोक्खत्थमु-

*** सामायिक अध्ययने प्रथमं सूत्रम् "करेमि भन्ते" निर्दिश्यते

ज्जुतो एवमब्भुवगमं दरिसेति, जधा--**करेमि भंते ! सामाइयमित्यादि**, तत्थ 'डुकृञ् करणे' तस्य गुणादौ कृते करोमीति भवति, करोमि अभ्युपगच्छामीत्यर्थः, भंतेत्ति भदंत भयान्त भवान्त इति पूज्यस्यामन्त्रणं, हे भदंत इत्यादि, सामायिकमिति णाणदंसणचरणाणि भावसमं तस्स आयः समाय इत्येतस्य इकण्प्रत्ययांतस्य नैरुक्तविधानेन सामायिकमिति भवति, तत्किमुक्तं ?-हे पूज्य ! ज्ञानदर्शनचारित्रलाभं अभ्युपगच्छामि, अनेन मोक्षसाधनज्ञानदर्शनचारित्रलाभविषयं प्रवृत्त्यभ्युपगमं दर्शयति, **सर्व**-शब्दोऽत्रापरिशेषवाची, **सावज्जमिति** अवद्यं--गर्हितं मिच्छत्तं अण्णाणं अविरती सह अवद्येन सावद्यस्तं, कोऽसौ ?-**योगः**-व्यापार इत्यर्थस्तं, किमिति ?-**पच्चक्खामित्ति** पच्चक्खाणं करेमि, प्रतीपमाख्यानं प्रत्याख्यानं, ज्ञपरिज्ञया परिज्ञानं प्रत्याख्यानपरिज्ञया परिहरणमित्यर्थः, तत्किमुक्तं ?-अपरिशेषं मिथ्यात्वाज्ञानअविरतिसहचरितं व्यापारं ज्ञात्वा निवर्तयामीति, अनेन तु संसारकारणमिथ्यात्वाज्ञानाविरतिसहगतव्यापारविषयं निवृत्त्यभ्युपगमं दर्शयति, नणु सावज्जजोगो तिकालविसओ संखातीतभेदो यतो कहं तस्स निरवसेसस्स पच्चक्खाणं ?, अशक्यमित्यभिप्रायः, किं च-तथाविधेन करणेण कत्ता कज्जं साहेति, न तं विणा, तदपि संख्यातीतभेदं, कस्यचित्कार्यस्य किंचित्साधकतमं, तदत्र नियतभेदं किं तथाविधं करणमित्याह--**जावज्जीवाए** इत्यादि, अत्र जावज्जीवाएत्ति न करेमि न कारवेमि करेंतंपि अन्नं न समणुजाणामि इत्यत्र योज्यते, यावत् परिमाणमर्यादावधारणेषु, जीव प्राणधारणे, जीवनं जीवो यावन्मम जीवनं जीवनपरिमाणं-जीवनमर्यादां, जीवनमात्रमित्यर्थः, किं ?, संख्यातीतभेदमपि जाहभेयविवक्षया **त्रिविधं**-त्रिप्रकारं करणकारणानुमतिलक्षणं सावद्यं योगं, करणस्याप्यनेकविधत्वेऽपि तथैव **त्रिविधेन** त्रिप्रकारेण, करणेनेत्यर्थः, तेनाप्यस्य कार्यस्य प्रसाधकतमेनैव **मणसा वयसा कायेण** एते विभासितव्वा, एतेषामेकैकेनैव, अत एव मणसा वयसा

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

कायेणेत्यत्र भिन्नविभक्तिको निर्देशः, न करेमि आत्मना न कारयामि परैः करेंतंपि अण्णं न समणुजाणामि, अपिशब्दात्कारयंतमवि समणुजाणंतमवि अण्णं ण समणुजाणामि, अन्यग्रहणात् एव अन्यपरंपरयापीति, तत्किमुक्तं ?-वर्तमानसमयादारभ्य यावन्मरणकाल एतावंतं कालं यावत्सावद्यं योगं करणकारणअनुमतिभेदात् त्रिप्रकारं त्रिविधेन करणेनानेनैवास्य प्रसाधकेन मनोवचनकायरूपेण एकैकेन न करेमि न कारयामि करेंतंपि अण्णं ण समणुजाणामीति, यश्चातीतकालविषयः तस्स पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि, पडिक्कमामित्ति प्रतीपं क्रमामि प्रतिनिर्वृत्ते वोसरामीतियावत् 'निंदा आत्मसंतापे' 'गर्हा प्रकाशने' आत्मसाक्षिकी निंदा, परसाक्षिकी गर्हा, तत्कोऽर्थः ?-योऽतीतकालविषयः त्रिविधः सावद्ययोगस्तस्मात् त्रिविधेन करणेन पडिनियत्तामि, तमेव चात्मसाक्षिकं निंदामि परसाक्षिकं गर्हामीति, अपराधपदविशुद्ध्यर्थं चात्मानं वोसिरामित्ति, अयमभिप्रायः-एवमपि यदा आत्मानं अपराधपदेहिं अविसुद्धं संभावयामि तदा अधारिहं पायच्छित्तं पडिवज्जामि, न तुण आतपडिबंधेण तं न पडिवज्जामि, अतो आतपडिबंधपरिहारेण पायच्छित्तपडिवत्तीए आलावो सिद्धो चेव भवतित्ति अप्पाणं वोसिरामीत्याह, अनेन च यथा शक्तिर्दर्शिता भवतीति पदार्थः । अण्णे पुण एत्थ केयी अवयवा अण्णधा संपवयंति वण्णयंति य, जथा किर करेमि भंते! सामाइयं तिविहं- नाणदंसणचरणभेदेणं, सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि तिविहं, मिच्छत्तअन्नाणअविरतिसहगतत्वात्सोऽपि त्रिविधः, मणवयकायवावारभेदेण वा तिविधो, तिविधेण मणसा करणकारणाणुमतिपवत्तेण, एवं वयसा कायेणवि, सामाइयं करेमि सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । सेसं पूर्ववत् ॥ अण्णे पुण-करेमि भंते ! सामाइयं जावज्जीवाए, सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, कहं ?, तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए कायेणं, वट्टमाणसमयादारभ्य जावज्जीवाए न करेमि जाव न समणुजाणामि, पुव्वकतस्स

पुण पडिक्कमामि जाव गरिहामि एवं संबंधयंति, शेषं पूर्ववत् । एवमाद्यन्यथाऽपि दृश्यते । एष पदार्थः, पदविग्रहो यत्र संभवति तत्र वक्तव्यः । इदानीं **सुत्तफासियनिज्जुत्ती** जा एतं सुत्तं अणुफुसतित्ति भणित्ता ततो पच्छा चालणा भण्णिहिति, एत्थ इमा सुत्तफासिए गाथा—

करणे भए य अंते सामाइय सव्वए य वज्जे य । जोए पच्चक्खाणे जावज्जीवाए तिविहेणं ॥१०॥४॥१०२८॥

एसा गाथा विभासितव्वा, तत्थ करणं छव्विहं, नामकरणं ठवणा० दव्व० खेत्त० काल० भावकरणं, तत्थ नामट्ठवणाओ गताओ,जाणगसरीरभवियसरीरवतिरित्तं दव्वकरणं दुविहं-सण्णाकरणं च णोसण्णाकरणं च, सण्णाकरणं अणेगविहं- जंमि जंमि दव्वे करणसंज्ञा भवति तं सण्णाकरणं, जथा- कडकरणं अट्ठकरणं पेलुकरणं एवमादि, णोसण्णाकरणं दुविहं-वीससाकरणं पयोगकरणं च, विगत ससना विससा, विगतप्रयोगकरणमित्यर्थः, तं दुविहं- अणादीयं सादीयं च, अणादीयं जथा धम्माधम्मागासादीणं, तेसु का करणविही ?, उच्यते- परप्रत्ययादुपचारतः करणं, अहवा धम्माधम्मागासाण य अण्णमण्णगमणं तं अणादीयं वीससाकरणं, अहवा धंमादीण य भवणं, एयं अणादीयं वीससाकरणं, सादीयं दुविहं- चक्खुफासियं अचक्खुफासियं च, चक्खुफासियं अब्भा अब्भरुक्खा एवमादि, चक्षुषा यन्न स्पृश्यते तदचक्षुःस्पर्शिकं, जथा परमाणुपोग्गलाणं दुपदेशियाणं तिपदेशियाणं एवमादीणं, एतेसिं जं संघातेणं भेदेणं संघातभेदेण वा करणं उप्पज्जति तन्न दीसति छउमत्थेणं तेण अचक्खुफासियं, बादरपरिणतस्स पुण अणंतपदेसियस्स चक्खुफासियं भवति । पयोगकरणं दुविहं- जीवपयोगकरणं अजीवपयोगकरणं च, जीवपयोगकरणं दुविहं- मूलपयोगकरणं च उत्तरपयोगकरणं च, मूलं नाम मूलमादिरित्यनर्थान्तरं, मूले पंच सरीराणि ओरालियादीणि, उत्तरपयो-

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

मकरणं नाम जं निप्फण्णातो उत्तरं निष्पज्जति, तं एतेसिं चेव ओरालियवेउव्वियआहारगाणं तिण्हाण उत्तरकरणं, सेसाणं णात्थि, एतं अट्ठविहं करणं। अहवा मूलकरणं अट्ठंगाणि, अंगोवंगाणि उवंगाणि य उत्तरकरणं, ताणि जथा- सीस १ मुरो २ दर ३ पट्ठी ४ बाहाओ दोण्णि ६ ऊरुया दोण्णि ८। एते अट्ठंगा खलु अंगोवंगाणि सेसाणि ॥१॥ १६० मा.। होंति उवंगा अंगुलि कण्णा नासा य पजणणं चेव। णहदंतकेसमंसू अंगोवंगेवमादीणि ॥ २ ॥ अहवा इमं उत्तरकरणं- दंतरागो कण्णवड्ढणं नहकेसरागो, एतं ओरालियवेउव्वियाणं, आहारए णत्थि एताणि, आहारगस्स पुण गमणादीणि, एस पुण विससो- ओरालियस्स चेव उत्तरकरणं विसेणं ओसहेण वा पंचण्हं इंदियाणं विणट्ठाण वा पुणो करणं निरुवहताण वा विणासणं, एवमादि। तत्थ पुण ओरालियवेउव्वियआहारगाणं तिण्हं तिविहं करणं- संघातकरणं परिसाडणकरणं संघातपरिसाडकरणं, उवरिल्लाणं दोण्हं सरीराणं संघातणा णत्थि, उवरिल्लाणि दो अत्थि, एताणि तिण्णिवि करणाणि कालतो मग्गिज्जंति--ओरालियसंघातकरणं एगसमयं, जं पढमसमयोववण्णस्स, जथा तेल्ले ओगाहिमओ छूढो तप्पढमताए आययति, एवं जीवोऽवि उववज्जंतो पढमे समये गेण्हति ओरालियपाओग्गाणि दव्वाणि, न पुण मुंचति किंचिवि, पडिसाडणा जहण्णेणं समयो उक्कोसेणवि समयो, मरणकालसमए एगंतसो मुयति, न गेण्हति, मज्झिमे काले किंचि गेण्हति किंचि मुयति, जहण्णेणं खुड्डगं भवग्गहणं तिसमयूणं, तिसमयूणं कहं ?, दो विग्गहंमि समया समयो संघातणाए तेहूणं। खुड्डागभवग्गहणं सव्वजहण्णो ठितीकालो ॥ ४ ॥ उक्कोसेणं तिण्णि पलितोवमाइं समयूणाणि, कहं ?, उक्कोसो समयूणो जो सो संघातणासमयहीणो। किह न दुसमयविहीणो साडणसमएऽवणीतंमि ? ॥ ५ ॥ भण्णंति- भवचरिमंमि विसमये संघातणपरिसाडणं चेव। परभवसमते साडणमतो तदूणो न कालोत्ति ॥ ६ ॥ जदि परपढमे साडो

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥५९७॥

निव्विगहतो य तंमि संघातो । णणु सव्वसाडसंघातणा उ समये विरुद्धाओ ॥७॥ आ० जम्हा विगच्छमाणं विगतं उप्पज्जमाणमुप्पण्णं । तो परभवादिसमये मोक्खादाणाणमविरोहो ॥ ८ ॥ चुतिसमये णेहभवो इहदेहविमोक्खतो जथातीते । जदि परहवोवि न तहिं तो सो को होतु संसारी ? ॥ ९ ॥ णणु जह विग्गहकाले देहाभावेवि परभवग्गहणं । तह देहाभावंमी होज्जेहभवोवि को दोसो ? ॥१०॥ आ०-जंपिय विग्गहकाले देहाभावेवि तो परभवो सो । चुतिसमएवि ण देहो ण विग्गहो जदि स को होतु ? ॥ ११ ॥ अंतरं- ओरालियसंघातकरणस्स जहण्णेणं खुड्डागभवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाणि पुव्वकोडिसमयाधियाणि, सव्वसाडस्स जहण्णेणं खुल्लागं भवग्गहणं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडिअहिताइं । कहं ?, संघातंतरकालो जहण्णतो खुड्डयं तिसमयूणं । दो विग्गहंमि समया ततिओ संघातणासमयो ॥ १२ ॥ तेहूणं खुड्डभवं धरित्तु परभवमविग्गहेणेव । गंतूण पढमसमये संघातयतो स विण्णेयो ॥ १३ ॥ उक्कोसेणं तेत्तीस समयाधिय पुव्वकोडि अधियाइं । दो सागरोवमाइं अविग्गहेणेह संघातं ॥१४॥ कातूण पुव्वकोडिं धरिउं सुरजेट्ठमातुयं तत्तो । भोत्तूण इहं ततिए समए संघातयंतस्स ॥१५॥ सव्वसाडस्स कहं- खुड्डागभवग्गहणं जहण्णमुक्कोसयं च तेत्तीसं । तं सागरोवमाइं संपुण्णा पुव्वकोडी य ॥ १६ ॥ इहाणंतरातीतभवचरिमसमये ओरालियसरीरसव्वसाडं कातूण खुड्डागभवग्गहणिएसु उववण्णो, तस्स पज्जंते सव्वसाडं करेति, ततो खुल्लागभवग्गहणमेव भवति, उक्कोसेणं पुण कोइ ओरालियसव्वसाडं कातूण तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु वेउव्विएसु उववण्णो, पच्छा तओ पुव्वकोडाउएसु ओरालियसरीरिसु उववण्णो, पुव्वकोडिअंते ओरालियसव्वसाडं करेतित्ति । इदाणिं उभयस्स अंतरं--जहण्णेण एक्कं समयं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाणि समयाधियाणि, कहं ?- उभयंतरं जहण्णं समयो निव्विग्गहेण संघाते । परमं सति-

करण-निरूपणं

॥५९७॥

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥५९८॥

समयाइं तेत्तीसं उदधिनामाइं ॥ १७ ॥ अणुभवितुं देवादिसु तेत्तीसमिहागतस्स ततियंमि । समए संघातयतो णेयाइं समयकुस-लेहि ॥१८॥ न्ति । वेउव्वियसंघातो जहण्णेण समओ उक्कोसेण दोण्णि समया, विउव्वमाणस्स अणगारस्स पढमे समए मरणं जातं देवेसु उववण्णो, तत्थवि पढमे समए संघातेति एस वितितोत्ति, परिसाडणा जहेव ओरालिए, संघातपरिसाडणा जहण्णेणं दस वाससहस्साइं तिसमयऊणाइं, एवं- ताव देवनारगेसु तिरियमणुएसु पत्थडं पडुच्च एगं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समउणाइं, कहं ?, उभयं जहण्ण समओ सो पुण दुसमय विउव्वियमयस्स । परमयराइं संघातसमयहीणाइं तेत्तीसं ॥१९॥ अंतरं सव्वबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंताओ जाव आवलियाए असंखेज्जतिभागे, कहं ? संघातंतरसमओ समयविउव्वियमयस्स तातियंमि । सो दिवि संघातयतो ततिए व मयस्स ततियंमि ॥ २० ॥ अविग्गहेण संघातयतो बितिओ संघातपरिसाडसमओ चेव अंतरं, उक्कोसं पुण धणस्सेइकालो । एवं देसबंधंतरंपि, साडस्स पुण जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं एवं चेव, कहं ?- उभयस्स चिरविउव्वियमयस्स देवे सविग्गहवतस्स । साडस्संतमुहुत्तं तिण्हवि तरुकालमुक्कोसत्ति ॥ २१ ॥ आहारगतस्स संघातो समओ, परिसाडणा जथा ओरालिए, संघातपरिसाडणा जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, अंतरं सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ,खेत्तओ अवड्ढं पोग्गल-परियट्टं देसूणं, एवं देसबंधन्तरंपि साडबंधन्तरंपीति । तेयगकम्मगाणं परिसाडणाय संघातपरिसाडणाए-तेयगसरीरं, जे कम्मत्ताए पोग्गले गेण्हति तेयगसरीरेण उण्हवेति ततो संघातं गच्छति, अयस्पिण्डवत् , एयं तेयगसरीरगं, अहवा जा सरीरुम्हा तेयगलद्धी वा, कम्मगसरीरं णाम अट्ठविहं कम्मं, कालो अणातीओ वा अपज्जवसितो अभवियाणं, अणातीओ वा सपज्जवसितो भवियाणं,

करण-निरूपणं

॥५९८॥

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥५९९॥

परिसाडणा तहेव समयो भवति, दोण्हवि अंतरं नत्थि, एतेसिं दोण्हवि अंगोवंगा णत्थि, अहवा तदंतर्गता एव तेजसकार्मका जीवप्पयोगकरणं, जतो जीवेण पयोगसा आत्मसात् नीयंते, आए वेइति। अहवा इमं जीवप्पयोगेणं निव्वत्तियं चउव्विहं करणं-संघातणाकरणं परिसाडणाकरणं संघातपरिसाडणाकरणं णेव संघातो णेव परिसाडो णोसंघातपरिसाडणाकरणं, जथा पडो संखो सगडं थूणत्ति यथासंख्यं, पडो संघातितो, संखो परिसाडेत्तूण घट्टितो, सगडं संघातपरिसाडणेण निव्वत्तियं, थूणा उभयनिसेहेण उद्धीकता, एवं वितिरिच्छीकता , एवमादि विभासा। अजीवपयोगकरणं अजीवे पयोगेण किरति जथा वण्णकरणाति जं वण्णं कुसुमचित्तकारकादीण, एवं गंधरसफासावि विभासितव्वा। एतं दव्वकरणं।

खेत्तकरणं खेत्तं आगासं तस्स किर करणं णत्थि, तहवि वंजणपरियावण्णं, जम्हा ण विणा खेत्तेण करणं कीरति, अहवा खेत्तस्सेव करणं खेत्तकरणं, वंजणपरियावण्णं नाम जं खेत्तंति अभिलप्पति, तंजहा-उच्छुखेत्तकरणमादी य, सालिखेत्तकरणं तिल-खेत्तकरणं एवमादि, अहवा जंमि खेत्ते करणं करेति वंणिज्जति वा। कालकरणं कालोऽवि अकित्तिमो, तथावि तस्स वंजणपरिया-वण्णं जं जावतिएण कालेण कीरति जंमि वा वंणिज्जति एवं ओहेण, णामओ पुण इमे एक्कारस करणा, तत्थ य गाथाओ--कालो जो जावतितो जं कीरति जंमि जंमि कालंमि। ओहेण णामओ पुण इमे उ एक्कारसकरणा ॥ १ ॥ बवं च बालवं चेव, कोलवं थी-विलोयणं। गरादि वणियं चेव, विट्ठी हवति सत्तमा ॥ २ ॥ सउणि चउप्पयनागं, किंच्छुग्घं करणं तथा। चत्तारि धुवा एते, सेसा करणा चरा सत्त ॥ २ ॥ किण्हचउद्दसिरत्तिं सउणिं पडिवज्जती सया करणं। एत्तो अहक्कमं खलु चउप्पयं नाग किंच्छुग्घं ॥ ३ ॥ सुचराष्टदिवैकरपूर्णदिवा, कृत्तरासदिवादरभूतदिवा। यदि चन्द्रगतिश्च तिथिश्च समा, इति विष्टिगुणं प्रवदन्ति बुधाः ॥४॥ पक्खतिहओ

करण-निरूपणं

॥५९९॥

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

दुगुणिया दुरूवरहिता य सुक्कपक्खंमि । सत्तहिते देवसियं तं चिय रूवाहितं रत्तिं ॥ ५ ॥ किण्हे दुरूवहीणा न कातव्वा, जे गता पक्खतिहयो वट्टमाणतिहिणा सह सत्तण्हं चलाण करणाण दत्तव्वता स सत्तहिं भागे हिते जं सेसं तं करणं, णो जं लद्धं तं कालकरणं ।

भावकरणं दुविहं-जीवभावकरणं च अजीवभावकरणं च, अजीवभावकरणं वण्णादी णेतव्वं, जीवभावकरणं दुविहं– सुतकरणं च नोसुतकरणं च , सुतकरणं दुविहं-लोइयं च लोउत्तरियं च , एक्केक्कं दुविहं-बद्धं अबद्धं च , बद्धं णाम जत्थ सत्थेसु उवणिबंधो अत्थि । अबद्धं जं एयं चेव विपरीतमिति, नत्थि उवणिबंधो । तत्थ बद्धसुतस्स करणं दुविहं-सद्दकरणं निसीहकरणं च, सद्दकरणं नाम जं सद्देहिं पगडत्थं कीरति, न पुण गोवितं, संकेतितं, जथा उप्पाएति वा भूतेति वा विगतेति वा परिणतेति वा उदात्ता अनुदात्ताः प्लुताश्च, निसीहं जं पच्छण्णं गोवितं संकेतितं, तत्थ सुत्ते अत्थे तदुभए य, जथा **निसीहणामं** अज्झयणं भवति, अहवा जथा अग्गेणीते विरिते अत्थिणत्थिप्पवायपुव्वे य पाढो-जत्थ एगो दीवायणो भुंजति तत्थ दीवायणसयं भुंजति जत्थ सयं दीवायणा भुंजंति तत्थ एगो दीवायणो भुंजति, एवं हंमइत्ति जाव तत्थ एगो दीवायणो हम्मति । सेत्तं बद्धकरणं, लोतियअबद्धकरणं बत्तीसं अड्डिताओ बत्तीसं पच्चड्डियाओ सोलस करणाणि, लोगप्पवाए वा एत्थ छट्ठाणाणि, तंजहा-विसाहं समपदं मंडलं आलीढं पच्चालीढं, दाहिणं पादं अग्गतोहुत्तं कातुं वामपादं पच्छओ हुत्ता ओसारेति, अंतरं दोण्हवि पादाणं पंच पदा, एयं आलीढं, एतं चेव विपरीतं पच्चालीढं, वइसाहं पण्हीओ अभिन्तराहुन्तीओ समसेढीओ करेति, अग्गिमतला बाहिरहुत्ता, मंडलं दोवि पादे दाहिणवामहुत्ते ओसारेत्ता ऊरुणावि आउण्टावेति जथा मंडलं भवति, अंतरं चत्तारि पादा, समपदं दोवि पादे समं णिरंतरं ठवेति, एताणि पंच

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

ठाणाणि, लोगप्पवादे सयणकरणं छट्ठं ठाणं। अरिहप्पवयणे पंच आदेससताणि, तत्थ एगं मरुदेवा, णवि अंगे णवि उवंगे पाठो अत्थि एवं- मरुदेवा अणादिवणस्सइकाइया अणंतरं उव्वट्टित्ता सिद्धत्ति, तहा सयंभूरमणमच्छाण पउमपत्ताण य सव्वसंठाणाणि णलयसंठाणं वलयसंठाणं मोत्तुं, करडकुरडा य कुणालाए, एते जथा भणामि-करडुकरडाण निद्धमणमूली वसही, देवयाणुकंपणं, रुट्ठेसु पन्नरसदिवसवरिसणं, कुणालाणगरिविणासो, ततो ततियवरिसे साएए नगरे दोण्हवि कालकरणं, अहे सत्तमपुढविकालनरगगमणं, कुणालानगरिविणासकालाओ तेरसमे वरिसे महावीरस्स केवलनाणुप्पत्ती, एतं अबद्धं, एतं सुतकरणं ॥ णोसुतकरणं दुविहं-गुणकरणं च जुंजणाकरणं च, गुणकरणं दुविहं-तवकरणं च संजमकरणं च, दोन्नि विभासितव्वा जहा ओहनिज्जुत्तीए। जुंजणाकरणं तिविहं-मणजुंजणाकरणं वयजुंजणाकरणं कायजुंजणाकरणं, .मणो सच्चादी ४, एवं वयीवि ४, कायो सत्तविधो ओरालियादि ॥

एत्थ कतरेणं करणेण अहिगारो ?, भावकरणेणं, तत्थवि सुतकरणेणं, तत्थवि सद्दकरणेणं, नोसुतेवि गुणकरणेणं, जुंजणाएवि जहासंभवं विभासेज्जा। तं इमाए पाहुडियाए अणुगंतव्वं। जथा-कताकतं १ केण कतं २ केसु व दव्वेसु कीरती ३ वावि। काहे व कारओ ४ णयतो ५ करणं कतिविहं ६ व कहं ७॥१०३९॥ ति, ग्रा इति सप्तपदा, तत्थ सामाइयं कतं कज्जति?, एत्थ नएहिं मग्गणा, जथा नमोक्कारे उप्पण्णाणुप्पण्णो, जदि उप्पण्णो कतस्स करणं नत्थि, अणुप्पण्णेऽवि ससविसाणादीणं जह नमोक्कारे, दारं। केण कतं सामाइयं?, अर्थं समाश्रित्य जिनवरैः, सुत्तं गुणहरेहिं। केसु दव्वेसु कीरति सामाइयं ?, तत्थ णेगमस्स उट्ठाणेणं बलेणं वीरिएणं पुरिसक्कारपरक्कमेणं मणुण्णेसु य दव्वेसु, जथा-मण्णुण्णं भोयणं भोच्चा, मणुण्णं सयणासणं। मणु-

ण्णंसि अगारंसि, मणुण्णं झायते मुणी ॥१॥ एवं णेगमो इच्छति, संगहादीया सेसा सव्वदव्वेसु, नो सव्वपज्जवेसु, जेण दव्वाण केइ पज्जवा सुभा केसि असुभा, सामाइयं च सुभपज्जवेसु कीरति, णो असुभपज्जवेसु, दव्वाणि पुण परिणामवसेणं सुभा असुभावि भवंति, सव्वदव्वाणिवि असुभपरिणामिहोतूण सुभपरिणामानि भवंति, दुगंधावि पुग्गला सुगंधत्ता परिणमंतीत्यादिवचनात्। दारं

कोह व कारओ भवति ?, एत्थ णयमग्गणा णेगमस्स उद्दिट्ठे सामाइए पढउ वा मा वा पढतु करेतु मा वा करेतु कारओ चेव, संगहववहाराणं वंदणगं दातूणं निव्विट्ठो गुरुपादमूले पढतु वा मा वा पढतु करेतु वा मा वा करेउ , कारतु चेव, उज्जुसुतस्स अपुव्वे सामाइयपज्जवे समए समए अक्कममाणस्स उवउत्तस्स वा सामाइयं भवति, अण्णे भणंति-तदा णो सामाइयं भवति, सम्मत्ते सामाइयं, तिण्हं सद्दणयाणं अपुव्वे सामाइयं, पज्जवे समए समए अक्कममाणस्स नियमा संमद्दिट्ठिस्स उवउत्तस्स नो सामाइयं, संमत्ते कारओ सामाइयस्स। एते चेव नया, अहवा इमं अट्ठविहं नेयाइयं लक्खणं , तंजहा—

आलोयणा य विणए खेत्त दिसाभिग्गहे य काले य। रिक्खगुणसंपदावि य अभिवाहारे य अट्ठमए॥ १० ॥ ४३ ॥

न्यायेन चरतीति नैयायिकः,एवंगुणसंपन्नाय एभिः प्रकारैः,एवं आलोइयपडिक्कंतस्स जो सामाइयं देति सो नायकारी नायवादी भवति, सा आलोयणा दुविहा- गिहत्थालोयणा संजतालोयणा य, गिहत्थे का आलोयणा ?, परिखिज्जति अरिहो सामाइयस्स अणारिहोत्ति, तत्थ गाथा- अट्ठारस पुरिसेसुं वीस इत्थीसु दस नपुंसेसु। पव्वावणाइ अणारिहा०, कातुं अरिहातु वा ?, विवरीतं, संजतस्स का ?, उवसंपदा, सामाइयस्स अत्थनिमित्तं उवसंपज्जति सो आलोयाविज्जति, अहवा अणागतकालअत्थं सूएति,

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥६०३॥

जथा होहिंति ते मणूसा जेसिं सामाइयस्स सुत्तनिमित्तं उवसंपदा होहिति, से य अद्धपढितेवि संजता चेव, जुगमासज्ज तेसिं सोधीकए भविस्सति, जो जत्तियं जाणति सो तावतिएणं पडिक्कमति जाव न समाणेति, जथा पुव्वं सामाइयं चोद्दसहिं पुव्वेहिं विभासिज्जति, संपति थोवेणं, तथावि उवसंपज्जिज्जति, एवं एस्सेऽवि काले होहिति, सा य सामाइयस्स तिण्हं निमित्तं उवसंपज्जिज्जति- सुत्तस्स अत्थस्स उभयस्स इति, सो चउव्विहं सोधिं करेति- दव्वातियारस्स खेत्त० काल० भावतियारस्सत्ति, पायच्छित्तं दिज्जति, दव्वं चेतणमचेतणं वा, खेत्ततो जणवतं वा अद्धाणं वा, कालो सुभिक्खं दुब्भिक्खं वा, भावतो हट्ठेण वा गिलाणेण वा, एवं आलोइए विणीतस्स दिज्जती, णो अविणीतस्स, सो जथा-अणुरत्तो भत्तिगतो अमुई अणुयत्तओ विसेसंणू। उज्जुत्तमपरितंतो इच्छितमत्थं लभति साधू ॥ १ ॥ एतव्विवरीतस्स न दातव्वं, दारं ॥ केरिसके खेत्ते तप्पढमताए सामाइयं कातव्वं, तं दुविहं पण्णत्तं-पसत्थं अपसत्थं च, तत्थ अपसत्थं-भग्गघरं तणरासी० एवमादि अमणुण्णा। पसत्थं चेतितघरं चेतियरुक्खं वा, गाथा-उच्छुवणे सालिवणे पउमसरे पुप्फफलितवणसंडे। गंभीरसाणुणादे पदाहिणावत्तउदगादी ॥ १ ॥ दारं ॥ दिसाभिग्गहो- तिण्णि दिसाउ अभिगिज्झ उद्दिसितव्वं--पुव्वं वा उत्तरं वा चरिन्तियं वा, चरेंतिया जाए दिसाए तित्थगरो मण० ओहि० चोद्दस० दस० णव० जाव एगपुव्वी, जो वा जुगप्पहाणो आयरिओ जाए दिसाए। दारं ॥ कालो पडिकुट्ठेल्लयदिवसे वज्जेज्जा, अट्ठमिं च नवमिं च छट्ठिं च चउत्थिं बारसिंपि दोण्हंपि पक्खाणं, पसत्थेसु मुहुत्तादिसु, तव्विवरीते ण वट्टति, रिक्खेसु केसु ?-मिगसिर अद्दा पूसो तिण्णि य पुव्वाइं मूलमस्सेसा। हत्थो चित्ता य तथा दस विद्धिकराइं नाणस्स ॥ १ ॥ जस्स वा जत्थ अणुकूलं, विवरीतमप्पसत्थं, अहवा-संझागतं रविगतं विड्डेरं सग्गहं विलंबिं च। राहु-

कृताकृता-दिनिरूपणं

॥६०३॥

सामायिक व्याख्यायां ॥६०४॥

हतं गहभिण्णं च वज्जते सत्त नक्खत्ते ॥ १ ॥ दारं ॥ गुणसंपदा णाम पुव्वं विणयो, जदि विणीतो इमे य से गुणा भवंति तो उद्दिसति, तंजथा-**पियधम्मो दढधम्मो संविग्गो वज्जभीरु असढो य । खंतो दंतो दविमादि थिरव्वत जितिंदिओ उज्जू ॥ १ ॥ असढस्स तुलसमस्स य साधुसंगहरतस्स (अममस्स)। एसो गुणसंपण्णो तव्विवरीओ असंपण्णो ॥ ४ ॥** दारं ॥ अभिव्वाहरो नाम पसत्थेसु सउणेसु अभिनिव्वाहारन्तेसु, अहवा उद्दिसंतो अभिलवति कालियसुते-सुत्तेणं अत्थेणं तदुभएणं उद्दिसामि, दिट्ठिवादे दव्वेहिं गुणेहिं पज्जवेहिं । दारं ॥

इदाणिं करणं कतिविहंति दारं, आयरियस्स चउव्विहं, तंजथा- उद्देसणाकरणं समुद्देसणाकरणं वायणाकरणं अणुण्णाकरणं, सीसेवि चउव्विहं, तंजथा- उद्दिसिज्जमाणकरणं समुद्दिस्समाणिज्जकरणं वाइज्जमाणकरणं अणुण्णविज्जमाणकरणं । दारं ॥ **कहंति** सामाइयस्स करणं कहं संभवति, सामाइयस्स आवरणे णाणावरणं दंसणावरणं च, तेसिं दुविहाणि फड्डगाणि- देसघातीणि य सव्वघातीणि य, सव्वघातिफड्डएहिं उदिण्णेहिं सव्वेहिं उग्घातिएहिं देसघाइफड्डएहिं अणंतेहिं उग्घाइएहिं अणंतगुणपरिवड्ढीए समए समए विसुज्झमाणो २ पढमअक्खरलाभं ककारलाभं भवति, ततो पच्छा अणंतगुणविसोहीए विसुज्झमाणो रेकारं लभति, एवं सेसक्खरेऽवि । **एवं करणं सम्मत्तं** ॥

'करेमि भंते ! सामाइक'मिति सीसो सामाइयं करेतुकामो गुरुं आमंतेति, भंतेत्ति 'भदि कल्याणे सौख्ये च' अहो कल्याणवंत इत्यामंत्रणं करोति, पाइतसेलीए वा भयस्यांतो गतो इति भयांतो भवतित्ति, 'भी भये' तस्स छव्विहो निक्खेवो नामादि,

आचार्यादि करणं लाभहेतुः भदन्त-व्याख्या

॥६०४॥

दव्वभयं भयमोहणीयं कम्मं बद्धं न ताव उदिज्जति, अण्णे भणंति- जो जस्स दव्वस्स बीभेति सचित्तादिस्स, खेत्तभयं जंमि खेत्ते, जो वा जस्स खेत्तस्स बीभेति, जंमि वा खेत्ते भयं वण्णिज्जते, एवं कालेवि भाणितव्वं, जच्चिरं वा कालं बीभेति, भावभयं- भयमोहणिज्जेणं कम्मेणं उदिण्णेणं सत्तविहं, तंजहा- इहलोगादी, इहलोगभयं जं पुरिसो पुरिसस्स बीहेति १ परलोगभयं- सीहवग्घदेवादीणं जं बीभेति २ आदाणभयं जो आदेयस्स चोरादीणं बीभेति ३ एवं चेव अगुत्तिभयं, नगरपाकारो आदाणभएण कीरति ४ अकस्माद्भयं जथा विज्जुमाइओ तथा मरणमिति महब्भयं 'नराणां०' वृत्तं, दोवि एक्कं ५ वेदणभयं सीतादीणं बीभेति ६असिलोगभयं-जदि एवं काहामि ता मे अयसो होहितित्ति बीभेति ७ एतस्स सत्तविहस्स अंतं गतो भदंतो। अहवा भवान्तो, सो य भवो चउव्विहो-नामादि, दव्वभवो एगभवियादी, भावभवो- चउव्विहो संसारो, जो चउगइस्स भवस्स अंतं गतो सो भवंतो, भवानामंते वर्त्तते, कथमसावंते वर्तते ?, अंत इव अंतो। सो अंतो छव्विहो, नामट्ठवणाओ गताओ, दव्वस्स अंतो घडस्स पडस्स एवमादि, खित्तंतो जथा तिरियलोगंतो उड्ढ०, खेत्तं वा विणट्ठं चिराणगं तथावि सो अंतो, कालंतो वासंतो जाव मुहुत्तस्स अन्तो एवमादि, भावंतो जो जस्स उदतियादिस्स भावस्स सव्वंतिमे कंडए वट्टति। अहवा भंतो सक्कएण भ्रान्तो, सो छव्विहो, दव्वभंतो जो जातो दव्वाओ भ्रांतः, न याणइ किं तं अण्णंति ?, अहवा जो जातो दव्वाओ भ्रष्टः, खेत्ताओ गामाओ नगराओ एवमादि दिसामोहेण वा, कालाओ हेमंताओ साहरिओ वा अण्णंमि काले, मूढो वा कालं न याणाति, भावभ्रान्तो दुविहो- ठाणभंतो गुणभंतो य, ठाणभंतो ईसरतलवरादिट्ठाणाओ, गुणभंतो दुविहो- अप्पसत्थो गुणभंतो णाणादिभंतो, पसत्थो अण्णाणादिभंतो ॥ सत्तभयविप्पमुक्केण अधिगारो, भयंतेणवि भवंतेणवि, अप्पसत्थगुणभंतेणं भदंतेण य। एरिसयं को भणति करोमि भंते सामाइयं?, गोतमसासी भट्टारगं

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

भणति, सेसगा अप्पणो आयरिए, आह शिष्यः--यदा परोक्षो गुरुस्तदा कथमारभ्यते इति, उच्यते-दुविहः सेवा-पच्चक्खा य परोक्खा य, पच्चक्खा रायादीणं, परोक्खा अण्णत्थ गतस्सवि तस्स आणं अणुपालेति, अहवा जथा विज्जा परिजविज्जइ, एवं लोगुत्तरेवि पच्चक्खे परोक्खेवि तंमि भावं निवेशयति, यथा विद्यां साधयन् पूर्वाचार्यान् मनसीकरोति, एवं अम्हं, अण्णेसिं पुण अण्णहावियं, ते आहुः--अप्पाणं चेव भणति- करेमि भंते सामाइयंति, जस्सवि जातिस्सरणं सोवि पुव्वायरियं आमंतेति ॥ भद्दंतो गतो ।

इदाणिं सामाइयं, तस्य प्रकृतिप्रत्ययविभागं दर्शयति- तत्थ पगती सामं समं च संमं, पच्चओ इकमिति, तत्थ प्रकृतिप्रत्ययद्वितयं सामातियस्स एगट्ठं, नामप्रकृतिप्रत्ययाभ्यां एकोऽर्थः साध्यते, अहवा सामं समं च संमं एते शब्दा इकमित्यनेन सह गता सामाइयस्स एगट्ठा भवंति, सामाइकार्थं प्रतिपादयंतीत्यर्थः, तत्थ मूलवत्थू चत्तारि विभासितव्वा । सामं चउव्विहं, णामट्ठवणाओ गताओ, दव्वसामं जाणि मधुरपरिणामीनि दव्वाणि, भावसामं आओवम्मेण सव्वसत्ताणं दुक्खस्स अकरणं, अकरणं नाम परिहरणं, सामेण ताव गिण्हाहि, मधुरेणेत्यर्थः, अतः सव्वसत्तेसु महुरभावत्तणं भावसामं । संमंपि चउव्विहं, दो गताणि, दव्वसंमं तुला कोकासचक्कं वा, भावसंमं जो भावो इतो ततो न पलोट्टति, रागाइहिंवि आयभावाओ ण चालिज्जइ, एवं रागदोसमाध्यस्थ्यं भावसामाइयं तं । इक्कं चउव्विहं, दो गताणि, दव्वइक्कं जथा दोरे हारस्स पोयणं मणियाण वा, भावइक्कं भावसामादीण जो आयो तस्स पवेसणं, तत्परिणमनमित्यर्थः ।

इदाणिं सामाइयस्स एकार्थाभिधायकाः शब्दा उच्यंते, जथा- चंदो ससी सोमो उडुपती एवमादी, अभिहाणकतो अत्थविसेसोवि भवति, तंजथा-समता समत्त पसत्थ संति सिव हित सुहं अनिंदं वा अदुगुंछितमगरहित अणवज्जं चेव एकट्ठा

॥६०६॥

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥६०७॥

॥१० ॥ ५६ ॥ १०४३ ॥ एत्थ अक्खेवाभिप्पायेण पुच्छति-को कारओ ?, उच्यते, करेंतो, कार्यं कुर्वन्नित्यर्थः, किं कज्जं ?, भण्णति, जं तु कीरति तेणं, यत् कर्त्रा निवर्त्यते, तुशब्दात्किं करणं येन कर्ता कार्यं निर्वर्तयति, यद्येवं ततः किं कारयो य करणं च होति ?, तंजथा- अण्णमण्णं ते, चशब्दात्कर्म च, अयमभिप्रायः- जदि कारओ य कंमं च करणं च अणण्णं तो करणं ण भवति, जेण अणण्णं ते एते विभागा कहं भविस्संति ?, अतः सामाइयं जीवस्स किं एगत्ते वट्टति ?, अण्णत्ते वट्टइ ?, जइ एगत्ते तो करणं नत्थि, न हु लोणं लोणिज्जति न हु तुप्पिज्जइ घतं व तेल्लं वा । जदि अण्णं ते तेण आया सामाइयं न भवति, जथा घडकारओ घडो न भवति । अत्रोच्यते—

आया हु कारओ० ॥ १०-५९ ॥ १०४७ ॥ एत्थ सामाइयकरणप्रस्तावे आत्मैव कारकः, सामाइयं कंमं, करणं च आत्मैव, णणु कहं एगो आया कारओ करणं कंमं च भविस्सति ?, उच्यते, परिणामे सति आत्मा सामाइकमेव, तुशब्दात्करणमेव, अयमभिप्रायः-एकोऽप्यात्मा कर्तृपरिणामे सामाइकपरिणामे करणपरिणामे च सति कर्तृकर्मकरणव्यपदेसावह इति, णणु किं एकस्यापि परिणामे सति एते व्यपदेशा दृष्टाः ?, उच्यते, एगत्ते दृष्टाः, जह मुट्ठिं करेति, यथा देवदत्तः हस्तेन मुष्टिं करोति , न च देवदत्तहस्तमुष्टयो भिन्नाः, किं तु परिणामस्तथा, एवं भिगुडिं करोति रोसं करोति अप्पाणं पत्तं करेति, जथा- अप्पाणमेव दमए, अप्पा हु खलु दुद्दमो । अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सि लोए परत्थ य ॥१॥ एवं ता अण्णत्तेवि करणं दिट्ठं । पर आह-तो किं कारक कारणकंमाणं अणण्णत्तमिच्छामो ?, उच्यते, कत्थवि अण्णत्तंपि, जथा अत्थंतरे घडकरणं, घडादिकरणं अत्थंतरेपि दिट्ठं यथा कुलालश्चक्रचीवरादिना घटं करोति, एतेषां भिण्णता । णणु जदि एवं तो सामाइककरणे किमिति पिहत्तता नेष्यते ?, उच्यते-दव्व-

कारकाद्यन्यान्यत्वे

॥६०७॥

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥६०८॥

स्थंतराभावे गुणस्स किं केण संबद्धं ?, अयमभिप्रायः-एतद्धि करणं गुणो, अपि च यदि द्रव्याद्भिण्णो गुणो नेष्यते ततः कस्य केन संबंधः स्यादिति, सामाइयंति गतं ।

इदाणिं सव्वं, सत्तविहं तं०-नामसव्वगं ठवणस० दव्वस० देसस० निरवसेस०सव्वधत्तास०भावसव्वगमिति, नामस्थापने पूर्ववत् , दव्वसव्वे चत्तारि विकप्पा, तंजहा-सकलं दव्वं देससव्वं १ असकलं दव्वं दव्वसव्वं तु २ , सकलदव्वदेसो दव्वदेससव्वं ३ असकलदव्वदेसो दव्वदेससव्वं ४ ॥ अत्र दृष्टान्तः-प्रकारकात्स्न्यैविवक्षायां समस्तप्रकारं सकलं पृथिव्यादिद्रव्यं द्रव्यसर्वं द्रव्याकात्स्न्यैविवक्षायां तु असमस्तप्रकारमपि पृथिवीत्वाद्यन्यतरप्रकारापन्नप्रकारापेक्षया असकलमपि पृथिव्यद्यन्यतरत् द्रव्यं द्रव्यापेक्षया द्रव्यसर्वं, एवं सकलदव्वदेसो असकलदव्वदेसो य विभासितव्वो । अण्णे पुण भणंति-दविते चतुरो भंगा-'सव्वमसव्वे य दव्वदेसे य' त्ति, एत्थ इमा भावणा- इह जं विवक्खितं दव्वं अंगुल्यादि तं परिपुण्णमणूणं सएहिं अवयवेहिं सर्वमुच्यते, सकलमित्यर्थः, एवं तस्स चेव दव्वस्स कोइ देसो स्वावयवपूर्णतया यदा सकलो विवक्ष्यते तदा देसोवि सर्वं एव, उभयस्मिन् द्रव्ये तदेसे च सर्वत्वं, तयोरेव यथास्वमंपरिपूर्णतायामंभिसंबन्धः, ततो चतुर्भंगी-दव्वं सव्वं, दव्वमसव्वं, देसो सव्वो, देसो असव्वो, एत्थ यथाक्रममुदाहरणं-संपुण्णं अंगुलीदव्वं सर्वं तदेव देशोनं दव्वमसव्वं, तथा देसो सव्वं तं संपुण्णं देससव्वं, असंपुण्णं अदेससव्वं । आदेससव्वगं जथा सव्वो गामो आगतो, सव्वो कूरो जिमितो, सव्वभवासिद्धिया सिज्झिहिंति, आदेसो नाम उवयारो ववहारो, सो य बहुतरेसु पहाणेसु वा आदिस्सति देसेवि । निरवसेससव्वगं दुविहं-सव्वापरिसेससव्वगं च तदेसापरिसेससव्वगं च,सव्वापरिसेससव्वगं जथा सव्वदेवाऽणिमिसणयणा,तदेसापरिसेससव्वगं सव्वे असुरकुमारा काला विंबोट्ठा,तेषामेव देवानां देसो विभागस्तदेशः।

सर्वपद-व्याख्या

॥६०८॥

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥६०९॥

सव्वधत्तासव्वगं नो सव्वधत्तासति पडोयारो आहितत्ति वदेज्जा,ता सव्वधत्ता दुपडोयारो आहितत्ति वदेज्जा, तंजथा-जीवा य अजीवा य, जम्हा जं किंचि धरति तं सव्वं जीवा अजीवा य सव्वं धरेतीति सव्वधत्ता। दव्वसव्वगस्स सव्वधत्तासव्वगस्स य को विसेसो ?, सव्वधत्तेहिं सव्वं संगहितं, दव्वसव्वगेण घडपडादीया सव्वदव्वा चेव, भावसव्वगसव्वो उदइभावो सुभो असुभो य उदयलक्खणो, उवसमिओ सव्वो सुभो, उवसमलक्खणो उवसमिओ, सव्वो सुभो उवसमलक्खणो, खाइओ सव्वो सुभो अणुप्पत्तिलक्खणो, खाइओवसमिओ सव्वो सुभो असुभो य देसविसुद्धिलक्खणो, पारिणामिओ सव्वो सुभो असुभो य परिणामलक्खणो ॥ एत्थ निरवसेससव्वगेण अहिगारो, अण्णेहिवि जहसंभवं विभासितव्वो। इदाणिं अवज्जंति, तत्थ गाधा—

कम्ममवज्जं जं गरहितं च लोहादिणो व चत्तारि ॥ इति, एत्थं कम्मबंधो सव्वं वा पगतिट्ठितिअणुभागपदेसकम्मं तं अवज्जं, उक्तं च-"**पावे वज्जे वयरे पंके पणये खुहे दुहमसाते। संगे धुण्णे य रए कंमे कलुसे य एगट्ठा ॥१॥**" अहवा जे गरहितं वत्थु, गरहितंति वा अकथ्यंति वा अविधित्तंति वा परिहरणीयंति वा एगट्ठा, अहवा कोहादिणो चत्तारि कसाया, एतेहिं सह यो योगः वक्ष्यमाणलक्खणः 'पच्चक्खाणं हवति तस्स' त्ति अयमभिप्रायो- यो हि कम्मसहगतो योगो तस्सवि निरवसेसस्स पच्चक्खाणं भवति अयोगिं पडुच्च, यतो योऽविय कसायसहगतो तस्सवि पच्चक्खाणं भवति, अहक्खायचरित्तं पडुच्च यो पुण गरहितसहगतो योगो तस्स निरवसेसस्स पच्चक्खाणं भवति, सामाइयसंजताओ जाव अहक्खायचरित्ता इति ॥

इदाणिं जोगोत्ति, युज्यत इति योगः, दव्वजोगो तिण्हं चउण्हं वा जोगाणं जोगो। अहवा मणवइकायपायोग्गाणि दव्वाणि भावयोगो-"**योगो विरियं थामो उच्छाह परक्कमो तहा चेट्ठा। सत्ती सामत्थंति य योगस्स हवंति पज्जाया ॥१॥**"

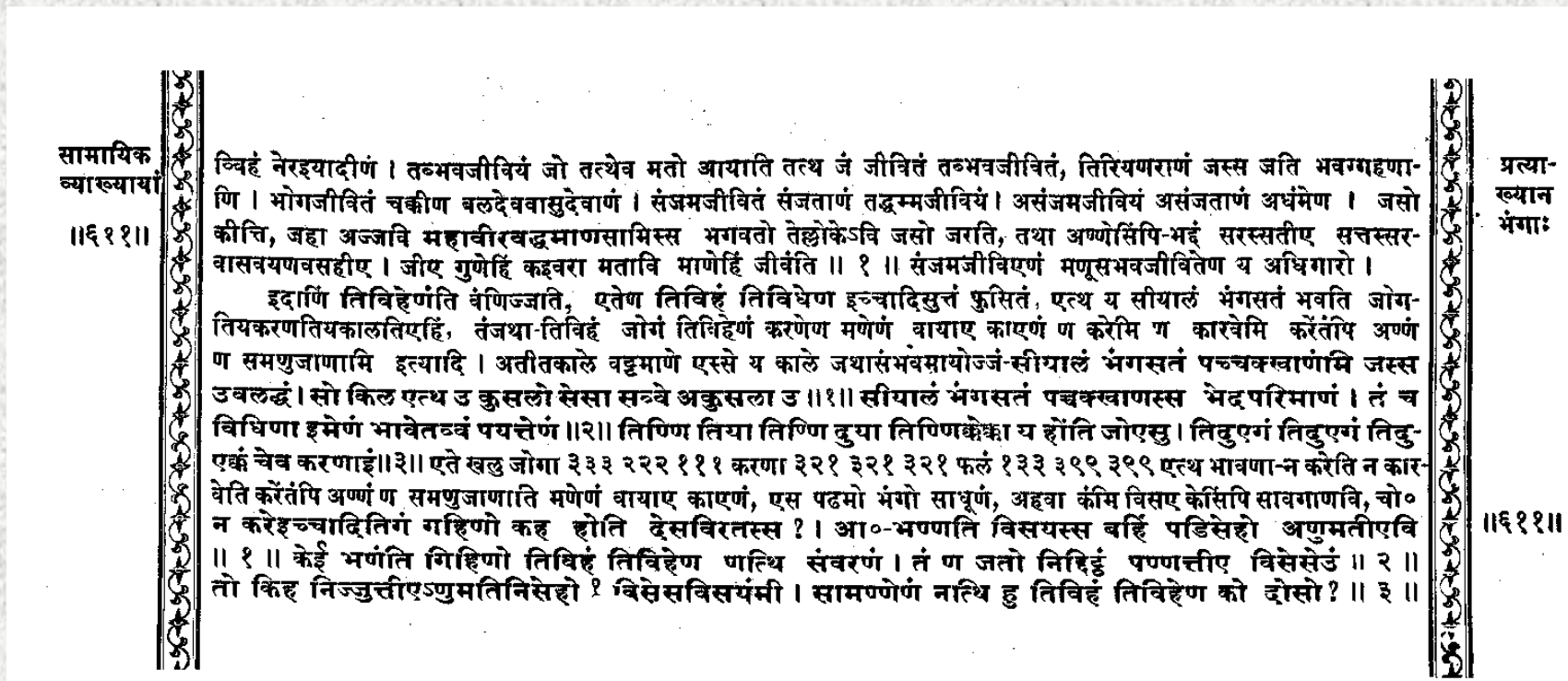
अवद्ययोग-पद व्याख्या

॥६०९॥

सो य संमत्तादिअणुगतो पसत्थो , मिच्छत्तअण्णाणअविरति० अपसत्थो ।

इदाणिं पच्चक्खाणं , तं छव्विहं, दो गताणि, दव्वपच्चक्खाणं रयहरणेणं०अणुवउत्तो वा, जो वा सचित्तादिदव्वं पच्चक्खाति निण्हगादीणं वा, एवमादि दव्वपच्चक्खाणं । खेत्तपच्चक्खाणं खेत्ते पच्चक्खाणं निव्विसयादिगमणं एवमादि । अद्धिच्छपच्चक्खाणं अतित्थ० बंभणाण पडिसेहो न देमित्ति । भावपच्चक्खाणं दुविहं-सुतपच्चक्खाणं च णोसुत्तपच्चक्खाणं च, सुतपच्चक्खाणं दुविहं-पुव्वसुतपच्चक्खाणं णोपुव्वसुतपच्चक्खाणं च, पुव्वसुतपच्चक्खाणं पुव्वं, णोपुव्वसुतपच्चक्खाणं अणेगविहं आतुरपच्चक्खाणादीयं, नोसुतपच्चक्खाणं दुविहं-मूलगुणपच्चक्खाणं उत्तरगुणपच्चक्खाणं, मूलगुणा साधूण सावगाण य भाणितव्वा, उत्तरगुणा विभासितव्वा । दव्वभावपच्चक्खाणे उदाहरणं रायभूता, वरिसं मंसं न खाइया, पारणगे अणेगाणं जीवाणं घातो कतो, साहूहिं बोहिता पव्वइया, पुव्वं दव्वपच्चक्खाणं पच्छा तीसे भावपच्चक्खाणं, भावपच्चक्खाणस्स अत्थो पडिनियत्तामि-अकरणताए अब्भुट्ठेमित्ति एवमादि, अतो उवसंतो पच्चक्खाणं भवतित्ति। पच्चक्खाणंति गतं । इदाणिं जावज्जीवाएत्ति, जावदव्वधारणंमी जीवणमवि पाणधारणे भणितं । अप्पाण धारणाओ पावनिव्वत्ती इहं अत्थो ॥ १०५४ ॥

तं जीवितं दसविहं, तंजथा-नामजीवितं एवं ठवणा० दव्व० ओह० भव० तब्भव० भोग० संजम० असंजमजीवितं जसकित्तीजीवितं, दो गताणि, दव्वजीवितं तिविहं- जेण जस्स सचित्तादिणा जीतमायत्तं, सचित्तं जथा-मम पुत्तेण जीतमायत्तं, अचित्तेण हिरण्णादिणा जीतमातत्तं, मीसेण सचामरआसादिणा । अहवा इमं तिविहं-दुपदस्स चतुप्पदस्स वा अपदस्स वा जं जीवितं, अहवा जीवपायोग्गा दव्वा दव्वजीवितं । ओघजीवितं नाम सव्वे संसारत्था जीवा आउसद्दव्वजीवियाए जीवंति । भवजीवितं चतु-



सामायिक व्याख्यायां ॥६११॥

व्विहं नेरइयादीणं । तब्भवजीवियं जो तत्थेव मतो आयाति तत्थ जं जीवितं तब्भवजीवितं, तिरियणराणं जस्स जति भवग्गहणाणि । भोगजीवितं चक्कीण बलदेववासुदेवाणं । संजमजीवितं संजताणं तद्धम्मजीवियं । असंजमजीवियं असंजताणं अधंमेण । जसो कीत्ति, जहा अज्जवि महावीरवद्धमाणसामिस्स भगवतो तेल्लोक्केऽवि जसो जरति, तथा अण्णेसिंपि-भद्दं सरस्सतीए सत्तस्सरवासवयणवसहीए । जीए गुणेहिं कइवरा मताविं माणेहिं जीवंति ॥ १ ॥ संजमजीविएणं मणूसभवजीवितेण य अधिगारो ।

इदाणिं तिविहेणंति वेणिज्जाति, एतेण तिविहं तिविधेण इच्चादिसुत्तं फुसितं, एत्थ य सीयालं भंगसतं भवति जोगतियकरणतियकालतिएहिं, तंजथा-तिविहं जोगं तिविहेणं करणेण मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करेंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि इत्यादि । अतीतकाले वट्टमाणे एस्से य काले जथासंभवमायोज्जं-सीयालं भंगसतं पच्चक्खाणंमि जस्स उवलद्धं । सो किल एत्थ उ कुसलो सेसा सव्वे अकुसला उ ॥१॥ सीयालं भंगसतं पच्चक्खाणस्स भेदपरिमाणं । तं च विधिणा इमेणं भावेतव्वं पयत्तेणं ॥२॥ तिण्णि तिया तिण्णि दुया तिण्णिक्कगा य होंति जोएसु । तिदुएगं तिदुएगं तिदुएक्कं चेव करणाइं॥३॥ एते खलु जोगा ३३३ २२२ १११ करणा ३२१ ३२१ ३२१ फलं १३३ ३९९ ३९९ एत्थ भावणा-न करेति न कारवेति करेंतंपि अण्णं ण समणुजाणाति मणेणं वायाए काएणं, एस पढमो भंगो साधूणं, अहवा कंमि विसए केसिंपि सावगाणवि, चो० न करेइच्चादितिगं गहिणो कह होति देसविरतस्स ? । आ०-भण्णति विसयस्स बहिं पडिसेहो अणुमतीएवि ॥ १ ॥ केई भणंति गिहिणो तिविहं तिविहेण णत्थि संवरणं । तं ण जतो निद्दिट्ठं पण्णत्तीए विसेसेउं ॥ २ ॥ तो किह निज्जुत्तीएऽणुमतिनिसेहो ? विसेसविसयंमी । सामण्णेणं नत्थि हु तिविहं तिविहेण को दोसो ? ॥ ३ ॥

प्रत्याख्यान भंगाः ॥६११॥

सामायिक व्याख्यायां ॥६१२॥

पुत्ताइसंतइणिमित्तमेत्तमेगादसिं पवण्णस्स। जंपंति केइ गिहिणो दिक्खाभिमुहस्स तिविहेणं ॥ ४ ॥ आह कहं पुण मणसा कूरणं कारावणं अणुमती य। जह वतितणुजोगेहिं करणादी तह भवे मणसा ॥ ५ ॥ तयहीणत्ता वइतणुकरणाइणं तु अहव मणकरणं। सावज्जजोगमणणं पण्णत्तं वीतरागेहिं ॥ ६ ॥ कारवणं पुण मणसा चिंतेति करेतु एस सावज्जं। चिंतेती य कते पुण सुट्ठु कतं अणुमती एसा ॥७॥ इदाणिं बितियभेदो--न करेति न कारवेति करेंतंपि अण्णं ण समणुजाणति मणेणं वायाए, एस एक्को १, तथा मणेणं काएणं एस बितिओ २ तथा वायाए काएणं एस ततिओ३, बितिओ मूलभेदो गतो। इदाणिं ततिओ-न करेति न कारवेति करेंतंपि अण्णं ण समणुजाणति मणेणं १ वायाए बितिओ २ काएण ततिओ ३ तितएवि मूलभेदो गतो। इदाणिं चउत्थो-न करेति न कारवेति मणेणं वायाए काएणं एक्को, न करेति करेंतं ण समणुजाणति बितिओ २ न कारवेति करेंतं नाणुजाणति ततिओ ३, एस चउत्थो मूलभेदो। इदाणिं पंचमो-न करेति न कारवेति मणेणं वायाए एस एक्को, न करेति करेंतं नाणुजाणति एस बितिओ, न कारवेति करेंतं णाणुजाणए एस ततिओ, एवं एते तिण्णि भंगा मणेणं वायाए लद्धा, अण्णेवि तिण्णि मणेणं काएण एमेव लब्भंति, तथाऽवरेवि वायाए काएण य लब्भंति तिण्णि, एवमेव गते सव्वे णव, एवं पंचमोप्युक्तो मूलभेद इति। इदाणिं छट्ठो, न करेति न कारवेति मणेण एस एक्को, तहय न करेति करेंतं णाणुजाणति मणेणं एस बितिओ, न कारवेति करेंतं णाणुजाणति मनसैव तृतीयः, एवं वायाए, काएणवि तिण्णिवि भंगा लब्भंति, उक्तः षष्ठो मूलभेदः। अधुना सप्तमोऽभिधीयत इति, न करेति मणेणं वायाए काएण य एक्को, एवं न कारवेति मणादीहिं एस बितिओ, करंतं णाणुजाणतित्ति ततिओ, सप्तमोऽप्युक्तो मूलभेद इति। इदानीमष्टमः-न करेति मणेण वायाए

प्रत्याख्यान भंगाः

॥६१२॥

सामायिक व्याख्यायां ॥६१३॥

य एक्को, तथा मणेण काएण य एस बितिओ, तथा वायाए काएण य एस ततिओ, एवं न कारवेतिवि एत्थवि तिण्णि भंगा एवमेव लब्भंति, करेंतं णाणुजाणति तत्थवि तिण्णि, एप उक्कोऽष्टमः इदाणिं नवमः--न करेति मणेण एक्को, न कारवेति बितिओ, करेंतं णाणुजाणति एस ततिओ, एवं वायाएवि तियं, काएणवि होति ततियमेव, नवमोऽप्युक्तः ॥ इदाणिमागतगुणना क्रियते- लद्धफलमाणमेतं भंगा उ भवंति अउणपण्णासं। तीताणागतसंपातिगुणितं कालेण होति इमं ॥ १ ॥ सीतालं भंगसतं, कहं ? कालतिएण होति गुणणाओ। तीतस्स पडिक्कमणं पच्चुप्पण्णस्स संवरणं ॥२॥ पच्चक्खाणं च तहा होइ य एस्सस्स एव गुणणाओ। कालतिएणं भणितं जिणगणहरवायएहिंति॥३॥एत्थ मणो नाम दव्वमणो भावमणो य, दव्वमणो मणपाउग्गाणि दव्वाणि, भावमणो मण्णिज्जमाणाणि, वईवि दुविहा, दव्वे वइपाउग्गाणि दव्वाणि मिच्छादिट्ठिस्स वा, भाववई ताए निसिरिज्जमाणाणि, दव्वकायो कायग्गहणपायोग्गाणि, निकाइज्जमाणाणि भावकायो, एवमादि विभासिज्जा।

एत्थ य 'करेमि भंते! सामाइयं'ति पंच समितीओ गहिताओ, सव्वं सावज्जं इच्चादिणा तिन्नि गुत्तीओ गहिताओ। समितीओ पवत्तणे निग्गहे गुत्तीओ, समिओ नियमा गुत्तो गुत्तो समियत्तणंमि भइयव्वो। कुसलवइमुदीरंतो जं वइगुत्तोवि समितोवि॥१॥ एताओ अट्ठ पवयणमाताओ, जहिं सामाइयं चोद्दस य पुव्वाणि माताणि, माउगाओ वत्ति मूलंति भणितं होति ॥

सुत्तफासियनिज्जुत्तिगाथा गता एवं ॥ एत्थ चोदगो सुत्तपदं अक्खिपति—

तिविधेणंति न जुत्तं ० ॥ १०-७६ ॥१०५८॥ आह-तिविधेणंति पदं न युज्यत इतिकातुं, जतो मणेणं वायाए काएणं एवं प्रतिपदविधिना त्रैविध्यं गतमेव भवति, गतार्थत्वात त्रिविधेनेति ग्रहणं न कर्तव्यं. उच्यते-अत्थविकप्पणताए गुणभावणयत्ति को

प्रत्याख्यान भंगाः

॥६१३॥

सामायिक व्याख्यायां ॥६१४॥

दोसो?, अयमर्थः-अत्थस्स मणवयणकायलक्खणस्स विकप्पणत्थं-भेदकहणत्थं, जथा किर तिविधेण मणेण तिविधेण वयसा तिविधेण काएण करणकारणअणुमतिपवत्तेण, अण्णहा अण्णथा संभावणा स्याद्, यथा मणेणं वायाए काएणं यथासरूयं न करेमि न कारयामि करेंतंपि अण्णं न समणुजाणामित्ति, अहवा मणेणं वायाए काएणंति एतेसिं अत्थविकप्पणसंगहत्थं, संगहभेदेहिं सुत्तभणणंतिकातुं, किं च- गुणभावना पुनः पुनरभिधानाद्भवतीति न दोष इत्यादि भाव्यं ॥ अपर आह-जावज्जीवाएत्ति पदं न करेमीत्यस्य पूर्वसंबद्धमेव किमिति न कृतं येन व्यवहितसंबंधमिति, अन्यपदैरपि संबन्धेऽस्येष्यत इति, किं च- व्यवहितमपि अर्थसंबंधेन संबंधयित्वा व्याख्येयमिति ज्ञापनार्थं, यतो अनन्तगमपज्जयं सुत्तं गमनिका अपि व्याख्यानांगमिति च संदर्शितं भवतीत्यादि भाव्यं । **तस्स पडिक्कमामि** तस्स अतीतस्स सावज्जजोगस्स अण्णाणताए असवणताए एवमादिणा कतस्स प्रतीपं क्रमणं निवर्तनमित्यर्थः, तं चतुर्विधं, दव्वपडिक्कमणं यो यस्य दव्वस्स पडिक्कमति अपत्थस्स य नियत्तति दव्वभूतो वा यं वा निण्हगादी पडिक्कमेतूण वा पुणो पुणो तं चेव करेति, एयं तं दव्वपडिकमणं , उक्तं च-" जं दुकडंति मिच्छा तं चेव निसेवते पुणो पावं । पच्चक्खमुसावातो मायानियडीपसंगो य ॥ ७ ॥ २३ (६८५ ॥)" एत्थ दव्वपडिक्कमणे कुंभकारमिच्छादुक्कडं उदाहरणं-एगस्स कुंभकारस्स कुडीए साधुणो ठिता, तत्थेगो चेल्लगो तस्स कुंभकारस्स कोलालाणि अंगुलधणुभएण पाहाणएहिं विंधति, कुंभकारेण पडियग्गितुं दिट्ठो, भणितो य-कीस मे कोलालाणि काणेसि ?, खुड्डओ भणति-मिच्छादुक्कडंति, सो पुणो पुणो विंधेतूण मिच्छादुक्कडं देति, पच्छा कुंभकारेण तस्स खुड्डगस्स कण्णाउडओ दिण्णो, सो भणति-दुक्खावितोऽहं, कुंभकारो भणति-मिच्छादुक्कडं, एवं सो पुणो पुणो कण्णामोडयं दातूण मिच्छादुक्कडं करेति,पच्छा चेल्लओ भणति-केरिसं ते मिच्छादुक्कडं?, कुंभकारो भणति- तुज्झवि एरिसं चेव मिच्छा

संका-समाधाने ॥६१४॥

सामायिक व्याख्यायां ॥६१५॥

दुक्कडंति, पच्छा ठितो विंधितव्वस्स । भावपडिक्कमणं समदिट्ठी तच्चित्तो तम्मणो समाहितप्पा जो पडिक्कमति, उक्तं च-"जतिय पडिक्कमितिव्वं अवस्स कातूण पावयं कंमं । तं चेव न कातव्वं तो होइ पए पडिक्कंतो ॥ १ ॥" तत्थ मिगावती उदाहरणं, तं च इमं-भगवं वद्धमाणसामी कोसंबीए समोसरितो, तत्थ चंदसूरा भगवंतं वंदगा सविमाणा उत्तिण्णा, तत्थ मिगावती अज्जा उदयणमाता दिवसोत्तिकातुं चिरं ठिता, सेसाओ साधुणीओ तित्थगरं वंदितूण सनिलयं गताओ, चंदसूरावि तित्थगरं वंदितूण पडिगता, सिग्धमेव वियालीभूतं, संभंता गता अज्जचंदणासकासं, ताओ य ताव पडिक्कंताओ, मिगावती आलोइउं पवत्ता, अज्जचंदणाए भण्णति-कीस अज्ज चिरं ठितासि ?, न जुत्तं नाम उत्तमकुलप्पसूताए एगागिणीए चिरं अच्छितुंति, सा सब्भावेण मिच्छादुक्कडंति भणमाणी अज्जचंदणाए पाएसु पडिता, अज्जचंदणा य ताए वेलाए संथारं गता, ताए निद्दा आगता, पसुत्ता, मिगावतीएवि तिव्वसंवेगमावण्णाए पादे पडिताए चेव केवलनाणं समुप्पण्णं । सप्पो य तेणंतेणमुवागतो, अज्जचंदणाए य संथारगाओ हत्थो लंबति, मिगावतीए मा खज्जिहितित्ति सो हत्थो संथारगं चडावितो, सा विबुद्धा भणति-किमेतंति ?, अज्जवि तुमं अच्छसित्ति मिच्छादुक्कडं, निद्दापमाएणं न उट्ठवितासि, मिगावती भणति- एस सप्पो मा ते खाहितित्ति हत्थो चडावितो, सा भणति- कहिं सो ?, सा दाएति, अज्जचंदणा अपेच्छमाणी भणति- अज्जे! किं ते अतिसतो ?, सा भणति- आमंति, किं छउमत्थिओ केवलितोत्ति ?, भणति-केवलितो, पच्छा चंदणा पाएसु पडिता भणति- मिच्छादुक्कडं केवली आसाइतोत्ति, तीए केवलनाणं, एतं भावपडिक्कमणं ॥ इदाणिं णिंदा आत्मसंतापे, निंदा चतुव्विहा, नामनिंदा ४, दव्वनिंदा जो दव्वनिमित्तं निंदति, न पुण धम्मनिमित्तं, निंदित्ता वा भुज्जो भुज्जो आसेवति, दव्वनिंदाए चित्तगरदारिया उदाहरणं, जथा-पडिक्कमणे 'पडिक्कमणा पडियरण' (१२४५) एतीए

द्रव्यभाव-निन्दादि ॥६१५॥

गाथाए नियत्तिदारे, भावनिंदा 'हा दुट्ठु कतं हा दुट्ठु कारितं दुट्ठु अणुमतं वत्ति । अंतो अंतो डज्झति पच्छाताबेण निंदंतो ॥१॥ गरहा प्रकाश्ये, परपागडीकरणं, सा चउव्विहा, दव्वभूता परपच्चया वा आलोएति गरहति, जथा-आणंदपुरे मरुओ णुसाए समं संवासं कातूण उवज्झायस्स कहेति, जथा-सुविणए णुसाए समं संवासं गतोमित्ति, भावगरिहा-गंतूण गुरुस्मीवं कातूण य अंजलिं विणयमूलं । जह अप्पणा तह परे जाणवणा एस गरहा उ॥१॥ भावगरहाए साधू उदाहारणं ।

'अत सातत्यगमने' अततीति आत्मा, तं वोसिरामित्ति, दव्वविउस्सग्गो गणउवधिसरीरभत्तपाणाण विउस्सग्गो, जो वा धम्माणुट्ठाणपवत्तो काउस्सग्गादिट्ठितो अट्ठवसट्ठो तस्सवि दव्वविउस्सग्गो, अणुवउत्तो वा, तत्थेव उदाहरणं पसण्णचंदो, भावविउस्सग्गो मिच्छत्तअन्नाणअविरतीणं, अहवा कसायसंसारकंमाण वा विउस्सग्गो, तत्थ पडियागतो पसण्णचंदो उदाहरणं भवति-जथा अणुभूतो वक्कलचीरिकहाणगे ॥

आह—किमिति सामाइककरणाभ्युपगमं पूर्वं दर्शयति पच्छा सावज्जजोगवेरमणं ?, भण्णति—यतः सामायिकात्मैव सन् सावज्जजोगविरतो तिविहं तिविहेण वोसिरिय निप्पावो भवति, न पुण सामाइयरहितो । एवं एसो अणुगमो परिसमत्तो । नया इच्छितव्वा, तत्थ नेगमादीया नया सत्त, तेसिं विभासा कातव्वा जहा हेट्ठा, इमं सामण्णलक्खणं—सामाण्यं प्रविभागः प्रत्युत्पन्नं यथा वचः शब्दः । शब्दार्थं च वचः (खलु) प्रत्येकं संग्रहादीनाम् ॥ १ ॥ एवं सव्वे नया परूवेऊण तो सामाइयस्स एगमेकपदं नएहिं सत्तहिं मग्गितव्वं, न केवलं सामाइयस्स, सव्वज्झयणाण सुतक्खंधाणं च । एत्थ दारे णयमग्गणा कातव्वा । अहवा ते सव्वेवि दोसु समोयरंति, विज्जानये चरणणए य, तत्थ णाणणयो—

णायम्मि गिण्हितव्वे अगेण्हियव्वंमि चेव अत्थंमि । जतियव्वमेव इति जो उवएसो सो नयो नाम॥१०-८०॥१०६५॥
करणनयो-सव्वेसिंपि नयाणं बहुविहवत्तव्वयं निसामेत्ता । तं सव्वनयविसुद्धं जं चरणगुणट्ठितो साधू ॥१०॥८३॥१०६६॥
एवं जथा सामाइयं विभागेण य ओघेण मग्गितं एवं सव्वज्झयणा सट्ठाणे पत्तेयं पत्तेयं ॥ इति सामाइयनिज्जुत्ती सम्मत्ता ॥



मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादित: (आगमसूत्र ४०)

"आवश्यक-चूर्णि: [२]" परिसमाप्ता:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

भाग-4

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

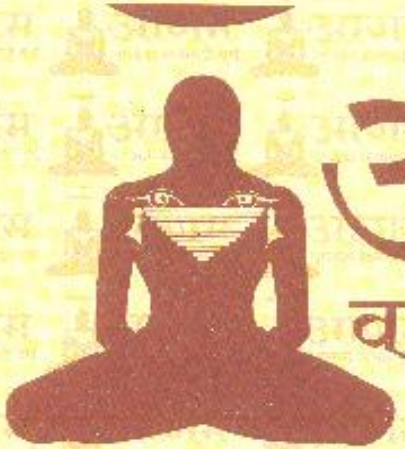
“आवश्यक मूलसूत्र” [निर्युक्ति एवं जिनदासगणि-रचिता चूर्णि: -२]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलिता

“आवश्यक” निर्युक्ति एवं चूर्णि: नामेण

परिसमाप्ता:



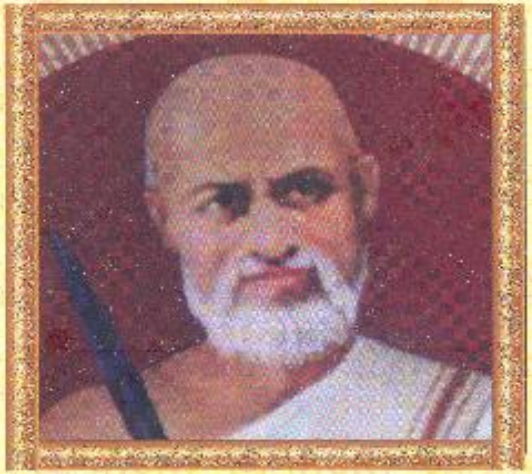
आगम

वाचना शताब्दी वर्ष

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

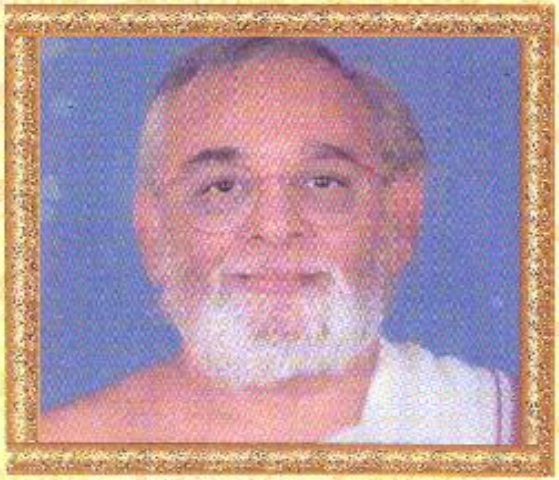
सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि

मूल संशोधक



पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता



आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदाबाद Mo 9825598855 / 9825306275

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

सच्चारित्र चूडामणि स्वर्गस्थ पूज्यपाद
गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागर
सूरीश्वरजी महाराज साहेब

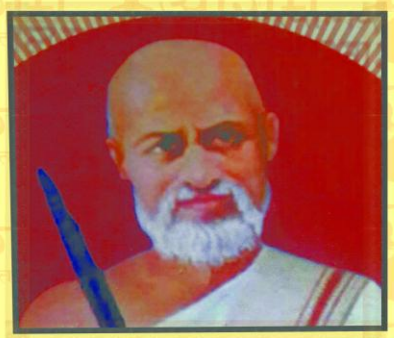


श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ

वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठक्कर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

करीब पचास साल पहेले परम पूज्य स्व र्गस्थ गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म० ही है |

इस संघमें पूज्य साधू -भगवंत एवं साध्वी -महाराज के लिए उपाश्रय भी है , जहां हर-साल चातुर्मास करवा के श्रावक-श्राविकाओ को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है | इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है | ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है |



मूल संशोधक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य

श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

आगम - ४०

"आवश्यक" निर्युक्ति एवं चूर्णि: [२]

अभिनव-संकलनकर्ता

आगम दिवाकर **मुनिश्री दीपरत्नसागरजी**

[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

